

अप्ली पुराने द्वाप का श्री शकर
 महादेव जी के कहे यंत्र-तंत्रों का अपूर्व संग्रह

वृहद् इन्द्रजाल

अर्थात् कौतुक रत्न भाण्डागार

क्रं	क्रीं	कूं
शां	शीं	शूं



कालि	का	देवि
मे	शुभं	कुरु



श्री शकर महादेव
 जीके कहे हुए तंत्र
 यंत्रों का संग्रह
 सम्पूर्ण

**RE-EDITED &
UPLOADING
BY SIVAM**

असली पुराने छाप का

वृहद् इन्द्रजाल

(कौतुक रत्न भाण्डागार)



(श्री शंकर महादेव जी के कहे यंत्र मंत्र का अपूर्व ग्रन्थ)

प्राचीन हस्त लिखित प्रति से
संग्रहीत



लेखक - तांत्रिक श्री पं० श्रीमणि शुक्ल

प्रकाशक -

श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार (प्रा०) लि०

५२७ ए/२, कक्कड़ नगर इलाहाबाद-३

ब्रांच-जानसेनगंज, इलाहाबाद-३ ।

मूल्य : रु० ३५-००

* आवश्यक सूचना *

तन्त्र मन्त्र अपने कार्य की सिद्धि के लिये हैं, न कि उनसे अनुचित लाभ उठाया जावे। पुस्तक में बहुत से उपयोगी तन्त्र मन्त्र दिये गये हैं फिर भी हमारी उसकी कोई जिम्मेदारी नहीं है। जिस प्रकार कुआँ या तालाब जल पीने के लिये होता है न कि उसमें डूब कर आत्महत्या की जावे या उससे किसी का अनिष्ट किया जावे।

यह पुस्तक सर्व जन के कल्याण के लिये प्रकाशित की गई है फिर भी कोई बुरी प्रकृति का मनुष्य इसमें वर्णित उपायों द्वारा किसी का अनिष्ट करे या और कोई अनुचित उपाय अपनाये तो उसमें हमारा क्या दोष है ?

पुस्तके लिखिता विद्या सादरं यदि जप्यते,
सिद्धिर्न जायते तस्य कल्प कोटि शतैरपि ।

गुरुं विनापिशास्त्रऽस्मिन्नाधिकारः कथंचन् ॥

अर्थ- जो व्यक्ति केवल पुस्तक लिखित विषय को देखकर ही मंत्र जप आदि आरम्भ करके सिद्ध होना चाहते हैं, वह कभी भी सिद्धि को प्राप्त नहीं कर पाते, क्योंकि इन्द्रजाल अथवा मंत्र शास्त्र की सिद्धि का अधिकार गुरु के समीप ही लाभार्थ माना गया है। अतः बिना गुरु के सिद्धि नहीं मिलती। इसलिये गुरु के उपदेशानुसार ही कार्य को प्रारम्भ करना योग्य है।

वैसे तो आज का युग वैज्ञानिक व यन्त्रों का युग है, ऐसे तन्त्र मन्त्र का नहीं, फिर भी जिनका विश्वास है उनको फल मिलता ही है।

विनीत-
प्रकाशक

* विषय सूची *

प्रथम अध्याय-

पृ० २३ से ५२ तक

मंगलाचरणम्, उपाख्यान, प्रयोग विधि, इन्द्रजाल कार्य में प्रवृत्त होने से पूर्व का कार्य, स्वरक्षा का मन्त्र, षष्ट-कर्माणि षट् कर्मों के लक्षण, कर्माणि प्रयोगम्, षष्ट कर्मों की देवियाँ, अथ कर्म दिशा वर्णन, अथ षष्ट-कर्माणि काल विचारम्, ऋतु विचार, रंग और कर्म, शुभ दिन, षट्कर्म चक्रम्, दिशा-शूल, दिशा शूल चक्र योगिनी विचार, योगिनी चक्रम्, राशि चक्रम्, तिथि विचार, आसन विचार, आसन भेद, दिशा विचार, जप विचार, मन्त्रों का लिङ्ग-भेद, शुभ कार्य चक्र, मन्त्र के लिये प्रकृति वर्णन, तिथि वर्णन, कुम्भ स्थापन की विधि, हवन की सामग्री, हवन के लिये शुद्ध मुद्रा, माला का निर्णय, तुलसी की माला, मूँगे की माला, रुद्राक्ष की माला, भेषज की माला, स्थावर की माला, माला फेरने में अँगुली निर्णय, मन्त्र सिद्धि के पूर्व कर्म ।

द्वितीय अध्याय-

पृ० ५३ से ६५ तक

अग्निस्तम्भन, शत्रुमारण मन्त्र, सर्वोपरि मन्त्र, मोहन मन्त्र, शराब नष्ट होय, धोबी के कपड़े नाश होवें, सर्व मोहिनी तिलक, दूसरे प्रकार का तिलक, तिसरा तिलक, सभा मोहनी, स्त्री मोहनी, दूसरी मोहनी, राज मोहनी, मोहनी तिलक, पशुपक्षी मोहनी, तन्त्र स्तम्भन प्रयोग, बुद्धि स्तम्भन, शस्त्र स्तम्भन, तलवार की धार बँधे, लोक वशीकरण तन्त्र, श्रेष्ठ वशीकरण, मोहनी पुतली का वशीकरण मन्त्र, राजा वशीकरण मन्त्र, वेश्या वशीकरण मन्त्र, स्त्री वशीकरण, स्त्री वशीकरण लेप, नवीन वशीकरण, स्वामी वशीकरण, पति वशीकरण, वशीकरण वुकनो ।

तृतीय अध्याय-

पृ० ६६ से ११६ तक

शत्रु का शरीर फूलने का यन्त्र, बाजार नष्ट होने का यन्त्र, ढोल फूटने का यन्त्र, परदेशी को बुलाने का यन्त्र, मस्त होने का यन्त्र, स्त्री वशीकरण यन्त्र, बचन सिद्धि यन्त्र, बुद्धि उत्पन्न होने का यन्त्र, मसान जगाने का यन्त्र, डाकिनी यन्त्र, विरोध होने का यन्त्र, भूतप्रेत नाशक यन्त्र, जुवा जीतने का यन्त्र, कुत्ता भूकने का यन्त्र, मोहनी यन्त्र, कलह होने का यन्त्र, व्यापार वृद्धि यन्त्र, नामर्द बनाने का यन्त्र, अधिक भोजन खाने का यन्त्र, चाक पर बासन सटने का यन्त्र, रतिकार्य में पराक्रमी होने का यन्त्र, पुरुष वशीकरण यन्त्र, कामनाशक यन्त्र, शत्रुमारण यन्त्र; शत्रु मुख भंजन यन्त्र; शत्रुभय नाशक यन्त्र, कष्ट छूटने का यन्त्र, राजमान यन्त्र, कान दर्द नाशक यन्त्र, शत्रु वशीकरण यन्त्र, शूल होने का यन्त्र, अर्द्धकपारीका यन्त्र, शत्रु मुंह सुजाने का यन्त्र, नारी कष्ट निवारण यन्त्र, गर्भ स्तम्भन यन्त्र, आधा शीशी का यन्त्र, सर्प विषनाशक यन्त्र, राजा वशीकरण यन्त्र, मायों के दूध बढ़ाने का यन्त्र, बुरे स्वप्नों का यन्त्र, शत्रु उच्चाटन यन्त्र, तिजारी ज्वर का यन्त्र, सर्व सिद्धि यन्त्र, दुश्मनी कराने का यन्त्र, शीतला माता का यन्त्र, भूत दिखाई पड़ने का यन्त्र, प्रेम बढ़ाने का यन्त्र, मसान का मन्त्र, क्लेश दूर करने का यन्त्र, आकर्षण यन्त्र, घर लौटाने का यन्त्र, वाचा स्तम्भन यन्त्र ।

चतुर्थ अध्याय-

पृ० ११७ से ११८ तक

चुटकुले, बिच्छू काटने की औषधि ।

पंचम अध्याय-

पृ० ११९ से १४५ तक

यक्षिणी साधन, यक्षिणियों के नाम, सिद्ध करने का समय, यक्षिणी साधन क्रिया, कुबेर आराधना मन्त्र नियम,

महायक्षिणी सिद्धि, सुन्दरी यक्षिणी, मनोहारी यक्षिणी, कनक यक्षिणी, कामेश्वरी यक्षिणी, रति क्रिया यक्षिणी, पद्मिनी यक्षिणी, नटी यक्षिणी, अनुरागिनी यक्षिणी, विशाला यक्षिणी, चंद्रिका यक्षिणी, लक्ष्मी यक्षिणी, शोभना यक्षिणी, मदना यक्षिणी ।

छठां अध्याय-

पृ० १४६ से १५९ तक

(मन्त्रों से रोगों का इलाज)

आधा शीशी का मन्त्र, आँख दुखने का मन्त्र, पीलिया का मन्त्र, कुत्ता काटने का मन्त्र, बिच्छू के विष उतारने का मन्त्र, प्रेत वशीकरण मन्त्र, आयु बढ़ाने का मन्त्र, फोड़ा झाड़ने का मन्त्र, पानी से दूध होने का मन्त्र, आँख की फूली काटने का मन्त्र, भूख लगने का मन्त्र, डबके का मन्त्र, तिजारी ज्वर का मन्त्र, चौथिया निवारण मन्त्र, बरनि का मन्त्र, प्रेत निवारण का मन्त्र, गर्भधारण तथा रक्षा मन्त्र, शिशु रोदन मन्त्र, टोना का मन्त्र, नेत्र बाधा निवारण मन्त्र, कर्ण बाधा निवारण मन्त्र, कण्ठ कष्ट मन्त्र, मस्तक पीड़ा का मन्त्र, नकसीर निवारण मन्त्र, ज्वर निवारण मन्त्र, बवासीर का मन्त्र, विदेशी को घर बुलाने का मन्त्र, नजर झाड़ने का मन्त्र, सुई निकालने का मन्त्र, पशुओं के कीड़े झाड़ने का मन्त्र, डाढ़ दर्द का मन्त्र, डाढ़ के कीड़े का मन्त्र ।

सातवाँ अध्याय-

पृ० १६० से १८२ तक

(विविध चमत्कार)

शास्त्रार्थ जीतने का मन्त्र, मदारी को पछाड़ने की विधि, दामिनी (बिजली) नाशक मन्त्र, चोरी निकालने का मन्त्र, डाकिनी मूँड़ने का मन्त्र, भूत प्रेत बोलाने का मन्त्र, बीन बाँधने का मन्त्र, साँप निकालने का मन्त्र, पानी पर चलने का मन्त्र,

रात के समय साँप दिखाई देना, बिच्छू दिखाई देना, बिना दीपक के अक्षर दिखाई देना, गुप्त होने की विधि, सिद्धि तेल, अन्धा बनाने की विधि, शत्रु का पेशाब बन्द हो, सूर्य का रथ दिखाई देना, दिन में तारे दिखाई देना, अनोखा खड़ाऊँ, कच्चे मटके में पानी भरना, अण्डा उछालने की विधि, चलनी में पानी भरना, अण्डा उछालना, बबूल का काँटा चबाना, मुंह में आग रखना, खुद आग का पैदा होना, खेत की रखवाली हो, शीशी आग से भरी दिखाई देना, दाँवार पर आग दिखाई देना, शीशी में अण्डा उतारना, नीबू उछालने की विधि, हाथ पर सरसों जमाना, कोयले को हरा करना, जले हुए बोरे में अँगूठी लटकाना, अग्नि से बिस्तर न जले, आग से उंगली ना जले, बन्दूक की गोली मुंह से छूटना, लोहे को ताँबा बनाना, कपड़ों में आग लगाना, तोप के समान आवाज करना, आग खुद जले, घड़ी को गायब करना, छाते पर गिलाफ चढ़ाना, अक्षर रङ्ग बिरङ्गे करना, वर्षा में दीपक जले, फुलझड़ी बिना रङ्ग का पीला होना, जादू का लाल रङ्ग बनाना, अण्डे का नाच, सुनहरे सितारे, लाल बारूद, नीली बारूद, जर्द बारूद, गोल फुलझड़ी, महताबी, नकली महताबी, रङ्गीन महताबी, बाण बनाना, नारङ्गी रङ्ग वाली बारूद, नीलामीला बनाना, अँगूठी कबूतर में से निकलना, भूत प्रेतादि दोष निवारण योग, पुत्र ही पैदा होय, प्रसव दुख निवारण।

आठवाँ अध्याय—

पृ० १८३ से २२४ तक

(अन्य उपादेय विषय)

वशीकरण नुस्खे, लाल नीली स्याही बनाने की रीति, सुनहरा मुलम्मा, चाँदी को मुलम्मा, सोने की चीज को चमकना, नीलम बनाना, हीरा बनाना, फिरोजा बनाना, पुखराज बनाना, आदि अनेकों चमत्कारिक नुस्खे दिये गये हैं ।

(७)

जय श्री महाकाली



ॐ महाकाल्यै नमः

(८)

जय माता श्री छिन्नमस्ता की



रुण्ड मुण्ड ध्वस्तिनी छिन्नमस्तायै नमः

माता श्री बगलामुखी देवी



ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय
जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय नाशय ह्रीं ॐ स्वाहा ।



षोडशीदेवी

श्री भूतभावन भगवान शंकर

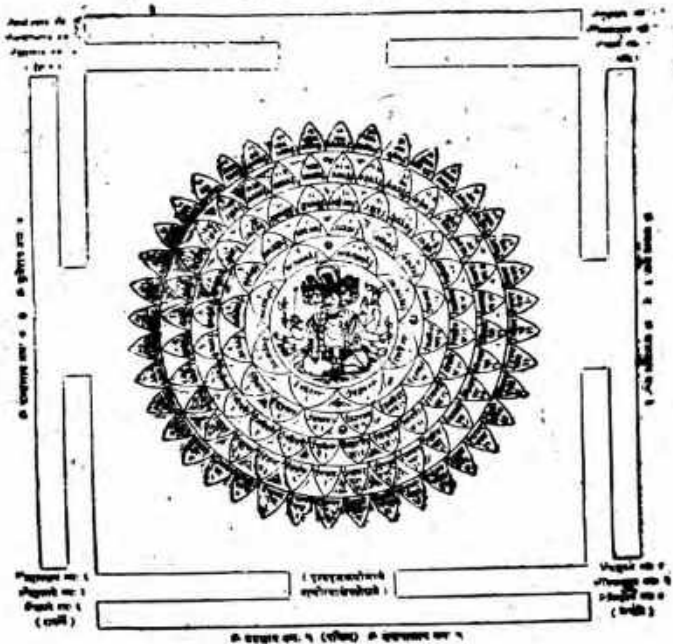


ॐ नमः शिवाय

श्री रुद्र यंत्रम्

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय ॥



ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय

इसे भोजपत्र में लिखकर ताबीज बनाकर बाँधने से शिवजी की विशेष कृपा तथा धन-धान्य की वृद्धि होती है ।

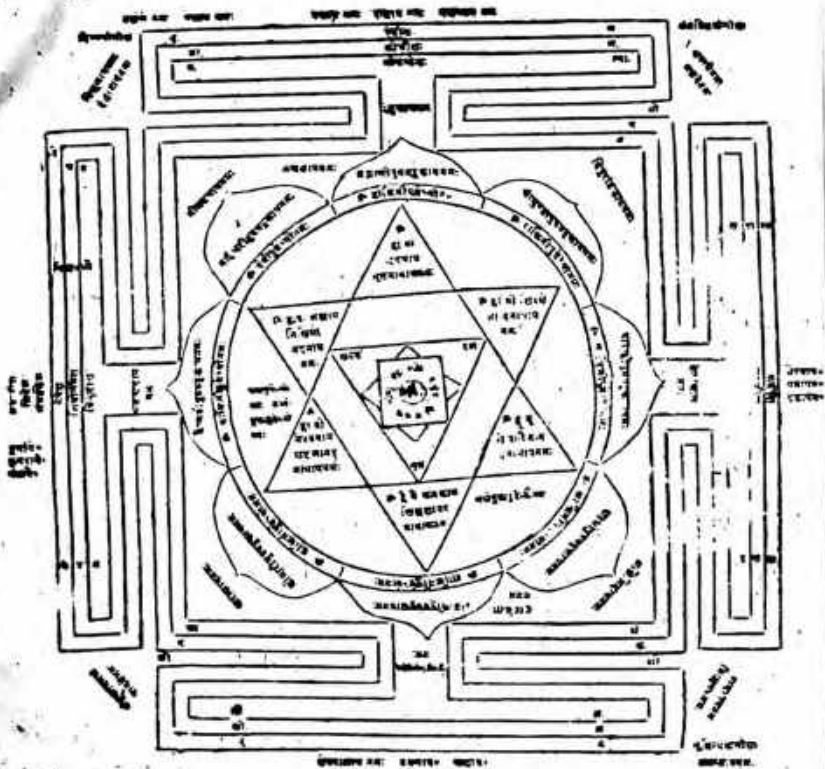
(१४)

श्री काल भैरव जी



ॐ भैरवोभूतनाथश्च भूतात्मा भूत भावनः

श्री भैरव यंत्रम्



इस यंत्र को भोजपत्र में लिखकर ताबीज में रखकर बाँधने से सब प्रकार की बाधायें दूर होती हैं ।

(१६)

श्री कामाक्षा देवी जी



ॐ कामाक्षा देव्यै नमः

श्री श्री दुर्गा देवी



दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तो,
 स्वस्थे स्मृतामतिमतीव शुभां ददासि ।
 दारिद्र्य दुःख भयहारिणि का त्वदन्या,
 सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चित्ता ॥

श्री तारा देवी



नीलाश्मद्युतिमास्य पाददशकां सेवे महाकालिकाम् ।
यापस्तौत्स्वपिते हरी कमलजौ हन्तुं मधुं कैटभम् ॥

श्री सरस्वती देवी



श्री सरस्वत्यै नमः

सीतारामानुरागी हनुमान



ॐ हरि मर्कट मर्कटाय वं वं वं वं वं वं वं फट् स्वाहा ।

श्री महिषासुर मर्दिनी



गर्जं गर्जं क्षणं मूढं मधुं यावत्पिबाम्यहम् ।

मया त्वयि हतेऽत्रैव गच्छिष्यन्त्याशु देवताः ॥

शुम्भ निशुम्भ हन्त्री भगवती



शरणागत दीनार्त परित्राण परायणे ।
सर्वस्यात्ति हर देवि नारायणि नमोऽस्तुते ॥

पुराने छाप का
असली इन्द्रजाल
(कौतुक रत्न भाण्डागार)

प्रथम अध्याय

मंगलाचरणम्

क्रोधाज्वलन्तीं ज्वलनं वमन्तीं,

सृष्टिं दहन्तीं दितिजं ग्रसन्तीं ।

भीमं नदन्तीं प्रणमामि कृत्यां,

तां रोद्धुमानां क्षुधयोगकालीं ॥

जिन अम्बे का क्रोध युक्त प्रज्वलित स्वरूप, जिनके मुखारः
विन्द से प्रदीप्त ज्वाला (अग्नि) का सदैव, प्रकाश जो क्षण मात्र
में विशेष कर भस्म करने की शक्ति रखता है, जो दिति पुत्रों को
ग्रास (भक्षण करने वाली हैं) जिनकी गर्जना विकट व
भयानक है, जो क्षुधार्थ होते हुए रोदन परायण हैं, ऐसी
उग्रकाली देवी को बारम्बार नमस्कार करता हूँ ।

❀ श्लोक ❀

कैलाश शिखरे रम्ये नाना रत्नोपशोभिते ।
 नाना द्रुम लताकीर्णे नाना पक्षिरवैर्युते ॥ १ ॥
 सर्वतु कुमुमा मोद मोदिते सुमनोहरे ।
 शैत्यसौगन्धमद्याढ्ये भरूदिसरूप विलायते ॥ २ ॥
 अप्सरो गण संगीतकध्वनि निनादिते ।
 सिरच्छाया द्रुमच्छायच्छादिते स्निग्धमंजुले ॥ ३ ॥
 मुक्त कोकिल संदोहं सघूष्ट विपिनान्तरे ।
 सर्वदा स्वगणैः सार्धमृतुराल निसेवते ॥ ४ ॥
 सिद्ध चारण गन्धर्वं गणपत्य गणैर्वृते ।
 तवमान धरे देव चराचर जगद्गुरुम् ॥ ५ ॥
 सदाशिव सदानन्द करुणाऽमृत सागरम् ।
 कर्पूरकुन्द घवलं शुद्धसत्व मयं विभुम् ॥ ६ ॥
 गिरिवर दीनानाथ योगीन्द्र योगिवल्लभम् ।
 गङ्गा सीकर सन्निकेत जटामंडल मंडितम् ॥ ७ ॥
 विभूति भूपित शतं व्याल माल कपालिकम् ।
 त्रिलोचनं त्रिलोकेशं त्रिशूलवर धारिणम् ॥ ८ ॥
 आशुतोषं ज्ञानमय कैवल्यं फलदायकम् ।

निरवकल्पम् निरातंकं निरवे शेष निरंजनम् ॥६॥
 सर्वेषां हित कर्तारं देव देव निरामयम् ।
 अर्द्धचन्द्रोज्वलद्भालपञ्चवक्त्र सुभूषिताम् ॥१०॥
 प्रसन्न वदनं वीक्ष्ये लांकानां हित काम्यया ।
 विनयेन समायुक्ता रावणः शिवमब्रवीत् ॥११॥

कैलाश पर्वत के रमणीय शिखर पर जहाँ अनेक प्रकार के रत्न शोभायमान रहते हैं, जहाँ तरह-तरह की बेल और लतायें तथा अनेक पक्षी कलरव करते रहते हैं। ऋतुओं में जहाँ सुन्दर-सुन्दर सुमन प्रस्फुटित होते हैं, वह स्थान मन को प्रसन्नता-दायक है। सुमन सुगन्ध फैलाते तथा शीतल समीर सुगन्ध से भरी चलती हैं, अप्सरायें भंकार युक्त गायन से गुञ्जार उत्पन्न करती हैं तथा पेड़ों की छाया सर्वदा जहाँ स्थिर रह कर उक्त स्थान को शीतल बनाये रखती हैं।

कोकिलाओं के सुन्दर भुण्ड कुह-कुह कर मीठी धुन मुनाते तथा ऋतुराज बसन्त जहाँ विराजमान है। गणपत्य, चारण, सिद्ध एवं गन्धर्व आदि शंकर के गणों से भरा-पुरा वह स्थान, जहाँ बमशंकर देवादि देव महादेव मौन भाव से ध्यान में लीन हैं। शम्भु करुणा के सिन्धु हैं अमृत के महीदधि हैं, ज्ञानमय हैं।

उन महादेव के वस्त्रस्वरूप दशों दिशाये हैं। आरत और दीन जनों के स्वामी योगि प्रिय गंगा की लहरों से सिंचित जटाये हैं, जिनकी सर्वशरीर में भस्म लेप, शान्त रूप गले में मुण्डमाल एवं त्रिशूल धारण किये आशुतोष, भोलेनाथ विका-
 हीन, त्रिविध ताप रहित ज्ञानमय हैं ज्ञान भी जिनकी न- ॥

से अवगत नहीं, जिनके माथे पर चन्द्र शोभायमान है। ऐसे महादेव अबघड़दानी को प्रसन्न पाकर लंकेश रावण पूछता है।

हे देवाधिदेव ! हे जगद्गुरु ! अपने चरणों में दास का प्रणाम स्वीकार कर—क्षणमात्र में सिद्धि प्रदायिनी महान तन्त्र विद्या का वर्णन करिये।

रावण की प्रार्थना से प्रसन्न होकर महादेव जी ने जो अनेक प्रकार की इन्द्रजालिक तांत्रिक और मांत्रिक विद्याओं का वर्णन किया वह अनेकानेक ग्रंथों से संग्रहीत कर इस ग्रंथ में दिया जा रहा है।

उपाख्यान

इन्द्रकी सभा में एक अप्सरा नाचते-नाचते जब पृथ्वी पर बेहोश होकर गिर पड़ी। तब तो चारों तरफ हलचल मच गई। तमाम देवता घबरा गए और इन्द्रके तो क्रोध का ठिकाना न रहा। उसकी सभा की नाचने वाली नर्तकी बेहोश होकर गिर पड़ी, इसमें इन्द्रका अपमान था। चारों तरफ खोज की गई कि इसका कारण क्या है? पर कुछ भी मालूम न हो सका। लाचार होकर उन्होंने गुरुदेव बृहस्पति से शंका का समाधान करना चाहा।

बृहस्पति जी ने कहा-‘राजन ! लंका के रावण ने इस अप्सरा को बेहोश करके तुम्हारा अपमान किया है।’

इन्द्रसभा और इन्द्र देवता स्वयं ही इस उत्तर से भीचक्के रह गये। इन्होंने हाथ जोड़कर पूछा ‘गुरुदेव ! रावण तो सभा में है नहीं और न इस अप्सरा के कोई अस्त्र ही लगा है, जिससे उसे मुर्छित हो जाना चाहिये।’

गुरुदेव हँस पड़े और बोले ‘इन्द्र! अस्त्र बल से अभी तेरी बुद्धि आगे नहीं बढ़ी। अस्त्र-बल तो तन्त्र-मंत्र यल के आगे तुच्छ है, अश्रों का प्रयोग तो केवल सम्पने से ही किया जा सकता है, परन्तु मंत्रों का प्रयोग सैकड़ों

मील दूर बैठने पर उसी आसानी से तथा उतने ही अधिक पराक्रम के साथ किया जाता है।

इन्द्र ने हाथ जोड़कर कहा 'महाराज ! आपकी इस कथा ने तो मुझे अधिक उत्तेजित कर दिया है। आप मुझे इस विज्ञान के बारे में पूरा हाल बतायें।'

इन्द्र की जिज्ञासा देखकर बृहस्पतिजी ने सारी बातें वर्णन करते हुये कहा-एक समय दशकंधर ने देवाधिदेव शिवजी की बहुत बड़ी तपस्या की। भोले शङ्कर उससे बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे अपने पास बिठा लिया। रावण ने शङ्करजी से कुछ नहीं माँगा इससे शङ्कर जी अधिक प्रसन्न हो गये।

एक दिन जब रावण शङ्कर जी के पैर दाब रहा था और महादेवजी पार्वती के साथ लेटे थे, तो उस समय पार्वती के बहुत कहने पर महादेवजी ने तांत्रिक विद्या के बारे में बताया कि मनुष्य की साधना से पैदा की हुई शक्ति अस्त्रों की शक्ति से कई गुनी तेज और विशाल होती है। उसकी सिद्धि से कोई भी शक्ति मनुष्य का कुछ नहीं बिगाड़ पाती। मन्त्रों का प्रयोग सैकड़ों मील की दूरी से भी इसी तरह से किया जा सकता है, जिस प्रकार कि शस्त्रों का प्रयोग आमने-सामने से।

महादेवजी के मुँह से यह वर्णन सुनकर तो रावण

के मुँह में पानी आ गया और अपने मन में तांत्रिक विद्या के पूरी तरह सीखने का संकल्प उसने कर लिया। रावण के मन की बात महादेवजी को जानते देर न लगी, उन्होने सारी विद्या उसे सिखाई और कहा कि इस विद्या द्वारा वह संसार के अन्य असाध्य कामों को भी पूरा करके यश प्राप्त कर सकता है। रावणने उसी विद्या के प्रयोग से आज अप्सरा को मूर्छित किया है।

इन्द्रने कहा—'गुरुदेव! आप तो मेरे मन की बात तनिक देर ही में जान लेते हैं, मुझे भी इस विद्या को सीखने की बहुत इच्छा है। मैं भी चाहता हूँ कि आप मुझे जिस तरह हो इस विद्या को सिखाने की चेष्टा करें

गुरुदेव वृहस्पति बहुत हँसे और फिर बोले 'इन्द्र! तू अभी तक होड़ ही में रहा, खैर! यदि तेरी इतनी तीव्र इच्छा है तो मैं तुझे अवश्य ही तांत्रिक विद्या सिखा दूँगा, तू अपने मन को स्थिर कर ले तथा इस बात को अच्छी तरह समझ ले कि इस विद्या को सीखने के लिए मनुष्य को काम, क्रोध, मद, लोभ, राग द्वेष, ईर्ष्या से दूर रहना पड़ता है। वह मनुष्य इसमें पूर्णतया सफल हो सकता है जो सादगी से जीवन व्यतीत करता हुआ इस विद्या को सीखना चाहे, तो मुझे विद्या को सिखाने में कोई आपत्ति नहीं है, मैं सहर्ष सिखला दूँगा।

इन्द्र बड़े सोच में पड़ गया मगर फिर हृदय कड़ करके बोला—‘महाराज’ ! मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जैसा आपने कहा है वैसा ही करूँगा। तमाम बातों से दूर रह कर भी मैं इस तांत्रिक विद्या को अवश्य सीखूँगा, मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि जो कुछ भी आप कहेंगे, मैं वैसे ही काम करूँगा।

वृहस्पति ने इन्द्र का यह निश्चय देख कर कहा कि जिस प्रकार मैंने जगद्गुरु श्री शंकर जी महाराज से यह अनुपम तांत्रिक विद्या सीखी है वही तुझसे वर्णन करता हूँ। इसके छैः प्रकार के कर्म हैं शांति कर्म, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन तथा मारण। प्रयोग नौ तरह के हैं। उनके नाम हैं मारण, मोहन, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन वशीकरण, आकर्षण, यक्षिणी साधन और रसायन क्रिया।

प्रयोग की विधि

इन्द्रजाल कार्य में प्रवृत्त होने से पूर्व का कार्य

ॐ नमोनारायणाय विश्वम्भराय इन्द्रजाल कौतुक-
निदर्शये दर्शय सिद्धि कुरु स्वाहा ।

उपरोक्त मन्त्र का १०८ बार जप करने के पश्चात् इस
इन्द्रजाल नामी कार्य को करना चाहिए। तब तो कार्य सिद्धि
की आशा है अन्यथा नहीं।

स्वरक्षा का मन्त्र

ॐ परंब्रह्मपरमात्मने मम शरीरं पाहि पाहि कुरु कुरु ।

उपरोक्त मंत्र को १०८ बार जप करके अपने मुख की
फूँक द्वारा अपने शरीर को आवृत (फूँक से फुँकायमान) करना
चाहिये, ऐसा करने से कर्ता को कोई विघ्न नहीं होता।

वृहस्पतिजी बोले—हे राजन् ! इस विद्या के छः
स्तम्भ हैं। इन तमाम स्तम्भों का अलग-अलग वर्णन है
और उनके कर्म भी अलग-अलग हैं।

षष्ट कर्माणि

शान्तिवश्य, स्तम्भनानि, विद्वेषणोच्चाटने तथा ।

मरणांतानि शंसेति षष्ट कर्माणि मनीषिणः ॥

शान्ति, वशीकरण, स्तम्भनविद्वेषण, उच्चाटन, और मारण यही छः प्रयोग षष्ट कर्म के रूप जाने जाते हैं ।

षट्कर्मों के लक्षण

(क) जिस कर्म के प्रयोग करने से रोग, ग्रहकष्ट एवं बुरे कर्मों की शान्ति होती है, उसको शान्ति कर्म जानो ।

(ख) जिस कर्म के करने से प्राणी मात्र अपने वशीभूत हो-जावे अथवा किसी को वश कर सके उसे वशीकरण जानो ।

(ग) जिस कर्म के प्रयोग से किसी चलती हुई चीज को रोक दिया जावे वह स्तम्भन कहावे ।

(घ) जिस कर्म द्वारा दो विभिन्न प्राणियों में विरोध एवं यैमनस्यता उत्पन्न की जावे उसे विद्वेषण जानो ।

(ङ) जिसके द्वारा प्राणी का मन उच्चाटन किया जावे वह जहाँ है वहाँ से भागने को, क्लेश से घर या घर से विदेश जाने को आतुर होवे, उसे उच्चाटन कहते हैं ।

(च) जिस कर्म के द्वारा किसी भयंकर शत्रु के प्राणों का अग्रहरण कर लेवे उसे ही मारण कहते हैं ।

इस प्रकार छः कर्मों के लक्षण समझते हुए अब उन कर्मों की देवियों का वर्णन सुनो ।

कर्माणि प्रयोगम्

उपर्युक्त छहों कर्मों के प्रयोग नौ प्रकार के हैं । मारण, मोहन, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन, वशीकरण, आकर्षण, यक्षिणी-साधन तथा रसायन ।

षट् कर्मों की देवियाँ

(क) शान्ति कर्म की देवी रति हैं, रति को अनंग अर्थात् कामदेव की पत्नी माना गया है

(ख) वशीकरण की देवी सरस्वती हैं—वीणापाणि मराल वाहिनी जिनसे सभी नीचे हैं ।

(ग) स्तम्भन की देवि विष्णु-प्रिया लक्ष्मी जगदम्बा हैं ।

(घ) विद्वेषण की देवी ज्येष्ठा हैं ।

(ङ) उच्चाटन की देवी महिषासुर मर्दिनी असुर-विनाशिनी दुर्गा हैं ।

(च) मारण की देवी महाकाली भ काली हैं ।

उपर्युक्त तन्त्रों को देवियों का वर्णन समझते हुए यह भी जान लेना चाहिए कि जो भी कर्म करना हो उसकी देवी को प्रथम ध्यानावस्थित कर उनका विधि पूर्वक पूजन कर कर्म का आरम्भ करे, अन्यथा सिद्धि नहीं मिलती।

अथ कर्म-दिशा वर्णन

शान्ति कर्म करने को ईशान कोण, वशीकरण हेतु उत्तर दिशा, स्तम्भन के लिए पूर्व दिशा विद्वेषण में नैऋत्यकोण तथा मारण के लिए आग्नेय कोण की ओर मुँह करके आसन पर बैठना चाहिये।

अथ षष्ठ कर्माणि काल विचारम्

उपर्युक्त छः कर्मों के लिए काल विचार आवश्यक है, जो कर्म करना हो उसके बताये समय के अनुसार ही करे।

शान्ति कर्म के लिए दिन का तृतीय पहर, दोपहर से पहले वशीकरण, दोपहर के बाद में उच्चाटन एवं सायं काल में मारण का प्रयोग करे, यह आवश्यक है।

ऋतु विचार

शान्ति कर्म के लिए हेमन्त ऋतु, बसन्तऋतु में वशीकरण, शिशिर में स्तम्भन, ग्रीष्म में विद्वेषण उच्चाटन कर्म के लिए वर्षा ऋतु और मारण क्रिया शरदऋतु में ही उचित है। महापुरुषों का कथन है कि सूर्योदय से लेकर रात के पिछले पहर तक दस-दस घड़ियों के पश्चात् छहों ऋतुयें अपना-अपना भोग कर जाती हैं अर्थात् सूर्योदय के बाद दस घड़ी तक बसन्त, दोपहर को ग्रीष्म, दोपहर के बाद वर्षा, सन्ध्या समय शिशिर, आधीरात को शरद तथा प्रातःकाल में हेमन्त ऋतु का साम्राज्य होता है।

रंग और कर्म

स्तम्भन क्रिया में पीत रङ्ग, उच्चाटन क्रिया में धुएँ का सा रङ्ग, विद्वेषण में रक्त का रंग, वशीकरण, मोहन और आकर्षण में लाल रङ्ग, मारण क्रिया में काला रंग एवं शान्ति क्रिया में श्वेत रंग का ध्यान रखें। इस प्रकार चिन्तन करना चाहिये।

शुभ दिन

प्रत्येक कर्म के अलग-अलग दिन वार होते हैं जैसे शान्ति कर्म को बृहस्पतिवार एवं विद्वेषण के लिए शनिवार इत्यादि ।

अथ षट्कर्म चक्रम्

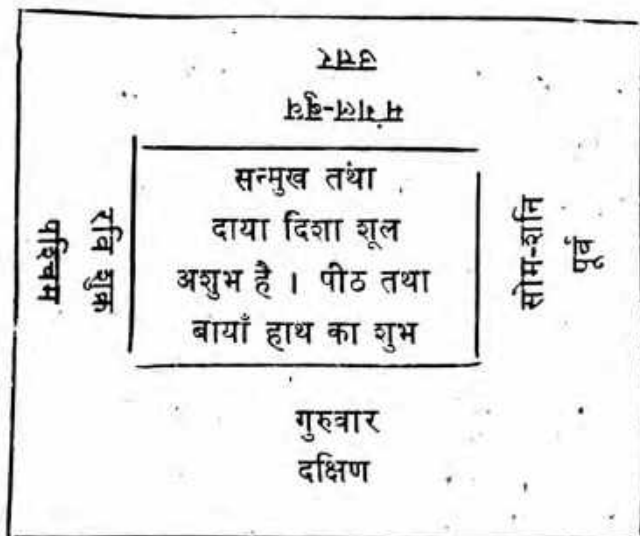
प्रत्येक कर्म के लिए तिथि और नक्षत्र का भी ध्यान रखना चाहिये ।

षट्कर्म	शांतिक	वशी	स्तम्भन	विद्वेषण	उच्चाटन	मारण
देवी	रति	सरस्वती	लक्ष्मी	ज्येष्ठा	दुर्गा	भद्रका०
दिशा	ईशान	उत्तर	पूर्व	नैऋत्य	वायव्य	आग्ने०
ऋतु	हेमन्त	वसंत	शिशिर	ग्रीष्म	वर्षा	शरद
रंग	श्वेत	लाल	पीला	लाल	धूम्र	काला

दिशाशूल

शुक्रवार एवं रविवार को पश्चिम में, शनि एवं सोम को पूर्व में, मंगल एवं बुध को उत्तर में और बृहस्पति को दक्षिण दिशा में दिशाशूल रहता है ।

दिशाशूल चक्र



मंगल बुध उत्तर दिशि कालू, सोम शनिश्चर पूर्व न चालू ।
 रवि शुक्र पश्चिम नहिं जाना, बिफै न दक्षिण करै पयाना ॥

अथ योगिनी विचार

योगिनी का विचार तन्त्र सिद्धि में बहुत आवश्यक समझ कर बताते हैं । योगिनी का वास परिवा के दिन पूर्व में, द्वितीया को उत्तर में तृतीया को अग्नि कोण में, चतुर्थी को नैऋत्य कोण में, पंचमी को दक्षिण में, षष्ठी को

दक्षिण में, सप्तमी को वायव्य कोण में और अष्टमी को ईशान कोण में रहता है ।

यह ज्ञातव्य है कि योगिनी यदि पीठ पर या बाईं ओर हो तो शुभ फल देती है एवं यदि सन्मुख अथवा दाहिनी ओर हो तो अशुभ फल देती है ।

योगिनी चक्रम्

दक्षिण पाद वायव्य

पश्चिम

वामपाद नैऋत्य

ईशान ३०।८	पूर्व १।६	अग्नि ३।११
२।० ३।२	वायें योगिनी सुख बहु देवे । दाहिन दिशि सुख सम्पति खोवे पीठ पिछाड़ी है सुखदाई । सन्मुख गृत्यु देव दरसाई ।	२।१३ दक्षिण
४।७ ५।३	४।३ ५।९	४।७ ५।३

ऊपर योगिनी का चक्र देकर भली भाँति समझा दिया गया है, ध्यान से समझ लें ।

राशि जानने के लिये नीचे के खाने में अपने जन्म राशि का पहला अक्षर देख लेवें क्योंकि और बातों के साथ ही साथ स्त्री पुरुष को प्रत्येक कर्म की सिद्धि में अपनी राशि का ज्ञान आवश्यक है। अतः थोड़ा सा वर्णन चक्र द्वारा समझाया जाता है।

राशि चक्रम्.

राशि।	अक्षर और उसका स्वामी	नक्षत्र
मेष	अश्विनी के ४ चरण चू. चे. चो. ला.	भरणी के ४ चरण ली. लू. ले. लो.
वृष	कृत्तिका के पिछले ३ चरण ई. ऊ. ए.	रोहणी के ४ चरण ओ. वा. वी. वू.
मिथुन	मृगशिरा के पिछले २ चरण का. कीं.	आर्द्रा के ४ चरण कृ. घ. ङ. छ.
कर्क	पुनर्वसु का १ चरण हो.	पुष्य के ४ चरण हु. हे. हो. डा.
सिंह	मघा के ४ चरण मा. मी. सू. मे.	पूर्वा फाल्गुनी के ४ चरण मो. श. टी. दू.

कन्या	उत्तरा फाल्गुनी के पि० ३ चरण टो. पा. पी	हस्त के ४ चरण पू. ष. ण. ङ.	चित्रा के २ चरण वे. पो.
तुल	चित्रा के २ चरण रा. री.	स्वाती के ४ चरण रू. रे. रो. ता.	विशाखा के ३ चरण ती. तू. ते.
वृश्चि	विशाखा का पि० १ चरण तो.	अनुराधा के ४ चरण ना. नी. नू. ने.	ज्येष्ठा के ४ चरण नो. या. यी. यू.
धनु	मूल के ४ चरण ये. यो. भा. भी.	पूर्वाषाढ़ के ४ चरण भू. धा. फा. ङा.	उत्तराषाढ़ का १ चरण भे.
मकर	उत्तराषाढ़ के ३ चरण भो. जा. जी	श्रवण के ४ चरण खी. खू. खे. खो.	घनिष्ठा के २ चरण गा. गी.
कुम्भ	घनिष्ठा के पि० २ चरण क्ल. गे.	शतभिषा के ४ चरण गो. सा. सी. सू.	पूर्वा भाद्रपद के ३ चरण से. सो. दा.
मीन	पूर्वा भाद्र पद का पि० १ चरण दी.	उत्तराभाद्रपद के ४ चरण दू. धा. ऋ. ज़.	रेवती के ४ चरण दे. दो. चा. ची.

तिथि विचार

नन्दा, भद्रा जया, रिक्ता और पूर्णा ये तिथि पांच प्रकार की मानी गई हैं ।

यदि शुक्रवार के दिन नन्दा, बुधवार को भद्रा, मंगलवार को जया, शनि के दिन रिक्ता और बृहस्पति के दिन पूर्णा तिथि हो तो यह समझ लो कि सिद्धि योग है-अन्यथा उसे मृच्छु योग जानिये । सिद्धि योग में कार्य करने से लाभ एवं सिद्ध प्राप्त होती है । मृच्छु योग में कष्ट एवं हानि होती है सो विचार लेवे ।

आसन विचार

प्रयोग करने से प्रथम आसन का विचार आवश्यक है क्योंकि कार्य में यदि सिद्धि की इच्छा हो तो उसीप्रकार के आसन का प्रयोग करना चाहिये ।

यथा-पुष्टि कार्य के लिये पद्मासन, शांति कार्य के लिये स्वस्तिकासन, विद्वेषण में कुक्कुटासन, उच्चाटन में अद्धं स्वस्तिकासन तथा शान्ति में भद्रासन से बैठ कर सिद्धि प्राप्त करे ।

आसन भेद

- (क) मारण प्रयोग में भैंसे के चर्म का आसन
- (ख) विद्वेषण में अश्वचर्म का आसन

- (ग) वशीकरण में मेंढा के चर्म का आसन
 (घ) आकर्षण में बाघम्बर , ,
 (ङ) उच्चाटन में ऊँट के , ,
 (च) शान्ति में हाथी चर्म के आसन पर बैठ कर
 जप करने से सिद्धि होती है। ये सब अत्यन्त
 विचारणीय हैं।

अब यहाँ ध्यान रहे—आसन पर बैठने से पहले
 उसे कूर्म चक्र की भाँति बिछाना आवश्यक है।

ध्यान रहे कूर्मचक्र के अनुसार आसन न बिछाने से
 कार्य की सिद्धि नहीं होगी।

चक्र

ईशान दक्षिण हस्त

पूर्व मुख

आग्नेय हस्त

क्ष त्र ज	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ
अं	अ इ ई	ट
श	आ ओ उ	ठ
ष	कर्म चक्र	ड
स	ओ ऊ	ढ
ह	ए लृ ऋ	
य र ल व	ऐ लृ ऋ प फ ब भ म	ण
		त थ द ध न

दक्षिण पाद बायव्य

पश्चिम

वामपाद नैऋत्य

अथ दिशा विचार

वशीकरण में पूर्व की ओर, मारण व उच्चाटन आदि में दक्षिण तथा विद्या, धन, शान्तिपुष्टि तथा आयु की रक्षा में उत्तर मुख बैठकर जप करने से सिद्धि प्राप्त होती है ।

अथ जप विचार

जप तीन प्रकार के होते हैं । वाचिक, उपांशु और मानसिक ।

जोर से बोलकर जप करने को वाचिक, स्वयं को सुनाई दे ऐसा जप उपांशु एवं जिस जप में बिलकुल आवाज न हो मानसिक कहलाता है ।

मारण में वाचिक, शान्तिमें उपांशु तथा मोक्ष क्रिया के हेतु मानसिक जप किया जाता है ।

मन्त्रों का लिंग भेद

मंत्र भी संज्ञा की तरह तीन प्रकार के होते हैं । स्त्री-लिंग, पुलिंग और नपुंसक-लिंग

जिन मन्त्रों का 'स्वाहा' में अंत हो वे स्त्री-लिंग, जो मंत्र 'नमः' पर समाप्त होवे नपुंसक लिंग एवं जो 'हूँ फट्' पर समाप्त हों पुलिंग होते हैं ।

वशीकरण शान्तिकरण में पुलिंग मंत्र का व्यवहार होता है ।

क्षुद्र एवं नीच क्रियाओं में स्त्री-लिंग मंत्र व्यवहृत होते हैं। एवं इसके पश्चात् वाली अन्यान्य क्रियाओं में नपुंसक-लिंग वाले मंत्र काम आते हैं।

शुभ कार्य चक्र

ईशान

पूर्व

आग्नेय



उत्तर

दक्षिण

वायव्य

पश्चिम

नैऋत्य

उपर्युक्त चक्रके अनुसार बैठकर मंत्र-तंत्र सिद्ध करे।

अब हम आगे रविवार के दिन आरम्भ होने वाले

प्रयोग के लिए चक्र बताते हैं।

ईशान

पूर्वरवि उत्तम

अग्निकोण सोम उत्तम

उत्तरशनि
धृति निकृष्टदक्षिण मङ्गल
कनिष्ठ

वायव्य शुक सामान्य, पश्चिम वृ० उत्तम, नैऋतबुधवारसामान्य

उपर्युक्त चक्र के अनुसार जिस प्रकार के कार्य के लिए बैठना चाहें उधर ही मुंह करके बैठे ।

मन्त्र के लिए प्रकृति वर्णन

मन्त्रकी प्रकृति जैसी हो फल भी वैसा ही होता है । यदि शीघ्र कार्य सिद्धि अभीष्ट हो, तो शनिवार से जप प्रारम्भ करे । पश्चिम मुख बैठे । जैसा कि नीचे चक्र में बताया है ।

ईशान

पूर्व

आग्नेय

उत्तर



दक्षिण

वायव्य

पश्चिम

नैऋत्य

तिथि वर्णन

कृष्ण और शुक्ल पक्ष की तिथियों में चन्द्रमा और सूर्य का अधिकार रहता है । इसलिए सूर्य के अधिकार

में तात्कालिक कार्य करें और चन्द्रमा के अधिकार में स्थिर अर्थात् बहुत काल तक रहने वाला कार्य करना उचित होता है ।

कुम्भ स्थापन की विधि

शान्तिकर्म में नौ रत्नोंसे सजाकर सुवर्ण का कलश स्थापन करे यदि सुवर्ण का न हो तो रौप्य या ताम्र से काम चलावे ।

अभिचार कर्म में लौह का कुम्भ स्थापित करे ।

मोहन कार्य में रौप्य का कुम्भ स्थापित करे ।

उत्पादन में काँच का कुम्भ स्थापन करे ।

उच्चाटन में मिट्टी का कुम्भ स्थापन करे ।

यदि कलश ठीक उपलब्ध न हो तो ताम्र का कलश सब कार्यों में समान उपयुक्त होता है ।

हवन की सामग्री

शान्ति कर्म में दूध, घी, तिल, गूलर तथा पीपल की लकड़ी लावे ।

पुष्टि कर्म में घी, बेलपत्र अथवा चमेली के पुष्पों से हवन करे ।

कन्या की प्राप्ति के लिए खीर का हवन करे ।

लक्ष्मी प्राप्ति के लिये कमलगट्टा, दही और घृत-युक्त अन्न का हवन करे ।

समृद्धि के लिये घी, बिल्वपत्र और तिल हवन करे ।

आकर्षण की इच्छा वाला चिरौंजी और बिल्वपत्र का हवन करे ।

वशीकरण में राई और लवण का हवन करे ।

उच्चाटन में कौवे के पंख का हवन करे ।

मोहन प्रयोग में भ्रतूरे के बीजों का हवन करना चाहिये ।

मारण में विष को खून में भिगोकर उसका हवन करे ।

हवन के लिये शुद्ध मुद्रा

मुद्रा तीन प्रकार की होती है । हवन करते समय इसका ध्यान रखना चाहिये ।

हाथ को सिकोड़कर जो आहुति डाली जाय उसे शूकरी मुद्रा कहते हैं ।

कनिष्ठा उंगली को छोड़ कर जो हवन में आहुति डाली जाय उसे हंसी मुद्रा कहा जाता है ।

जो आहुति कनिष्ठा एवं तर्जनी उँगलियों के योग से डाली जाय उसे मगी मुद्रा कहा जाता है ।

माला का निर्णय

आकर्षण कार्य में मतवाले हाथी के दाँत की माला वशीकरण में और पुष्टि में मूँगा, हीरा तथा मणि की माला विद्वेषण तथा उच्चाटन में सूत अथवा मनुष्य के बाल में घोड़ेके दाँत पिरोकर बनाई हुई माला चलती है।

मारण प्रयोग में मृतक पुरुष के दाँत या गदहे के दाँत की माला प्रयोग होती है, पर मृतक की मृत्यु युद्ध में न हुई हो।

सर्व प्रकार की कामनाओं में मणि शंख और कमल गट्टे की माला बनानी चाहिये। रुद्राक्ष की माला से जप किया हुआ मन्त्र फलदायी होता है।

स्फटिक, मणि मुक्ता, रुद्राक्ष की माला से जप करने पर सरस्वती की प्राप्ति होती है।

तुलसी की माला

यह माला बहुत शुद्ध होती है। इस माला से शुद्ध मन्त्रों का ही उच्चारण करना चाहिये। केवल साधक को स्तम्भन का प्रयोग ही इस पर करना चाहिये। जो भी मन्त्र बोले जायें उनका उच्चारण स्पष्ट होना चाहिये और उनके लिये भावना भी शुद्ध होनी चाहिये।

मूँगे की माला

लाल रङ्ग के दानों को मूँगा कहा जाता है। यह एक प्रकार के स्तर द्रव्य से तैयार की जाती है। इसको शुद्ध नहीं माना गया है। इसका उपयोग मारण की सिद्धि करते समय किया जाना चाहिए। मूँगे की माला को पहले लोहबान की धूनी दे देनी चाहिये। धूप की धूनी कभी भूलकर भी न दी जाय। लोहबान की महक से मारण प्रेत आत्मायें प्रसन्न होती हैं और कहा जाता है कि मूँगे की माला में छियासी दाने होने चाहिये।

रुद्राक्ष की माला

रुद्राक्ष एक किस्म का जंगली फल होता है। जो ऊँचे पहाड़ी स्थानों में पाया जाता है। इसको वैदिक रीति से बहुत पवित्र माना गया है और इसके गुणों की व्याख्या कई तरह से की गयी है। कहा जाता है कि असली रुद्राक्ष पर जाप करने से जीवन की तमाम इच्छाओं की पूर्ति बड़ी ही उत्तम रीति से होती है। नेपाल की ओर रुद्राक्ष अधिक मिलता है। वशीकरण और आकर्षण की साबनाके लिए रुद्राक्ष की माला होनी चाहिये। रुद्राक्ष की माला में एक सौ आठ दाने होने चाहिये। मंत्र का जाप करते समय ध्यान रखना चाहिए कि माला का कोई भी

अंग पैर से न छुवाये । पैर के पास तक आने से र्भ सिद्धि में गहरी कमी हो सकती है और उसका फल बहुत अंश तक उल्टा हो जाने की सम्भावना होती है । रुद्राक्ष की माला को पहले शुद्ध जल से धोना चाहिये, फिर कपड़े से पोंछ कर उनके दानों पर सिंदूर का हाथ फेरना चाहिए और धूप इत्यादि देकर उसकी शुद्धि करना लाभदायक है । इसकी माला का प्रयोग रक्त चाप की बीमारी में भी लाभदायक सिद्ध हुआ है ।

भेषज की माला

एक प्रकार का काला फल जिसका आकार गोल बेर की तरह होता है । उसकी भी माला बनाई जाती है । इस माला का प्रयोग अधिकतर विद्वेषण की सिद्धि करते समय करना चाहिये । द्वेष कराने के लिए इष्टकी साधना करनी पड़ती है । वह इष्ट काली आकृति वाले पदार्थों से बहुत प्रसन्न होता है । इस माला में गिनकर ३६ दाने डलवाने चाहिये । इसके दानों को काले डोरे में ही पिरोना चाहिये । क्योंकि काले दाने यदि किसी और तरह के डोरे या तार से पिरोये जायेंगे तो उनका कार्य एक हद तक समाप्त हो जायेगा । माला में हर चीज का ध्यान रखना चाहिये । क्योंकि सिद्धि के लिए मालायें विशेष रूप से तैयार करायी जाती हैं । इस काम में आने वाली मालायें बाहर से नहीं मिल पातीं । मालायें बनवाते समय

इन तमाम बातों का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। तन्त्र मन्त्रों में जरा सी बातें भी बहुत काफी महत्व को होती हैं। अन्य कई तरह का मालाओं का उपयोग भी किया जा सकता है। जैसे शंख और कौड़ी इत्यादि की बनी हुई मालायें जो मिल सकें।

स्थायर माला

कठिन प्रयोग के करने के लिए जैसे मारण सिद्धि के लिए हड्डियों की माला बनाई जाती है। इस माला का बनाना बहुत कठिन है और बहुत ही बड़े तान्त्रिक ही इसे बना पाते हैं। माला बनाने के लिए उस तेली के गुर्दे के पास वाली हड्डियाँ चाहिये जो पंचकों में शनिवार के दिन मरा ही। उसकी हड्डियाँ नीचे लिखे मन्त्र से एक लाख पच्चीस हजार तार फूँकी जाती है।

‘ॐ ब्रह्माण कालैयः नमैः दातव्यः’

इस मन्त्र का पाठ करके उन हड्डियों को गङ्गाजल या नदी के जल से धोने के बाद उन्हें गूगल की इक्कीस बार आहुति देनी चाहिये। आहुति देने के बाद इन हड्डियों को गोल-गोल काट कर दाने बनाकर ताँबे के तार में पिरोने चाहिये। इस बात का विशेष ध्यान रक्खा जाय कि माला में केवल तेरह ही दाने हों, न तो एक भी ज्यादा होने पाये और न कम ही।

माला फेरने में अँगुली निर्णय

आकर्षण में अँगूठे और अनामिका उँगली से, शान्ति, स्तम्भन और वशीकरण में अँगूठे और बीच की उँगली से विद्वेषण और उच्चाटन में अँगूठा और तर्जनी से और मारण प्रयोग में अँगूठा और कनिष्ठा उँगली से माला फेरने से सिद्धि प्राप्त होती है—यह तान्त्रिकों का मत है।

मन्त्र सिद्धि के पूर्व कर्म

अब्वल तो जो मनुष्य मन्त्रों को नित्य प्रति लिखता रहता है, उसके घर में—भय, चोर, भूत-प्रेत, पिशाचादि कदापि प्रवेश नहीं करते। मन्त्रों में विश्वास होना चाहिये तथा मन्त्र शुद्ध और तरीके से हों तो अवश्य ही सिद्ध हो जाते हैं।

प्रथम स्नानादि से निवृत्त हो करके एकान्त स्थान में मन्त्रों को लिखे और विधिपूर्वक एक दिन पूजन करता रहे। तीन रात तक पृथ्वी पर ब्रह्मचर्य रख कर शयन करे। तीसरे दिन मन्त्र का देवता या देवी स्वयं कह जायेगी कि मन्त्र—सिद्ध होगा या नहीं। यदि न आवे तो समझो मन्त्र सिद्ध नहीं होगा।

द्वितीय अध्याय

अथ मन्त्र-तन्त्रों का वर्णन

स्तम्भन प्रयोग

अग्नि स्तम्भन

वसां गृहीत्वा माण्डूकी कौमारी रस मिश्रिता ।
लेपमात्र शरीराणामग्निस्तम्भं प्रजायते ॥ १ ॥
अर्कं दुग्धं समादाय कुमारी सह मेलयेत् ।
लेपमात्रे शरीराणि अग्नि स्तम्भं प्रजायते ॥ २ ॥
कदली रस समादाय कुमारी रस पेपितम् ।
अर्कं दुग्धं समायुक्ताग्निस्तम्भं प्रजायते ॥ ३ ॥
पिप्पली मरिचं शुण्ठी चर्वयित्वा पुनः पुनः ।
दीपांगारे नरेर्भुक्ते स न दह्यते क्वचित् ॥ ४ ॥

अर्थात् :—

घोक्वार के गूदे के रस में मेढक की चर्बी मिलाकर शरीर पर लेप करने से आग का असर नहीं होता । १ ॥

आक के दूध में घोक्वार का गूदा मिलाकर शरीर पर लेप करले तो आग से शरीर नहीं जल सकता । २ ॥

केले के रस में घीक्वार का रस मिला कर लगाने से शरीर नहीं जलता ॥३॥

पीपल, मरिच, सोंठ चबाकर मुँह में अंगार रखने से नहीं जलता ॥४॥

शत्रु मारण यन्त्र

ॐ नमः कालरुद्राय शत्रु भस्मी कुरु कुरु स्वाहा.

विधि:—

यह मन्त्र किसी त्योहार के दिन एक लक्ष जाप करके सिद्ध करे फिर प्रयोग करने से पहले इसका अष्टोत्तर शत जप करे। जप करते समय मन्त्र में शत्रु के स्थान पर उसका नाम कहे।

सर्वोपरि मन्त्र

ॐ पर ब्रह्म परमात्मने नमः उत्पत्ति स्थिति प्रलय-कराय ब्रह्म हरिहराय त्रिगुणात्मने सर्वकौतुकान् दर्शय दर्शय दत्तात्रेयाय नमः तन्त्रसिद्धि कुरु स्वाहा।

विधि:—

उपर्युक्त मन्त्र को प्रथम किसी त्योहार या दिवाली के अवसर पर आरम्भ करे, उसका एक लक्ष जप और हवन आदि करके सिद्ध करके किसी कार्य के आरम्भ में अष्टोपचार सहित जप करे तो सिद्धि मिले।

मोहन मन्त्र

ॐ उडामारश्वराय सर्व जगत मोहिनाम हूँ फट
स्वाहा ।

सिद्धि करने की विधि :—

इस मन्त्र को एक लक्ष बार जप कर सिद्धि कर
लेवे फिर आवश्यकता पड़ने पर सात बार पढ़ के तिलक
करे तो सर्वजन मोहन होय ।

शराब नष्ट होय

कृतिका नक्षत्र में आक की जड़ लाकर सोलह
अंगुल की एक कोल लेकर शराब वाले के घर में डाले
तो उसकी मदिरा नष्ट हो जावे ।

धोबी के कपड़े नाश होवे

ॐ कुम्भे स्वाहा ।

विधि :—

पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में चमेली की लकड़ी
उंगली के माप की कील लावे और धोबी के घर में
गाड़े व सौ बार मन्त्र से उस कील को अभिन्वित करे
तो वस्त्रों का नाश होय । मगर नक्षत्र और क्रिया ठीक
होनी चाहिये ।

सर्व मोहिनी तिलक

कुंकुम और सिन्दूर लाकर गोरोचन के साथ मिलावे फिर आँवले के रस में मिलाकर सुन्दर और बाँका तिलक लगाकर निकले तो सब लोग वश होंगें ।

दूसरे प्रकार का तिलक

सहदेई के रस में तुलसी के बीज मिलाकर रविवार को तिलक करे सब देखने वाले वश में होंगें ।

तीसरा तिलक

मनः शिला और कपूर लाकर केले के रस में मिला कर तिलक करे तो सब लोग वश में होंगें ।

सभा-मोहिनी

केसर, गोरोचन, पत्रज, मनःशिला इन्हें जल में पीस कर तिलक लगावे फिर जिससे बात करे वही वश में होय ।

स्त्री मोहिनी

कच्छप का नख, किरगस लाकर मुर्गे के पंख

और सिगरफ के साथ मिला कर रक्खे । किसी सुन्दरी के सिर पर डालते ही वह वश में होय ।

दूसरी मोहिनी

जीरा, कुटकी, आक की जड़ और मोथा—इन सब को खून के साथ पीसे और तिलक लगावे तो स्त्री देखते ही वश में होय ।

राज मोहिनी

नील कमल, गूगल और उसके बराबर अगर मिलाकर अपने सब बदन पर धूनी दे फिर सभा में जाय तो राजकुल वश में होय ।

मोहिनी तिलक

बेलपत्र को लाकर छाया में मुखाले फिर कपिला गाय के दूध में मिलाकर गोली बाँधे फिर जब इच्छा होय उस गोली को घिस कर तिलक करके निकले तो लॉग वश में होय ।

पशु-पक्षी मोहिनी तन्त्र

कूट बब काकड़सिगी लाय, धूप बनावे इन्हें मिलाय ।
देह वस्त्र मुख लेय लगाय, पक्षी, पशु मोहित हो जाय ॥

* अथ स्तम्भन प्रयोग *

धसां गृहीत्वा माण्डूकी कौमारी रसमिश्रिता ।
लेप मात्रशरीराणि स्तम्भन च प्रजायते ॥

धीक्वार के रस में मण्डूक की चर्बी मिलाकर लेप
करे तो अग्नि से न जले ।

बुद्धि स्तम्भन

मगरा, ओंगा, सरसों (सफेद) और सहदेई, जमी-
कन्द बन अकवन (सफेद) लाकर दो दिन लोहे के
वर्तन में धरे फिर पीस छान कर लुगदी बनाकर तिलक
लगावे, तो देखने वाले की बुद्धि नष्ट हो जावे ।

शस्त्र स्तम्भन

शुभ नक्षत्र में लावे ओंगा की जड़, ताको पीसे लेप बनावे ।
तन पर लेप युद्ध में जावे, ता वह शस्त्र-घात ना खावे ॥

तलवार की धार बाँधे

मन्त्र :—

ॐ नमो धार अधर कधार बाँधो
सार बार बाँधो—तीन कटे
बार न भागे—चोर खाँड़ा की धार में
ले गया हनुमत वीर ।

उपर्युक्त मन्त्र को पढ़कर रास्ते की धूल उठाकर तलवार की धार पर डाल दे तो तलवार बँध जायेगी ।

* लोक वशीकरण तन्त्र *

बेलपत्र, नमक और विजोरा लेकर बकरी के दूध में पीसे फिर तिलक लगावे तो त्रिलोक वशीभूत हो जायगा इसमें सन्देह नहीं ।

श्रेष्ठ वशीकरण

घी कुमारी को जलावे, भाग के बीज मिलावे ।
मस्तक पर तिलक लगावे, जगत को वश में करावे ॥

इसके साथ यह मन्त्र भी पढ़े :—

मन्त्र :—

बिसमिल्लाह दानाकुल्हु अल्लाह यथाना, दिलह
सख्त तुम हो दाना, हमारे बीच फलाने को करो
दीवाना ।

ऊपर जहाँ फलाना शब्द है—वहाँ प्रेमी का नाम
कहे ।

—:०:—

मोहिनी पुतली का वशीकरण मन्त्र

बाँधू इन्द्र को बाँधू तारा ।

बाँधू बिन लोहे को धारा ।

उठे इन्द्र न बोले गाँव ।

लेख साख पूरी हो जाय ।

बन ऊपर लोका कड़ सियाँ ऊपर लीं सूत ।

मैं तो बन्धन बाँध्यो सांसु समुर जाया पूत ॥

मन बाँधू मनयन्त बाँध, विद्या दे साथ । चार खूँट
लो फिर आय फलानी फलाने के साथ कुरु कुरु स्वाहा ।
प्रयोग विधि :—

विद्वेषण, मारण, स्तम्भन और उच्चाटन में कमकेद
कट का जाप किया जाता है और अग्नि ग्रह में केवल हूँ
फट् और अग्नि कर्म में स्वाहा यह कह कर होम. जाप
करना चाहिये ।

विधि:—

इकतालीस बिनौले लाकर एक एक को एकतालीस मंत्रों के साथ अर्द्ध रात्रि के समय अग्नि में डालता जावे तो मनोरथ पूर्ण होवे । प्रथम इक्कीस दिन तक इक्कीस बिनौले पर इक्कीस बार मन्त्रपढ़ कर जलावे तो सिद्धि होवे ।

राजा वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुरु का ।

जिला बाँधू, शहर बाँधू, अग्नि बाँधू

बारबन बाँधू शिव-पुत्र प्रचण्ड बाँधू

राजा का इकरसा आसन छोड़ मुझे

बेसन देशी अलसी जौ को चन्दन ललाट

टीको काड़ी सिसत्रन कहाऊँ, पौर गुरु की ।

उक्ति मेरी कवित्त करो मन्त्र इश्वरो वाच ।

विधि:—

धूप, दीप, नैवेद्य लाय रख पार्वती का ध्यान धरे ।

और शनीचर के दिन इसका १२१ जाप करे ।

इसी तरह २१ शनीचर जपे सिद्धि को प्राप्त करे ।

इसके बाद कुंकुम, चन्दन, गोरोचन मिलाय गाय

के दूध में पीस तिलक लगाय राणा के पास जाय तो वह वश में होवे ।

राजा वशीकरण मन्त्र

ॐ धुं धुं वीन धा धा
लवजन्त द्रवित दहा जान कहता,
वह मातंगी मयान अमा अमा,
आंक्ष क्ष ।

श्वेत रेशमी वस्त्र को धारे । फिर एक अच्छे मोती की माला से जप करे, पुनः श्वेत दुर्गा और कामिनी पुष्प की अग्नि—आहुति करे तो राजा वश में होवे ।

वेश्या वशीकरण मन्त्र

ओ कनक कानी आठा बाठ शूल राजा पांचाल
पांचाल ओं यं यं यं यं ।

विधि—

बेल के पेड़ के तले काले रङ्ग के हरिण के चर्म पर बैठकर श्वेत काँसनी के पुष्प और बेल पत्र के मन्त्र पढ़ अग्नि में आहुति डाल वेश्या का ध्यान करे तो वश में होय ।

स्त्री वशीकरण

चिन्ता की भस्म, वच कूट, केशर और गोरोचन यह सब बराबर लावे चूर्ण बनावे—जिस नारी के सिर पर डारे सो नारी तुझ पर अपना सब कुछ वारे ।

द्वितीय स्त्री वशीकरण

काला लवण भौंरे का पंख लावे तगर मूल लावे श्वेत काग कौड़ी लावे । तीनों का चूर्ण बनावे स्त्री के सिर पर जा डारे । स्त्री अपना तन मन वारे ।

तृतीय स्त्री वशीकरण

सफेद आक की जड़, हरताल, उल्लू का रक्त तथा अनामिका अंगुली का रक्त मिलाकर गोली बनाये । पुरुष नक्षत्र वाले रविवार के दिन इसका तिलक लगाकर स्त्री के पास जाने से स्त्री वश में हो जाती है ।

स्त्री वशीकरण लेप

सैंधा नमक, कबूतर की बीट व शहद पीस कर लेप बनावे और इसे फिर रमणकाल में अपनी इन्द्रिय पर लगावे ।

रमण करे यदि नारी से तो आकर्षण में होवे बृद्धि ।
नारी दासी होवे रति में मिले पुरुष को पूरी सिद्धि ॥

द्वितीय लेप

गोरोचन, कुरुप, केशर चन्दन लेकर घतूरा का रस लाय पीसे भली भाँति इन सबको रस में लैले लेप बनाय रमण समय इन्द्रिय पर लेप रमण करे तो मस्ती छाया नारी वशी भूत हो जावे, दिन दिन फिर आनन्द बढ़ाय

नवीन वशीकरण

सरसों, देवदारु को एकत्र करके पीस कर गोली बनावे फिर मुँह में रखकर जिससे बात करे वह वश में हो जावे ।

वशीकरण पुतली का भेद

शनिवार के दिन एक पुतली बनावे । फिर उसी पुतली के उदर में प्यारी का नाम लिखे । फिर १०८ बार मन्त्र पढ़कर उसको दिखावे और पुतली को छाती से लगाये रखे तो मन चाही स्त्री बचै न होकर पहुँचे ।

मन्त्र निम्नलिखित है:—

ओ३म् छुं छुं छां छ ।

स्वामी वशीकरण

गाँधली के फल की गुठली लेकर माला बनावे फिर सूर्य के पर्व के अवसर पर नदी के किनारे अनारस के पेड़

के नीचे सोमवती अमावस्या के दिन कुशासन पर बैठकर जप करे तो स्वामी वश में हो ।

पति वशीकरण

* मंत्र *

ॐ ह्रीं धोक्रो क्रो, ठ ठ

पड़वा परेवा (फाख्ता) पक्षी वश में करके इस मंत्र को पढ़कर उसका मांस खावे तो पति वश होय ।

द्वितीय वशीकरण

उल्लू का मांस तथा बकरे का मांस दोनों को जल में मिलावे तो पति वश में रहे ।

वशीकरण बुकनी

चिता की राख, कूट, वच, मगर की चर्बी और कुसुम को पीस कर स्त्री के सिर पर छोड़े तो वह जन्म भर दासी रहे ।

ॐ इति द्वितीयो अध्यायः ॐ

तृतीय अध्याय

* यन्त्र वर्णनम् *

शत्रु का शरीर फूलने का यन्त्र



इस यन्त्र को कागज पर लाल स्याही से लिखकर उस कागज को आक (मदार) के पेड़ में घागे से बाँध आवे । ग्यारह दिन के बाद उस कागज को खोल लावे तथा उसकी पीठ पर उसका नाम लिख कर उसी के घर फेक आवे तो उसका पेट फूल जावे ।

बाजार नष्ट करने का यन्त्र



विधि :—

- (१) इस मन्त्र को अश्लेषा नक्षत्रमें दुश्मन की दुकान पर बैठकर लिखे तो दुकान नष्ट होय ।
- (२) इस यन्त्र को १०८ पीपल के पत्तों पर हथिनी के दूध से लिख कर उन पत्तों को महीन-महीन पीस कर एक घड़ा जल में मिलावे और बाजार में छिड़क देवे तो बाजार नष्ट हो जावे ।

परदेशी को बुलाने का यन्त्र



विधि :—

- (१) इसी यंत्र को मार्ग की धूल से कागज पर लिखे और कोड़ों से उस पर मारे तो आदमी आ जावे ।
- (२) इसी यंत्र को तालाब की मिट्टी लेकर बड़ के पत्ते पर लिखे और परदेशी का नाम भी लिखे व आने वाले की दिशा में गाड़ दे तो फौरन चला आवे ।

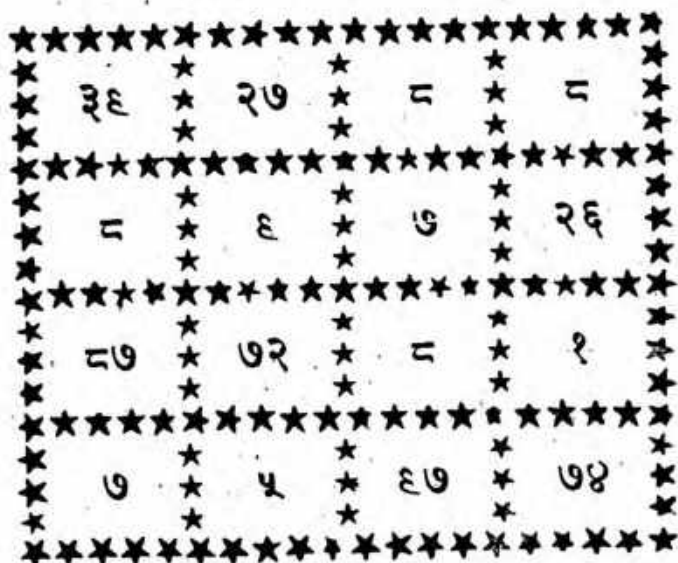
मस्त होने का यन्त्र



विधि :—

- (१) इस यन्त्र को स्वाती नक्षत्र में भोजपत्र पर शूकरी (सुअरी) के दूध से लिख कर पुरुष कमर में बाँध कर स्त्रीसे भोग-विलास करे तो मस्ती अधिक आवे।
- (२) अगर कोयले से किसी ठीकरे पर लिख कर दूध के साथ दही में जमा दे, फिर सुबह निकाल कर पीस कर आटे में मिला कर देवे। जो उस आटे की रोटी खावेगा मस्त हो जावेगा।

स्त्री वशीकरण यन्त्र

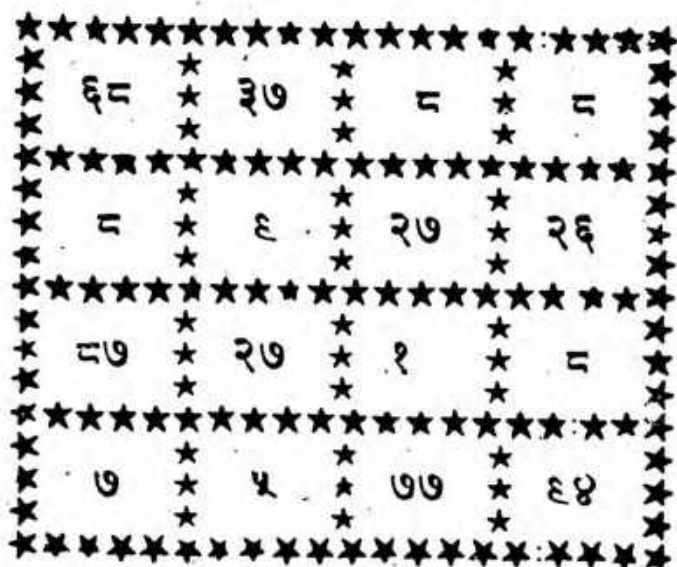


विधि :—

(१) इस यन्त्र को चन्दन अथवा स्त्री की योनि-रज से कागज पर या हथेजो पर लिख कर जिस स्त्री को दिखावे तो वह अवश्य वशीभूत हो जावे ।

(२) इस यन्त्र को चन्दन से लाल रङ्ग के कागज पर लिख कर तथा इनमें भिगो कर रखे । जिस औरत को वश में करना हो उसकी साड़ी में पिन के साथ लगा दे तो वह औरत वश में हो जावे ।

वचन सिद्धि यन्त्र



विधि :—

(१) इस यन्त्र को कुलंजन के रस से भोजपत्र पर लिखे सोने के मादुली (ताबीज) में भर कर गले में बांधे तो वाक-सिद्धि प्राप्त हो ।

(२) इस यन्त्र को दूध से लाल रङ्ग के कपड़े पर लिख कर तथा उसका ताबीज बनाकर बांधे तो अवश्य वचन सिद्धि हो जाये ।

मसान जगाने का यन्त्र

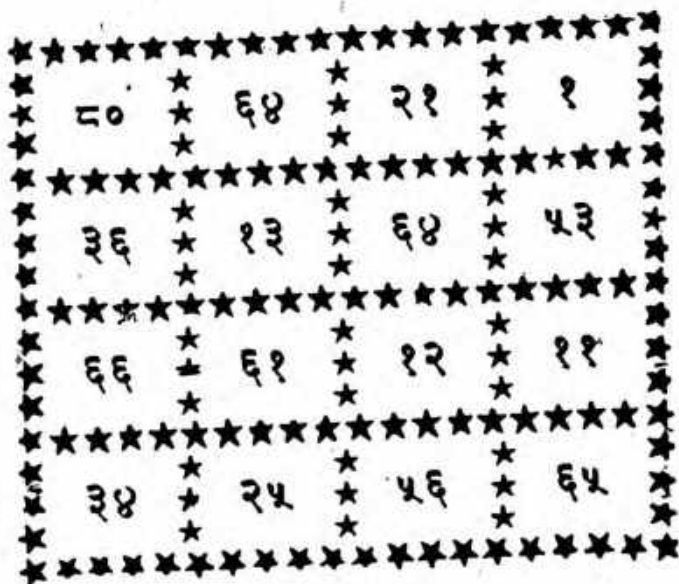


विधि :—

(१) इस यन्त्र को मदिरा से मुर्दे की खोपड़ी पर लिखे तो आवाज हो और मसान जागे ।

(२) इस यन्त्रको कागज पर स्मशान की राख से लिखे और उसे मुर्दे के नीचे रख कर ऊपर से मदिरा की धार लगावे तो मसान जाग जावे ।

डाकिनी यन्त्र



विधि :—

- (१) इस यन्त्रको खैर की लकड़ी के कोयले से चर्म पर लिखे तो समस्त डाकिनियाँ लिखने वाले के पास आ जावें।
- (२) इसी यन्त्रको नीबू के रससे कोरे कागज पर लिख कर मशान के स्थान में पीपल के पेड़ के नीचे गाड़ देवे तो प्रयोग कर्त्ता के पास डाकिनियाँ आवें।

विलेख होमे का यन्त्र



विधि :—

इस यन्त्र को ढाक के पत्ते पर चावल के माँड से लिखे। ढाक के पत्ते को २१ दिन तक स्मशान में गाड़ कर दबा दे। फिर जिस धर में विरोध कराना हो उस धर में फेंक कर पश्चिम दिशा में मूत्र-त्याग करे तो विरोध हो जावेगा।

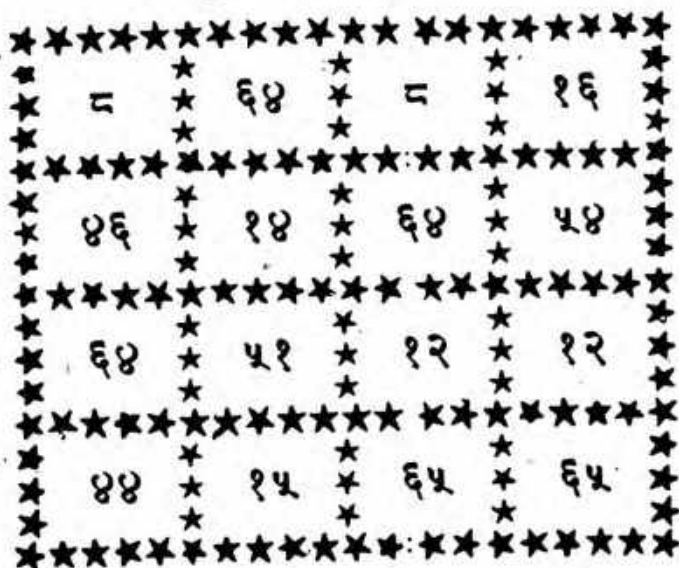
भूत-प्रेत नाशक यन्त्र



विधि :—

- (१) इस यन्त्र को असगन्ध से भोजपत्र पर लिखे । वर में लिखे तो भूतप्रेत का भय जाता रहे ।
- (२) इसी यन्त्र को रौप्य [चाँदी] की तश्तरी पर स्मशान की मिट्टी लाकर उससे लिखे फिर भूत के सताये हुए रोगी के सिर पर दो मिनट रख कर तालाब में फेंक आवे तो भूत-प्रेतादि भाग जावें ।

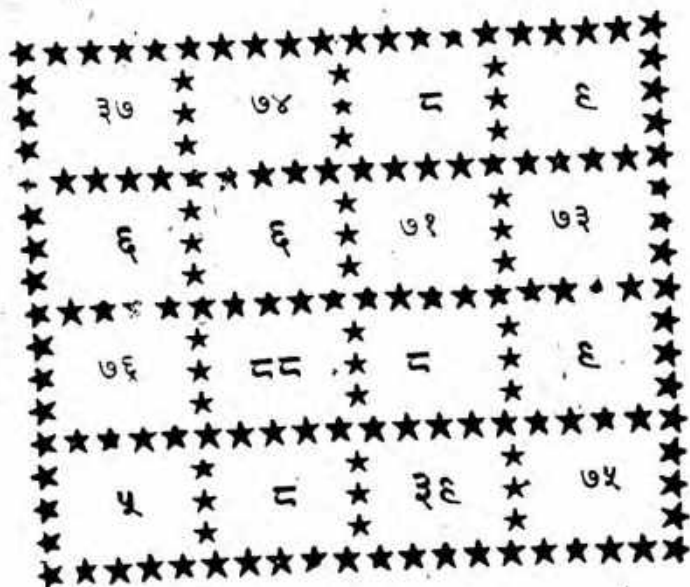
जुआ जीतने का यन्त्र



विधि :—

- (१) इस यन्त्र को गोरोचन, केशर और असगंध से भोज पत्र पर स्वाती नक्षत्र में लिखें और धूप दीप देकर पूजा करें फिर दाहिने हाथ में बांधे तों जुआ जीते ।
- (२) इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखें फिर विरोधी पक्ष के पैर के नीचे रख दे और कागज पर लिख कर अपने पैर के नीचे रख लें तो अवश्य जीते ।

कुत्ता भूँकने का यन्त्र

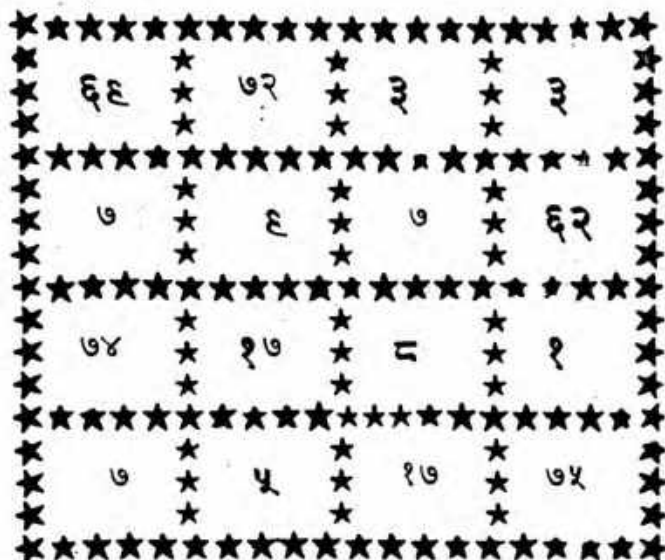


विधि :—

(१) इस यन्त्र को शनिवार के दिन काली स्याही से कुत्ते के कान पर लिख दे तो कुत्ता भूँकता फिरे ।

[२] इस यन्त्रको बेल के पत्ते पर पजावे [ईंट के भट्टे] की मिट्टी से लिख कर जिस कुत्ते को बेल का पत्ता खिला दे तो वह कुत्ता भूँकता फिरे । [पत्ते को पीस कर दूध में मिलाकर कुत्ते को पिलावे]

मोहनी यन्त्र

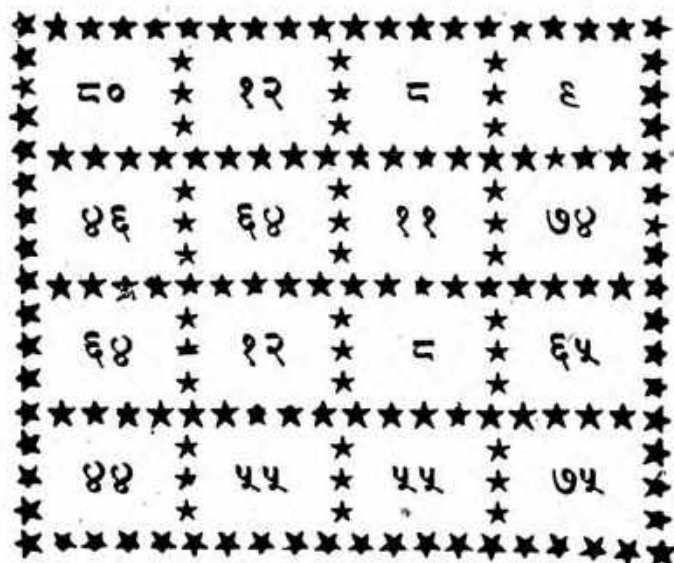


विधि :—

(१) इस यन्त्रको नारी के दूध से भोजपत्र पर पुष्य नक्षत्र में लिख कर बायें हाथ पर बाँधे तो नारी दासी हो जावे ।

[२] इस यन्त्र को चंदन से लाल रंग के कागज पर लिख कर तथा इत्रमें भिगो कर जिस नारी को वश में करना हो उसकी साड़ी में लगा दे तो वह वश में हो जावे ।

कलह होने का यन्त्र



विधि :—

- (१) इस यन्त्रको मंगलवार के दिन कुम्हार के आँवे से निकले हुये ठीकरे पर उल्लू के पंख की कलम से अपने खून से लिखकर विरोधी के घर में फेंक दे तो अवश्य कलह हो ।
- (२) इस यन्त्र को आक पत्र पर कपिला गाय के गोबर से लिखे और दुश्मन के छत पर फेंक दे तो अवश्य कलह हो ।

व्यापार वृद्धि यन्त्र



विधि :—

- (१) इस यन्त्र को दीवाली के दिन दूकान पर लाल चंदन से लिख दे तो व्यापार में अधिक लाभ हो ।
- (२) इस यन्त्र को भोजपत्र पर असगन्ध से शुभ दिन में लिखकर दूकान पर अपने गल्ले में डाल दे तो व्यापार में अधिक लाभ हो ।

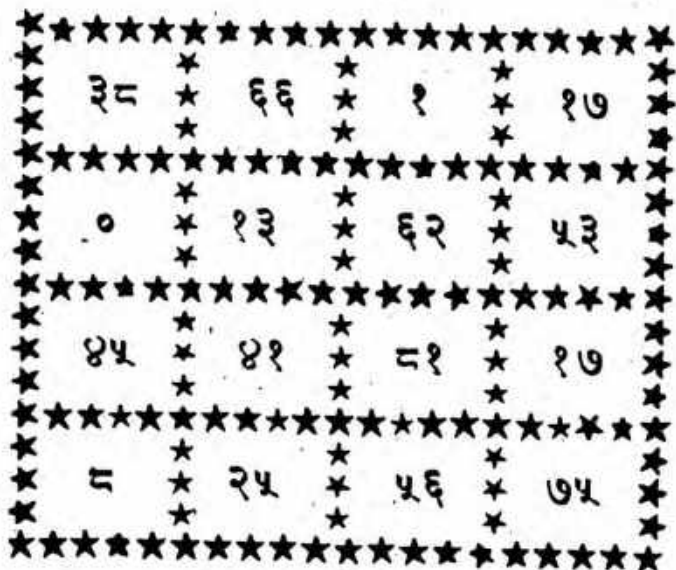
नामर्द बनाने का यन्त्र



विधि :—

- (१) इस यन्त्र को रेशम के कपड़े पर गौरोचन से जिस आदमी का नाम लिखकर उसके पैर के नीचे रख दे तो वह पुरुष नामर्द हो जाये ।
- (२) इस यन्त्र को भोजपत्र पर तालाब की मिट्टी लाकर लिखें और अष्टगंध आदि देकर जिस मनुष्य को दिखावे तो वह नामर्द हो जाये ।

अधिक भोजन खाने का यंत्र



विधि :—

- (१) इस यंत्र को करकेटी के रक्त से भोजपत्र पर लिखें और चूल्हे के पीछे गाड़ दें तो सब खा जावे ।
- (२) इस यंत्र को चन्दन से भोजपत्र प लिखे और भोजन करते समय अपनी थाली के नीचे रखे तो अधिक भोजन करे ।

चाक पर बासन सटने का यंत्र



विधि :—

(१) इस यन्त्र को खैर की लकड़ी के कोयले से कुम्हार के चाक पर लिख दें तो बासन चाक ही पर सट जाय ।

(२) इस यन्त्र को लाल कागज पर मौलश्री के रस से लिखे और कुम्हार के चाक के नीचे गाड़ आवे तो उसका बासन एक भी साबूत न उतरे, अर्थात् फूट जावे ।

रति कार्य में पराक्रमी होने का यन्त्र



विधि :—

- [१] इस यन्त्र को स्त्री की योनि से छुटे हुये पानी से लिखकर विषय करे और यन्त्र को देखता जाये तो अधिक पराक्रमी हो ।
- (२) इस यन्त्र को जच्चाखाने की मिट्टी लाकर लिखे तथा रात को खाट के नीचे भोग करते समय रखे तो पराक्रमी बने ।

पुरुष वशीकरण यन्त्र



विधि :—

- (१) इस यन्त्र को पान के रस से लिखें और जिस पुरुष की बांह पर बांध दे तो वह पुरुष स्त्री के वश में हो जावे ।
- (२) इस यन्त्र को असगंध से भोजपत्र पर लिखे और जो स्त्री अपनी साड़ी में बांधे तो उसका पुरुष उसके वश में हो जाय यह मेरा निश्चय है ।

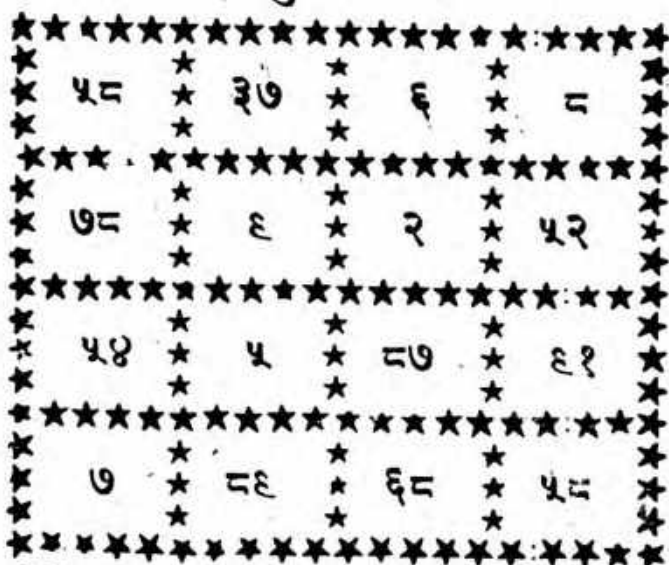
काम नाशक यन्त्र



विधि :—

- (१) इस यन्त्र को अपने रक्त से पुण्य नक्षत्र में लिखें और अपने पास रख लें तो काम वासना न सतावे ।
- (२) इस यंत्र को सफेद कागज पर औरत के रक्त से शुभ घड़ी में लिखें और स्त्री के पास जाते समय अपने पास रखें तो काम (विषय वासना) न सतावे ।

शत्रु मारण यन्त्र



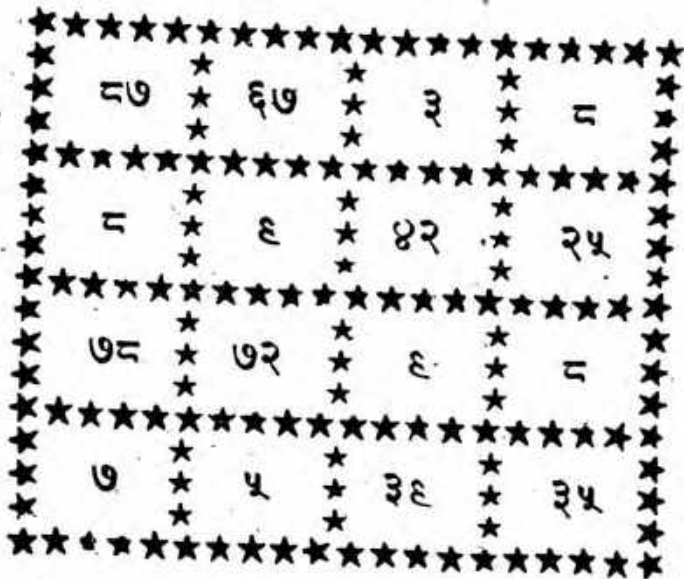
विधि:—

(१) इस यन्त्र को हाथी के दाँत से सफेद कागज पर लिखे और मरघट में गाड़ दे तो शत्रु की मृत्यु हो ।

(२) इस यन्त्र को पेड़ के नीचे की जड़ लाकर सफेद कागज पर लिखे और उसके रहने के स्थान पर गाड़ दे तो अवश्य दुश्मन मर जाय ।

यदि जीवित बच जावे तो अमल करने की रीति की कमी समझो ।

शत्रु मुख भंजन यन्त्र



विधि:—

(१) इस यन्त्र को सफेद कागज पर लोहे की कलम से लिख कर शत्रु का नाम लिखे और उस पर जूता मारे जावे तो शत्रु का मुख भंजन हो जावे ।

(२) इस यन्त्र को गधे की लीद से सफेद कागज पर लिखे और उसे भुजा पर बांधे तो शत्रु का मुख अवश्य भंजन हो जाय ।

शत्रु भय नाशक यन्त्र

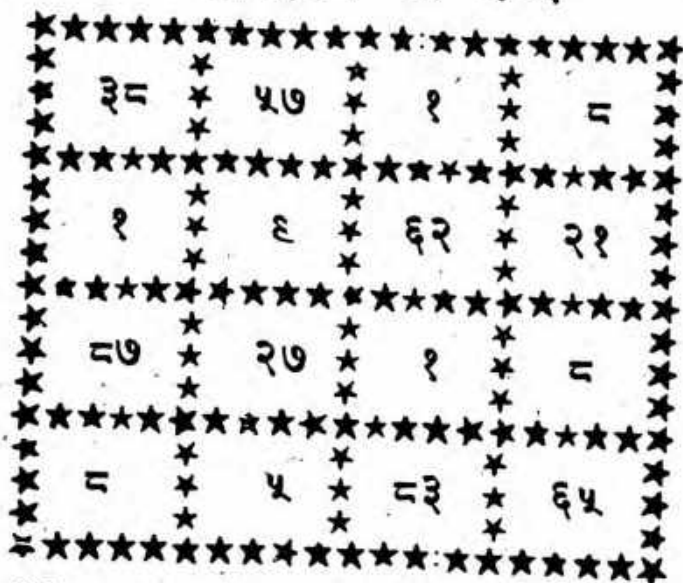


विधि :—

(१) इस यन्त्र को भोजपत्र पर घतूरे के रस से लिखे और गले में बांधे तो शत्रु का भय न रहे ।

(२) इस यन्त्र को सफेद कागज पर आक के दूध से लिखे और सिद्धि के नियमानुसार सिद्ध करके अपने पास रखे तो कभी शत्रु से भय न रहेगा ।

कष्ट छूटने का यन्त्र



विधि :—

(१) इस यन्त्र को काँसा के पात्र पर गुलाब के रस से लिखें और उसको धो दे, उस पानी को गर्भवती स्त्री को पिलावे तो उसका कष्ट चला जावे ।

(२) इस यन्त्र को लाल कागज पर गुलाब की कलम भेंस के दूध से लिखे और गुग्गुल की धूप देकर जिस स्त्री को दिखावे तो उसका कष्ट दूर हो जावे ।

राज-मान यन्त्र



विधि:—

(१) इस यन्त्र को भोजपत्र पर चमेली की कलम से लिख कर अपनी भुजा पर बांधे तो राजा से प्रतिष्ठा प्राप्त हो ।

(२) इसी यन्त्र को भोजपत्र पर गुलाब के रस से लिखे और अपनी भुजा पर बांधे तो राजदबार में जाने से मान और आदर हो ।

कान दर्द नाशक यन्त्र



विधि:—

(१) इस यन्त्र को सफेद कागज पर अनार के रस से लिखे और लिखकर कान में बांधे तो कान का दर्द जा ॥ रहे ।

(२) इस यन्त्र को तुलसी के पत्ते पर लिखे और इसका रस निकाल कर तथा गरम करके कान में डाले तो कान का दर्द जाता रहे ।

शत्रु वशीकरण यन्त्र



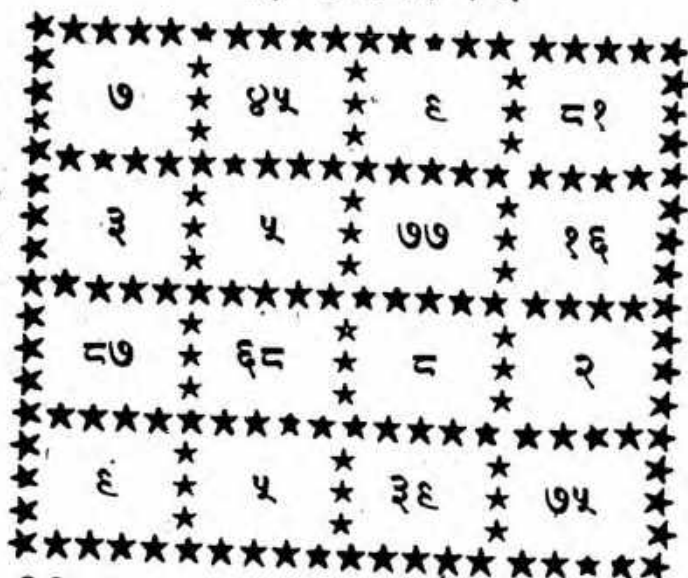
विधि:—

(१) इस यन्त्र को नगाड़े पर लिख दें और नगाड़ा बजावे तो शत्रु वश में हो जावे ।

(२) इसी यन्त्र को लहू से कागज पर लिख कर शत्रु के घर के पीछे गाड़ दे और सात रोज तक उसको गानी देता रहे तो शत्रु वशीभूत हो जावे ।

फिर भी यदि किसी कारण से वश में न होवे तो उस कागज को लाकर आग में जला दे ।

शूल होने का यन्त्र



विधि:—

(१) इस यन्त्र को स्याही से कनेर के पत्ते पर लिखकर तथा दुश्मन का नाम लेकर उसे कील से छेद दे तो उसको शूल उठने लगेगा ।

(२) ऊपर के यन्त्र को सफेद कपड़े पर साही का काँटा लाकर हरी रोशनाई से लिखकर दुश्मन को दिखावे और जमीन में गाड़ दे तथा उस जगह तीन दिन तक धूप वगैरह देता जाते तो दुश्मन को शूल उठे ।

अर्द्ध कपारी का यन्त्र



विधि :—

(१) इस यन्त्र को सफेद कागज पर स्याही से रविवार के दिन लिखे और सुअर के बैठने की जगह पर गाड़ दे और वहाँ की मिट्टी लगावे तो अर्द्ध कपारी दूर हो ।

(२) इस यन्त्र को सफेद कागज पर सुरमे से शुभ नक्षत्र में लिखे और किसी पेड़ के नीचे गाड़ दे तथा कुछ दिन के बाद उसको उखाड़ कर जला दे तो अर्द्ध कपारी दूर हो ।

शत्रु का मुँह सुजाने का यन्त्र

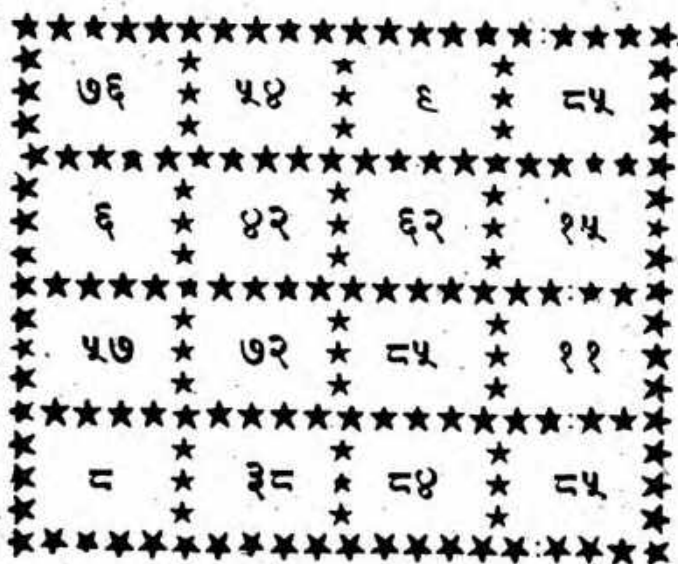


विधि :—

(१) इस यन्त्र को सफेद कागज पर रविवार के दिन शत्रु का नाम सरसों के तेल से लिखे और जमीन में गाड़ दे तो शत्रु के मुख पर सूजन आ जावे ।

(२) इस यन्त्र को सफेद कागज पर लोहे की कलम से बकरी के दूध से शत्रु का नाम लिखकर उस पर जूता मारे तो शत्रु का मुख फूल जावेगा ।

नारी कष्ट निवारण यन्त्र



विधि:—

(१) इस यन्त्रको हाथी के हाड़ पर लाल स्याही से लिखे और स्त्री की कमर में बाँध दे तो उसे किसी भी तरह का कष्ट न होगा ।

(२) इस यन्त्र को गदहे की हड्डी पर हरी स्याही से लिख कर उसे स्त्री के निवास स्थान पर बाँध दे तो उसका कष्ट दूर होगा ।

गर्भ स्तम्भन यन्त्र



विधि—

(१) इस यन्त्र को शनिवार के दिन भोजपत्र पर लाल स्याही से लिख कर स्त्री के बायें हाथ में बाँधने से उसे अवश्य ही गर्भ रह जायेगा ।

(२) इस यन्त्र को सफेद कागज पर रोली से रविवार के दिन लिखे तथा उसे ताबीज बनाकर स्त्री गले में बाँधे तो उसे निश्चय गर्भ रहेगा ।

आधा शीशी का यन्त्र



विधि :—

(१) इस यन्त्र को सोमवार के दिन सफेद कागज पर लिखे और माथे पर बाँधे तो आधा शीशी जाय ।

(२) इस यन्त्र को लाल कागज पर सफेद चन्दन से लिख कर गुग्गुल आदि की धूप देकर भुजा में बाँधे तो आधा शीशी जाय ।

सर्प विष नाशक यन्त्र



विधि:—

(१) इस यन्त्र को लाल चन्दन से हरे कागज पर लिखे और गंगाजल में धोकर जिसे साँप ने काटा हा उसे सिद्ध करके पिलादे तो विष दूर हो जाय, लोग ऐसा विश्वास करते हैं।

(२) इस यन्त्र को नीबू के रस से पान के पत्ते पर लिखे तथा सिद्ध करके हल्दी की घोल में मिलाकर पिलाने से फौरन विष दूर हो जायेगा, यह ऋषियों का कथन है।

राजा वशीकरण यन्त्र



विधि :—

(१) इस यन्त्र को सफेद कागज पर चीड़ की लकड़ी से हरी स्याही से लिखे तो चक्रवर्ती राजा भी वशीभूत हो जावे ।

(२) इस यन्त्र को सफेद चन्दन से भोजपत्र पर लिखे और सिद्धि प्रयोग अनुसार सिद्ध करके अपने साथ जिन राजा के पास ले जावे वह अपने आप वश में अवश्य हो जाय ।

गायों से दूध बढ़ाने का यंत्र



विधि :—

(१) इस यन्त्र की किसी भी कागज पर गोरोचन से लिखे और ताबीज बनाकर गाय के गले में बाँधे तो दूध बढ़ जाये ।

(२) इस यन्त्र को सफेद कागज पर कोयले से लिखकर नीले कपड़े में ताबीज बनाकर गाय के गले में बाँधने से दूध अवश्य बढ़ेगा ।

बुरे स्वप्नों का यन्त्र

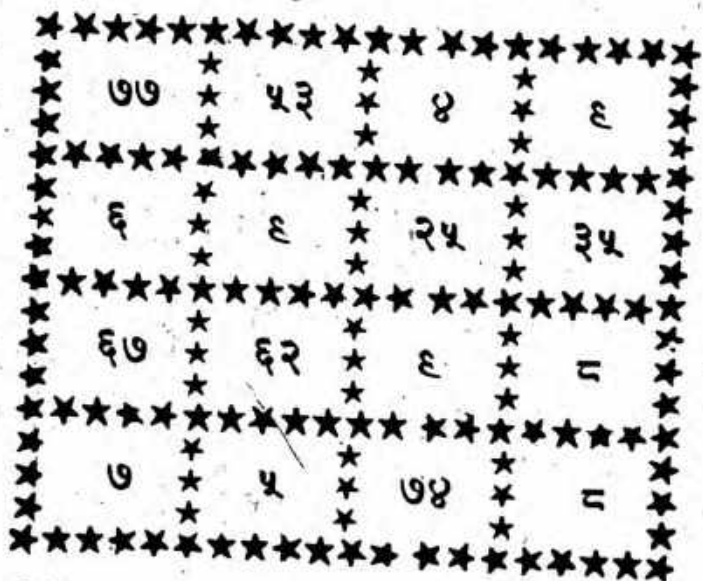


विधि:—

(१) इस यन्त्र को भोजपत्र पर रोली से मंगलवार के दिन लिखकर ताबीज बनावे और गले में बांधे तो उसको बुरे स्वप्न नहीं दिखाई देंगे ।

(२) इस यन्त्र को सफेद कागज पर लिखकर सोते समय अपने सिरहाने में रखने से बुरे स्वप्न नहीं दिखाई देंगे । ऐसा हमारा विश्वास है ।

शत्रु उच्चाटन-यन्त्र



विधि :—

(१) इस यन्त्र को लोहे की कलम से तांबे के पत्र पर लिखे और अपने पास रखे तो शत्रु को उच्चाटन हो ।

(२) इस यन्त्र को रेशम के कपड़े पर लिखे और तांबे की ताबीज बनाकर दुश्मन के हाथ में किसी के द्वारा बंधवाये तो उसको अवश्य उच्चाटन हो ।

तिजारी ज्वर का यन्त्र



विधि :—

(१) इस यन्त्र को असगन्ध से शनिवार के दिन लिखे और रोगी की बांह पर बांधे तो ज्वर छूट जाय ।

(२) इस यन्त्र को कुम्हार के यहाँ की मिट्टी लाकर भोजपत्र पर लिखे और रोगी से कुँये में डलवा दे तो तिजारी ज्वर अच्छा हो जाय ।

सर्व सिद्धि-यन्त्र



विधि :—

(१) इस यन्त्र को गुलाब से रस से कागज पर लिखे और सिद्धि प्रयोग द्वारा सिद्ध करके अपने पास रखने से मनोकामना अवश्य पूर्ण होगी ।

(२) इस यन्त्र को कागज पर लाल चन्दन से लिखे असगन्ध की धूप देकर जिसको भी पढ़ने के लिये देवे उसी से कार्य सिद्धि होवे ।

दुश्मनी कराने का यन्त्र



विधि:—

(१) इस यन्त्र को सफेद कागज पर लिखे और जिन दो आदमियों के बीच झगड़ा लगाना हो उनके रहने के स्थान पर गाड़ दे तो उन दोनों में जरूर झगड़ा हो ।

(२) इस यन्त्र को सफेद कागज पर छोड़े की लीट से लिखकर जिसके घर में झगड़ा लगाना हो उसके घर में फेंक दे तो उस दिन जरूर झगड़ा हो ।

शीतला माता का यंत्र



विधि :—

(१) इस यन्त्र को स्याही से सफेद कागज पर लिखे और जिस बालक को शीतला निकली हो उसके गले में बांध देने से शीतला शमन हो जाती है ।

(२) इस यन्त्र को चन्दन से सफेद कागज पर लिखे और गुग्गुलु से धूप देकर जिसको शीतला निकली हों ताबीज बनाकर उसके गले में बांधे तो शीतला शीघ्र ही शमन हों ।

भूत दिखाई पड़ने का यन्त्र



विधि :—

(१) इस यन्त्र को भोजपत्र पर गिलोय के रस से लिख कर शनिवार की रात को रोली और धूप से पूजा करे तथा रात को सोते समय सिरहाने रख दे तो सारी रात भूत दिखाई दे ।

(२) इस यन्त्र को सफेद कागज पर इमशान की राख से लिखकर अपनी चारपाई के नीचे रखें तो रात भर भूत नजर आयेगा ।

प्रेम बढ़ाने का यंत्र

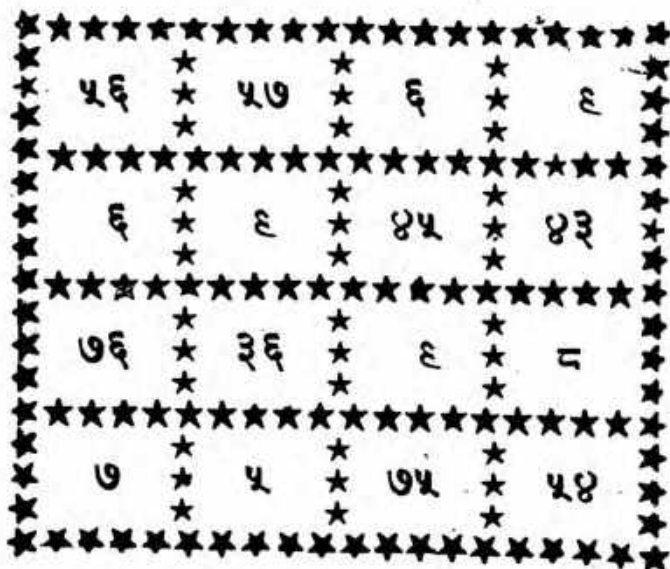


विधि :—

(१) इस यंत्र को भोजपत्र पर कपूर के रस से लिखे और फुलेल से जलावे तो प्रेम बढ़ेगा ।

(२) इस यंत्र को रेशम के कपड़े पर लाल चन्दन से लिखे और जिसे आप चाहते हों उसी से उस कपड़े को जलवा दें तो वह आपसे प्रेम करने लग जावे ।

मसान का यन्त्र

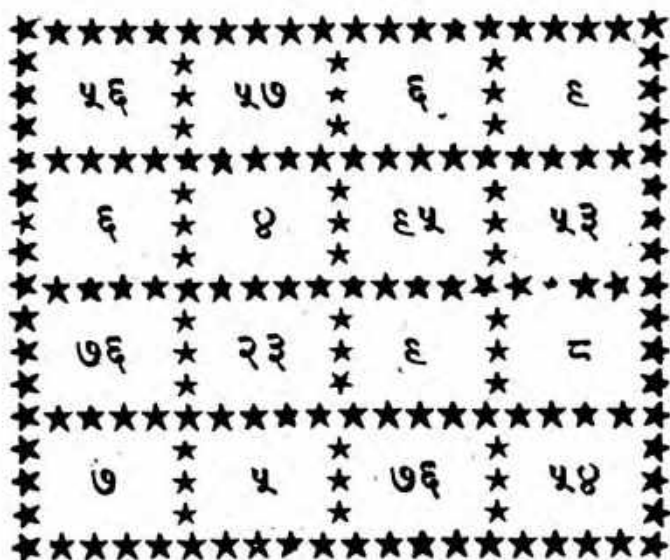


विधि :—

(१) इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखें और बाँह में बाँधे तो मसान न सतावे ।

(२) इस यन्त्र को भोजपत्र पर श्मशान की मिट्टी से पीत वस्त्र में ताबीज बनाकर बाँधे तो मसान का भय जाता रहे ।

क्लेश दूर करने का यंत्र



विधि :—

(१) इस यन्त्र को चन्दन से लाल कागज पर लिखें और विधि पूर्वक पूजा करे और घर में गाड़ दे तो घर की सब बलाय दूर हो ।

(२) इस यन्त्र को लाल चन्दन से सफेद कागज पर लिखे और धूप वगैरह देकर जो मनुष्य अपनी बांह पर बांधे तो उसके सब क्लेश दूर हो जाय ।

आकर्षण यन्त्र



इस यन्त्र को सफेद वस्त्र पर तुलसी के रस से लिखे और जिसे बुलाना हो—सात दिन तक उसका नाम लेकर पूजन करे, नित्य ब्राह्मण को खिलावे तो कार्य सिद्ध होय ।

घर लौटाने का यंत्र

जो घर से रूठ कर गया हो तो निम्नलिखित यन्त्र को गोरुचन से लिखकर जङ्गल में दबा दे और सात दिन वहाँ पानी दे तो गया आदमी जल्दी लौटे ।



वाचा स्तम्भन यंत्र



विधि :—जहाँ मंगल लिखा है वहाँ उसका नाम लिखे तो उसकी वाक्शक्ति रुक जावे ।

गुप्त लेख

पहला

कबूतर के खून और संतरे के अर्क को बराबर-बराबर मिलाकर लिखे तो रात में चमके ।

दूसरा

पतङ्ग का पत्ता, स्वान का पत्ता, बाज का रक्त सबको मिलाकर स्याही बनाकर लिखे । दिन में न दिखे किन्तु रात को हीरे सा झिलमिलावेगा ।

ॐ इति तृतीय अध्याय समाप्त ॐ

चतुर्थ अध्याय

* चुटकुले *

सर्प आदि विषेले कीड़े अकरकरा, बारहसिगे का सींग और बकरी के खुर की धूनी देने से भाग जाते हैं। यदि सरसों ब नौसादर पीस कर घर में डाले तो सर्प फौरन भाग जायगा। सरसों सर्प नाशक है।

बिच्छू काटने की औषधि

(१) अगर किसी को बिच्छू काटे तो तुरन्त इन्द्रायन का ताजा फल खाले तो फौरन आराम होगा।

(२) नीबू के पत्ते के रस में हींग रगड़ कर बनावे और बिच्छू के काटे हुये स्थान पर लगाने से फौरन आराम होता है।

(३) गुड़ खिलावे और प्याज मले तो तुरन्त आराम हो जाता है ।

(४) चिरचिड़े के पत्ते को पीस कर मले तो फौरन आराम हो जायगा ।

(५) कौंच के बीज कों पीस कर हथेली पर रगड़े तो बहुत जल्द आराम हो जायगा ।

(६) नीम की सूखीपत्ती चिलम में रख आग डाल तमासू की तरह पिये तो तुरन्त आराम होगा ।

(७) बिच्छू को मार कर घर में अगर जलावें तो वहाँ से बिच्छू भाग जाय ।

अगर आप बिच्छू साँप आदि विषैले कीड़े से बच कर रहना चाहते हैं तो निम्न मन्त्र रोज प्रातःकाल धरती पर पैर रखते ही पढ़ना आरम्भ कीजिये ।

“ओ३म् काली माई सुखं सिर स्वाहा”

आपका मन सारा दिन ऐसा करने से खुश रहेगा और कोई भी जीव-जन्तु नहीं काट सकता ।



पञ्चम अध्याय

यक्षिणी साधन

यक्षिणी सिद्धि हो जाने से कार्य बड़ी सरलता पूर्वक हो जाता है और बुद्धि तीव्र होती है। मनुष्य कठिन से कठिन समस्याओं को क्षण मात्र में पूर्ति कर सकता है। दूसरे के मन का गुप्त हाल पहिचान जाता है। जो कुछ मुँह से कहता है वह सत्य होता है। अनेक प्रकार के चमत्कार यक्षिणी द्वारा दिखाकर मनुष्यों को अपने वश में कर लेता है। संसार में कोई उसका दुश्मन नहीं रहता सब उसको मान और प्रतिष्ठा से बुलाते हैं।

यक्षिणियों के नाम

यक्षिणी चौदह प्रकार की हैं यथा—

- १—महा यक्षिणी
- २—सुन्दरी
- ३—मनोहारी
- ४—कनक यक्षिणी
- ५—कामेश्वरी
- ६—रतिप्रिया
- ७—पद्मिनी
- ८—नटी
- ९—रागिनी
- १०—विशला
- ११—चन्द्रिका
- १२—लक्ष्मी
- १३—शोभना
- १४—मदना ।

यक्षिणी सिद्ध करने का समय

महर्षि दत्तात्रेय का मत है कि आषाढ़ सुदी पूर्णमासी शुक्रवार के दिन अथवा गुरुवार के उदय में क्षौर कर्म (हजामत) बनवा कर और पवित्र होकर यक्षिणी साधन क्रिया करे अथवा श्रावण कृष्ण परीवा के दिन चन्द्र बली होने पर साधन क्रिया प्रारम्भ करे ।

यक्षिणी साधन क्रिया

शंकर आराधना

निर्जन वन में बिल्वपत्र अथवा केले के वृक्ष के नीचे बैठकर प्रथम श्री शंकर महादेव की आराधना निम्नलिखित मन्त्र से करे ।

ॐ रुद्राय नमः स्वाहा, ॐ त्रयम्बकाय नमः स्वाहा ।

ॐ यक्षराजाय स्वाहा, ॐ त्रयसोचनाय स्वाहा ॥

क्रिया—एकाग्र चित्त होकर इस मन्त्र का पाँच सहस्र बार जाप निर्जन वन में करे, तत्पश्चात् घर पर आकर खीर के भोजन करे और कुआरी कन्याओं को खीर का भोजन करावे ।

दूसरी क्रिया—वट वृक्ष या पीपल की जड़में शिवजी की स्थापना करके जल चढ़ावे और एकाग्र चित्त से पाँच सहस्र मालायें उक्त मन्त्र की जपे ।

कुवेर आराधना मन्त्र

ॐ कुवेराय नमः

ॐ यक्षराज नमस्तुभ्यं शंकरो प्रिय बान्धवः ।

काला काले महा काले यक्षिणी वशगां कुरु ॥

क्रिया—इस प्रकार श्री कुवेर की आराधना एक सौ आठ बार उक्त मन्त्र से करे । तत्पश्चात् यक्षिणी साधन क्रिया करे ।

साधन नियम

सदैव हल्की खीर का भोजन करे, सत्यवादी और ब्रह्मचर्य से रहे । दिन में कदापि न सोवे तथा एक बार भोजन करे, मौन व्रत धारण करे, रात्रि को कुछ भी न खाये और भूमि पर सोवे । रक्त चन्दन विशेष रूप से लगावे और श्वेत रङ्ग के पदार्थ का सेवन करता रहे ।

(१) महायक्षिणी सिद्धि

सिद्धि करने का समय

यह यक्षिणी रात्रि के तीसरे पहर में सिद्ध की जाती है, रात्रि को नियमित समय पर श्मशान भूमि में जाने और सुष्मणानाड़ी के चलने समय वट वृक्ष के ऊपर चारों

ओर से एकाग्र चित्त करके नीचे लिखे मन्त्र का पांच हजार बार जाप नित्य करे ।

साधन मंत्र—

ॐ ह्रीं क्लीं महा यक्षिणी प्रदात्र्यैनमः ।

महायक्षिणी का आगमन—

यह यक्षिणी अनेक रूप धारण कर साधक को भय दिखाती है । आते समय भैसे का रूप धारण कर लेती है । जिस समय यह आती है प्रथम अन्धकार और आंधी लाती है और हवा बड़े वेग से चलती है । बादल की घटा इतनी जोर की चारों ओर उठती हुई दिखाई देती है कि हाथों हाथ कुछ नहीं दिखाई देता । फिर एक दम उजाला हो जाता है फिर काले रंग के बाल बिखरे हुये एक स्त्री नाचती हुई आती है जिसके दाँत आगे को निकले हुये सिर पर लाल रंग का कपड़ा लिपटा हुआ, मस्तक पर सिंदूर का टीका लगा हुआ, जिसकी सूरत देखते ही यह अनुमान हो जाता है कि हूबहू काल की यही निशानी है ।

ऐसे अनेकों उपद्रव एक सप्ताह तक बराबर होते रहते हैं । यदि साधक भयभीत न हुआ तो फिर महा-यक्षिणी अपना दर्शन देती है ।

महायक्षिणी का स्वरूप—

पीत वर्ण वाली, तीस वर्ष की आयु वाली, श्वेत रङ्गकी साड़ी पहिने हुये, जिस पर मोतियों की झालर लगी होती है मस्तक पर कस्तूरी और केशर की बिन्दी लगी होती है। एक हाथ में कमल का पुष्प दूसरे में तीर कमान धारण किये हुये साधक के सामने दिखाई देती है उस समय साधक जो जबरन मांगता है वही देती है।

प्रभाव—भयभीत हो जाने पर पागल बना देती है इससे भय न करना चाहिये। सिद्ध किया हुआ धन सुकर्म में लगाया जाय, कुकर्म में लगाने से सिद्धि निष्फल हो जाती है।

(२) सुन्दरी यक्षिणी

सिद्ध करने का समय—

यह यक्षिणी रात्रि के दूसरे पहर में सिद्ध की जाती है। इसको श्मशान भूमि में अस्थियों पर बैठ कर सिद्ध करे और मुर्दे की चिता पर पके चावल इसको बलिदान में दे। जब यह प्रसन्न होती है तब अपने बलिदान को स्वयं उठाकर ले जाती है और उसको भक्षण कर लेती है।

सिद्ध करने का मन्त्र—

ॐ ह्रीं क्लीं यक्षिणी सुन्दर्यै नमः ।

क्रिया—इस मन्त्र को पाँच हजार बार जाप करे और प्रत्येक मन्त्र के साथ घृत और कपूर की आहुति दे ।

आहुति हवन कुण्ड बनाना—

विशाषा नक्षत्र में रविवार के दिन कपिला गाय के गोबर में सिद्धूर मिलाकर त्रिभुजाकार चौका दे । उसके मध्य में त्रिभुजाकार एक बालिशत नीचा गड्ढा खोदे उसकी जगह पर सिद्धूर के पाँच बिन्दु इस प्रकार लगावे कि चारों ओर चार बिन्दु रहें और मध्य में एक आवे उसके ऊपर क्वारि मुर्दे की हड्डियों को चुन कर अग्नि दीपक करे, उसमें कपूर की आहुति उपरोक्त मन्त्र के साथ दे । इसके पश्चात् यक्षिणी प्रकट होगी ।

सुन्दरी का आगमन—

जिस समय यह आती है चारों ओर धुँये का अंधकार हो जाता है । साधक को कुछ दिखाई नहीं देता, कभी ऐसा भी होता है कि अग्निकुण्ड में से आग की लपटें उठकर साधक की ओर आती हैं । उस समय साधक को भयभीत नहीं होना चाहिये ।

सुन्दरी यक्षिणी का स्वरूप—

गोरे बदन वाली षोडशवर्षीया बालिका के रूप में, बसन्ती साड़ी पहिने हुये गले में सफेद पुष्पों की माला धारण किये हुये भुजाओं में लाल रंग की चुस्त चोली पहिने नाक में झलकदार नथ पहिने हुये साधक को दर्शन देती है ।

(३) मनोहारी यक्षिणी

सिद्ध करने का समय—

ठीक रात्रिके बारह बजे स्वाती नक्षत्र में शनिवार के दिन से सिद्धि आरम्भ की जाती है । साधक प्रारम्भ करने के दिन प्रातःकाल क्षौर कर्म करा कर छोटे-छोटे बच्चों को मिष्ठान्न दही का भोजन करावे और यथाशक्ति उनको दान देकर बरदान मांगे जिससे साधन निर्विघ्न समाप्त होवे । फिर निर्जन वन में जाकर बट वृक्ष की जड़ में कालभैरव की मूर्ति स्थापित कर उसको स्नान करावे फिर धूप दीप से पूजन कर नित्य प्रति एक हजार बार नीचे लिखे मन्त्र का जाप करे ।

साधन मन्त्र—

ॐ ह्रीं ह्रूं ह्रूं फट् स्वाहा ॐ फट् स्वाहा ।

ॐ ह्रीं फट् स्वाहा मनोहारी यक्षिण्यै नमः ॥

मुर्दे की आँतो की डोरी और उसमें मुर्दे की अस्थियों के दाने डाल कर माला बनावे फिर एकाग्र चित्त होकर जाप करे । प्रत्येक सहस्र जप होने पर एक आटे का पुतला रखता जाय और जैसे साधन समाप्त करे सबको इकट्ठा बना कर अपने मकान के पीछे गाड़ दे ।

मनोहारी का आगमन—

जिस समय यह यक्षिणी आती है फूलों की मुगन्धि साथ लाती है । इसके आगे-आगे अनेक प्रकार के पशु शेर, चीते इत्यादि अपना-अपना स्वरूप बदलते हुये दिखाई देते हैं । किसी-किसी पशु पर दैत्य सवार होता है, पीछे चन्द्र मुखी शंखनी हाथों में पुष्पों की माला लिये हुये आती है ।

मनोहारी का स्वरूप—

श्वेत वर्ण की अनुमानतः षोडश वर्षीया कन्या के अनुसार चार शंखिनियों के कन्धे पर सिंहासन पे बैठी हुई दर्शन देती है । गले में फूलों का हार पड़ा होता है, हाथों में कमल के फूल धारण किये हुये होती है, माथे पर सिंदूर का टीका लगा होता है, सिर के बाल खुले हुये पीछे लटके रहते हैं । यदि यह प्रसन्न हो जाय तो अपना परिचय तीन प्रकार से देती है अर्थात् धन, जन

और मानस । विमुख हो जाने से सकुटुम्ब नाश कर देती है । इससे प्राप्त किया हुआ धन अच्छे कामों में लगाया जाय । पुण्य भी अधिक किया जाय । यदि ऐसा धन व्यभिचार तथा मदिरा पान में खर्च करे तो पुत्रादि सहित नष्ट कर डालती है ।

प्रभाव—चित्त शान्त करती है, किसी बात की इच्छा प्रगट नहीं होने देती है । जिस कार्य की आवश्यकता हो तत्क्षण कर लाती है । साधक को किसी प्रकार का भय क्लेश नहीं होने देती । इसकी साधना में भय नहीं करना चाहिये ।

(४) कनक यक्षिणी

साधन का समय—

यह रात्रि के एक बजे एकान्त व निर्जन वन में सिद्ध की जाती है ।

साधन मन्त्र—

ॐ ह्रीं कनक क्लीं यक्षिणी नमः ।

ॐ ह्रूं कुरु ठः ठः स्वाहा ॐ क्लीं फट् स्वाहा ॥

क्रिया—इस मन्त्र को सवा लक्ष नित्य प्रति जाप करे इस प्रकार साधन करने से तीस दिन बाद दर्शन देगी ।

कनक यक्षिणी आगमन—

यह यक्षिणी आते ही चारों ओर से मल मूत्र की वर्षा करती आती है। हाड़ मांस की मालायें धारण किये रहती है। एकान्तवास इसको पसन्द है। यदि इसको अधिक तंग किया जाय तो साधक की मति भ्रष्ट कर देती है।

कनक यक्षिणी का स्वरूप

स्वरूप इसका साठ वर्ष की बुढ़िया के समान होता है। शिर पर समस्त बाल सफेद होते हैं। हाथ पैरों में केवल हड्डियों का ढाँचा दिखाई देता है, मुँह में एक दाँत नहीं दीखता है, समस्त बदन व कपोलों पर भुर्रियाँ पड़ी दीखती हैं, बदन की लम्बाई अधिक होती है।

प्रभाव—जब तक यह साधक के पास रहती है तब तक किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने देती और जब जाती है उसको अनेक प्रकार के दुःखों में फँसा जाती है।

यह यक्षिणी ज्योतिषियों के बड़े काम में आती है इसके सिद्ध हो जाने से ज्योतिषी प्रत्येक प्रश्न का उत्तर सही देता है। इस यक्षिणी की सिद्धि को 'कर्ण पिशाचिनी' सिद्धि कहते हैं। क्योंकि यह जो कुछ कहती है साधक के कानों में कहती है। साधक के कान सदैव ऊपर की ओर रहा आता है।

यह यक्षिणी संसार में अपने साधक का प्रभाव बढ़ा देती है परन्तु भ्रष्ट अधिक रखती है। यहाँ तक कि कोई कोई कर्ण पिशाचिनी कान में विष्टा तक लगाये रहती है और अन्त में मरने पर साधक केशरीर में दुर्गन्ध पैदा कर देती है जिससे उठाने वाले भी घृणा करते हैं।

(५) कामेश्वरी यक्षिणी

साधन का समय

यह यक्षिणी रात्रि के आरम्भ काल में सिद्ध की जाती है और जब तक रात्रि समाप्त नहीं होती बराबर जप करना पड़ता है। इसकी साधना गूलर के वृक्ष की छाया के नीचे की जाती है और घृत का चौमुख दीपक जलाकर साधक अपने आग्ने सामने रख लेता है उसकी 'लौ' बिना पलक के मूँदे एकटक बराबर तमाम रात देखता रहता है। जिस समय साधक में एक रात बिना पलक लगाये दीपक ज्योति देखने की शक्ति उत्पन्न हो जावेगी उसी दिन से यक्षिणी अनेक रूपों से दर्शन देने लगेगी।

कामेश्वरी सिद्धि मन्त्र—

ॐ कामेश्वरी काम सिद्धेश्वरी स्वाहा ।

ॐ फट् स्वाहा ॐ ह्रीं कुरु स्वाहा ॥

उपरोक्त मन्त्र को एकाग्र चित्त से रुद्राक्ष की माला

लेकर सवा लक्ष नित्य प्रति जाप करे । तीस दिन बाद स्वप्न में यक्षिणी अनेक रूपों में दर्शन देगी ।

कामेश्वरी आगमन—

जिस समय यह यक्षिणी आती है, उस समय चारों तरफ सफेद फूलों का मार्ग बन जाता है, चारों तरफ से शीतल भन्द सुगन्ध वायु बहने लगती है । एक हाथ में इत्रदान लिये होती है । रास्ते में फूलों की वर्षा होती आती है ।

कामेश्वरी का स्वरूप—

चन्द्रमा के समान उज्वल वर्ण वाली हंस की सवारी धीरे-धीरे आती है । गले में मोतियों की माला धारण किये होती है । इसके पीछे चार स्त्रियाँ हवा डोरती आती हैं और दो भागे चँवर डोरती दिखाई देती हैं । साथ की सब स्त्रियाँ पीताम्बर साड़ी पहिने होती हैं और स्वयं यक्षिणी गुलाबी रङ्ग की पोशाक में होती है ।

प्रभाव—शीतलता लिये हुये साधक के चित्त को प्रसन्न करने वाली किसी प्रकार काकष्ट न पहुँचाने वाली सब की सहायक होती है ।

[६] रति प्रिया यक्षिणी

साधन का समय—

इस यक्षिणी की सिद्धि रात्रि के दस बजे चाँदनी

रात में की जाती है। इसका जाप उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में शुक्रवार के दिन से प्रारम्भ होता है। इसके अग्र भाग में सुगन्धित पदार्थ तथा अनेक प्रकार के खिले हुये पुष्प रक्खे जाते हैं। जिस समय यह प्रसन्न होती है फूलों की मालाओं को अपने आप गले में धारण कर लेती है।

इसके जाप की माला तुलसी के दानों को रेशम में पिरोया जाता है और निम्नलिखित मन्त्र का जाप किया जाता है।

साधन मन्त्र—

ॐ रति वल्लभे रति प्रिये कामन्तु वल्लभोः ।

महा देवी महा माया काया कंचनम् ॥

यह यक्षिणी पैंतालीस दिन में अपना प्रभाव स्वप्न में देती है। सिद्धि हो जाने पर मन इच्छित फल की दाता है। अधिकतर इसका प्रभाव स्त्रियों पर अधिक पड़ता है। कारण कि इसका संबंध कामदेव से अधिक है।

यक्षिणी आगमन—

कामेश्वरी यक्षिणी की भाँति इसका भी आगमन होता है इसको गुलाबी रङ्ग के पुष्प अधिक प्रिय हैं। फूलों की सड़क मखमल के समान पृथ्वी पर बिछ जाती है, उस पर बचक पचक पैर रखती हुई आती है। दास

दासियाँ विभिन्न प्रकार के सुगन्धित पदार्थ लिये सामने खड़ी रहती हैं ।

रतिप्रिया का स्वरूप—

सुन्दर गौरांग नवल नवेली चन्द्रबदनी जिसके हाथों की नाजुक कलाई हवा के भोंके से हिलती हुई दीखती है । अपने उपासक को सदैव मुस्कराती हुई दर्शन देती है ।

प्रभाव—इसके सिद्ध हो जाने से मनुष्य कड़ुवे से कड़ुवे मिजाज वाली स्त्री को वशीभूत कर लेता है ।

(७) पद्मिनी यन्त्रिणी

साधन का समय—

इसका साधन आषाढ़ पूर्णिमा गुरुवार के दिन स्वाती नक्षत्र में रात्रि के चौथे पहर में निर्जन स्थान में प्रारम्भ होता है ।

साधन का मन्त्र—

अनंग वल्लभो देवि, कामारि प्रिय सेविका ।

नमस्ते पद्मिनी माया, महामाया नमस्कृतै ॥

पीपल के वृक्ष के नीचे बटुकनाथ की मूर्ति स्थापित कर कास के आसन पर बैठ कर दक्षिण की ओर मुंह करके सत्रा लक्ष बार उपरोक्त मन्त्र का जाप करे ।

पद्मिनी का आगमन—

जिस समय यह आती है आने के पहिले एक बार अपनी झलक दिखला कर अन्तर्धान हो जाती है। फिर अनेक प्रकार के बाजे बजने शुरू हो जाते हैं, परन्तु बाजे वाला कोई किसी तरफ दिखाई नहीं देता। उसी बाजे की ताल पर एक बड़ी बारात सी आती हुई दिखाई देती है। इसी को मनुष्य 'साहवा' आशेव की आमद कहते हैं। सबको पद्मिनी अपना रूप दिखाती है।

पद्मिनी का स्वरूप—

गोरे अङ्ग पर सिर के बाल एड़ी तक लम्बे लटके हुए दिखाई देते हैं। बांह चम्पे की डाल के समान छोटी-छोटी और मुलायम होती है। पैर कदम कंदली के समान मुडोल और सीधे होते हैं। हाथों में कमल के फूल और गले में फूलों के हार पड़े होते हैं। इस प्रकार के वेष में साधक को दर्शन देती है।

प्रभाव—जब इसकी सिद्धि हो जाती है तब साधक के यहाँ धन की कमी नहीं रहती।

(८) नटी यक्षिणी

साधन का समय—

इसके साधन करने का समय प्रातःकाल सूर्योदय से सूर्यास्त तक का है।

ॐ नमो ह्रीं फट् स्वाहा ॐ क्लीं फट् फट् स्वाहा ।

ॐ नटी यक्षिणी स्वाहा ॐ कुरु कुरु फट् स्वाहा ॥

सुनसान जंगल में जहाँ चौरस भूमि हो और सूर्य की किरण पूरी पड़ती हों वहाँ पर सूर्य की ओर मुँह करके खड़ा होवे और प्रति घंटा एक सहस्र मन्त्र जाप करता जावे जब तक सूर्य अस्त न होवे तब तक बराबर जाप करता रहे । सूर्य अस्त होने के पश्चात घर आकर केवल दूध पीकर सो रहे और रात्रि को कुछ भोजन न करे ।

नटी यक्षिणी का आगमन—

जिस समय यह आती है भैसे के समान हुँकार भरती हुई आती है, और साधक को अनेक विकारालरूप दिखला कर डराती है । यदि इस पर भी साधक डटा रहा तो तैंतालिस दिन में सिद्धि होवेगी ।

नटी का स्वरूप—

सुन्दरी गौरांग स्त्री सिर पर सुखं रंग की चुनरी ओढ़े गले में मुण्डों की माला धारण किये नव पल्लव बदन पर लपेटे हुये हँसती खेलती साधक के सामने खड़ी हो जाती है ।

प्रभाव—इसके सिद्ध हो जाने पर हर साधक प्रत्येक कार्य अपनी इच्छानुसार कर सकता है ।

(६) अनुरागिनी यक्षिणी

साधन का समय—

शाम के पांच बजे निर्जन स्थान में जहाँ की भूमि समतल हो वहाँ पर साधन करे। सत्ताइसवें दिन जाकर यक्षिणी अपना प्रभाव दिखावेगी।

साधन मन्त्र

ॐ नमः अनुरागिनी यक्षिणी नमः हनि हनि हनि पचि पचि फट् स्वाहा।

ऊँट के बालों की माला बनाकर तीस हजार जाप नित्य प्रति करे। सत्ताइस दिन पीछे यक्षिणी स्वप्न में दिखाई देगी।

अनुरागिनी का आगमन—

इन्द्र की अप्सरा के आने से पहले लालरङ्ग का फर्श बिछा हुआ दिखाई देता है। बेलों के भुण्ड के भुण्ड आते हुए दीखते हैं जिन पर अनेक रूप धारण किये विकट खोपड़ी वाले भूत दिखाई देने हैं। सबके पीछे अनुरागिनी यक्षिणी की सवारी आती है। यह ऊँट पर बैठी हुई पीछे की ओर मुँह किये हुये होती है।

अनुरागिनी यक्षिणी का स्वरूप—

लाल रङ्ग के वस्त्र धारण किये मुख में पाव

खाये नाक में नथ झलकाती हुई लम्बी भुजायें हाथों की अँगुली एक एक बालिस्त लम्बे नाखून चार इंच चौड़े, पैर नाटे, बिना पंजे वाली, एक हाथ में कृपाण और दूसरे में मुण्डमाल लिए होती है ।

प्रभाव—यह आते ही साधक की ओर सीधी चढ़ी हुई चली आती है । यदि साधक भयभीत हो गया तो पागल बना देती है वरना इच्छानुसार काम करती है ।

(१०) विशाला यक्षिणी

साधन का समय—

रात्रि के तीसरे पहर में काले घतूरे के वृक्ष के नीचे छाया में गधे के चर्म का आसन बिछा कर उस पर बैठे और आहुति देने के हेतु अष्ट धातु का हवन कुण्ड त्रिभुजाकार बनवाये और उसके मध्य में आदित्य देव की मूर्ति स्थापित करके उस पर तेल मर्दन करे । निम्न-लिखित मन्त्र का एक सौ आठ बार प्रति दिन जाप करता रहे ।

ॐ अनंत वल्लभो देवि, विशालस्य नमितः ।

स्वयं प्रिया महा वश्यम कुरु फट् फट् स्वाहा ॥

आषाढ़ बदी १५ आदित्यवार के दिन विशाखा

नक्षत्र में रात्रि के तीन बजे स्मशान भूमि में जावे और उपरोक्त मंत्र का जाप करे । प्रत्येक मंत्र के अन्तिम अक्षर पर तेल और चावलों की आहुति दे । अन्तिम आहुति मदिरा और मांस की देकर सीधा चला आवे पीछे को न देखे ।

विशाला यक्षिणी का आगमन—

इसके आने से पूर्व अनेकों हिंसक जानवर शोर करते हुये दिखाई देते हैं । फिर वह अंतर्धान हो जाते हैं केवल दक्षिण दिशा में मनुष्य से बातचीत करने का शब्द सुनाई देता रहता है । साधक को उस समय अपना ध्यान नहीं हटाना चाहिये । यदि उसका ध्यान उस ओर से हट गया अथवा भयभीत हो गया तो घर आते ही बीमार हो जायगा । अथवा जिघर जावेगा उधर ही उसको वह शब्द सुनाई देगा । इसीलिये साधक को चाहिये कि हृदय को कड़ा करके इसकी साधना करे ।

विशाला यक्षिणी का स्वरूप—

इसकी लम्बाई एक पीपल के पूरे और ऊँचे पेड़ के बराबर होती है । पैरों को पृथ्वी पर बड़े जोरोंसे मारती है और अनेक प्रकार के उपद्रव उठाती हुई जाती है । सिर के बाल आगे की ओर लटके हुये होते हैं । लम्बाई के कारण इसके उमर की तादात नहीं होसकती । जितनी यह

लम्बी होती है उसी के अनुसार हाथ पैर लम्बे व चौड़े होते हैं। सिर इसका बड़ा और दाँत आगे को निकले हुये और बड़े होते हैं।

प्रभाव—साधक इसको यदि प्रसन्न रखे तो माला माल कर देती है और अप्रसन्न होने पर सकुटुम्ब उसका नाश कर देती है।

(११) चंद्रिका यक्षिणी

साधना का समय—

इसका साधन समय रात्रि के ११ बजे चाँदनी रात्रि में होता है। साधक स्मशान भूमि में जाकर मुर्दों की चिता वाली भूमि अर्ध चन्द्राकार मुर्दों की हड्डियों का बनावे और आर्द्रा नक्षत्र में चन्द्रवार के दिन से मन्त्र की आराधना करे और तीस दिन तक बराबर जाप करता रहे। जब स्वाति नक्षत्र में सुषुम्णा नाड़ी चलने लगे उस समय जाप की समाप्ति करना चाहिये।

ॐ ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विचेंसि स्वाहाः ।

ॐ चंडिका यक्षिणै नमः स्वाहाः ॥

इस मन्त्र को पचास हजार दफा जाप करे और इसके जाप के लिये मुर्दों की हड्डियों के दाने की माला उनमें पिरोवे और प्रत्येक दाने पर ऊंश्रीं, ऊंक्षीऊंक्षी, बीच

में अंकित करे और प्रति एक जाप पर घी गुड़ की आहुतियाँ देता जाय । भोग के लिए चावल काले उर्द का बलिदान तैयार रखे । हवन की अन्तिम आहुति दही दूध, घृत और शहद की देवे और जाकर ब्राह्मणों को खीर के भोजन करावे । यथा शक्ति उनकी पूजा करे और दान दे ।

यक्षिणी का आगमन

पैंतालिस वर्ष के उम्र की स्त्री काले वर्ण की, हाथों पर मेंहदी रचाये, मुँह में पान चबाये, दातों को आगे निकाले हुये एक हाथमें लड्डू दूसरे से अग्नि जलाती हुई साधक के पास सीधी चली आती है और रखे हुए बलिदान को ले जाती है ।

प्रभाव—अगर साधक उस समय भयभीत नहीं हुआ तो भूत और भविष्य का ज्ञान हो जाता है । मान और प्रतिष्ठा अधिक बढ़ती है ।

(१२) लक्ष्मी यक्षिणी

साधन का समय—

इसकी साधना प्रातःकाल चार बजे की जाती है । इसकी साधना के लिये पवित्रस्थानकी आवश्यकता पड़ती है । जिस जगह पर इसकी आराधना की जावे उस मकान में कोई अपवित्र मनुष्य न जाने पावे और न कोई स्त्री उस

मकान का स्पर्श करे । साधना करने से प्रथम मकान की सफाई लिपाई पुताई कराकर उसको धूप चन्दनादि की धूनी देकर पुष्पों की मालाएँ लटका दे और सुगन्धित इत्र की खूब उसमें बसा कर जाप आरम्भ करे ।

साधन मंत्र

लक्ष्मी कान्तम् कमल नयनं सिद्धर शोभावरम् ।

भालेन्द्रतिलकललाट मुकुटम् वाणीवरमवरदायकम् ॥

उत्तरा भाद्रपक्ष नक्षत्र में लक्ष्मी की मूर्ति अष्टधातु की बनाकर स्थापित करे और प्रातःकाल उसको गङ्गाजल से स्नान कराकर उसके मस्तक पर केशर और कस्तूरीका तिलक लगावे और स्वयं कुशासन पर बैठकर पीताम्बर वस्त्र धारण करे । फिर स्नान कराये हुये जल का भक्ति भाव से पान करे और हृदय में मूर्ति का चित्र धारण कर तुलसी की माला हाथ में लेकर एक सौ आठ बार जाप करे और भाँग के लड्डू बना कर सामने रखे । इस प्रकार इकत्तीस दिन तक जाप करता रहे । इकर्तासर्वे दिन यक्षिणी दर्शन देगी ।

लक्ष्मी आगमन

जिस समय यह आती है उससे पूर्व राजा महाराजाओं की भाँति आगमन की तैयारियाँ देवगण कर जाते हैं चारों ओर शांति स्थापित हो जाती है । भय का

कुछ काम नहीं रहता । इसका स्वरूप साक्षात् आँखों से दिखाई नहीं देता । तीसवें दिन स्वप्न में आकर साधक को दर्शन देती है ।

लक्ष्मी का स्वरूप

सुन्दर गोरे वर्ण की अठारह उन्नीस वर्ष के अनुमान वाली स्त्री चन्द्रवदनी मृगलोचनी, बाहें चम्पे की डाल के अनुसार, नाक में स्वर्ण की नथ पड़ी हुई, साक्षात् देवी अवतार, दोनों हाथों में कमल का फूल धारण किये हुये आती है ।

प्रभाव—जब यह प्रसन्न होती है तब साधक को मालोमाल कर देती है और जब इसकी पूजा ठीक नहीं होती तो दरिद्री बना कर चली जाती है ।

(१३) शोभना यक्षिणि

साधन का समय—

इसके सिद्ध करने का समय रात्रि के एक बजे का है । आषाढ़ बदी १५ गुरुवार के दिन स्वाती नक्षत्र में इसको सिद्ध करना प्रारम्भ करके और बलिदान के हेतु तेल और गुड़ में आटा गूँध कर लड्डू बनावे । प्रति दिन जाप समाप्त कर काले कुत्ते को एक सी आठ लड्डू नित्य प्रति खिला दिया करे । इस प्रकार तीसदिनतक रोज तेल और गुड़ के १०८ लड्डू बनावे । अन्तिम दिन तेल, बेसन

और गुड़ के १०८ लड्डू बनाकर कुत्तों को खिला दे ।

साधन का मन्त्र

ॐ शोभनायः शोभनायः शोभनाय नमः ।

निराकारो निरामासो वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥

कैथ बृक्ष की छाया में बैठकर तीन दिन तक जाप करता रहे । जाप करने की माला चिकनी मिट्टी के दानों की बनावे और उसमें क्वारी कन्या के हाथ का काता हुआ सूत डाले । यह सूत विशाखा नक्षत्र में काता जाता है । इसकी कपास प्राकृतिक रूप से पैदा होती है इसको कोई जोतता बोता नहीं स्वयं बरसात में अपने आप इसके पेड़ उग आते हैं और पंचक त्याग कर इसकी कपास लाई जाती है, फिर उसको क्वारी कन्या के हाथ से कतवाते हैं । इस जाप की माला सवा लक्ष एकाग्रचित्त से जपी जाती है । समाप्ती होने पर कन्या व लांगुराओं को भोजन हलुआ और चनों का साक कराया जाता है फिर उनको लाल रङ्ग के वस्त्र पहिना कर यथाशक्ति दान दिया जाता है ।

शोभना यक्षिणी का स्वरूप

जब यह आती है अनेक प्रकार के रूप बदलती हुई आती है । किसी-किसी समय तो भयंकर शब्द तक सुनावे

लगती है। कभी २ इसके साथ में अनेक स्त्रियाँ आती हुई दिखाई देती हैं कभी स्वयं अनेक प्रकार से नाचती हुई दीखती है। कभी रोती हुई आती है। इसका प्रचंड कोप बड़ा भयानक होता है। साधक को चाहिये कि सावधानी के साथ बैठा रहे और चित्त को विचलित न करे वरना पागल हो जायेगा।

शामना यक्षिणी का स्वरूप

कुरूपिणी, एक आँख ऊपर को चढ़ी हुई, माथा टेढ़ा देखते ही घृणा उत्पन्न होती है। मदिरा मास में अधिक रुचि रखती है। गले में अनेक प्रकार को खोपड़ी लाल रङ्ग से रङ्गी हुई पड़ी हुई होती है।

प्रभाव—यह आते ही साधक को पटक देती है। अनेक प्रकार के दुर्व्यवहार करती है। यदि इसको साधक सह गया तो मालामाल कर देती है।

(१४) मदना यक्षिणी

साधन का समय

इसका साधन रात्रिके पिछले पहर में किन्तु दिन के आरम्भ काल में किया जाता है। निर्जन बन में जहाँ किसी मनुष्य की आवाज सुनाई न दे वहाँ पर छोंकरा की कोंपल

लावे और उसमें बरगद की टहनी लगाकर हवन सामग्री तैयार करे, और पृथ्वी पर षट् चक्र काट कर कुण्ड बनावे प्रत्येक चक्र पर (ऊँह्नी) बीज अंकित करे बीच में मदना यक्षिणी का नाम लिख दे फिर उसके ऊपर बरगद और छोंकरा की कोंपल वाली सामग्री रखकर अग्नि में प्रवेश करे और निम्नलिखित मन्त्र का जाप करे ।

साधन मन्त्र—

ओम् श्री मदनाश्वरी यक्षिणी स्वाहा ॥

ओम् कालभैरवाय नमः फट् फट् स्वाहा ॥

इस प्रकार मन्त्र का पाँच हजार जाप बृक्ष के नीचे बैठ कर करे । जिस स्थान पर जाप करना प्रारम्भ करे उसी जगह पर हवन कुण्ड स्थापित करे जाप की माला के दाने मोर पंख के बनावे प्रत्येक दाने के बीच में एक एक गाँठ काली ऊन की लगावे । जब माला तैयार कर चुके तब निगमित समय पर स्यार के खाल के आसन पर बैठकर दक्षिण की ओर मुँह करके जाप करना आरम्भ करे । इक्कीस दिन तक बराबर जाप करता रहे । इक्कीसवें दिन यक्षिणी स्वप्न से आकर दिखाई देगी ।

मदना यक्षिणी का आगमन—

यह यक्षिणी सताइसवें दिन से सिद्ध होने की सूचना देती है । साधक से स्वप्न में अनेक प्रकार की मनोहर

बातें करती है अपने हाव भाव कटाक्ष से साधक को मोहित करती है। हर प्रकार से उसकी सेवा करती है तथा सर्वदा उसकी सेवा करती रहती है। स्वप्नावस्था में जो कुछ साधक कहता है उस काम को तत्काल कर लाती है। जब जाती है तब हर प्रकार से साधक को प्रसन्न कर तसल्ली देकर जाती है।

मदना यक्षिणी का स्वरूप—

रूपवती सुन्दर स्त्री मीठे बचन कहने वाली मन्द मन्द मुस्काने वाली, कभी हँसती, कभी नाचती गाती है। पोशाक सदैव काशनी रंग की पहिरे रहती है। जवानी के मद में चूर रहती है, नूर उसके चेहरे से टपकता रहता है, काम कला में अति निपुण होती है। सदा साधक की इच्छानुसार काम करती है। कभी उससे अप्रसन्न नहीं होती।

प्रभाव—उसके सिद्ध हो जाने से साधक का मन एक जगह पर एकाग्र हो जाता है। फिर उसको किसी बात की आकांक्षा नहीं रहती।

❀ इति पंचम अध्याय समाप्त ❀

अथ छवाँ अध्याय

मन्त्रों से रोगों का इलाज

आधाशीशी का मंत्र

ॐ बन में बसी बानरी उछल पेड़ पर जाय कूद कूद
शाखन पर फल खाय । आधा तोड़े फोड़े आधी शीशी
जाय ।

कागज पर स्याही से हथपाई खींचे और सात आड़ी
रेखायें काटती चली जाय । इसी तरह कई बार करे तो
आधा शीशी जावे । (साथ-साथ मन्त्र पढ़ता जावे)

दूसरा मन्त्र

ओम् नमो आदेश गुरु की काली चिड़ी चिम २ कर
बोली आवा बासे हारे सजी हनुमान हांक मारे आधा
शीशी हरे गुरुशक्ति मेरी प्रजा फूरो मंत्र बाबा ईश्वरी ।

इस मन्त्र को नौ बार पढ़े और पढ़ कर चाखने से
आधाशीशी चली जाती है ।

आँख दुखने का मंत्र

ओम् नमो भ्रलमल जहर नली तलाई अस्ताचल
पर्वत से आई । जहां जा बैठा हनुमान जाई । फूटे ना
पाके करे न पीड़ा, यती हनुमान ठाके पीड़ा ।

विधि :—

बरगद के पत्ते से तेरह बार झाड़े और साथ ही साथ मन्त्र पढ़ता जाये ।

पीलिया का मंत्र

ओम् नमो बार बैताल असुराल नारसिंहदेव जो स्वादतुखादी सुभाल सुभाल पीलिया की झारे चाटे रहे न पीलिया निशान । जो रह जाये तो हनुमान की आन ।

विधि :—

रोगी के माथे पर नारियल का तेल कटोरी में लेकर सात बार चन्दन से मले ।

मलते समय ऊपर लिखे इस मंत्र का उच्चारण करें और दिन में दो दफे इसका प्रयोग करें ।

कुत्ता काटने का मंत्र

ओम् नमो कामरूदेश कामाक्षी देवी जहाँ रहे इस्मायल योगी, योगी ने पाली कुत्ती दस काली दस पीली दस लाल दस काबरी । रङ्ग बिरङ्गी दस खड़ी दस माल ठिकाव । रक्षा करे इनका विष हनुमान हरे गुरु गोरखनाथ ।

विधि :—

इस मन्त्र को ग्रहण की रीति से १०० दफे जपे । धी

का दीपक जला कर मीठे का भोग लगावे इस प्रकार सिद्ध करे और जिसे कुत्ते ने काटा हो उसके घाव के चारों तरफ गोइठा की राख लेकर २७ बार मन्त्र पढ़कर लगा दें तो दो ही दिन में ठीक हो जायगा ।

बिच्छू के विष उतारने का मंत्र

ओम् नमो सुरहंगाय पर जाय हरी दूब खाती फिरे ताल तलैया पानी पिये सुरहगाय ने गोबर किया बिच्छू सात जिसमें उपजे हरा लाल पीले काले उतरे बिच्छू का उतर जा या नहीं गरुड़ उड़कर आया सत्य नाम आदेश गुरु का शब्द फूरो साँचा मंत्र ।

इस मन्त्र को १०८ बार दीवाली के दिन जपे और सिद्ध करे और जिसको बिच्छू ने काटा हो, इस मंत्र को पढ़े और उसे पानी पिलावे तो विष उतर जाये ।

पहला मन्त्र

ओम् भुं हूं चं कं नं लं ओ ओं हं हं ।

विधि :—

इस मंत्र को पढ़ कर जहाँ बिच्छू काटा हो वहाँ पर मौलश्री को छाल पीस कर लेप करने से सारा विष दूर हो जायगा ।

ओम् नमो आदेश गुरु का समुद्र २ है खाई ।

इस मन्त्र को सिद्ध करले फिर जिसे बिच्छू ने काटा है उसे इस मन्त्र को पढ़ कर पानी पिलाया जाय तो विष उतर जायेगा ।

प्रेत वशीकरण मंत्र

ओम् स ल सुनोता सोसलबाई काग पढनाधाई आई ओल ठः ठः ।

विधि :—

रविवार के दिन आधी रात को नङ्गा होकर बबूल के पेड़ के नीचे आक की लकड़ी जलावे और मंत्र पढ़े फिर काला तिल और चने की आहुति दे तो प्रेत बातें करे उस समय दृढ़ होकर अपना हाथ काटे और चार बूँद खून धरती पर गिरा देवे तो प्रेत हमेशा वश में रहे ।

आयु बढ़ने का मंत्र

ओम् आरी मेडा हार राई में पहरा कारहार पुतली वह स्थी स्थी ।

विधि :—

इस मंत्र को कौए के पंख पर रविवार के दिन पढ़े और सिर पर बाँधे तो आयु बढ़े ।

फोड़ा भारने का मंत्र

ओम् रहती लहलूमीयां आव भूता ग्रहतनो ओं ठः ठः ।

विधि :—

शनिवार के दिन रास्ते की धूल से यह मन्त्र पढ़ कर सात बार झाड़े तो फोड़ा में आराम हो ।

पानी से दूध होने का मन्त्र

ओम् बिहश्त सादियाम सहाल अह अह रः ।

विधि :—

शनिवार के दिन हिंगुआर के बाल ले आवें और मन्त्र पढ़ कर पानी में डालें तो पानी दूध हो जाय ।

आँख की फूली कटने का मंत्र

ओम् हजार ज्वाला थः ।

विधि :—

इस मन्त्र को शनिवार के दिन पढ़े और छूरी से जमीन पर रेखा खींचें तो आँख की फूली चली जाय ।

भूख न लगने का मंत्र

ओम् गुजाह दरवांउन मखसुख मांस रघिलतवी
आहूम आहूम ।

विधि :—

रविवार के दिन इस मन्त्र को पढ़ कर चर्खी का फल खाले तो कभी भी भूख न लगे ।

डबके का मन्त्र

ॐ नमो खांगरी खांगरी कहाँ एक लाख पर्वती पर गया सवा लाख पर्वती पर जाय कर क्या किया घुसेड़ा छूरा घुसेड़कर छूरा क्या किया डबकि का हाथ पैर काट काल कम्बल में लपेट खाया समुद्र में बहाया ।

विधि —

रविवार के दिन आधी रात के समय में छै अंगुल का टुकड़ा एक बाण (तीर) को लेकर रास्ते में खड़ा कर दो तो डबके की बीमारी अच्छी हो जायेगी ।

तिजारी ज्वर का मन्त्र

ॐ नमो महाउदृष्टि योगिनी प्रकोणदृष्टाखादती वर्ग वतिनसित भक्षित ओं ठः ठः ठः ।

विधि —

इस मन्त्र को गूलर के पत्ते पर पढ़े और इसे बायें भुजा पर बाँधे तो तिजारी ज्वर चला जाय ।

चौथिया निवारण मन्त्र

ॐ ऐं ओं महमह द्रव्य ओं ऐं बहनओं हीं ।

विधि :—

रविवार को किसी भी नदी में खड़े होकर इस मंत्र को १०५ दफे जपे तो चौथिया दूर हो जाय ।

बराने का मन्त्र

ओ कं कं कं कं कं ठं ठः ।

शनिवार मंगलवार को नीलकंठ के पंख पर मंत्र पढ़ कर शिखा में बांध ले तो रात में सोते समय बरानि लगे ।

प्रेत निवारण का मन्त्र

ॐ नमो आठ खाठ खाट का लाकड़ी मुजवनी का मुवा मुरदा नहीं तो महावीर की आन :—

विधि :—

अमावस के दिन लोबान छालछबीली चमेली के फूल लौंग असगंध कपूर आदि लेकर श्मशान में जाय तो श्मशान उठे और आवाज निकले ।

गर्भ धारण मंत्र

ॐ हीउल जालल्य ठ ठ ओं हीं ।

विधि :—

ऋतु काल में स्त्री और पुरुष शेर की खाल पर दोनों ही बैठे और पुरुष स्त्री के कान में इस मन्त्र को १०३ दफे कहे तो स्त्री को गर्भ रहे ।

गर्भ रक्षा मंत्र

ॐ रुद्रा मींद्रव ही हा हा हा ओं ही ।

विधि :—

शनिवार की रात को गुग्गुल की धूप दे और गर्भवती स्त्री के पास २११ दफा जपे तो उस स्त्री को किसी प्रकार का कष्ट नहीं हो सकता और गर्भरक्षा हो ।

शिशु रोदन मंत्र

ओम् नमो दहवायरफे रस्ट ही ।

विधि :—

स्नान करे और किसी भी पवित्र स्थान पर बैठ कर आठ कोरी सींक से मन्त्र पढ़ते हुये भाड़े तो रोता हुआ बालक चुप हो जाय ।

टोना का मंत्र

ओम् वज्र प्रहार कपाट कलक अलक पल लंका का
फलक पलांग वती की वाचा ।

विधि :—

इस मन्त्र को २३ दफे पढ़ कर चमेली के फूल से
पानी नारसिंह के ऊपर फेंके तो नारसिंह बँध जायगा

नेत्र बाधा निवारण मंत्र

ओम् अगली गगाली अताक पताल मर्द गदं अदार
कार फट फट उत्कट हूँ ठः ।

विधि :—

शनिवार के दिन नीम के पत्तों को लेकर उसी से
भाड़ दे और २४ दफे इस मन्त्र को जपे तो आँख की
बाधा दूर हो ।

कर्ण बाधा निवारण मंत्र

ऊंकननप सार धांवर धां २ प्रवेश कर डार डार
भार भार मार मार पात हुँकार शब्द साँचा ।

विधि :—

साँप की बाँबी रज से २३ दफे इस मन्त्र को पढ़े
और भार कर मिट्टी कान से लगावे तो सब प्रकार का
रोग दूर हो जावे ।

कण्ठ कष्ट मंत्र

ओम् नमो नरसिंहाय आदेश गुरु का घाई कराई
का करता चलतां वज्रवेदन भेदत ओं उः उः ।

विधि :—

उत्तर दिशा में बैठे तथा कुएँ पर की घास को लेकर
मन्त्र पढ़कर रोगी को देने से कंठ बाधा दूर हो ।

मस्तक पीड़ा का मन्त्र

सहस्र घर वाले एसरबाय चले आगे तो पीछे मन्त्र
सांचा फूरो बाच ।

इस मन्त्र को मंगलवार के दिन पढ़े और उसे सिद्ध
कर ले अगर किसी के सर में दर्द हो तो इस मन्त्र को
पढ़कर फूंक मारे तो सिर का दर्द आराम हो जाता है ।

नकसीर निवारण मन्त्र

ओम् लारती मारती दसो दिशा धवला पर्वत खंड
खंड करवा मन्त्र सांचा फूरो बाच ।

विधि —

इस मन्त्र को पढ़े और पानी में फूंक मारता जाय
फिर उस पानी को नाक से सुरक ले तो नकसीर
बन्द हो ।

ज्वर निवारण मन्त्र

ओम् भैरव भूतनाथे विकराल काये अरिन् वर्ष धाये
सर्व ज्वर बन्द बन्द मोचय त्रयम्बके ती हुँ ।

विधि :—

इस मन्त्र को गुलाब के हरे पत्ते पर पढ़ कर दाहिने
हाथ में बाँधे तो ज्वर चला जाय ।

बवासीर का मंत्र

ओम् छई छलक आई आहुम आहुम कं कां
कीं हूँ ।

विधि :—

शनिवार और सोमवार के दिन इस मन्त्र से पानी
फूंक कर आबदस्त ले तो बवासीर चला जाय ।

विदेशी को घर बुलाने का मंत्र

ओम् ग्वला ग्लीं ग्लुं ओं श्रीं हां हः ।

विधि :—

काले मृग की छाल पर पीपल के नीचे बैठ रुद्रवन्ती
और श्रीफल की खीर मनाकर मन्त्र पढ़कर आहुती दे तो
विदेश गया हुआ आदमी फौरन घर आ जाये ।

सुई निकालने का मन्त्र

ओम् नमो चढ़कर चुना लोहार सारे गढ़े लोहार लोहे का तोड़ तोड़ के किया पानी लोहा जार भस्म कर हानी राम वीर तो जाया माटी लक्षमन वीर मुद घाव पाव फूटे वीरडा करे तो राम चन्द्रही रक्षा करे । शब्द सांचां पिण्ड कांचा फुरो मन्त्र ईश्वरो बाच ।

विधि—

जहाँ सुई गड़ी हो वहाँ पर हाथ फेरे और भभूत की चुटकी भर कर मन्त्र पढ़ता जाय तो सुई अपने आप वहाँ से निकल जायगी ।

नजर भाड़ने का मन्त्र

ओम् नमो सत्यनाम आदेश गुरु को ठाम नगर जहां बोले छल से अमृतवानी पर पीर न जानी जहां से आई कौन जाति तेरी कहाँ की टेरे की अबताई । कहाँ घाम किसकी बेटो क्या है नाम अब वास करले तेरी माया कहाँ से उड़ी कहाँ जाय मेरी बातें सुन चित्त लाय जैसी हो सुनाऊँ जाय । तेलिन तमोलिन चमारिन खतरानी मेहतरानी कुम्हारिन कायथिन राजा की रानी जाको दो

सवाही के सिर पड़े पार नजर से रक्षा करे मेरी भक्ति
गुरु की शक्ति फूरो मन्त्र ईश्वरोबाच ।

विधि :—

सुबह के समय बालक को सिर से पैर तक झाड़
दे और साथ-साथ मन्त्र पढ़ता जाय ।

पशु रोग नाशक मन्त्र

ओम् नमो बेली देहली बाँधी दहलाय राम सारी
खाट की पशु नीको हो जाय ।

विधि :—

चारों तरफकी चार खाँटगो खिड़कीं में खड़े होकर
पढ़े तो रोग आपसे आप भाग जाये और पशु भी ठीक
हो जाय ।

पशुओं के कीड़े मारने का मन्त्र

ओम् नमो कीड़ारे कुंडु कुंडालो लाल पूंछ तेरा
मुँह काला । हैं तोहि पूभा कहखे आका तूने सब मास
खाया । अब तू जाय भस्म हो जाय । गुरु गोरखनाथ
करे सहाय ।

यह मन्त्र पढ़ते हुए आम की डाली से सात बार
झाड़े तो सब कीड़े मर जायें ।

दाढ़ दड़ का मन्त्र

ओम् नमो कामरू देस कामनी देवी जहाँ बसे
इस्माइल योगी । इस्माल योगी ने पाली गाय, नित उठ
वन में चरने जाय, चंरे सूखे घास खाय जिसने गोबर
किया जा में उपजा मुताला पूंछ पुछाला धड़ है पीला
मुँह काला दाँत गले मसूड़ा पीड़ा करे तो गुरु गोरख
नाथ की दुहाई ।

विधि—

इस मन्त्र को लोहे की पिरैग पर पढ़े और उसे
काठ में ठोंक दे तो मसूड़े की पीड़ा दूर हो जाय ।

दाढ़ फे कीड़े भारने का मन्त्र

सकोरा सामे में सीसे में लींची में पानी में कीड़ा
कीड़ा करे पीड़ा हरे । शब्द साँचा में पिंड काँचा फूरो
मंत्र इश्वरो बाचा ।

इस मन्त्र को लोहे के कीले पर पढ़कर तथा दाढ़
के कीले को कुँआ में डाले तो सब कीड़े मर जाँय ।

॥ इति छठा अध्याय सम्पूर्णम् ॥

अथ सातवाँ अध्याय

विविध चमत्कार

शास्त्रार्थ जीतने का मन्त्र

ओम् जीव जीव जीव उत्तर में वामहप्रसार मसुष्म
आताल रसना ठः ठः ठः ।

सोमवार के दिन सुबह एक हाथ से कूद कूद कर किसी भी पक्षी को गोली मारे और उसका पंख, कस्तूरी और सफेद चन्दन में घिस कर माथे में टीका लगाकर जिससे शास्त्रार्थ में जाय तो वहाँ जरूर जीते ।

मदारी को पछाड़ने की विधि

थोड़ी सी सरसों लेकर नौ दफे मन्त्र पढ़े और मंत्र पढ़कर मदारी को मारे तो वह मुर्छित हो जाय ।

मन्त्र

ॐ नमो गदाधारी हनुमन्त बीर, स्वामी का तेज बरी का शरीर; अदृष्टि चक्र मातु कालका चलाया चला बैरन कर थैर में करिहों तेरे जीवन का भ्रात मैं न डरूँ तेरे गुरु पीर से मारे तुझे एक ही तीर से मारे मारा-एल घूमे जैसे भुजंगी सर्प की लहर पैर तो सिहिरत मारू बाण से बचले तो गुरु गोरखनाथ की आन ।

दामिनी (विजली) नाशक मन्त्र

ॐ प्रज्वलित जो गर्जती ता ता ता ।

विधि:—

मसूर की दाल को जिस तरफ मन्त्र पढ़कर फेंके उस तरफ विजली नहीं गिरेगी ।

चोरी निकालने का मन्त्र

ॐ नमो पतरसौ पीर चौंसठ योगनी ५२ सौ भैरो तेरह सौ वीर बहत्तर सौ तन्त्र १६ सौ मन्त्र ७२ सौ पहाड़ आठ सौ नाला नदी गुरु गोरख रखवाला काँसी की कटोरी अंगुलवार चौड़ी कहा वीर से आई गिरी-नार पर्वत से भँगाई । अठारह बार वनस्पति चल कानी कुम्हारी लौ नाच भारी कहाँ २ जाय चोर के जाय चन्डाल के जाय क्या लावे चोर को पकड़ लावे गढ़ा । धन जाय बताय चला न जहाँ हनुमन्त वीर बसे ।

विधि :—

एक अंगुल चौड़ी ताँबे की कटोरी लेकर दिवाली की रात्रि को कटोरी की पूजा करे और इसी मन्त्र से उड़द पढ़ कर चौक में रखे, जिधर कटोरी जाकर रुके वहीं चोरी का माल निकलेगा, प्रतिदिन १०७ बार मन्त्र पढ़े तो एक हजार एक दिन में सिद्ध होगा ।

डाकिनी मूँड़ने का मन्त्र

ॐ नमो लोह सिंहासनी लोहुलाऊ सिंहानाद
 नस्तर गठा राम वीर ने नस्तर लक्ष्मण वीर ने सबसे
 बजिया मूँठ तेरा गुरु पीर जिन दिया मासकरा मन्ड
 तेरा मात पिता हनुमन्त ले आबी जा लंका जारी मारि
 मुँडि कातिठ महाबीर ध्वज धीवती देख्य सिर मुँडिये
 भैरो छप्पन गाँव वापस संग से हरू मुँड मुँड रे हनुमन्त
 वीर जाका जिया धरे न धीर धर बैठा मैं घोड़ामुडु गाँव
 बन काहे की ठुड्या मन्त्र से मुँड डाकिनी सिंहार हनुमन्त
 पती ध्यान तुम्हारी ।

विधि:—

उस्तरा को गाड़ दे और शिवरात्रि के दिन एक सौ
 सात दफे मन्त्र पढ़े और अपना गौडां मुँडों तो डाकिनी
 का सिर मूँडे ।

भूत प्रेत बोलने का मन्त्र

ओम् घों घों ध्यान करता अलख पती हांकदेत हाक
 रात बोल २ शब्द साँचा ।

हींग को लहसुन के रस में मिलाकर जिसे भूत प्रेत
 लगा हो उसकी आँख में लगा दे तो वह बोलने लगे ।

वीन बाँधने का मन्त्र

ओम् नमो वादी प्रायराड करने को बैठा बड़ पीपल की छाया और बादीन की जे बाँधूँ तेरा कण्ठ अरु काया बाँधूँ बैन अरु योगी और मसान की बानी अब तो रह बिन सुजान वाले नरसिंह ऊपर हनुमन्त गाजे तो न बजेगी ।

विधि :—

इस मन्त्र को १००० बार जप कर सिद्ध कर लें और जब वीन बाँधनी हो तो नौ बार मन्त्र पढ़ लें और वीन पर मारे तो वीन नहीं बज सकती ।

साँप निकालने का मन्त्र

ओम् नमो सर्पावे थूल मथूल मुख बना तेरा कमल का फूल सर्पा तेरी बाँधूँ दासी जिसने तू गोद खिलाया और बाँधूँ स्तन कटोरा जिसमें दूध पिलाया । बीस की लती ऐसा करे जो घाव तेरी दाढ़ भस्म हो जाय गुरु गोरख भी जाय जलाय । आँदेश गुरु को मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरो बाचा ।

इस मन्त्र को शिवरात्रि से आरम्भ करें और छः

महीना तक पहर भर जप करें और जब सिद्ध हो जाय तो गोइठा की राख लेकर पांच बार मन्त्र पढ़ें और साँप के ऊपर डालें तो तुरन्त वह बँध जाय ।

दूसरा मन्त्र

ओम् नमो भई कीलन बासा भया कुवास जाहु साँप
घर अपने घूम फिर चारों मासा ।

विधि :—

इस मन्त्र को, पढ़े और ऊपर से मिट्टी डाले तो कीला हुआ साँप खुल जायगा ।

पानी पर चलने का मन्त्र

ओम् नमो काल भैरू कालिका पूत पागा खड़ाऊँ
हाथ गुरजघो भन प्रभात श्रान्तु अग्रसु भरा तेरा न्योता
में करूँ दिन राति जो तू मन चीता काम कर दे मोव
कुशुम केशर से पूजा करूँ तुम्हारी ओर मन काम करो
गुरु गोरखनाथ की वाचा फूरो ।

विधि :—

पुष्य नक्षत्रमें रविवार के दिन आग की पूजा करें । सात दिन बाद उसे जड़ समेत उखाड़ लावे । फिर जड़ को पाँव की खूँटी बनवाये और उसे पैर में डाल पानी के ऊपर चलें तो पानी की सहर्षे न लगेगी ।

रात के समय साँप दिखाई देना

विधि :—

बुधवार के दिन कपास (बिनौले) का बीज ले कर उसे मरे हुए सर्प के मुख में डाल दे और दूसरे दिन उस बीज को निकाल ले और उसे जमीन में बो देवे, जब उसमें रूई पैदा हो तो उसकी बत्ती बनावे और गाय के बी में रात के समय जिस घर में जलावे उस घर में चारों ओर सर्प ही मर्प दिखाई पड़ेगा । बत्ती को बुझा देने से साँपों का दिखाई देना बन्द हो जावेगा ।

बिच्छू दिखाई देना

विधि :—

कपास का बीज शनिवार के दिन मरे हुये बिच्छू को उसके ऊपर रख दे । फिर उसे हटाकर उस बीज को जमीन में बो दे । जब उसमें रूई पैदा हो तो उसे बत्ती बनावे और रेडी के तेल में भिगोकर जिस घर में जलावे तो उस घर में बिच्छू ही बिच्छू दिखलाई पड़ेगा ।

बिना दीपक के अक्षर दिखाई देना

रविवार के दिन उल्लू की खोपड़ी में घी डाल कर दिया जलावे और उसके कालिख से काजल बनाकर अपने

आँखों में लगावे तो रात में बिना दिया क अक्षर दिखाई पड़ेंगे ।

गुप्त होने की विधि

सरसों के तेल में हरिन का मांस मिला दे और जिसके ऊपर एक बूंद तेल डाल दे वह गायब हो जावे ।

दूसरी विधि

खिड़ेखी पंखी को लाकर एक साल पिजरे में रक्खे तो वह कुग्रम हो जायेगा और इतने समय में इसके एक कलंगी (चोटी) उत्पन्न हो जायेगी और वह इतनी लम्बी होगी कि उससे सारा बदन ढँक जायगा । फिर उस चोटी को उखाड़ ले और उसका ताबीज बनावे और जब भी उसे पहने तो फौरन गायब (गुप्त) हो जाये तथा उसको कोई न देख सकेगा ।

सिद्धि तेल

नारियल के तेल में कुसुम का बीज डाल दे और उस तेल को धूप में रख दे । अगर इस तेल में कमल का बीज मिलाकर किसी-सी खाब में डाले तो कमल पैदा होगा । अगर जामुन के बीज में डाले तो उसी वक्त जामुन का पेड़ लगे और साथ-साथ फल लग जाय ।

अन्धा बनाने की विधि

अकोहर का फल और बिलाई कन्द मुख में रख लेने से दूसरे मनुष्य की निगाह बन्द हो जाती है और वह मनुष्य इस प्रकार नजरबन्द करके जो चाहे करके दिखा सकता है ।

शत्रु का पेशाब बन्द हो

विधि :—

दुश्मन ने जहाँ पर पेशाब किया हो वहाँ की मिट्टी को लेकर चमगादड़ के मुँहमें डाल दे फिर उसे जङ्गल में किसी जगह मिट्टी के अन्दर गाड़ दे तो उसका पेशाब बन्द हो जाय ।

सूर्य का रथ दिखाई देना

विधि :—

अगर नींबू के बीज का तेल निकाल कर तबि के पात्र में लगाये और दोपहर या सन्ध्या से समय उससे सूर्य को आकाश में देखें तो रथ सहित उनका पूरा आकार दिखलाई पड़ेगा । यह सिद्धि योग बिना प्रयोग का है ।

दिन में तारे दिखाई देना

विधि :—

काला सुरमा को गुलाब के रस में तीज के दिन

मिलाकर खरल करे और आठवें दिन अपने आँख में लगावे तो दिन में आपको तारे दिखाई देंगे ।

अनोखा खड़ाऊँ

विधि :—

सादा छूही मिट्टी लाकर पीस ले और खड़ाऊँ पर लेप करके उसे सुखा दे, फिर जब खेल करना हो तो अपना पैर धोकर पहन ले तो बिना खूँटी के खड़ाऊँ पर चलता देख कर सब आश्चर्य करेंगे ।

कच्चे मटके में पानी भरना

कच्चा घड़ा लेकर उसमें नौ दिन तक घीक्वार और चन्दन का लेप करे और सूख जाने के बाद उसमें पानी भरे तो घड़ा नहीं टूट सकता ।

अण्डा उछालने की विधि

मुर्गी का अण्डा लेकर उसमें पारा और राई भर दे फिर उसका मुँह मोम से बन्द कर दे और उसे घूप में रख दे, थोड़ी देर बाद वह अण्डा अपने आप उछलने लग जायेगा ।

चलनी में पानी भरना

विधि :—

चलनी में घीक्वार और सरसों का लेप नौ दिन तक

करे, जब वह सूख जाये तो चलनी में पानी भरे । ऐसा करने से एक बूँद भी पानी नीचे नहीं गिर सकता ।

अण्डा उछालना

विधि :—

मुर्गी के अंडे का सब रस निकाल कर उसका छेद बन्द कर उसे फव्वारे पर छोड़ दे तो वह अपने आप उछलने लगेगा । वह खेल ऐसी जगह करे जहाँ हवा न लगने पावे ।

बबूल का काँटा चबाना

विधि :—

अनारस और द्रोणपुष्पी का पत्ता चबाकर उसका रस मुख में रक्खे और काँटा को लेकर चबावे तो कोई भी कष्ट नहीं हो सकता है और देखने वाले लोग भी अचरज में पड़ जाएँगे ।

मुँह में आग रखना

विधि :—

कुलन्जन, अकरकरा और नौसादर मुँह में डालकर खूब चबावे और गरम पानी से कुल्ला करके मुँह में आग रखने से वह कभी असर नहीं कर सकती ।

खुद आग का पैदा होना

विधि :—

हाथी और ऊँट की लीब लेकर उसे जब वह जल

जाय तो उसमें मधु मिलाकर अपने पास रखे, जब खेल करना हो तो उसे हवा में रख दे तो उसमें से चिनगारी निकलने लगे ।

खेत की रखवाली हो

विधि :-

इतवार के दिन किसी बरतन में पान, असगंध, गाय का घी, तुलसी का पत्ता और मिठाई वगैरह भर दे तथा लाल कपड़े से मुँह ढंक दे और जिस खेत में गाड़ दे, उस खेत में चोर सियार आदि कोई जानवर नहीं जा सकता तथा किसी तरह का नुकसान नहीं होगा और उपज भी बढ़ जायेगी ।

शीशी आग से भरी दिखाई देना

विधि :-

शीशी में शराब गन्धक और सोरा डाले और उसे अँधेरे में रख दे तो शीशी आग जैसी चमकने लगेगी और कोई देखने वाला ताज्जुब करेगा ।

दीवार पर आग दिखाई देना

विधि :-

दीवार पर मिट्टी का तेल और शराब मिलाकर पुतवा दें फिर सबके सामने आग लगा दें तो दीवार जलती हुई दिखाई पड़ेगी ।

शीशी में अण्डा उतारना

विधि :-

बिलायती वियर में मुर्गी का अंडा भिगो दे, और जब वह नरम हो जाये तो उसे निकाल कर एक शीशी में उतारें और ऊपर से पानी भर दें तो वह बड़ा हो जायगा और देखने वाले ताज्जुब मानेंगे ।

नीबू उछालने की विधि

विधि :-

नीबू को लेकर उसका रस निकाल लें और उसमें पाल असगंध और नौसादर भरें फिर उसे धूप में रख दें तो थोड़ी देर में नीबू उछलने लग जायगा ।

हाथ में सरसों जमाना

विधि :-

स्त्री के दूध में सरसों भिगोकर उसे छाया में सुखा दे और जब खेल करना हो तो हाथ पर नदी की रेता और सरसों रखकर पानी का छीटा भारे तो सरसों तुरन्त जमेगी ।

कोयले को हरा करना

विधि :-

जलते हुये कोयले को किसी बर्तन में रख कर ऊपर से कास्टिक सोडा डाले तो कोयला का रङ्ग हरा

हो जायगा । ऐसा करने से भयंकर आवाज होगी । उस समय सावधान रहना चाहिये ।

जले हुये डोरे में अँगूठी लटकाना

विधि :-

नमक, नौसादर के पानी:में डोरे को भिगो दे फिर उसे सुखाकर रख ले और जब खेल करना हो उस समय डोरे में अँगूठी बाँध ले, दूसरा सिरा दीवार के सहारे खूँटी में बाँध कर सलाई से आग लगा दे । डोरी जल जायेगी मगर अँगूठी नहीं गिर सकती है ।

अग्नि से बिस्तर न जले

विधि :-

कपूर और चीनियाँ हल्दी को पान के रस में मिलाकर पीसे और उसकी छोटी २ बत्ती बनाकर छाया में सुखावे । जल खेल करना हो उसी वक्त उसमें आग लगाकर बिस्तर पर रखें तो वह कभी नहीं जलेगा ।

आग से उँगली न जले

विधि :

चीनियाँ हल्दी अर्सनिक दो भाग पारा भी ले डाले इनका आधा कपूर पीसकर तत्काल डाल दें ।

इनको उँगली में लेप करके लो अजमाय ।
जलती आग में उँगली जलेगी नाय ॥

बन्दूक की गोली मुँह से छूटना

विधि :—

मिट्टी की गोली बनाकर आग में पका लो और उस पर काला रङ्ग लगा दो जिससे वह गोली जैसा नजर आवे । जब तमाशा करना हो तो पहले से ही अपने साथी को कांच की गोली दे । तो उस गोली को वह मुँह में रख ले और तुमसे वह चालिस कदम पर जाकर खड़ा हो जावे । तुम जिस हाथ से बन्दूक पकड़ो उसी हाथ में मिट्टी की गोली रक्खो और दूसरे हाथ में वही कांच की गोली रहे, तब तमाशा देखने वालों से कहो कि—‘देखो मैं सामने वाले आदमी पर गोली चलाता हूँ ।’ इसी तरह बातों में लगाकर कांच की गोली को छिपा लो तथा मिट्टी की गोली छोड़ दो और तुम्हारे साथी को चाहिये कि बन्दूक का फायर होते ही अपने गोली को दाँतों के नीचे दबा ले । यह देख सब लोग चकित हो जायेंगे ।

नोट :—वह गोली भोस की बनाई जाय तो और भी ठीक रहेगा ।

लोहे का ताँबा बनाना

विधि :—

नीला थोथा कपूर पीसकर लोहे पर मलदेय ।
रंगत अपनी त्यागकर, लोहा ताँबा होय ॥

कपड़ों में आग न लगना

विधि :—

पीतल का कटोरा लेकर उसकी पेंदी में कपड़ा लगावे और ऐसा बाँधे कि पेंदी में चिपट जाय, फिर मधु, कपूर, रीठा और शराब इन सबको मिलाकर गोली बनाकर सुखा ले और कटोरी की पेंदी पर गोली रख फिर उसमें आग लगावे तो कपड़ा नहीं जल सकता ।

तोप के समान आवाज करना

विधि :—

क्रीक, गंधक, टाटरी, असगंध, जवाखार इन सबको बराबर मिलाकर हुक्के में भर कर आग लगा दे तो उसकी आवाज तोप के समान निकलेगी ।

आग खुद जले

विधि :—

चूना बुझा और बिना बुझा में फास फोरस मिला दे और कपड़े में रख कर काँसे के बरतन में रखकर ऊपर से पानी छिड़के तो अपने ही आप आग लग जाय ।

घड़ी को गायब करना

विधि:—

एक ही रंग की दो घड़ी ले लो जिसमें एक घड़ी आठवें नम्बर के खाल के सन्दूक से गायब करो और दूसरी घड़ी को तीसवें नम्बर, खेल की तरकीब लगाकर घड़ी को डबल रोटी से निकाले। तमाशा देखने वाले यह देखकर चकित होंगे।

छाते पर गिलाफ चढ़ाना

विधि:—

इस खेल में सबसे पहले टीन का एक नल जरूरी है। नल लम्बा होना चाहिये, उस नल के एक खाने में गिलाफ लगे हुये छाता को छिपाकर रख दे। फिर जब खेल करना हो तो एक छाता बिना गिलाफ का तान कर दिखा दे, और एक छाता का कपड़ा भी उसी नल के दूसरे सिरे पर रख दे तथा छाता का फर्मा तभी वहीं रख कर दिखा देगे।

कुछ देर बाद बन्दूक का फायर करके जनता का ध्यान बँठा दे फिर पहले वाले छाते को जो पहले ही से रखा हुआ है। उसे खींच कर लोगों को दिखा देवे। लोग यह देख कर अचरज में आ जायेंगे।

अक्षर रंगविरंगे करना

विधि:—

(१) कोरे कागज पर नीबू के रस से जो चाहे लिखे, फिर आग दिखाये तो उसका रङ्ग लाल दिखाई पड़ेगा ।

(२) अगर किसी कागज पर लहसुन के रस से लिखकर आग दिखावे तो पीला रङ्ग हो,

(३) दूध से लिखकर अग्नि दिखावे तो भी पीला रङ्ग हो ।

(४) गाजर के रस से लिखकर आग दिखावे तो दूसरे प्रकार का पीला हो ।

(५) हरे रङ्ग के अक्षर लिखना हो तो गेंद की पत्ती के रस से लिखे ।

(६) अनार के पत्ते के रस से लिखकर आग दिखाने पर भी हरा रंग हो जाता है ।

(७) दूध से लिखकर यदि पानी का छींटा मारे तो नीले रङ्ग के अक्षर दिखाई पड़ेंगे ।

वर्षा में दीपक जले

विधि:—

समुन्द्र शोष डालकर बत्ती बनाकर दीपक में जलावे तो वह वर्षा में भी न बुझे ।

फुलभड़ी

विधि :-

कलमी शोरा ५६ तोले, बन्दूकी बारूद ५६ तोले इन दोनों को मिलाकर उसमें उम्बाबीड मिलाकर फुल-भड़ी बना सकते हो ।

बिना रंग का नीला होना

विधि :-

पानी से गिलास भरों उसमें पीसयेट आफ पोटाश नाम की दवा की कुछ बूंदे डाल दो ।

एक दूसरे गिलास में सल्फेट आफ आयरन डालो । अब दोनों गिलास मिला दो तो गहरा नीला रङ्ग हो जायेगा ।

जादू का लाल रंग बनाना

विधि :-

एक गिलास में चुकन्दर की जड़ का रस निकाल कर भर दें और थोड़ा सा चूने का पानी लेकर डाल दे तो वह बिल्कुल सफेद हो जायेगा ।

अब एक रुमाल उसी पानी में डुबा कर सुखा दें तो रुमाल लाल रङ्ग का हो जायेगा ।

अण्डे का नाच

विधि :—

अण्डा कोई लेय मँगाय, सूई छेद पारा भरवाय ।
मोम लखावे छेद को, भली भाँति कर बन्द ।
जासे पारा बन्द हो, निकले नहीं अमन्द ।
इसने करके राखे पासा, तब फिर करे अजीब तमाशा ।
खेल समय एक रकाबी लावे, थोड़ी आँच जलाय तपावे ।
अण्डा करके गरम रखे फिर, उसी रकेबी माँहि ।
चटपट वह नाचन लगे, जनता रहे सराहि ॥

सुनहरे सितारे

विधि :—

(१) क्लोरेट आफ पोटाश २० भाग । (२) नाइट आफ ब्रिटा ३० भाग । (३) सोडा १५ भाग (४) गंधक ८ भाग (५) शिल्लेक ३ भाग । (६) कोयला १ भाग । इन सब चीजों को पीस छान कर शिल्लेक में भिगो दे । ये सितारे बड़े खूबसूरत और पूँछदार होते हैं ।

लाल बारूद

विधि :—

(१) नाइट्रेट आफ स्टेनिया ४० भाग (२) गन्धक

१३ भाग । (३) आफ क्लोरेट आफ पोटाश ५ भाग ।
 (४) सल्फ्यूरिक इन्टोयन ४ भाग ।
 इन सब को मिलावें तो लाल रंग की बारूद बनें ।

नीला बारूद

विधि :—

(१) गन्धक १३ भाग (२) भुनी फिटकरी १३ भाग । इसमें क्लोरेट आफ पोटाश मिलाकर बनावें ।

जर्द बारूद

विधि :—

(१) गन्धक १६ भाग । (२) कार्बोनेट आफ पोटाश ३० भाग । (३) क्लोरेट आफ पोटाश ६१ भाग ।
 उपर्युक्त सबको मिलाकर बारूद बना लें ।

गोल फुलभड़ी

विधि

(१) कलमी शोरा १२ तोला, (२) गन्धक १ तोला,
 (३) लोहे की बारूद ३ तोला, (४) कोयला ३ तोला ।
 इन सब को मिलाकर गोल फुलभड़ी बनालें ।

महताबी

विधि :—

शोरा २८ तोला । गन्धक १० तोला । हरताल ४ तोला । कपूर ५ तोला । इन सब को मिला कर महताबी बनालें ।

नकटी महताब

विधि :-

शोरा एक सेर, हरताल १ पाव, मुर्गो के अण्डे की सफेदी १ पाव, बीर बहूटी ६ पाव और नील सिगरफ ६ पाव, उपरोक्त सबको लेकर महताब बनावें, इसे जलाने पर जिस २ पर रोशनी पड़ेगी सबकी नाक नकटी दिखेगी ।

रंगीन महताबी

विधि :-

शोरा दसवाँ हिस्सा १।१०, गन्धक तिहाई हिस्सा १।३, हरताल आधा हिस्सा १।२ और नील चौथाई हिस्सा १।४ ।

उपरोक्त मिलाने से जर्द रंग की महताबियां बनेंगी । अगर लाल रंग को चाहो तो हरताल की जगह सिगरफ डाल दो । अगर हरे रंग की बनानी हो तो तृतिया डाल दो ।

बाण बनाना

विधि :-

शोरा ३० तोला, कोयला १४ तोला और गन्धक १० तोला ।

उपरोक्त को अलग-अलग कूट छान लेंबे । याद रखिये, शोरा आग को बढ़ाता है, गन्धक मन्दी करता है और कोयला चिनगारी उत्पन्न करता है ।

नारंगी रंग वाली बारूद

विधि :—

कोयला चार भाग, शोरा १७ भाग, गन्धक १० भाग, क्लोरेट आग पोटैस ५२ भाग । इन सब को मिला दे तो नारंगी रंग का बारूद बनेगा ।

नीलामीला बनाना

विधि :—

यह चीज बड़ी उम्दा होती है । इसकी तरकीब यह है—

सिन्दूर व शोरा, दस-दस भाग, आक्साइड आफ कोबाल्ट १ भाग और सफेद शोरा २ भाग ।

सबको मिलाने से नीलामीला बारूद बनेगा ।

अँगूठी कबूतर में से निकालना

विधि :—

एक किस्म की दो अँगूठियाँ लेकर एक अँगूठी को कबूतर के गले में बाँध दो । फिर उस कबूतर को एक चौड़े काले रंग के बोतल में डाल कर उसका मुँह बन्द कर दो । फिर दूसरी अँगूठी अपने साथी को देकर कहो कि उसे कुँए में डाल आवे । अब बाते करते हुए उस काले बोतल का मुँह तोड़कर कबूतर निकाल लो । शोग उसके गले में अँगूठी देखकर हैरान हो जायेंगे ।

भूत प्रेतादि दोष निवारण योग

विधि :—

कूट, बच, चन्दन, सेंधा नमक, गिलोय का सत, तेल, चर्बी—इन्हें मिलाकर धूप में सुखावे तो भूत प्रेतादि ग्रह आदि न सतावे, बालक तथा माता दोनों सुरक्षित रहें ।

अन्य

हरा मस भांग, मोम चूहे की लेंड़ी यह सब सम भाग लेकर बकरी के पेशाब में सात दिन खरल करके बारीक अंजन बनाकर नेत्रों में अपने डाले तो भूत-प्रेतादि दोनों का शमन हो ।

पुत्र ही पैदा होय

किसी को अगर कन्या होती हो तो बिलाव और सिंह का नाखून ताबीज में मढ़वा कर दाहिनी भुजा में बांधे तो अवश्य पुत्र हो ।

प्रसव दुःख निवारण

पति यदि अपनी पगड़ी में कंकर बांध कर स्त्री के बांध दे तो बालक शीघ्र हो ।

अन्य

इन्द्रायन तथा इमली के पत्ते को पीस कर नाभी पर लेप करे तो प्रसव जल्दी हो ।

वरीकरण प्रयोग के नुस्खे

लघु सक्रमेण लिंगेन नैव तुष्यन्ति योषितः ।
तस्मत्तत्प्रोतये वक्ष्ये स्थूलीकरणमुत्तमम् ॥

अर्थ—छोटे और पतले लिंग से स्त्री प्रसन्न नहीं हुआ करती है । अतः स्त्री जनों को प्रसन्न करने के लिये पुरुषों के लिये अति उत्तम लिङ्ग स्थूलीकरण नामक प्रयोग वर्णन करता हूँ ।

[१]

कूट, छोटी पीपर, दोनों खरैटी, बच, असगन्ध पत्र पीपल, कन्नेर यह सब वस्तुयें समान भाग लेकर कूट-पीसकर मक्खन के साथ मिलाकर लेप करने से कामध्वज मूसल के समान कड़ा हो जाता है ।

[२]

लोध, केशर, असगन्ध, पीपल, शालपर्णी यह सब वस्तुयें समान भाग में मिलाकर तेल में पकाकर कामध्वज पर लेप करने से वह कामध्वज लम्बाई में बढ़ता है और वह स्त्री जनों के मन को प्रसन्न करता है ।

[३]

बच, खरैटी, पारा यह तीनों वस्तु समान भाग लेकर कूट-पीसकर मिलावे और फिर इसको भैंस के मक्खन

के साथ (मक्खन ताजा इस्तेमाल करें) मिला कर लेप करने से मनुष्य का कामध्वज लोह दण्ड के समान कठोर (दृढ़) हो जाता है । (यह देखा हुआ प्रयोग है ।)

[४]

भिलावे की मिंगी, सेवार, कमल का पत्ता, यह सब वस्तुयेँ अग्नि में जलाकर बराबर भाग लेवेँ और सेंधा नमक मिलाकर बड़ी कटहली के साथ पानी में मिला कर लेप बनाकर कामध्वज पर लगावेँ । तो कामध्वज घोड़ा के समान कठोर (दृढ़) और मोटा हो जाता है ।

[५]

- सुअर की चर्बी के साथ शहद को मिलाकर कामध्वज पर नित्य एक महीने तक लेप करें । तो वह स्थूल, कठोर और लम्बा हो जाता है ।

[६]

असगंध, सतावरी, कूट, जटामाँसी और कटेहली का फल वह सब समान भाग लेकर किसी बर्तन में रख चौगुने दूध और तिलों के तेल में पका कर रहें । इसको मर्दन और भक्षण करने से स्तन, कामध्वज कान और हाथ इन सबको वृद्धि होती है ।

[७]

मूसली के चूर्ण को घी के साथ साथ मिलाकर

लेप करने से कामध्वज में कठोरता उत्पन्न होती है ।

[८]

पीपल, सेंधा नमक, दूध, मिश्री इन सबको मिलाकर लेप करने से भी कामध्वज कठोर हो जाता है ।

[९]

जटामासी, बहेड़ा, कूट, असगंध, शबारी यह सब वस्तुयें समान भाग लेकर तेल में पकाकर लेप करने से कामध्वज अवश्य स्थूल हो जाता है ।

[१०]

पारा, असगंध, हल्दी, गज पीपल और मिश्री यह सब वस्तुयें समान भाग लेकर जल के साथ खूब महीन पीसकर (घोटकर) एक महीने तक किसी बर्तन में रखकर मुँह बन्द करके रखा रहने दे । फिर इसका लेप करे तो रति सेवक, कान और स्तनों की वृद्धि हो ।

[११]

दोनों हल्दी, कमल, केशर और देवदारु इन सब वस्तुओं को बराबर-बराबर लेकर कूट-पीसकर रति-मन्दिर पर लेप करने से स्त्रियों का कामाशय संकुचित हो जाता है ।

[१२]

घाय के फूल, त्रिफला, (हर, बहेड़ा, आंवला)

जामुन वृक्ष की छाल, लोह सार, घी, मुलहठी इन सभी वस्तुओं को कूट-छानकर लेप करने से बूढ़ी स्त्री भी सुकुमारी के समान बन जाया करती है ,

[१३]

नील कमल, कटेली, बच, काली मिर्च, कन्नेर आसन हल्दी इन सब वस्तुओं को मिलाकर रतिमन्दिर पर लेप करने से स्त्री का कामालय तुरन्त (तत्काल) संकुचित हो जाता है ।

[१४]

वीर बहूटी को पीसकर स्त्री अपनी रति निकेतन पर लेप करे तो, उसका कामालय कठिन और गाढ़ हो जाता है । इसमें संदेह नहीं है ।

[१५]

नीम के पत्तों को जल में डाल कर औटाकर काढ़ा बनाके उस काढ़े से रति मन्दिर को धोवे अथवा नीम, हल्दी, घी, काला अगरु और गूगल इन सब वस्तुओं को धूप बनाकर रात में कामालय (रति मन्दिर) को धूप देने से स्त्री पति को प्रसन्न करती है ।

[१६]

नीम के पानी में कामालय को स्त्री जन धोकर नीम की छाल का लेप करे तो बहुत काल तक के लिए कामालय की दुर्गन्ध दूर हो जाय, इसमें संशय नहीं है !

[१७]

ढाक की भस्म और हरताल की भस्म को पानी के साथ पीसकर लेप करते रहने से स्त्रियों के कामालय के मैदान में रोम कभी नहीं जमते हैं ।

[१८]

हरताल की भस्म १ भाग, शंख की भस्म ५ भाग सब तरु (पिलखन) की भस्म ५ भाग इन सब वस्तुओं को लेकर केले के जल में मिलाकर-सानकर किसी पात्र में रखे और लगातार सात दिन तक इसका कामालय के मैदान पर लेप करे । इससे कभी रोम नहीं जमते हैं ।

[१९]

हरताल, शंख चूर्ण, मजीठ केसू की भस्म यह सब वस्तुयें समान भाग लेकर जल के साथ मिलाकर लेप करने से रोम नष्ट हो जाते हैं ।

[२०]

उपरोक्त दोनों वस्तुओं को खारे जल के साथ पीसकर घूप में बैठकर लेप करने से शीघ्र ही भग भाग पर उगने वाले रोम उखड़कर अलग हो जाते हैं ।

[२१]

मुगाड़ी के पेड़ के पत्तों को काटकर रस निकालकर उसमें गंधक पीसकर घूप में बैठकर लेप करने से काम:-

लय के मैदान में जमे रोम शीघ्र ही उड़ जाते हैं ।
 यद्यप्यष्ट गुणाधिको निगदितं, कार्कोऽगनानां सदा ।
 नीयतिद्रवता तथापि भटिति स्त्री कामना संगमे ॥
 तस्माद्भेषजस प्रयोग विधिना संक्षेपतो द्रावणं ।
 किञ्चित्प्लवयामि नीरजहशां प्रीत्या परं कामिनाम् ।

यद्यपि पुरुषों से स्त्रियों में अठगुना कामवेग होता है, किन्तु फिर भी स्त्रियाँ पुरुष के संगम से शीघ्र स्वलित नहीं होती है । अतः स्त्रियों को स्वलित करने वाली औषधियों का वर्णन संक्षेप में किया जाता है । जिसके द्वारा कामिनियों और कामी जनों को अत्यन्त प्रसन्नता (आनन्द) प्राप्त होती है ।

१—सिद्धूर, इमली के फूल, शहद इन सबको बराबर-बराबर लेकर पीसकर लेपकर स्त्री के साथ संगति करे तो स्त्री शीघ्र स्वलित हो जाती है ।

२—त्रिकुटा (सोंठ, भिर्च, पीपल) के चूर्ण को शहद के साथ मिलाकर कामालय के अन्दर रख देवे और फिर पुरुष प्रसंग करे । तो इस योग के कारण स्त्री एकदम द्रवीभूत हो जाती है । यह योगराज सदा सिद्धि देने वाला निहारा गया है ।

३—पीपल, चन्दन, कटेहली, पकी इमली इन सब वस्तुओं को लेप कामध्वज के ऊपर करने से स्त्री शीघ्र ही स्वलित हो जाती है, इसमें सन्देह नहीं ।

४—अगस्त के पत्तों का रस निकाल कर उसमें शहद और सुहागा (बोरेक्स) पीसकर मिलावे और इसका लेप बनाकर कामध्वज पर लेप करके जो पुरुष स्त्री के साथ प्रसंग करते हैं, तो इस योग के कारण स्त्री शीघ्र ही स्वलित हो जाती है ।

५—लोघ, धतूरा, पीपली, कटेहली, पीपल मूढ़ इन सब वस्तुओं का चूर्ण बनाकर शुद्ध शहद के साथ मिलाकर काम पताका पर लेप करने के पश्चात जो मनुष्य स्त्री से प्रसंग करता है, तो स्त्री अत्यन्त शीघ्र स्वलित हो जाती है ।

६—उड़द, मिर्च, मुलहठी, पीपल इन सब वस्तुओं को बराबर-बराबर लेकर असगंध के रस के साथ मिला कर पीस लेवे । इस लेप को जो पुरुष अपने कामास्त्र पर लेप करके जिस स्त्री के साथ प्रसंग करे वह स्त्री अति शीघ्र स्वलित हो जाती है ।

७—बेल का फूल, मुण्डी का फूल, कपूर इन तीनों औषधियों को बारीक पीसकर कामास्त्र पर लेप करने से प्रसंग करने में स्त्री शीघ्र द्रवित हो जाती है ।

८—केतकी के फल और जड़ तथा पीपल, काली-मिर्च, शहद, गोरोचन इन सब वस्तुओं का लेप बनाकर कामास्त्र पर लेप लगाने से स्त्री स्वलित हो जाती है ।

६—काली मिर्च, धतूरे के बीज, पीपर लोध इन सब को पीसकर महीन चूर्ण बनाकर शुद्ध शहद के साथ मिलाकर कामपताका पर लेप करे तो कामी पुरुष रति युद्ध में कष्ट से जीतने योग्यस्त्री को भी अवश्य पराजित कर सकता है ।

नोट—उपरोक्त नौ योग स्वलित करने के लिखे गये हैं इन सबको करने से प्रथम लेप आदि को नीचे लिखे इस मन्त्र से योग सिद्धि के लिये १०८ बार जप कर अभिमंत्रित करके प्रयोग करे । मंत्र यह है ।

मन्त्र—ॐ नमो भगवते रुद्राय उद्दामरेश्वराय ।
स्त्रीण मद द्रावय द्रावय ठः डः इति द्रावणम ॥

नोट—इस पुस्तक के अन्दर जितने तंत्र-मंत्र-यन्त्र आदि अथवा औषधियों के योग जो लिखे गये हैं वह सब इन्द्रजाल व दत्तात्रेय तंत्र आदि पुस्तकों में से अनुवाद करके संग्रह किये गये हैं । इनमें अनेक प्रयोग आयुर्वेद ग्रंथों से संग्रहीत किये गये प्रतीत होते हैं—अथवा यह भी संभव है कि किसी अन्य यन्त्रान्तर से इस प्रकार की तांत्रिक पुस्तकों में लिये गये हों । यह संग्रह प्राचीन हस्त लिखित प्रतियों में भी प्राप्त होता है । अतः हमने भी कुछ तब्दीली न करके अनुवादित करके संग्रहीत कर इस पुस्तक में संग्रहीत

किया है। इसी लिये हमने ज्यों का त्यों यहाँ पर रख दिया है।

इस प्रकार के योग जिनमें कि औषधियों का वर्णन दिया गया है, यह कुछ तांत्रिक ग्रन्थों की रचना से भिन्न प्रकार की होती हैं। जिन उपरोक्त बड़ी पुस्तकों से इनको संग्रहीत किया गया है, ऐसा प्रतीत होता है कि यह सब आयुर्वेद के ग्रन्थों से संग्रहीत किये गये हैं, क्योंकि तंत्रों के श्लोकों की रचना कुछ विलक्षण होती है। यह सब वैलक्षण्य तांत्रिक की भाषा का ही है। जैसे हुनेत-खन्ने-सांपिष्ठा वैष्णव तंत्रों में भी हुनेत क्रिया पद है। जो जुहुयात के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है। इसके लिए प्राचीन हस्त लिखित प्रति में स्तनों प्यारत्यतितौ न चैव, ऐसा पाठान्तर है।

जिस स्थान पर चूर्ण आदि का प्रयोग शिर आदि पर डालना लिखा गया है। उसके लिये—किसी प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों में तो शिरसोपरि—ऐसा पाठ है और किसी में मस्तकोपरि ऐसा पाठ है। उत्तमांग'शिरशीर्षमूर्धानामास्तकोऽस्त्रियाम'इत्याम'इत्यमरः

अथ स्तन दृढीकरणं स्तनवर्द्धनं च

अब प्रसंग वश ग्रन्थान्तर से स्तनों के दृढ़ करने तथा बढ़ाने का प्रयोग कहते हैं।

१—अन्डी का तेल, मछली का तेल, कच्चे बेल का रस इन तीनों को मिलाकर स्तनों पर मर्दन करने से स्तन नवीन हो जाते हैं ।

२—खंभीरा का रस और कैकड़ा को मिलाकर तेल में डालकर पकावे । फिर उस तेल को ठन्डा करने के पश्चात् यदि स्त्री अपने स्तनों पर लगावे तो स्तन कठिन और पुष्ट हो जाते हैं और गिरे हुए स्तन उठ आते हैं ।

३—बूढ़ी स्त्री या कन्या के स्तन यदि ढीले हो गये हों तो सफेद मोथा के फूल गौ के दूध के साथ मिलाकर खूब महीन पीस लेवे और उनको स्तनों पर मले अर्थात् दोनों स्तनों के ऊपर उपरोक्त पिसी हुई औषधि का लेप करे तो वे स्तन जो ढीले हो गये हैं, पुष्ट हो जाते हैं ।

४—बच, असगंध के पत्ते, गज, पीपल इन सब वस्तुओं को सम भाग मिलाकर निर्मल (स्वच्छ) जल (पानी) से पीसकर विधियुक्त स्तन मण्डल पर लेप करे । इस लेप के करने से गिरे हुए स्तन आम के फल तथा ताल फल के समान ऊँचे उठ आते हैं ।

६—गँभीरी के पत्तों का रस निकाल कर जितना रस हो उतना ही तिल का तेल लेवे और

फिर इन दोनों के बराबर ही जल ले ले। फिर इन सबको अर्थात् गंभीरा के पत्तों का रस और तिल का तेल कड़ाही में डाल आग के ऊपर रखकर औंटा लेवे जब यह रसायन औंटते-औंटते पानी और रस जलकर केवल तेल मात्रा ही शेष रहे। तब उस तेल को निकाल कर किसी बर्तन में (शीशी में) भरकर रख लेवे। इस तेल को स्तनों पर लेप करे तो स्तन लोहे के समान कड़े हो जाँय।

लाल स्याही बनाने की रीति

सज्जी, ऐलूआ और कत्था इन तीनों को मँगाकर अलग अलग कूट कर पानी में मिला कर ताँबे से बर्तन में कत्था का पानी चूल्हे पर चढ़ा दो और नीचे आग जला दो। जब उबाल आने लगे तब सज्जी का पानी और ऐलूआ उसमें मिला दो, जब तीनों एक हो जायें तब नीचे उतार लो इस प्रकार लाल स्याही तैयार होगी।

अंग्रेजी नीली स्याही

सल्फेट और इंडिगो को पानी में घोलने से नीली स्याही बन जाती है, यदि रंग गहरा न चाहो तो पानी अधिक डाल कर पतली कर लो।

हरी स्याही

मैथालय ग्रीन डब्ल्यू एस० ६६ ग्रैन, शुगर १६२२ ग्रैन, डिस्टिल्ड वाटर १६१॥ ग्रैन, सबको मिला कर १ औंस ठंडे पानी में डालिये और दो घंटे तक एक तरफ रख दीजिये, फिर उसमें पानी मिला दीजिये. जब कुछ गरम हो, तब उसमें खांड डालिये और उसे तब तक हिलाइये, जब तक कि वह सब घुलकर एक रस न हो जाए। बस फाउन्टेन पेन की हरी स्याही बनकर तैयार हो जायेगी।

पत्थर पर सुनहरी मुलम्मा

शोरा छह भाग, एलुआ रेजिया छत्तीस भाग में गलाकर एक भाग रांगा साफ मलकर सलफर तीन भाग, आयल आफ टरपेन्टायन में मिलाकर धीरे-धीरे खरल में घोटा जाये यहाँ तक खरल में घोटा जाए कि सस्त हो जाय फिर उसमें आइल आफ टरपेन्टाइन चार भाग मिलाकर काम में लावें।

बिना कल चाँदी का मुलम्मा

दो तोले नाइट्रेट सिलवर को पानी में भिगो दो जब गल जावे उसमें हाइपोसलफेट डाल दो जब यह भी गल जावे तो पानी में स्पंज भिगोकर जिस चीज पर

मुलम्मा करना चाहो उस पर खूब रगड़ो थोड़ी देर में चांदी का बहुत उमड़ा मुलम्मा बन जायेगा ।

सोने की चीज को चमकाना

गेरू दो हिस्सा नौसादर एक हिस्सा । दोनों को पानी के साथ पत्थर पर पातो फिर सोने की चीजों पर लगाकर आग पर रखकर सुखा लो । धुआं बन्द होने पर निकाल कर ठंडे पानी में बुझाओ फिर साफ पानी से धोकर और पिसे गेरू में घिसकर उस चीजों पर लगाओ और आग पर सुखाओ फिर बुरश या साफ कपड़े से पोछ कर चमका दो ।

नीलम बनाना

पोटाश ४६०८ ग्रैन तथा आक्साइड आफ कोबाल्ट ३८ ग्रैन दोनों को मिलाकर आग पर चढ़ा दो तो नीलम बन चमका दो ।

हीरा बनाना

सिलिका आठ औंस, कारबोनाइट आफ पुटाश २४ औंस, दोनों को मिलाकर गरम कर लो फिर ठंडी करके उसको डाइल्यूटेड नाइट्रिक ऐसिड में डाल दो, जब खदकना बन्द हो जाय तो पानी को ऐसिड से धो डालो तथा सुखा कर कारबोटेड बारह औंस मिला लो

और एक औरा मुहागा मिलाकर चीनी के खरल में घोट डालो और गरम करके दो तीन बार बुझा लो अन्त में शोरा डाल कर रख दो । बस हीरा बन जायेगा ।

फिरोजा बनाना

आक्साइड आफ कोबाल्ट दस ग्रेन, ग्लास आफ एन्टीमनी २४ ग्रेन, पोटेश ३१ ग्रेन इन सबको आग पर पिघला कर ठंडा कर लो, बस फिरोजा बनाने की यह सरल रीति है ।

पुखराज बनाना

पोटाश १०५ ग्रेन, ग्लास आफ एन्टीमनी ४० ग्रेन, एपिल आफ केस एक ग्रेन, इन सबको आग पर चढा दो तो पुखराज बन जायेगा ।

नेवला दिखाई देना

मङ्गलवार के दिन मरे हुए नेवले के मुख में कपास का बीज लाकर दे फिर निकालकर बो दे उससे जो रूई पैदा हो उसकी बत्ती बनाकर रात्रि में जलावे तो चारों ओर नेवले ही नेवले दिखाई देंगे ।

बिना आग का ज्वार भूनना

धूप के दूध में थोड़ी सी ज्वार भिगोकर छाया में सुखाकर रख लो जब खेल दिखाना हो तब उसको धूप

दिखाओ तो वह खिल उठेगी। एंसा मरा पक्कर विश्वास है।

गरम जंजीर को हाथ से खींचना

पहले हाथों में घीग्वार का अर्क या मुर्गी के अंडे की जर्दी या मुलहठी पानी में घिसकर लगा लो। फिर जंजीर खूब गरम करके किसी जगह पर लटका दो, फिर थोड़ा सा तेल उस पर छोड़ दो फिर धीले-धीले हाथ से खींचो हाथ कभी न जलेगा।

बिना रंग के पानी को नीला करना

एक पानी भरे गिलास में पीसयेट आधा पाउण्ड ही थोड़ी-सी बूँद डाल दो, दूसरे में सल्फेट तथा आयरन को डाल दो। अब दोनों गिलासों को एक जगह मिला दीजिये तो गहरा नीला रङ्ग बन जायेगा।

सोने के वर्क बनाना

असली सोना लाकर बारीक तार खिचवा लो तथा जितना चाहो उतने-उतने वजन के सॉचि में टुकड़े कटवा लो। इन टुकड़ों को हथौड़े से जितना बढ़ा सको चौकोर बढ़ा लीजिये फिर इनको हिरन की खाल की एक एक तह में रख दो फिर एक चौरस पत्थर पर एक एक तह वाले थैले में रक्खो हथौड़े से चौकोर बढ़ाओ तत्पश्चात्

उनको खोलकर कागज पर लगाओ तथा गड्डियाँ बना डालो। बस वर्क बनाने की सरल रीति यही है। इस प्रकार के चाँदी के वर्क भी तैयार हो सकते हैं।

मुलम्मा करना

असली चाँदी पाँच भाग, नमक का तेजाब सत्रहवाँ भाग, शोरा का तेजाब बीस भाग इन सबको बड़े चीनी के बर्तन में रखो, फिर सोना डालकर आग पर रखकर पघलाओ। जब धुआँ निकलना बन्द हो जाए तो दूसरे बर्तन में उल्टा कर ठंडा करने को रख दो थोड़ी देर बाद जिस वस्तु पर मुलम्मा करना हो उसके तार में बाँध कर बर्तन में लटका दो तथा नीचे आग लगा दो। ऐसा करने से मुलम्मा चढ़ जायेगा। फिर धोकर साफ कर डाले।

लोहे की नीली मोहर

श्लेक दो भाग, डियामेरेजट दो भाग, वरुंग एक भाग, वैनिस टरपेन्टाइन एक भाग, अल्ट्रामेरीन तीन भाग। इन सबको मिलाकर बनाओ अगर हल्का नीला चाहो तो शुद्ध सल्फेट एक भाग और मिला दो।

गुलदस्ता हरा रखना

ताजा फूलों का एक गुलदस्ता बनाओ और उस

गर पानी में कारबोनेट आफ सोडा मिलाकर छिड़कते रहो तो गुलदस्ता बहुत असें तक हरा भरा बना रहेगा ।

कपड़े पर की चर्बी दूर करना

लाइकर अमोनिया और अल्कोहल इन दोनों को बराबर लेकर मिलाओ । कपड़े के नीचे ब्लार्टिंग पेपर रख लो, फिर स्पंज के टुकड़े इन दो चीजों से तर करके दाग पर खूब फेरो तो चर्बी निकल जायेगी तथा नीचे लगा कागज सोख लेगा ।

लोहे को गलाना

इस्पात का एक टुकड़ा आग पर खूब तपाओ । जब लाल हो जाए तो थोड़ा गन्धक डाल दो । ऐसा करने से लोहा पानी हो जायेगा ।

बालक कवि होवे

बच का चूरन पीस के पिये दूध के संग ।

खोर भात भोजन करे कविता करे निशंक ॥

“ॐ सरस्वत्यै नमः” इसका प्रतिदिन १०८ बार जप करे जाए ।

काला रंग बनाना

एक गिलास में हाईल्यूट हाईड्रोफोस्त आफ एमोनिया भर दो और दूसरे में एसिटेट आफ लीड का ४

धर दो फिर दोनों को एक जगह मिलाने से काला रंग बत जायेगा ।

एक अँगूठी और जले हुये रूमाल को साबित करके डबल रोटी से निकालना

दो अँगूठियाँ और दो रूमाल एक ही सूरत के लो इनमें से एक अँगूठी को एक रूमाल के किसी कोने में दाँधो और डबल रोटी गूँथे हुए आटे में रखकर तन्दूर में पका लो । जब तमाशा करना हो तो यह डबल रोटी अपने एक साथी को दे रखो कि छिपाये रहो । फिर बाजार में आकर दूसरा रूमाल, जो पहले अँगूठी और रूमाल के समान हो तमाशाइयों को दिखाकर, जलाकर और उसकी राख बन्दूक में भरकर फायर कर दो । बाद में तमाशा देखने वालों से एक डबल रोटी माँगो तो तुम्हारा साथी बाजार की तरफ जाकर लौट आवे और डबल रोटी तमाशा करने वाले को देवे तथा तमाशा करने वाला वह रोटी तमाशा देखने वालों में से किसी एक आदमी को तोड़ने की आज्ञा दे दे । जिस समय वह आदमी डबल रोटी तोड़ेगा तो उसके अन्दर वह रूमाल अँगूठी सहित निकल आवेगा देखने वाले आश्चर्य करेंगे ।

कलाबत्त बनाने का सहज रीति

पालिस (विशुद्ध) चाँदी का जितना चाहे उतना

पतला व मोटा तार जन्त्री में खींचकर और बाद में हथौड़े से पीटकर चपटा कर लोहार इलेक्ट्रिक बैट्री, अर्थात् विद्युत यन्त्र के जरिये पतला या मोटा सोना चढ़ाना चाहो चढ़ा लो और फिर उसको पीला करके बटे हुए पीले रेशम पर चढ़ा लो, कलाबत्त बन जाएगा ।

कलाबत्त बनाने की दूसरी रीति

केवल चाँदी की कड़ी बनाकर ठोकना या और किसी चीज से ठोककर खड़बड़ी कर दे, फिर उस पर तारा लगाकर मोटा या पतला सोने का पत्तर लपेट कर आग में धर ताव दे इससे पारा उड़ जावेगा । सुनहरी पत्तर चाँदी से लिपटा हुआ रह जावेगा । अगर पत्तर कम हो तो उस रीति से जितना चाहे उतना लगा दो फिर उसकी कड़ी और बारीक सलाइयाँ बनाकर जन्त्री से तार खींचकर जितनी जरूरत हो उतनी लम्बी कर ले और हथौड़े से चपटी करे । पीछे उसकी लेप और देकर चमका दे फिर सटे रेशम पर तार को चढ़ा दे । इस रीति से कलाबत्त बनाने में परिश्रम बहुत नहीं होता ।

अंडे का नाच तथा जल पर तैरना

मुर्गी अथवा हंस का, अंडा लेय मँगाय ।

किंचित् पारा देय भर, सूक्ष्म छेद कराय ॥

बन्द करे जब छेद को ऊपर मोस लगाय ।

जासे अंडा रस कहीं बाहर न निकल जाय ॥
 यह सब धर राखे जतन पहले अपने पासा ।
 जान सके नहीं कोई यह फिर करे तमाशा ॥
 खेल करने के समय फिर कांच रकेबी लाय ।
 थोड़ी आंच जराय के गरम करावे त्राय ॥
 अंडा को गरम कर धरे रकेबी मांहि ।
 धरत धरत 'नाचन' लगे देखे वही सराहि ॥
 एक रकेबी गरम जल फिर देवे भरवाय ।
 छोड़े तब अंडा यही, सब को वही दिखाय ॥
 छोड़त ही तैरन लगे अचरज की यह बात ।
 विस्मित सब देखन लगे धर होठन पै हाथ ॥

**कुएँ में डाली अँगूठी को कबूतर में से
 निकालना जो कि बोतल में पैदा हुआ है**

एक ही तरह के दो अँगूठी लो, इनमें से एक अँगूठी को कबूतर के गले में बाँध दो और काली शीशी काटकर उसमें बन्द कर दो तथा इसका मुँह सरेस आदि से बन्द कर दीजिये । जब खेल दिखाना हो, तब उसी बोतल को मेज पर रख दो फिर दूसरी अँगूठी को किसी आदमी को देकर कहो कि इसको कुएँ में डाल आवे । अब ऐसी बात करो कि "यार सचमुच डाल आवे । भला अब कैसे निक-

लेगी पर खैर देखो मैं परिश्रम करता हूँ शायद वापस आ जाए।" यह कहकर बोतल तोड़कर कबूतर निकाल दो। कबूतर के गले में अँगूठी को देखकर सब लोग ताज्जुब करेंगे।

देखते ही देखते एक पासे के दो पासे कर दिखाना

एक ही लम्बाई के दो पासे, जिसमें एक ठोस और दूसरा पोला हो तीन या लकड़ी के बनाओ। मगर पोला पासा इस कदर पोला हो कि जिसमें दूसरा ठोस पासा उसके अन्दर चला जावे। जब तमाशा दिखाना हो तो पहले ठोस पासे को पोले पासे के अन्दर छिपा दो, इसके बाद तमाशा देखने वालों से कहो कि यह एक पासा है, हम इसको रुमाल में रखते हैं। जब तुम पासे को रुमाल में रखो तब पहले पासे के अन्दर का ठोस पासा रुमाल ही के अन्दर से निकाल कर दो पासे कर दिखाओ बस इसी तरह दो पासे का एक पासा कर सकते हो।

सब्ज मोम बनाना

जगर एक आँस, भोम असली दो रतल, सौन रस इस पिट्टराइन पाँच रतल और कुछ सुगन्धित तेल डालने से उम्दा सब्ज मोम बनेगा।

ताँबे का पानी बनाना

आधा किलो नीला थोथा बारीक पीसकर उसमें छह मेजर पानी डाल दो तथा छानकर चीनी के बर्तन में भर दो और उसमें आधा फव सज्जी का तेल डाल दो। अब इसमें ताँबा डालो तो ताँबे का पानी हो जायेगा।

जले हुये रूमाल का बन्दूक का फायर होते ही साबूत होकर बोतल के अन्दर से निकालना

एक सफेद बोतल लेकर उसकी पेंदी काट डालो और उसकी पेंदी के बांच एक बारीक सुराख करो। इसके बाद एक छोटी मेज डेढ़ फुट लम्बी चौड़ी और ८ इंच ऊँची बनाओ और मेज के तख्ते की सतह धरातल के बीचोबीच एक गोल सुराख आठ-पाँच इस अन्दाज से बनाओ कि उसमें ऊपर बयान की हुई बोतल पदी की तरफ से चावल की लम्बाई के बराबर फँसकर खड़ी हो जावे। जब तमाशा करना चाहो तो पहले एक बड़ी मेज के चारों तरफ चार इंच लम्बी लटकती हुई रंगी कपड़े की झालर (परदा) लगाओ बाद में इस पेंदी कटी हुई बोतल को छोटी मेज के सुराख में पेंदी की तरफ से चावल की लम्बाई के बराबर फँसाकर खड़ा करो फिर एक रूमाल उसके नीचे रखकर एक धाराक रेशम के सूत का एक सिरा

उस रूमाल के बीच में टांग दो और दूसरा सिरा बोतल के अन्दर पेदी के बीच से डाल बोतल के बीच वाले सुराख की राह बाहर निकाल कर अपने साथी को (जो जादू की भोपड़ी में छिपा बैठा है) दे दो इसके बाद तुम भी एक दूसरा रूमाल जो कि पहले रूमाल की सूरत का है समाज में दिखाकर जला दो और उसकी राख बन्दूक में भर वन, दू, थ्री की आवाज देकर फायर कर दो तो तुम्हारा साथी बन्दूक का फायर होते ही थ्री की आवाज के साथ उस रेशम के सूत को जल्दी मगर सहारे से खींचेगा तो यह पहला रूमाल रेशम की डोरी के कारण बोतल में आ जावेगा।

काँच के प्याले में चुरट का धुआँ फूँकने से धूमता रहे

काँच के दो गोल जोड़े (पल्ले) होते हैं। जब वे दोनों पल्ले जोड़े जावे तो एक पूरा गोला बन जाता है। अब एक पल्ले में सज्जी और सोडा पानी में मिलाकर लगाओ और दूसरे में हाइड्रोक्लोरिक एसिड (नमक का तेजाब) का लेप करो फिर दोनों पल्लों को जोड़ दो तो उन तेजाबों के संयोग से गोले में गुब्बारा उठेगा। तुमको चाहिये कि इसी मौके पर चुरट का धुआँ भी छोड़

हो, सो तमाशा देखने वालों को गोले के अन्दर चुरट का घुआ घूमता दिखाई देगा ।

काली लाख

बैनिस टरपेन्टाइन ग्यारह तोले, शैलेक ३२ तोले, कोलोफनी डेढ़ तोला और अन्दाज. का कागज । इन सब को टरपेन्टाइन के तेल में मिलाकर तैयार कर लो ।

चाँदी के जेवरों से काले दाग दूर करना

क्लोरेट आफ लाइम में थोड़ा-सा पानी मिलाकर कंधी या बुरुश से धो डालो, जेवर चमकने लगेगा ।

जर्मन सिलवर बनाने की विधि

लोहा एक भाग, निकिल दस भाग, ताँबा बीस भाग सीसा दस भाग सबको मिलाकर गला दो, बहुत सुन्दर जर्मन सिलवर बन जायेगा ।

मुहर के वास्ते नरम लाख

जरद राल एक भाग, सख्त चर्बी एक भाग, बैनिस टरपेन्टाइन एक भाग और जैसा रंग करना हो वैसा रंग डाल कर धीमी आग में पकावें ।

सोने को सफेद करना

शोरा २ औंस, फिटकरी १ औंस, नमक १ औंस इन्हें सब को बारीक पीसकर मिला लो और जिस सोने को

सफेद करना हो उसे पानी में भिगो कर ऊपर लिखे हुए चूर्ण में डुबाओ। पीछे ईंट या मिट्टी का ठीकरा ले ऐसा गरम करो कि लाल हो जाए, तब उसके ऊपर सोने को चिमटे से पकड़े रहो जब तक लगे हुए चूर्ण का पानी सूखे तब तक उसको दूसरी तरफ फिराओ। जब सूख जाये, तब सोना जर्द रंग के जैसा दिखाई देगा उसको साफ ईंट पर रखकर ठंडा कर लो, फिर एक बड़ी मूस लेकर उसमें साफ पानी, एक मुट्टी पिसा हुआ नमक और पिसा हुआ टार्टर डालकर ७-८ बूँद नौसादर के तेजाब को टपका दो और जोश देकर सोने को उसमें उस समय तक डाल रखो जब तक वह सफेद न हो फिर उसको बाहर निकाल कूँची से धोकर साफ कर लो।

तलवार जोरदार करना

तेजाब फारुख ८ तोले और गरम पानी चार तोले मिला कर कर तलवार को ताव देकर उसमें बुझाओ तो तलवार जोहरदार हो जाएगी।

पन्ना बनाना

आक्साइड आफ क्रोमियम दो ग्रैन, आक्साइड आफ कापर दो ग्रैन, सबको गलाकर धीरे-धीरे ठंडा कर लो तो पन्ना बन जायेगा।

सुनहरी स्याही

हरताल तबकिया चार तोले, सोने के वर्क ४२ तोले
अक्षीर चौथाई तोला अन्डे की जरदी चार तोले इन
सबको घोटकर गर्म पानी में मिला लो । थोड़ी देर पीछे
जब ऊपर निथरकर पानी आ जाये तब उसे धीरे-धीरे
निकाल लो । नोचे की गोंद को कीकर गोंद में आठ दिन
तक घोंटने के बाद शीशी में भरकर चार-पांच दिन धूप
में रक्खो । इस तरह तैयार होने पर लिखो तो उम्दा
सुनहरी स्याही तैयार हो जाएगी ।

मूँगे को साफ करना

हाइड्रोक्लोरिक एसिड को पानी में मिलाकर काम
में लावें अथवा एक बुरश से मूँगे को ताजे पानी में नमक
मिलाकर धो दें और उसमें थोड़ा-सा साबुन का घोल
मिला दो । क्लोराइड आफ लाइम मिलाने से अधिक
सुन्दरता आ जाती है, उसमें धोकर धूप में रख देने से
मूँगे सूख कर साफ-साफ हो जाते हैं ।

कपड़े पर निशान करने की स्याही

जूंस आफ सुंलोस आधा बोतल, गोंद २॥ तोले ।
इन दोनों को मिलाने से अमिट स्याही बन जाती है,
ग्लैसोल मिलाने की कुछ आवश्यकता नहीं है । घोबी से
कोरे कपड़े धुलवाने में यह स्याही बहुत काम देती है ।

दूसरी विधि

सोने का बर्क लगाकर शहद के संग पिसवाकर एक कटोरे में रखकर पानी भर दें और कटोरे को खूब हिलाकर पानी गिरा दे नीचे जो पानी रह जावे उसको निकाल कर ऊपर की सी क्रिया दो बार करें फिर उसमें गोंद मिलाकर स्याही तैयार कर लें। इससे जो अक्षर लिखे जायेंगे वे सोने के समान होंगे। जो इन अक्षरों को पढ़ेगा वह बहुत प्रसन्न होगा।

लाल बनाने की रीति

पुटास १४४० ग्रैन, आक्साइट आफ मेगनीज ३६ग्रैन। इन सबको मिलाकर आग पर गला लो तथा चरख पर चढ़ाओ तो नकली लाल बनेगा।

हीरे की परीक्षा करना

हीरे की पुस्त पर जरा-सा असली मोम लगा दें। अगर हीरा असली होगा तो पहले जैसी चमक देगा और यदि नकली होगा तो चमक कम हो जाएगी।

सब्ज और काली रोशनाई

जेकुट और माजूफल पन्द्रह भाग को दो सौ भाग पानी में चढ़ाकर एक घंटे तक खूब जोश दो, पीछे इसको छानकर पाँच भाग सल्फेट आफ आइरन और

चार भाग लोहे का चूरा डालकर मिलाओ, इसमें आधी बोतल नीम का पानी, तीन भाग सल्फेरिक ऐसिड इन सबको मिलाकर तैयार करलो। यह रोशनाई लिखते समय हरी मलूम होती है परन्तु पीछे स्याह होती जाती है। यह लिखने में अच्छी होती है।

लड़ी जोड़ने की लेई

अवलाइड आफ आइरन चूरा कलई मंगाय।
पीस सान के नीर में, लड़ी लेहु जुड़वाय ॥

पिस्सुओं को मारना

रात के समय एक बड़े बरतन में पानी भरकर उसमें दो बूँद सरसों का तेल डालकर और एक बूँद मिट्टी का तेल डाल दो फिर अपनी खाट के नीचे उस पानी से भरे हुये बरतन को रख दो। सुबह पिस्सू उस पानी में मरे हुए मिलेंगे।

क्रोक्स सीमेंट

क्रोक्स सीमेंट को थोड़े से तीसी के तेल में मिला लें, अच्छा जोड़ने का मसाला तैयार हो जाता है।

कलाबत्तू से सोना चाँदी निकालना

पुराने कलाबत्तू को दीपक जलाकर ताँबे के चौड़े बरतन में रखकर एक पत्थर से पीस लो। ऐसा करने से

रेशमी राख कलाबत्तू से अलग हो जाएगी, पीछे जल में धोकर साफ करलो और मुसमें लगाकर लकड़ी से टुकड़े बनाओ तथा उनको काट-काट शोरे के तेजाब में डाल दे और शीशी को बालुका यंत्र में आधी गाड़कर उसे गरम करो तो इन टुकड़ों का पानी हो जायगा, जब खदकना बन्द हो जाये तब शीशी को निकाल लो, उसके पेंदे में जो काली गाद जम जाएगी उसके ऊपर से एक दूसरे चीनी के प्याले में तेजाब निथार लो और उस धोये हुए पानी को उस निथारे हुए पानी में डाल दो फिर उस काली तलछट को सुखाकर भुस में गलाने से सौ नम्बर का खालिस सोना निकल आवेगा फिर उसको धोकर निकाले हुए पानी और तेजाब में और थोड़ा पानी मिलाकर उसमें साफताँबे के थोड़े टुकड़े डाल दो और फिर उस शीशी को बालुका यंत्र में रखकर आग दो, जब पानी का खदकना बन्द हो जावे तब नीचे उतार लो। ताँबा गलकर उसमें मिल जायेगा और गाद नीचे बैठ जायेगी। ठंडा हो जाने पर तेजाब को दूसरे चीनी के प्याले में निथार लो। उस नीचे की गाद को पानी से धोकर साफ कर लो और सुखा लो, साफ चाँदी निकल आवेगी।

मुहर की स्याही

चन्द्रस २५ भाग, आयल आफ लवण्डर २००

भाग, काजल दो भाग, नील एक भाग, इन सबको मिला कर गला लो, मुहर की स्याही बन जायेगी ।

दूसरी विधि

१० ग्राम मेजेन्ट लाकर ६० ग्राम ग्लैसरीन मिला दो मुहर छापने की उम्दा स्याही बन जायेगी ।

तीसरी विधि

ऐसफेल्सर एक भाग, काजल चौथाई भाग इन दोनों को मिला लो और छापने के स्याही के लिए जो अलसी का तेल तैयार किया जाता है उसका डेढ़ भाग उसमें डालकर पकाओ । जब तार बँधने लगे तब स्प्रिट आफ टरपेन्टाइन चार भाग मिला दो । जितना टरपेन्टाइन कम मिलाया जाएगा, उतनी ही स्याही अच्छी बनेगी । जिस पर एक बार मुहर लगा दोगे फिर वह किसी प्रकार दूर न होगी । ऐसिड या अल्कोहल के डालने पर भी मुहर वैसी ही रहेगी ।

लकड़ी के छेद भरने का मसाला

जापानी तीसी का गरम तेल और तारपीन बराबर आधा स्टार्च मिला दो और स्पंज या ऊन लगाकर छेद बन्द कर दो, अगर उसपर अखरोट की वार्निश करो तो थोड़ा अब्बर मिला लो ।

सोने का रंग हरा करना

नौसादर चार औंस जंगार चार औंस, शोरा दो ग्रैन, इन सबको खरल करके सिरके में मिला आग पर रख दो ।

सब्ज रोशनाई

केलसिन्ड एसिडनाइट्रेट आफ कीमका में अन्दाज से पानी मिला दो, सब्ज स्याही बन जायगी ।

हाथी दाँत या कप जोड़ने का मसाला

मछली का सरेस एक भाग ह्वाइट उल्लू दो भाग इन दोनों को तीस गुने पानी में गला लो और छानकर आग पर चढ़ा दो । जब छह भाग रह जाये तब तीसवाँ भाग गमनासिक आधा भाग अल्कोहल आधा भाग और ह्वाइट पत्रक मिलाकर उसमें शामिलकरे जब काम में लाना चाहो तब थोड़ा गरम पानी करके जोड़ दो ।

संगमरमर जोड़ने का विधि

प्लास्टर आफ पेरिस फिटकरी के पानी में जितना मिल सके उतना मिला लेवे, भट्टी में पकाकर रख छोड़ें । जब सङ्गमरमर को जोड़ना चाहो तो उसमें पानी मिला कर छोड़ दो । जोड़के इस मसाले का रङ्ग सङ्गमरमर के समान ही होगा ।

पारे को काम के लायक बनाना

पारा रांगा मिलाकर भाई, सम्पा दूध खरल करवाई ।
बनि है तब यह ऐसा पारा, चाहे जो करिये तैयारा ॥

दूसरी विधि

लोहे की मंगवाय कढ़ाई । असली तेल डारिये भाई ॥
पारा डाल पकाओ उसको । पारा जमे उतारो उसको ॥
ऐसा पारा जांमेहै भाई । चाहो जो लीजो बनवाई ॥
उपर्युक्त दी हुई दो रीतियों से चाहे जो बेला-बेली
कटोरा-कटोरी बनाओ और यदि उनको बहुत कड़ा
करना चाहो तो कुछ दिन तक बनी बनाई चीज को नीब
के रस में डाल दो तो बहुत कड़ी हो जाएगी ।

मुहर की लाल स्याही

सिगरफ चार भाग, सल्फेट आफ आईरन एक भाग,
सूख जाने वाला तेल थोड़ा सा डाल कर खूब मिलावे
तो इससे मुहर की लाल स्याही बनती है ।

नीम का स्वाद मीठा लगे

अजवाइन को खाय कर, पीछे नीम चबाय ।
फिर कड़वा लागे नहीं, यह है सहज उपाय ॥

खजाने पर से साँप हटाना

गिरिणा अरु लाय चमेली, श्वेत आक लता में ले मेरी ।
मूली बच अरु साय कटेरी, सबकू पोस कीजिये ढेरी ॥
पावन लेप कुंकरे जाय, बिच्छू सब जाय पराय ।
बिना रोके ले आय खजाना हीरा अरु स्वर्ण बनाना ॥

दो कड़ी चीजों को पानी कर देना

नाइट्रेट आफ ऐमीनियम' अरु ग्लोवर साल्ट मंगाय ॥
डाल खरल के बीच में ले धीरे घुटवाय ॥
धीरे—धीरे घुटत सो अद्भुत अचरज दिखाय ॥
कड़ापन दूर हो पानी सम बन जाय ॥

जुंए भगान की विधि

श्याम धतूरे का रस ले लो । उसमें मरदन करलो ।
वस्त्र एक बीच भिगोलो । सोते समय शरीर पर धरलो ॥
दीन पहर में देखो भाई । जुंआ एक रहने की नाहीं ॥

मेंढक पैदा करने की विधि

भादों में रविवार को, पीला मेंढक लाय ।
उसके माथे दही को, दीजे तिलक लगाय ॥
धूनी गूगल ताहि दे, हँडिया में भरवाय ।
रखिये अपने पास में सूखे पर पिसवाय ॥

वर्षा ऋतु आवे जो, वर्षन लागे नीर ।
 थोड़ी—सी वह राख ले, गेरे जल नीर ।
 दो घटे के बीच में अद्भुत दीखे खेल ॥
 लाखन उपजे मेढक मचै रेल अरु पेल ॥

गरम तेल से हाथ न जले

रजस्वला का लोदू लावे । तामें गदहा मूत मिलावे ॥
 बगुला की फिर चर्बी लावे । चुल्है चढ़ाकर सर्वाहि पकावे ॥
 करे हाथ पर लेप जो य को गरम तेल से जले न बाको ॥

बिच्छू विष निवारण

'बीट' लाय ढिग राखिये मुरग कबूतर मोर ।
 आक मूल पिसवाय के घरो पीस एक ठौर ॥
 बिच्छू काटे जहाँ कहि इसकी धूनी देय ।
 धूनी लागत विष नशे मन पावत सुख होय ॥

आग पर अन्न न सके

लकड़ी बम्बई लेय जलाई । गधा मूत दो उसमें मिलाई ॥
 जलती आग में दोजे डार । तो अभी अन्न न सिकने पाय ।
 सो मन लकड़ी देहु जलाय । तो भी अन्न न सिकनेपाय ॥

जलती आग पर चलना

केला कन्द भांगरा लावें । मेढक चर्बी फेर मिलावे ।
 घन्द आग पर लेय पकाई । पावन लेप अग्नि परजाई ॥

लड़के लड़कियों की गणना करना

अगर कोई मनुष्य पूछे कि मेरे कितने लड़के और कितनी लड़कियाँ है तो उससे कहो जितने तुम्हारे लड़के हैं उनको दूना करके पाँच से गुणा कर दो और गुणन-फल में जितनी लड़कियाँ हैं उनको जोड़ दो जब वह ऐसा कर चुके तो तुम उससे जोड़ा हुआ अंक पूछ लो। जो ईकाई की ओर का अंक है उतना लड़कियाँ है और जो दहाई की ओर का अंक है उतने लड़के हैं बस बता दो।

मच्छर भगाने की विधि

जा दिन मच्छर रात में अधिक दुःख दे देय।
तेल लौंग को खाट पर छिड़कत जाय पलाय।।

खालिस दूध की पहचान

मोजे बुनने को सुई (किरोसिया) को नोंक को दूध के बर्तन में डूबा दो जो खालिस दूध होगा तो उसकी बूंद सुई की नोंक से लिहटी रहेगी अगर जरा-सा पानी होगा तो बूंद, ढलक पड़ेगा।

मकान की दुर्गन्ध दूर करने की विधि

जिस मकान में दुर्गन्ध भर गई हो उसके किवाड़ एकदम खोल दो फिर एक लोहे के बर्तन को खूब गरम

करके उस पर एक बूंद सिरके का रस डाल दो शीघ्र ही उस मकान की दुर्गन्ध दूर हो जायेगी ।

एक गोली और दो आवाज

शीशे की एक गोली लेकर उसे भीतर से पोली कर लो फिर उसमें चाँदी की बारूद भर के लकड़ी की डाट लगा दो फिर जैसे बन्दूक में गोली को भर कर चलाया करते हैं उसी रीति से उस गोली को भर चलाओ तो एक आवाज मामूली गोली चलाते समय होगी और दूसरी आवाज गोली निशाने लगने के पोछे होगी ।

गुलेल की गोली से आवाज निकालना

एक कागज में थोड़ी सी बारूद चाँदी की और मूँग के बराबर थोड़े कांच के टुकड़े डालकर गोली बनाओ और उस पर गिनी मिट्टी चढ़ाकर सुखा लो । जब तुम गुलेल पर रखकर गोली चलाओगे या जमीन पर मारोगे तो लगते ही बन्दूक के समान आवाज होगी ।

सिंहनख-विष निवारण

जहाँ सिंह को नख लगे, कीजे यही उपाय ।
खंजा तेल कढ़ाय के, दीजे लेप कराय ॥

दूसरी विधि

लाल नीम अरु सेमर लाय लेय गरम जल सङ्ग पिसवाय ।
बख अरु दंत लग्यो जहँ होय लेप किये दुख दूरही होय ।

दन्त कृमि हर विधि

गुँजा की जड़ लाय के कानन में बँधवाय ।
ब्राँधे से कीड़ा डाढ़ के एक एक भर जाय ॥

कान का लौर बढ़ाना

सरसों आँगा और कटेरी, दूध मिलावे इनमें छेरी ।
लेप करे लौर लौर में जोई, लौर बड़ी ताही छिन जोई ॥

दूसरी विधि

गज पीपल बच कूट मंगावे, इनमें फिर असगंध मिलावे ।
भैस के घी में लेप मिलाय, लेप करत कान बढ़ जाय ॥

आँख की रोशनी बढ़ाना

सुन्दर वर्षा ऋतु जब होय, लाय धरे जड़ सहित मकोय ।
ताहि तेल में लेय पकाय, एक मास नितप्रति वह खाय ॥
बाकी नजर हो जावे ऐसी, हो गिद्ध की दृष्टी जैसी ।

आँख की जलन दूर करना

श्वेत सोंठ की जड़ घी में लेय मिलाय ।
आँजे आँखन गुण करे, टपकत जल रुक जाय ॥

भिलावा विष निवारण

तेल मिलावे लगे, फूट देह जो खाव ।

माख अरु तिल पीस के, ऊपर देहु लगाय ॥

मन की बात जानना

रवि-दिन जहाँ जू घुग्घू पावे । ताके काढ़ कलेजा लावे ।

ताको धूप-दीप दे राखे । सोवत नार के हिरदय नाखे ।

गुप्त बात जो मन में होई । ज्यों की त्यों कहे वो सोई ।

मकड़ी का विष निवारण

केशर नाम मंजीठ अरु दोनों हल्दी लाय ।

लेप किये तत्काल ही विष मकड़ी का जाय ॥

मूषक निवारण विधि

सरसों केशर अरु मटर घृत सम भाग मिलाय ।

पायत विष जाये नशय, इन्द्रजाल यह गाय ॥

पागल कुत्ता विष निवारण

जाटा गुड़ तेल मिलाय । लेप किये कुकुर विष जाय ॥

दूसरी विधि

ओंगा की जड़ लेय मंगाय । पीस शहद संग देव चटाय ।

मुर्गी बीट लेप कर दोजे । कुकुर विष तत्काल हरीज ॥

वृक्ष का पतझड़ कर देना

कूकर भिल्ली लाय कर, छाया माहि-सुखावे ।
 सोंठ मिरच पीपर लेकर के तीनों कूट रखावे ॥
 मेंहदी समफिर घोल नीर में बायें हाथ लगावे ।
 ताही हाथ सो छुए वृक्ष को, तब यह खेल दिखावे ॥
 है फल फूल पात अरु कोपल, सब जर परिह चो घरनी ।
 धन्य विधाता कौतुक तेरा, धन्य गुरु की करनी ॥

दाँत के कीड़े को दूर करना

हरड़ा चूर्ण मिलाय के ताम्र पत्र छिन भर भुजवाय ।
 गुटका बना दाँत तर दाबे, कीड़ी ठाढ़े सभी मर जावे ॥

वाणी सुधार

पीपर सोंठ बहेंड़ा लाय, त्वच अरु सेन्धा नमक मिलाय ।
 गोमूत्र संग पीस पिलावै किन्नर संग सभा में गावे ॥

दूसरी विधि

मिसरी सोंठ अरु शहद मिलाय दिन में तीनबार जो खाय
 भिन्न सरल गजवान वह नांगे, कंठ कोकिला सम हो जाय ।

तीसरी विधि

निगुण्डी को चूर्ण कर, तिल के तेल पकावे ।
 आटे आही अनंजा औषधि, कोकिला सम सो गावे ॥

रक्तगुंजा कल्प

गुंजा की गति कहत कौतुक चरित अपार ।
 रावन्ते शिर कहत हैं सब कल्पन को सार ॥
 मारण तारण वशीकरण राजा मोहन अंग ।
 उच्चाटन यह कहत हैं बचन सिद्ध दल भंग ॥
 भूत प्रेत डाकिनी यक्ष वीर बेताल ।
 गुंजा की जड़ का सुना, कौतुक माया जाल ॥
 बहु चरित्र अगणित करे, सकल सिद्ध की खान ।
 जो चाहो सोई करो साधन केर बखान ॥
 दशमल आनन्द के हैं जुगत गुप्त अरु ज्ञान ।
 तो सतगुरु सो भेद लख साधो सन्त सुजान ॥
 अब याके साधन कहत यथा योग्य उपदेश ।
 जो साधे सो सिद्ध करे, कसर नाय लवलेश ॥
 पुष्प होय आदित्य को तब लीजे गुंज मूल ।
 शूकर बाला रोहणी ग्रह सु होय अनुकूल ॥
 कृष्ण पक्ष की अष्टमी हस्त नक्षत्र जु होय ।
 चौदह स्वाती शतभिषा पूजा ले वह सोय ॥
 अर्द्ध निशा कारज मर्ने, को करे संज्ञा खोय ।
 धूपदीप करलो जो काहू नर नारी विषहोय ॥
 विष उतरे भट जड़ी जो पीस पिलावे धाय ।

जो घिस लावे भाल पर सभा मध्य नर जाय ॥
मान मिले अस्तुति करे सब ही पूजे पाय ।

मेढक विष निवारण

त्रिकुटा अरु चीलाई पिसवावे, छान पिये मेढक विष जावे

चित्र के रोकने की विधि

बालक पैदा होय जब, ताकी भिल्ली लाय ।
रखिये अपने पास में, पहले ताहि सुखाय ॥
चित्र सारा जाय कर, दीजे खेल दिखाय ।
भिल्ली घर के आग पर, धूआ देव उठाय ॥
धूआ लागत ही चित्र में, आँसू बहुत दिखाय ।
फिर गूगल की धूनी दीजे, सूखे आँसू अरु सुखलीजे ॥

बहुत चलने की विधि

पहले सेत करारा ढूँढे ताकी मूल मंगावे ।
काकमूल जो जंघा सरफों का दोनों सेतु जो पावे ॥
बाँध पोटरी इन तीनन की, जाकी कमर बंधावे ।
चलें पंथ सो जहाँ चलावे पशु पक्षी नहि पावे ॥
जुनु तन जान जो चूके नहीं, तब यह करे तमाशा ।
कोस पचास जाय फिर आवे, बीच न मांगे बासा ॥

वशीकरण मन्त्र

इस पुस्तक की मदद से चाहे जिस स्त्री पुरुष को अपने वशीभूत कर मन चाहा काम ले सकते हैं। आकर्षण सुरमा बनाने की क्रिया, राज दरबार में विजय पाना, लड़ाई में दुश्मन को नीचा दिखाना, अपने इष्ट मित्रों को यन्त्र द्वारा अपने देश में बुलाना, बातचीत करना आदि बातों का वर्णन किया गया है। मूल्य केवल ३० रुपया मात्र। डाक व्यय अलग।

वृहद कौवा तन्त्र

कौवा से बड़ी २ अनोखी भविष्य की बात मालूम होती है। कौवा तन्त्र के द्वारा बेहलाज भयानक से भयानक बीमारियाँ शीघ्र दूर हो जाती है। जैसे पुरानी तपेदिक, भगन्दर, वायुगोला दमा, पुरानी खांसी, ववासीर आदि का अचूक टोटका कौवा तन्त्र में देखें। इसमें वशीकरण प्रयोग, मनचाही स्त्री से शादी करने का तन्त्र, जमीन में गड़ा धन मालूम करना, चोर पकड़ने का अमल बांझ स्त्री को लड़का होने का तन्त्र आदि सब मौजूद हैं। सारांश यह है कि कौवा से सैकड़ों तरह के आसान से आसान प्रयोग हमारी इस पुस्तक में मिलेगा, जिनके अचम्भे में डालने वाले करामातों से काफी रुपया व नाम कमा सकते हैं, फिर भी मू० ६० ३० मात्र ताकि हर अमीर गरीब फायदा उठा सकें। डाक खर्च अलग।

श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार (प्रा०) लि०

५२७ए/२, कक्कड़ नगर, इलाहाबाद।

ब्रांच—जानसेन गंज, इलाहाबाद।

★ ॐ नमः शिवाय ★

वशीकरण मंत्र



लेखक -

तांत्रिक श्री पं० श्रीमणि शुक्ल



प्रकाशक -

श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार (प्रा०) लि०

५२७ ए/२, कक्कड़ नगर इलाहाबाद-३

ब्रांच-जानसेनगंज, इलाहाबाद-३ ।

मूल्य : रु० ३५.००

प्रकाशक -

श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार (प्रा०) लि०

५२७ ए/२, कक्कड़ नगर, इलाहाबाद-३

ब्रांच-जानसेनगंज, इलाहाबाद-३

Visit us at — www.durgapustak.com

e-mail — sampark@durgapustak.com

(सर्वाधिकार प्रकाशक के अधीन है)

प्रिंटिंग :

केशरवानी प्रेस

इलाहाबाद

* अनुक्रमणिका *

विषय	पृष्ठ
१. विनम्र निवेदन	१
२. मंगलाचरणम्	८
३. मन्त्र-तन्त्र सिद्धि के नियम	३३
४. षट-कर्म वर्णन	३६
५. मन्त्र जप-मान्वा-निर्णय आदि	११
६. हवन सामग्री	१५
७. आसन	१६
८. प्रथम पटल (दत्तात्रेय मनानुमार)	१७
९. द्वितीय पटल (सर्वजन वशीकरणम्)	२१
१०. तृतीय पटल (स्त्री वशीकरणम्)	२५
११. चतुर्थ पटल (पुरुष वशीकरणम्)	२६
१२. पंचम पटल (आकर्षण प्रयोग)	३४
१३. वशीकरण तिलक	३६
१४. वशीकरण की कुछ अन्य विधियाँ	३७
१५. राज वशीकरण	७३
१६. यक्षिणी साधन विधान	७७
१७. मारण प्रयोग	१०६
१८. उच्चाटन प्रयोग	११६
१९. आकर्षण अभिधान	१२३
२०. इन्द्रजाल अभिधान	१२६
२१. रसायनिक प्रयोग विधान	१३६
तन्त्र प्रकरणम्—	
२२. उच्चाटन तन्त्र	१४२
२३. विद्वेषण यन्त्र	१४३
२४. मोहन-तन्त्र	१४४

विषय	पृष्ठ
२५. दिव्य स्तम्भन यन्त्र	१४५
२६. राजा वशीकरण यंत्र मंत्र व तिलक	१४६
२७. डाकिनी शाकिनी उतारने का यन्त्र	१४७
२८. सास समुर को बश करने का यन्त्र	१४७
२९. भाड़ फूक व ओम्हा विद्या भूत बाधा तन्त्र	१४८
३०. भूतादिक आकर्षण मन्त्र	१४९
३१. भूत बाधा दूर करने की धूनी	१५१
३२. पन्द्रहवें का एक आवश्यकीय यन्त्र	१५२
३३. नजर भाड़ने का यन्त्र	१५२
३४. सर्वजन वशीकरण तिलक व मन्त्र	१५३
३५. पन्द्रहवें का मन्त्र	१५५
३६. डाकिनी दूर करने का यन्त्र	१५७
३७. पति वशीकरण मन्त्र	१६१
३८. स्त्री वशीकरण मन्त्र	१६२
३९. सर्व वशीकरण तन्त्र व मन्त्र	१६३
४०. राजा वशीकरण मन्त्र	१६४
४१. प्रेत बाधा निवारण मन्त्र	१६५
४२. शत्रु मोहन तन्त्र व मन्त्र	१६५
४३. त्रिभुवन वशीकरण	१६७
४४. वशीकरण लौंग व सभा मोहन तन्त्र	१६८
४५. प्रेत व भूत वशीकरण मन्त्र	१६९
४६. जादू निवारण मन्त्र	१७०
४७. वाई दूर करने का मन्त्र	१७१
४८. देव बाधा निवारणादि मन्त्र	१७२
४९. परदेश गया मनुष्य लौट आवै	१७४
५०. व्यापार वर्धक मन्त्र व यन्त्र	१७५
५१. नजर व टोना निवारण यन्त्र	१७६

(५) -

जय जय श्री महाकाली



ॐ महाकाल्यै नमः

(६)

श्री भूतभावन भगवान शंकर



ॐ नमः शिवाय

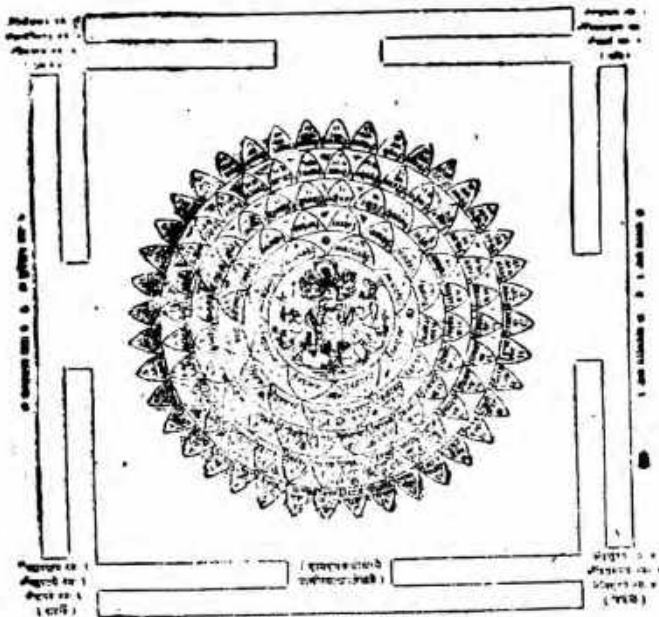
(७)

श्री रुद्र यंत्रम्

श्रीगणेशाय नमः

३. ३.

३. ३.

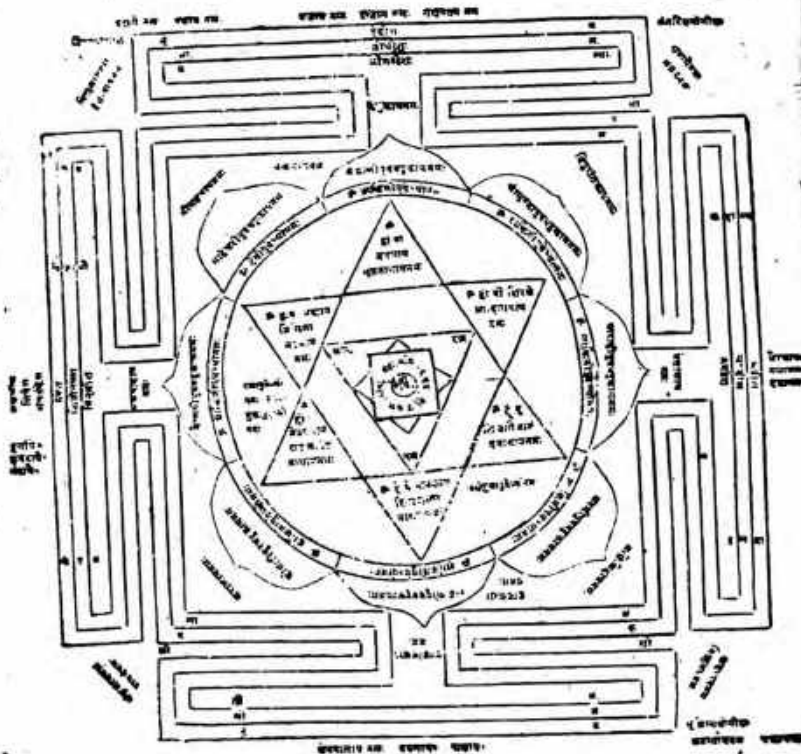


ॐ नमः शिवाय, ॐ नमः शिवाय

इसे षोडशपत्र में लिखकर ताबीज बनाकर बाँधने से शिवजी की विशेष कृपा तथा घन धान्य की वृद्धि होती है।

(८)

श्री भैरव यंत्रम्



इस यंत्र को भोजपत्र में लिखकर ताबीज में रखकर बांधने से
सब प्रकार की बाधाएँ दूर होती हैं ।

श्री गणेशाय नमः

विनम्र निवेदन

मुझे यह "वशीकरण मंत्र" आपके सामने रखते हुये जहाँ प्रसन्नता है वहाँ यह भी मैं जानता हूँ कि मैं यह बड़ा कठिन कार्य कर रहा हूँ किन्तु क्यों कर रहा हूँ ? मैंने बहुत सी वशीकरण सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ीं, बहुत से शास्त्रों का अध्ययन किया है जिनमें वशीकरण सम्बन्धी अनेक अध्याय दिये गये हैं, इन सब पुस्तकों में वशीकरण की विधियाँ तो बतलाई गई हैं किन्तु यह नहीं बतलाया गया कि वशीकरण कब और क्यों करना चाहिये ? मुझे यह बताना नितान्त आवश्यक है ।

अन्य कारण मेरे इस पुस्तक को लिखने का यह है कि जितनी भी मैंने वशीकरण सम्बन्धी पुस्तकें पढ़ी हैं, उनमें मैंने कुछ ऐसी बातें पाई हैं जो कि हमारे धर्म के सर्वथा प्रतिकूल हैं । उन बातों को पढ़कर मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मानो वे बातें ईश्वर कृत हैं ही नहीं अपितु किसी विधर्मी ने उन्हें बनाकर हमारी धार्मिक पुस्तक में इस प्रकार डाल दिया है कि कई बेचारे हमारे भोले भाले सहधर्मी भाई उन बातों को भी ईश्वर की रची अथवा ईश्वर के मुख से निकली हुई समझ बैठे हैं । आवश्यकता है कि संस्कृत के बड़े २ विद्वान इन पुस्तकों का अध्ययन करें । इन पुस्तकों में से जो ग्रहण न करने योग्य बातें हों, जिनमें अश्लीलता की पुट हो और जो ईश्वर की रची नहीं बल्कि दुराचारी मनुष्यों की रची लगती हों निकाल दें और इन पुस्तकों में से अशुद्ध बातें निकाल कर केवल शुद्ध बातों को ही जन साधारण के सामने रखना चाहिये ।

संसार में जितनी वस्तुयें हैं यदि आप उन पर ध्यान दें तो आपको लगेगा कि उनमें न कोई हानि है और न कोई लाभ । प्रायः संसार की प्रत्येक वस्तु हानि लाभ से रहित है । आपने अपने जीवन में कई बार ऐसा भी देखा होगा कि एक ही वस्तु जब किसी एक को लाभ पहुँचाती है तब उसी ही वस्तु से एक दूसरा व्यक्ति हानि उठाता है । हम मलेरिया से पीड़ित किसी व्यक्ति को कोनीन देते हैं तो उसको यह कोनीन स्वास्थ्य प्रदान करती है, उसी कोनीन की कृपा से वही व्यक्ति अरोग्य लाभ प्राप्त करता है । यदि कोनीन हम किसी भल चगे को दे दें तो यही कोनीन वरदान के स्थान पर उसके लिये अभि-
 शान बन जायेगी । मद्य का हम कितना बुरा कहते हैं और मद्य-
 पान करने वाले को भी दुराचारी की उपाधि प्रदान करते हैं तो क्या वास्तव में मद्य इतना बुरी वस्तु है ? क्या वास्तव में मद्य मानव के शरीर को हानि पहुँचाता है ? ऐसा नहीं है । जो मद्यपान करता है वह मद्य सेवन की विधि नहीं जानता । वह यह नहीं जानता कि मद्य को क्यों और कब प्रयोग में लाना चाहिये । प्रत्येक वस्तु को अच्छाई बुराई उस वस्तु के ग्रहण करने की विधि पर आधारित है । जब तलवार एक वीर सैनिक के हाथ आकर शत्रुओं और दुष्टों का सर्वनाश करता है, यदि वही एक अनाड़ी के हाथ में पड़ जाय तो उसके अपने ही शरीर की इतिश्री कर देता है । संसार की किसी वस्तु में भी किसी प्रकार की अच्छाई बुराई नहीं पाई जाती । अच्छाई तथा बुराई किसी वस्तु के ग्रहण करने की विधि में है । यहाँ तक कि धर्म को भी यदि उचित रूप में ग्रहण न किया जाये तो वह भी अपना दुष्परिणाम दिखाये बिना नहीं रह सकता । कहने का अभिप्राय यह है कि संसार में जितने भी पदार्थ हैं उनमें किसी प्रकार की कोई भलाई बुराई

नहीं पाई जाती, भलाई बुराई उस वस्तु के उपयोग करने की विधि में है और विना वस्तु का सदुपयोग किया जाय तो लाभ होता है ठीक यही स्थिति वशीकरण मन्त्रों और विधियों की है, क्योंकि ये विधियाँ और मन्त्र ईश्वर कृत हैं और ईश्वर किसी प्रकार के दुष्कर्म का करने की आज्ञा नहीं देता। अतः जो व्यक्ति इन वशीकरण की विधियों को जानकर इसको दुरुपयोग में लाते हैं उन्हें लाभ के स्थान पर हानि उठाना पड़ती है और साथ ही पाप भी लगना है। मैंने बहुत से ऐसे व्यक्ति देखे हैं जो कि वशीकरण की विधियों द्वारा दूसरों की स्त्रियों को फाँसने का यत्न करते रहते हैं। उनको यह समझ नहीं आती कि पर नारी संगम करने वाले व्यक्ति को जिस ईश्वर ने दण्ड देने का विधान बना रखा है, वही ईश्वर आपके इस कुकर्म में किस प्रकार सहायक बन सकता है? यदि ध्यान से देखा जाय तो बेचारे उन व्यक्तियों का भी कोई दोष नहीं होता, क्योंकि उनको कुछ पना नहीं होता कि हम जो वशीकरण आदि मन्त्रों का प्रयोग कर रहे हैं वे मन्त्र वास्तव में हैं क्या? मन्त्रों के सम्बन्ध में तो वे लोग जानते ही नहीं और उनको कुमार्ग पर लाने के लिये पुस्तकों के मुख पृष्ठ ही पर्याप्त हैं। लोग पुस्तकों के मन्त्रों में कुछ ऐसी बातें लिख देते हैं कि बेचारा भोला भाला साधु पुरुष भी इन बातों में आकर कुमार्ग की ओर चल पड़ता है। मैंने वशीकरण सम्बन्धी एक पुस्तक देखी थी जिसके मुख्य पेज पर लिखा था, इन किताब में वशीकरण की वे विधियाँ और वे मन्त्र लिखे गये हैं जिन पर कार्य करने से किसी भी स्त्री को वश में किया जा सकता है। राजे महाराजे, मजिस्ट्रेट आदि को उन मन्त्रों से अपने वश में करना तो बायें हाथ का खेल है...। जब साधे साधे आदमी किताबों के मुख पृष्ठों को पढ़ते हैं तो

उनमें पापरूपी चिनगारी उसी समय जा पड़ती है। मनुष्य कमजोरियों का पुतला है और यह भी सब जानते हैं कि धर्म की अपेक्षा पाप अधिक मीठा होता है। ऐसी पुस्तकों के कुछ पृष्ठ पढ़ते ही उसकी पाप-वासना भड़क उठती है। सूखे घास पर एक छोटी चिनगारी पड़ने की देर है कि बस वह छोटी सी चिनगारी महा भयंकर ज्वाला का रूप धारण कर लेती है। भोले भाले व्यक्ति ऐसी किताबों को देख तुरन्त खरीद लेते हैं। फिर उन किताबों के लिखे अनुसार कार्य करते हैं। ये अपना समय और धन के नष्ट करने में लगे रहते हैं और ऐसे कामों में लगे रहते से उनकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है और वे फिर न इस लोक के रहते हैं न परलोक के और व्यर्थ के उधेड़ वुन में पड़े रहते हैं। अतः आपको साधारण वशीकरण की पुस्तकों की बातों में न आना चाहिए। वशाकरण शास्त्र की जितनी भी विधियाँ हैं वे सब उचित कार्यों के लिये हैं अनुचित कार्यों के लिये नहीं ! जो मनुष्य स्त्री वशाकरण के मन्त्रों का प्रयोग दूसरों की स्त्रियों पर करते हैं वे कल असफल ही नहीं होते, अपितु पाप के भागी भी होते हैं। अतः आपको यह बात सदैव याद रखना चाहिये कि यदि आप वशीकरण मन्त्रों का दुरुपयोग करेंगे तो आप कदापि सफलता प्राप्त नहीं करेंगे। अतः आपको इन मन्त्रों का कभी दुरुपयोग नहीं करना चाहिये। वशीकरण मन्त्रों का सदुपयोग हम बताते हैं।

वशीकरण मन्त्रों का प्रयोग अपनी स्त्री पर उचित समझा जाता है। मान लीजिये कि आपका विवाह एक ऐसी स्त्री से हुआ है, जिसका आपके साथ नहीं पटती, आपका उमसे प्रेम है और चाहते हैं कि वह भी आपसे प्रेम करे, किन्तु वह आपसे विमुख रहती है, तो ऐसे समय में आपका उस पर वशीकरण के मन्त्रों

का प्रयोग उचित समझा जाएगा। ऐसे समय में आपके लिए उस पर वशीकरण का प्रयोग करना भी आवश्यक है, क्योंकि उस स्त्री के साथ जो कि आपको घर्मपत्नी है और आपसे विमृष्ट रहती है, आपको एक दो दिन व्यतीत नहीं करना है अपितु सारा जीवन उसके साथ निभाना है। स्त्री के वशीकरण की रचना इसलिये ही की गई है कि जिससे पति पत्नी को और स्त्री पति को अपने प्रेमपाश में बाँध सके तथा अपने गृहस्थ जीवन को सुख-मय बना सके। अपनी घर्म-पत्नी को छोड़कर किसी अन्य स्त्री पर किया गया वशीकरण अपना कोई प्रभाव नहीं दिखायेगा। यह आप भली भाँति समझ लें।

यह स्थिति राज वशीकरण में है। आपका किसी के साथ मुकदमा चल रहा है और मुकदमे का निर्णय अपने पक्ष में कराने के लिये आप राजवशीकरण मन्त्रों का प्रयोग करते हैं, किन्तु इन वशीकरण मन्त्रों का प्रयोग करने से पूर्व आपको यह जान लेना चाहिये कि आप झूठे हैं अथवा सच्चे। यदि आप सच्चे होंगे तो आपके पक्ष में निर्णय होगा, किन्तु यदि आप झूठे होंगे तो आपके इन मन्त्रों का प्रभाव अनुकूल न होगा। आजकल वशीकरण सम्बन्धी पुस्तकों में कुछ दुराचारियों द्वारा अश्लील और गन्दी बातें टूंस दी गई हैं, और जिनका नवयुवकों तथा भोलै-भाले लोगों को पथ-भ्रष्ट करने में कितना बड़ा हाथ है यह नहीं कहा जा सकता। यहाँ मैं केवल दो-चार श्लोकों को उदाहरण के रूप में ही देता हूँ और आशा करता हूँ कि इन उदाहरणों की सहायता से पाठकगण अन्य किसी प्रकार की वशीकरण की पुस्तक में कौन सी बात सत्य है तथा कौन सी मिथ्या इसका निर्णय बड़ी सरलता से स्वयं कर सकेंगे।

स्त्री वशीकरण का एक श्लोक नीचे दिया जाता है, देखिये यह कितना मिथ्या और अश्लील है।

जिह्वामलं दन्तमलं नाशाकर्णमलं तथा ।

ताम्बूलेन प्रदातव्यं वशीकरणमद्भुतम् ॥

इसका अर्थ है—जिह्वा, नाक, कान, आँर दाँत का मेल पान में रखकर जिस स्त्री को दे वह वश में हो जावे ।

इसी श्लोक में ऊपर लिखा हुआ है 'ईश्वरोवाच' अर्थात् भगवान् कहते हैं ।

कितना पाखण्ड है ! इतने गन्दे और मलिन कर्म को भगवान् की आज्ञा कहना क्या भगवान् का अपमान करना नहीं है । क्या यह सम्भव है कि सर्व शुद्ध आत्मा इतने भेदे और मलीन कर्म करने की आज्ञा देगा ? पाठकगण ! तनिक अपने मस्तिष्क पर बल देकर विचार तो कीजिये कि भला भगवान् कभी ऐसे गलीन कर्म की आज्ञा दे सकते हैं ? पुनः सोचें ।

स्त्री वशीकरण का एक उदाहरण और लीजिये—

भौमवारे श्वबद्धं च लिंग छिद्रं विनिक्षिपेत् ।

बुधे निष्कास्य ताम्बूले दद्यात् सा वशगा भवेत् ॥

इसका अर्थ है मंगल के दिन लिंग के छिद्र में लौंग रखे और बुधवार को निकाल ले फिर इस लौंग को पान में रखकर जिस औरत को दे वह वश में हो जाय ।

ऐसा लिखने वाले पाखण्डियों से पूछिए तो सही कि क्या ऐसे मलिन कर्म करने की आज्ञा ईश्वर दे सकता है ? एक और उदाहरण देखिए जो कि पुरुष वशीकरण का है—

गोरोचनं योनिरक्तं कदली रस संयुतम् ।

ऐभिस्तु तिलकं कृत्वा पतिवश्य करं परम् ॥

इसका अर्थ यह है—श्री शिवजी बोले कि गोरोचन, योनि का रक्त और केला का रस एकत्रित करके इसका तिलक करने से पति वश में हो जाता है, यह उत्तम वशीकरण है ।

शिवजी का नाम देकर योनि रक्त लगाने की बात कहना निःसन्देह एक बड़ा भारी पाखण्ड है और फिर आश्चर्य यह है कि कई बड़े विद्वान् भी इस पाखण्ड को पाखण्ड न जान कर सत्य मान बैठे हैं ।

मैंने आपके आगे पाखण्ड के दो-तीन उदाहरण दिये हैं और जहाँ तक मेरा विचार है कि यह आपके जागरण के लिए पर्याप्त है । आप स्वयं इन उदाहरणों के सत्यासत्य की परख कर सकते हैं । समय बदल चुका है आपको भी उसके साथ बदलना होगा । अपने आपको जगाना होगा, पुस्तकों की प्रत्येक लिखी बातों पर विश्वास नहीं करना होगा, अपितु अपनी बुद्धि की कसौटी पर परखना होगा कि कौन सी बात सत्य है तथा कौन असत्य । कौन सी बात ग्रहण करने योग्य है और कौन सी नहीं, किस वस्तु को किसी प्रकार से ग्रहण करना चाहिये आदि आदि । मनुष्य को प्रत्येक कार्य चाहे वह धार्मिक हो, चाहे व्यक्तिगत पहले अपनी बुद्धि के कसौटी पर कस करके तभी करना चाहिये ।

श्री गणेशायनमः

वशीकरण मन्त्र

मंगलाचरणम्

वन्दे देव उमापति सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणम् ।
वन्दे पद्मग भूपणं मृगधर वन्देपशूनाम्पतिम् ॥
वन्दे सूर्यशशःङ्क वह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम् ।
वन्दे भक्त जनाश्रयं चवरदं वन्दे शिवंशङ्करम् ॥

विषय प्रवेश

कागा काको धन हरै, कोयन काको देय ।
मीठे वचन सुनाय के, जग अपनो करि लेय ॥

तन्त्र शास्त्र सात्वती, राअसी, तामसी तीन भागों में विभक्त है, जिसके गुण, कर्मस्वभावानुसार लोग कार्य में लाते हैं । ऐसे मन्त्र-तन्त्र शास्त्र से प्राचीन ग्रन्थ असफल नहीं होते । वर्तमान समय में लोगों के अविश्वास और साहस हीनता, अकर्मण्यता के कारण चाहें जो कुछ हो जाय । किन्तु यह शास्त्र बड़ा ही प्रयोजनीय तथा लोकामना सिद्ध करने का उत्तम साधन है ।

इसमें तीन भाग हैं, १-मन्त्र, २-यन्त्र, ३-तन्त्र ।

अक्षरों को कोष्ठक और कमल आदि में लिखकर बांधना यन्त्र कहलाता है और बारम्बार जप करने को मन्त्र तथा जड़ी बूटो आदि उपायों से कार्य सिद्ध करने को तन्त्र कहते हैं ।

मन्त्र तन्त्र सिद्धि के नियम

किसी गुरु द्वारा मन्त्र की पूर्ण विधि प्राप्त करके सदाचार, ब्रह्मचर्य तथा एकान्तवास द्वारा इसे सिद्ध करना चाहिए, परन्तु ऐसा उपयुक्त समागम न मिल सके तो इस पुस्तक में जैसी कुछ विधि बतलाई जाती है, उसे ठीक ठीक करने से अवश्य सिद्धि प्राप्त होगी ।

षट्कर्म वर्णन

इस मंत्र-शास्त्र के नियमानुसार—

शान्तिवर्ष्यं स्तम्भानि विद्वेषोच्चाटने तथा ।

मारणांतानि शमति षट्कर्माणि मनीषिणः ॥

अर्थात्—शान्तिकर्म, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन तथा मारण इन छः प्रयोगों को पण्डित जन षट्कर्म कहते हैं । यथा—

१—किसी यन्त्र, मन्त्र, तन्त्रादि क्रिया द्वारा किसी को मार देना मारण है । २—किसी का चित्त मोह लेना

मोहन है । ३-एक देश और स्थान छोड़कर दूसरे स्थान के व देश में चला जाना या वहाँ से बुला लेना उच्चाटन है । ४-अपने स्वभावानुसार किसी जीव को अधीन कर लेना वशीकरण है । ५-हाथ, पांव अथवा सब अंगों का बँध जाना स्तम्भन है । ६-किसी में परस्पर बैर उत्पन्न हो जाना विद्वेषण है ।

इनके सिवाय इन्हीं प्रयोग के अन्तर्गत और भी बहुत से प्रयोग-उपप्रयोग हैं जो यहाँ विस्तार से लिखे नहीं जा सकते । आगे इन्हीं छः कर्मों एवं प्रयोगों को मन्त्र, यन्त्र और तंत्र द्वारा सिद्ध करने को बतलाते हैं ।

ऋतु दिन नक्षत्रानुसार षट्कर्मों के करने का चक्र

कर्म	मारण	मोहन	उच्चाटन	वशीकरण	स्तम्भन	विद्वेषण	शांति
इष्ट	भद्रकाली	अजि०	दुर्गा	सर०	लक्ष्मी	वग०	मग०
दिशा	दक्षिण	अग्ने०	वायव्य	उत्तर	पूर्व	नैऋत्य	ईशान
ऋतु	शरद	वसन्त	वर्षा	हेमन्त	शिशिर	ग्रीष्म	हेमन्त
दिन	शनि	रवि	शनि	बुध	शनि०	भौम	चन्द्र
तिथि	कृष्ण चतु	अष्टमी	चौथ०	त्रयोद०	प्रतिपदा	छठ	लौद द्वाद०
नक्षत्र	पर०	मघा०	श्लेषा	ज्येष्ठा	विशा०	आर्द्रा	उ०रो०
वस्त्र	लाल या कृष्ण	पीला०	लाल	तपी	धूम्र	लाल	श्वेत

षट्कर्मों के करने का समय

प्रथम प्रहर में शांतिकर्म । दूसरे प्रहर में वशीकरण स्तंभन और मोहन । तीसरे प्रहर उच्चाटन विद्वेषण और चौथे प्रहर में मारण कर्म किया जाता है । इतना दीर्घ विचार को न समझ सके, या न ग्रहण कर सके, तो यह कोई उतना आवश्यक भी नहीं है और कर सके तो बहुत अच्छा है । कहा है—

श्लोक—

न तिथिर्न च नक्षत्रं नियमो नास्ति वासरः ।

न व्रतो नियमो होमः काल वेला विवर्जितम् ।

केवल तंत्र मात्रेण हन्होषधि सिद्धिरूपिणि ।

यस्य साधन मात्रेणक्षणास्सिद्धिश्च जायते ॥

अर्थात्—उड़ीशतन्त्र के अनुसार इसके प्रयोगों के करने में न तिथि का नियम है न नक्षत्र का नियम है, और न वार का नियम है, न व्रत का नियम है न हवन का नियम है और न समय का ही कुछ नियम है केवल तन्त्रमात्र करके सब औषधियाँ सिद्धि रूपिणी हैं, जिसके साधन मात्र से क्षण में सिद्धि प्राप्त होती है ।

मन्त्र-जप-माला-निर्णय

प्रमाण-श्लोक

प्रवाल लजमणिभिर्वश्य पौष्टिकयो जपेत् ।

मत्ते मंदन्त मणिभि जपेदाकृषिकर्मणि ॥ १ ॥

साध्य केश सूत्रयुक्तिस्तरंग दशनोद्भवैः ।

अक्षमालां परिष्कृत्य विद्वेष्योच्चाटने जपेत् ॥ २ ॥

मृतस्य युद्धशून्यस्य दशनैर्गर्दभस्य च ।

कृत्वाक्ष मालां जप्तव्यं शत्रौर्मारणमिच्छता ॥ ३ ॥

किपते शङ्खमणिः धर्मकामार्थं सिद्धये ।

पद्माक्षैः प्रजपेन्मन्त्रं सर्वं कामार्थं सिद्धये ॥ ४ ॥

रुद्राक्ष मालया जप्तो मन्त्रः सर्वं फलप्रदः ।

स्फाटकी मौक्तिकी वापि रौद्राणी वा प्रवालजा ।

सारस्वतामये शस्ता पुत्रजावै स्तथाप्तये ॥ ५ ॥

उद्धीशतंत्र में कहते हैं मूंगा हीरा रत्न इतमें किसीकी भी माला हो तो उससे वशीकरण और दुष्टकर्म में जप करे ॥ १ ॥ मनुष्य के बालों से घोड़े के दाँत की माला गूँथकर उससे विद्वेषण और उच्चाटन कर्म में जप करे ॥ २ ॥ युद्ध के दिना अन्य प्रकार से मृतक पुरुष के दाँत अथवा गर्दभ के दाँतों को माला से मारण कर्म में जप करे ॥ ३ ॥ शंख व मणि की माला बनाकर धर्म अर्थ सिद्धि के अर्थ उससे जप करें अथवा पद्माक्ष की माला से जप करे ॥ ४ ॥ रुद्राक्ष की माला सब कार्यों का उत्तम फल देता है । फिर स्फटिक, मोती, रुद्राक्ष मूंगा

और पुत्र ओवा की माला विद्या प्राप्ति एवं सरस्वती के प्राप्ति के लिये ग्रहण करना चाहिये ॥ ५ ॥

माला जपने में विशा निर्णय

जपेत्पूर्व मुखं वश्ये दक्षिणे चासिधारके ।

पश्चिम धनद विद्यादुत्तरं शान्तिकं भवेत् । १ ॥

आयुष्य रक्षां शान्तिं च पुष्टिवापि करिष्यति ।

भावार्थ—वशीकरण मन्त्र जपते समय पूर्व मुंह बैठना चाहिये । मारणादिक अभिचारकर्म में दक्षिणाभिमुख बैठकर मन्त्र जपे और धन के निमित्त पश्चिम मुख, शान्ति कर्म में उत्तर मुख बैठकर मन्त्र जपना चाहिये ॥ १ ॥ आयुरक्षा, शान्तिकर्म व पुष्टिकर्म में भी उत्तर होकर मन्त्र आदि जपना चाहिये ।

जप-भेद और लक्षण

यंश्चयतेऽन्यः स तु वाचिकः स्यादुपांशु संज्ञोनिज देह
वेद्यः ॥ निष्कम्पन्तौष्ठ मथाक्षराणां यच्चिन्तयन स्यादिह
मानसाख्यः ॥ पराभिचारे किल वाचिकः स्यादुपांशु
सक्तौऽप्यथ शान्ति पुष्टयो ॥ मोक्षेषुष्वापः किल मानसाख्य
स्मिन्ना जपः पापनूदे तथोक्तः ॥

भावार्थ—जप तीन प्रकार का होता है । वाचिक, उपांशु, मानसिक ।

जिस मन्त्र को जप करते समय दूसरा सुन लेवे उसको वाचिक कहते हैं और जो अपने आपको ही सुन पड़े उसको उपांशु कहते हैं तथा जिस मन्त्र जाप में ओठ और जिह्वा न चलती रहे और केवल मन से ध्यान पूर्वक जप किया जावे उसे मानसिक जप कहते हैं । मानसिक जप में अक्षर का ध्यान किया जाता है ।

मारण आदिक प्रयोग में वाचिक जप सिद्धिदायक होता है और शान्ति व पुष्टिकर्म में उपांशु जप तथा मोक्ष के साधन में मानस जप श्रेष्ठ कहा जाता है परन्तु यह तीनों प्रकार के जप नाशक और सिद्धिदायक दोनों है ।

जप करने की माला किस २ धागे की हो

प्रमाण-श्लोक

पद्ममूत्र कृता रज्जुः शान्ता शान्तिक पौष्टिके ॥

आकृष्ट मृच्याटयोर्वाजि पुच्छवाल समुद्भवा ॥

नरत्नायुर्विनेर्वस्तु मारणे रज्जुरुत्तमा ॥

अन्यासां चाक्षमालानां रज्जु, कार्पासि कीमता ॥

सप्त विंशति संख्याकैः कृता सिद्धि प्रयच्छति ॥

अहैस्तु पंचदशभिरभिचार फल प्रदा ॥

अक्षमाला विनिदिष्टा मंत्रादौ तत्त्वदर्शभिः ॥

अष्टोत्तरं शतो नैव सर्व कर्मेषु पूजिता ॥

भावार्थ—शान्ति और पुष्टिकर्म में पद्मसूत्र के डोरे से माला को गूँथे और आकर्षण व उच्चाटनकर्म में घोड़े की पूँछ की बालों में गूँथी माला शुभ होती है और मनुष्य की नसों से गूँथी माला मारणकर्म में शुभ होती है तथा अन्य कर्म में कपास से गूँथी हुई माला से मन्त्र जप करना चाहिये। सत्ताइस दानों की माला समस्त सिद्धियों को प्रदान करती है। अभिचार कर्म में पन्द्रह दानों की माला पूर्ण फलदायक होती है और तत्त्वदर्शी पण्डितों ने तांत्रिक कर्म में एक सौ आठ दानों की माला को सर्व कर्मों में पूजित माना है।

मन्त्र जप में बैठने का आसन

वशीकरण में भेंड़ा के चर्म का आसन, आकर्षण में मृगचर्म उच्चाटन में ऊँट के चमड़े का आसन, मारण में कम्बल के आसन पर तथा अन्य सब मन्त्रों के सिद्ध करने के लिये कुश का आसन होना चाहिये।

हवन सामग्री

शांति कर्म में दूध, घी, तिल गूलर और पीपल की

लकड़ी पर अमरवेलि और खीर का हवन करे। पुष्टिकर्म में घी बेलपत्र और चमेली के फूलों का होम करे। कन्या की इच्छा करने वाला खीर का हवन करे। लक्ष्मी की इच्छा करने वाला कमलगट्टा दही और घृत का या घृत से मिले हुये अन्न का हवन करे। समृद्धि के लिए बिल्वफल और तिल का। आकर्षण के लिये चिरौंजी और बेलफल। वशीकरण के लिये राई और लवण का हवन करना चाहिये। उच्चाटन में कौवे के पंख का, मोहन में घतूरे के बीज का हवन करे।

शान्ति स्तम्भन और वशीकरण में अंगूठे और बीच की अँगुली के माला को फेरे तथा आकर्षण में अंगूठा और अनामिका से विद्वेषण और उच्चाटन में अंगूठा और तर्जनी से। मारण में कनिष्ठिका और अँगूठे से माला के दाने फेरने चाहिये।

आसन

मन्त्र जपने के अनेक प्रकार के आसन होते हैं। पुष्टिकर्म में पद्मासन शान्ति कर्म में स्वास्तिक आसन, विद्वेषण में कुक्कुटासन, उच्चाटन में ऊर्ध्वस्वस्तिक मारण और स्तम्भन में विकटासन, और वशीकरण में रुद्रासन से बैठना चाहिये।

अब हम श्री महर्षि दत्तात्रेय विरचित वशीकरण के प्रयोगों का वर्णन नीचे लिखते हैं ।

प्रथमः पटलः

कैलाशशिखरासीनं देवदेवं महेश्वरम् ।

दत्तात्रेयस्तु पप्रच्छ शंकर लोक शंकरम् ॥१॥

कैलाश पर्वत के शिखर पर विराजमान देवदेव महादेव जी से जो कि लोक के कल्याण करने के कारण शंकर नाम से प्रसिद्ध हैं दत्तात्रेय जो पूछने लगे ॥ ।

कृताञ्जलिपुटौ भूत्वा पृच्छते भक्तवत्सलम् ।

भक्तानां चहितार्थाय तन्त्रकल्पश्च कथ्यताम् ।२।

भक्तवत्सल (शिवजी) से हाथ जोड़कर पूछा कि भक्तजनों के हित के लिये तन्त्रकल्प —वर्णन कीजिये ॥२॥

कलौ सिद्धं महाकृत्यं तंत्रविद्या विधानकम् ।

कथयस्व महादेव देवदेव महेश्वर ॥३॥

कलियुग में सिद्धतन्त्र विद्या का विधान करने वाला महान् कार्य है, हे देव! महादेव ! आप उसे कहिये ॥३॥

सन्ति नानाविधा लोके यन्त्रमंत्राभिचारकाः ।

आगमोक्ताःपुराणोक्तवेदोक्ता डामरे तथा ॥४॥

जगत् में वेद, वेदांग, पुराण तथा डामरतन्त्र में अनेक प्रकार के यन्त्र मन्त्र अभिचार वर्तमान हैं ॥४॥

उड्डीशे मारितन्त्रे च कालीचण्डीश्वरे मते ।
राधातन्त्रे च उच्छिष्टे धारातन्त्रे मृडेश्वरे ॥५॥

उड्डीश और मारितन्त्र; कालितन्त्र तथा चण्डीश्वर मत में
राधातन्त्र उच्छिष्टतन्त्र धारा तन्त्र और मृडेश्वर तन्त्र में ॥५॥

ते सर्वे कीलनं कृत्वा कलौ वीर्यविवर्जिताः ।

ब्राह्मणः कामक्रोधाढ्यास्तस्य कारणहेतवे ॥६॥

मन्त्र तन्त्र आदि सब वितनी क्रियायें हैं वे सब कीलित
करके कलियुग में निर्बल कर दिये हैं इस कारण ब्राह्मण लोग
काम और क्रोध से युक्त हो गये हैं ॥६॥

विनाकीलकमंत्राश्च तंत्राश्च कथिताः शिव ।

तंत्रविद्या च्छणात्सिद्धिः कृपांकृत्वावदस्वमे ॥७॥

विना कीले हुये जो मन्त्र और तन्त्र कहे हैं उनमें से हे
शिवजी जो तन्त्र विद्या क्षण में सिद्धि प्रदान करती है उस विद्या
को कृपा करके मुझसे कहिये ॥७॥

ईश्वर उवाच

शृणुसिद्धिं महायोगिन् सर्वयोगविशारद ।

तंत्रविद्यां महागुह्यां देवानामपि दुर्लभाम् ॥८॥

शिवजी बोले, कि हे महायोगिन् ! हे सर्वयोगविशारद
श्रीदत्तात्रेयजी ! वह तन्त्र विद्या अत्यन्त गुप्त है अतः देवताओं
को भी दुर्लभ है उस सिद्धि को तुम सुनो ॥८॥

तवाग्ने कथिता देव तंत्रविद्याशिरोमणिः ।

गुह्याद्गुह्यामहागुह्या गुह्यागुह्या पुनः पुनः । ६।

अतः हे देव ! तुम्हारे आगे तन्त्र विद्या जो कहा वह सब विद्याओं में शिरोमणि है, इस गुप्त से गुप्त महागुप्त विद्या को बारम्बार छिपाना योग्य है ॥२॥

गुरुभक्त्यै दातव्या ना भक्त्यै कदाचन ।

ममभक्त्यैकेमनसे दृढचित्तयुताय च ॥१०॥

शिरो दद्यात्सुतंदद्यान्न दद्यात्तंत्रकल्पकम् ।

यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथामम भाषितम् । ११।

वह तन्त्रविद्या गुरुभक्त के लिये देनी चाहिये, असाधु को कदापि नहीं दे तथा जो मेरा पूर्णभक्त हो, दृढचित्त हो, उसको दे ॥१०॥ शिर दे दे, पुत्र दे दे, परन्तु तन्त्र विद्या जिस किसी को नहीं दे, अर्थात् प्रत्येक मनुष्य को नहीं देना, यह मेरा कहना अन्यथा नहीं है ॥११॥

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि दत्तात्रेय तथा शृणु ।

कलौ सिद्धिर्महामंत्रं विना कीलेन कथ्यते ॥१२॥

अब इसके बाद हे दत्तात्रेयजी ! जिस तरह तुमने पूछा उसी प्रकार सुनो कलियुग में सिद्धि देने वाले जो महामन्त्र बिना कीले हुए हैं उनको मैं कहता ॥१२॥

न तिथिर्न च नक्षत्रं नियमो नास्ति वासरः ।

नव्रतं नियमो होमः कालवेलाविवर्जितम् । १३॥

केवलं तंत्रमात्रेण ह्योषधी सिद्धिरूपिणी ।
यस्य साधनमात्रेण क्षणात्सिद्धिश्च जायते ॥१४॥

इस तन्त्र ग्रंथ में न तिथि का नियम है न नक्षत्र का और न वार का । केवल तन्त्र मात्र से ही औषधि सिद्धि रूपिणी है, साधन मात्र से क्षण में कार्य की सिद्धि हो जाती है ॥१४-१४॥

मारणं मोहनं स्तंभो विद्वेषोच्चाटनं वशम् ।
आकर्षणंचेन्द्रजालयक्षिणी च रसायनम् ॥१५॥

मारण, मोहन स्तम्भन विद्वेषण, उच्चाटन, वशीकरण आकर्षण, इन्द्रजाल और यक्षिणी साधन व रसायन ॥१५॥

कालज्ञानमनाहारं साहारं निधिदर्शनम् ।
बन्ध्यापुत्रवतीयोगंमृतवत्सासुतजीवनम् ॥१६॥

कालज्ञान, अनाहार, आहार, खजाने का दर्शन, बन्ध्या के पुत्रवती का योग तथा मृतवत्सा स्त्री के पुत्रका जिलाना ॥१६॥

जयवादं बाजिकरणं भूतग्रहनिवारणम् ।
सिंहव्याघ्रभयं सर्ववृश्चिकानांतथैव च ॥१७॥

जयवाद, बाजीकरण भूतग्रहों का निवारण, सिंह व्याघ्र के भय तथा सर्प बीछ आदिकों का भय ॥१७॥

निवारणं भयात्तेषां नान्यथा मम भाषितम् ।
गोप्यंगोप्यमहागोप्यंगोप्यंगोप्यंगुणः पुनः ॥१८॥

उनके भय का निवारण करने वाले सब प्रयोग इस तन्त्रग्रन्थ में हैं, ये मेरा कहा हुआ अग्रथा नहीं है यह तन्त्र ग्रन्थ छिपाने योग्य है ॥१८॥

अथ सर्वोपरिमन्त्रः ॐ परब्रह्मपरमात्मने नमः
उत्पत्तिस्थितिप्रलयकराय ब्रह्महरिहरायत्रिगुणा-
त्मने सर्वकौतुकानिदर्शय दर्शय दत्तात्रेयायनमः
तंत्रसिद्धि कुरु कुरुस्वाहा ॥अयुतजपात्सिद्धि ॥
अष्टोत्तशतजपात् कार्यसिद्धिर्भवति ॥

सर्वोपरि मन्त्र कहते हैं ॐ परब्रह्मपरमात्मने नमः इत्यादि मन्त्र है। इसको दस हजार बार जपने से सिद्धि होती है। और १०८ बार मन्त्र जपने से कार्य सिद्धि होती है ॥१८॥

द्वितीयः पटलः

तन्त्र सर्वजनवशीकरणम् । ईश्वर उवाच—

अथाग्ने सम्प्रवक्ष्यामि वशीकरणमुत्तमम् ।
यत्प्रयोगाद्दशं यांति नरा नार्यश्च सर्वशः ॥१॥

अब दूसरे पटल में सर्वजन वशीकरण प्रयोग वर्णन करते हैं। शिवजी बोले अब आगे उत्तम रीतिसे वशीकरण प्रयोग वर्णन करूंगा जिसके प्रयोग से नर-नारी सब वशीभूत हो जाते हैं ॥१॥

ब्रह्मदण्डीबचाकुष्ठचूर्ण तांबूलमध्यतः ।
दाययेद्य रविवारे सर्वश्यो वर्तते सदा ॥२॥

रविवार को ब्रह्मदण्डी, वच और कूट इन सबका चूर्ण जिसको पान में रखकर दे, वह सदैव वश में रहता है ॥२॥

गृहीत्वा वटमूलं च जलेन सह घषयेत् ।
विभूत्या संयुतं भाले तिलकं लोकवश्यकृत ॥३॥

बड़ की जड़ को लेकर जल के साथ पीसे और भस्म मिलाकर मस्तक पर तिलक लगावे तो लोगों को वश में करे ॥३॥

पुष्ये पुनर्नवामूलं करे समभिमन्त्रितम् ।
वध्वा सर्वत्र पूज्यन्ते सर्वलोकवशंकरम् ॥४॥

पुष्यनक्षत्र में पुनर्नवा (सांठ) की जड़ को मन्त्र से अभिमन्त्रित कर हाथ में बांधे तो सर्वत्र पूजनीय हो और सब भोग वश में हों ॥४॥

कपिलापयसा युक्तपिष्ट्वापामार्गं मूलकम् ।
ललाटे तिलकंकृत्वा वशीकुर्याज्जगत्त्रयम् ॥५॥

ओंगा की जल को कपिला गाय के दूध में पीसे और मस्तक पर तिलक लगावे तो सब लोग वश में हों ॥५॥

गृहीत्वा सहदेवीं च छायाशुष्कां तु कारयेत् ।
ताम्बूलेन ततश्चूर्णं सर्वलोकवशंकरम् ॥६॥

सहदेवी को लेकर छाया में सूखा कर चूर्ण बनाकर पान में दे तो सर्व लोगों को वश में कर सकता है ॥६॥

रोचनासहदेवीभ्यां तिलकं लोकवश्यकृत ।

गृहीत्वौदुम्बरं मूलं ललाटे तिलकं चरेत् ॥७॥

प्रियो वै भवति सषां दृष्टमात्रे न संशयः ।

ताम्बूलेन प्रदातव्यं सर्वलोकवशंकरम् ॥८॥

गोरोचन और सहदेवो का तिलक सब लोगों को वश में करता है। गूलर को जड़ को लेकर मस्तक पर तिलक लगावे ॥७॥ तो दर्शन मात्र से निस्सन्देह सबका प्रिय होता है और पान में देवे तो सब लोग वश में हों ॥८॥

सिद्धार्थ देवदाल्योश्च गुटिकां कारयेद्बुधः ।

मुखे निक्षिप्य भाषेत् सर्वलोकवशंकरम् ॥९॥

सरसों और देवदाली (घघरवेत) की गोली बना कर यदि बुद्धिमान् मुख में रखे और सम्भाषण करे तो सब लोग वश में हों ॥९॥

कुंकुमं नागरं कण्ठं हारतालं मनः शिला ।

अनामिकायाः रक्तेन तिलकं सर्ववश्यकृत ॥१०॥

केशर, सोंठ, कूट, हरताल, मैनासल और अनामिका अँगुली का रुधिर मिलाकर तिलक लगावे तो सब लोग वश में हों ॥१०॥

गोरोचनं पद्मपत्रं प्रियंगू रक्तचन्दनम् ।

एषां तु तिलकं भाले सर्वलोकवशंकरम् ॥११॥

गोरोचन, कमलपत्र, कांगनी और लाल चन्दन इन सबका तिलक मस्तक पर लगावे तो सब लोग वश में हों ॥११॥

गृहीत्वा श्वेतगुंजां च छायाशुष्कां तु कारयेत् ।
कपिलापयसासार्धतिलकं लोकवश्यकृत ॥१२॥

सफेद घुँघुची को लेकर छाया में सुखाकर कपिला गौ के दूध से तिलक लगावे तो सब लोगों को वश में करे ॥१२॥

श्वेतार्कं गृहीत्वा छायाशुष्कं तु कारयेत् ।
कपिलापयसासार्धं तिलकं लोकवश्यकृत ॥१३॥

सफेद आक को लेकर छाया में सुखावे और, कपिला गाय के दूध के साथ तिलक लगावे तो सब लोग वश में हों ॥१३॥

श्वेतदूर्वां गृहीत्वा तु कपिलादुग्धमिश्रिताम् ।
लेपमात्रे शरीराणां सर्वलोकवशंकरम् ॥१४॥

सफेद दूब को लेकर कपिला गाय के दूध के साथ शरीर पर लेप करे तो सब लोग वश में हों ॥१४॥

बिल्वपत्रं तु संग्राह्यं मातुलुंगं तथैव च ।
अजादुग्धेन तिलकं सर्वलोकवशंकरम् ॥१५॥

बेल की पत्ती लेकर विजौरा नीबू और बकरी के दूध में पीस कर तिलक लगावे तो सब लोग वश में हों ॥१५॥

कुमारी मूलमादाय विजयाबीजसंयुतम् ।
तिलकं क्रियते भाले सर्वलोकवशंकरम् ॥१६॥

घीक्वार की जड़ लाकर भांग के बीज मिलाकर मस्तक पर तिलक लगावे तो सब लोगों को वश में करे ॥१६॥

हरितालं चाश्वगन्धा सिंदूरं कदलीरसः ।

एषां तु तिलकं भाले सर्वलोकवशंकरम् ॥१७॥

हरिताल, असगन्ध और सिंदूर इन सबको केले के रस में पीस कर मस्तक पर तिलक लगावे तो सब लोग वश में हो जाय ॥१७॥

अपामार्गस्यबीजानि छागदुग्धेन पेषयेत् ।

अनेन तिलकं भाले सर्वलोकवशंकरम् ॥१८॥

अोंगा के बीज बकरी के दूध में पीसकर मस्तक पर तिलक करे तो सब लोग वश में हों ॥१८॥

ताम्बूलं तुलसीपत्रं कपिलादुग्धपेषितम् ।

अनेन तिलकं भाले सर्वलोकवशंकरम् ॥१९॥

पात और तुलसीपत्र को कपिला गाय के दूध में पीसकर इसका तिलक मस्तक पर लगावे तो सब लोगों को वश में करे ॥१९॥

मंत्रस्तु-ॐ नमोनारायणाय सर्वलोकान्मम वशं

कुरु कुरु स्वाहा अयुतजपात्सिद्धिः ॥

ॐ नमो नारायणाय० इत्यादि मन्त्र दस हजार बार जप कर पहिले सिद्ध कर लेवे ॥

तृतीयः पटलः

तत्र स्त्री वशीकरणम्

रविवारे गृहीत्वा तु कृष्णधत्तूरपुष्पकम् ।

शाखां लतां गृहीत्वा तु पत्रं मूलं तथैव च ।१॥

अब तीसरे पटल में स्त्री वशीकरण कहते हैं। रविवार को काले घसूरे के फूल, डाल तथा बेल पत्र और जड़ लेकर ॥१॥

पिष्ट्वा कर्पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनं समम् ।
तिलकं स्त्रीं वशं कुर्याद्यदि साक्षादरुन्धती ॥२॥

उन सबको पीसे और उसमें समा न भाग केशर तथा गोरौचन मिलाकर तिलक बना कर मस्तक पर लगावे तो यदि साक्षात् अरुन्धती भी हो तो भी उस स्त्री को वश में कर सकता है ॥२॥

काकजंघा तु तगरं कुंकुमं च मनः शिलाम् ।
चूर्णं क्षिपेत् शिरसिस्त्रि वशीकरणमद्भुतम् ॥३॥

कोआगोड़ी, तगर कुंकुम और मैन शिल का चूर्ण इनको स्त्री के शिर पर डाल दे तो यह ही अद्भुत वशीकरण होता है ॥३॥

चिताभस्मवचाकुष्ठं रोचनाकुंकुमैः समम् ।
चूर्णं स्त्रीशिरसि क्षिप्तं वशीकरणमद्भुतम् ॥४॥

चिता, भस्म, वच, कूट, केशर और गारोचन इन सबको बराबर लेकर चूर्ण बनाकर स्त्री के शिर पर छोड़े तो अद्भुत वशीकरण हो ॥४॥

ब्रह्मदण्डो चिता भस्म यस्यांगे निशिशयेन्नरा ।
वशी भवति सा नारी नान्यथा मम भाषितम् ॥५॥

चिता की भस्म और ब्रह्मदण्डो का चूर्ण बनाकर जिस स्त्री के शरीर पर मनुष्य छिड़क दे वह स्त्री उसके वश में हो जाये। मेरा कथन मिथ्या नहीं है ॥५॥

कर पाद नखानां च भस्म ताम्बूल पत्रकं ।
रविवारे प्रदातव्यं वशीकरणमद्भुतम् ॥६॥

हाथ पांव के नाखून लेकर उनका भस्म करके रविवार के दिन पान में रखकर स्त्री को दे तो अद्भुत वशीकरण हो ॥६॥

घूककांसं गृहीत्वा तु खाने पाने प्रदापयेत् ।
सिद्धयोगमिमं ज्ञेयं वशीकरणमद्भुतम् ॥७॥

उल्लू पक्षी का नांस लेकर खाने और पाने में दे तो इस सिद्धयोग को अद्भुत वशीकरण जानना चाहिए, परन्तु यह आसुरी प्रयोग होता है ॥७॥

वामपादतलात्पांसं वनितायाः शनौ हरेत् ।
तस्य पुत्तलिकांकुर्यात्तस्यःकेशान्त्रियोजयेत् ॥८॥
नीलवस्त्रैर्वेष्टयित्वा स्ववीर्यं तु भगे क्षिपेत् ।
सिन्दूरेण समायुक्तं निखनेद्द्वारदेशके ॥९॥
उल्लंघनाद्दशं याति प्राणैरपि धनैरपि ।
कृतज्ञः स्ववशं कुर्यान्मोदते च त्रिरं भुवि ॥१०॥

शानवार को स्त्री के बांये पैर के तने की धूल को लेकर उसकी पुतली बनावे और फिर उस स्त्री के केश पुतली के केश स्थान में लगावे ॥८॥ और उस पुतली को नीले कपड़े से लपेट कर उसकी भग में अपना वीर्य डाले और उस पर सिंदूर लगा उस स्त्री के द्वार पर बाड़ दे ॥९॥ उस स्थान को लांघते ही

वह स्त्री प्राण और घन से भी वशीभूत हो जाती है, कृतज्ञ पुरुष इस प्रकार उसको अपने वश में करके बहुत काल तक पृथ्वी पर आनन्द करता है ॥१०॥

ताम्बूलरसमध्ये च पिष्ट्वा तालं मनः शिला ।
भौमे च तिलकं कृत्वा वशीकुर्याच्च योषितः ॥११॥

पान के रस में तालमखाना और मैन्सिल पोसकर मंगल-वार के दिन तिलक लगावे तो स्त्री वशीभूत हो ॥११॥

गोरोचनं पद्मपत्रे लिखित्वा तिलकं कृतम् ।
शनिवारे कृते योगे वशी भवति निश्चितम् ॥१२॥

गोरोचन से कमल पर जिस स्त्री को वश में करना हो उसका नाम लिखे और फिर उसी लिखे हुये गोरोचन का तिलक शनिवार को करे तो निश्चय ही वह स्त्री वशीभूत हो जाती है ॥१२॥

गृहीत्वा मालतीपुष्पं कृत्वा तु पटवर्तिकाम् ।
भृगुवारे नृकपाले एरण्डतैलकज्जलम् ॥१३॥

अञ्जयेन्नेत्रयुगले दृष्टिमात्रे वशी भवेत् ।

विनामंत्रेण सिद्धिः स्यान्नान्यथाममभाषितम् ॥१४॥

मालती (चमेली) के फूल और कपड़े की बत्ती बनाकर शुकवार के दिन मनुष्य के कपाल में एरण्ड के तेल से काजल पारे ॥१३॥ और दोनों नेत्रों में आंजे तो उसके देखने मात्र से ही स्त्री वशीभूत हो जाती है यह बिना मन्त्र से सिद्ध होती है, यह हमारा कथन अन्यथा नहीं है ॥१४॥

ॐ नमः कामाक्ष्यै देव्यै अमुर्को मे वशं ।
कुरु कुरु स्वाहा । सपादलचजपात्सिद्धिः ॥

ॐ नमः कामाक्ष्यै० इत्यादि मन्त्र को सवालक्ष जपकर प्रथम सिद्ध करले । दत्तात्रेय तन्त्रमें तीसरा पटल समाप्त हुआ ॥३॥

चतुर्थः पटलः

तत्र पुरुषवशीकरणम् । आदौ पतिवशीकरणम्

गोरोचन वशं नेत्रे मत्स्यपित्तं च कुमकुमम् ।
चन्दनं काक जंघा च मूलं भाग समं नयेत् ॥
वाप्यादिकजनव पेशयित्वा कुमारिकाम् ।
हस्तेन गुटिका कृत्या छायायां चविशातेत् ॥
ललाटे तिञ्जकं कुर्यात् य पश्यति वशो भवेत् ।
राजद्वारे न्याय युद्धे सर्वत्र विजयी भवेत् ॥१॥

गोरोचन, वंशलोचन, मछली का पित्त, केशर चंदन और जघा की जड़ ये सब वस्तुयें सम मात्रा में लेकर बावली आदि के जल में कुमारी कन्या के हाथ से पिसवा कर गोली बनवा ले फिर इसको छाया में मुखा करके माथे पर इसका तिलक करे तो उसको जो ओरत देखे वह वश में हो जाये इसका तिलक लगाने वाला राजसभा तथा न्यायालय में भी विजय प्राप्त करता है ॥१॥

पंचांगदाडिमीं पिष्ट्वा श्वेतसर्षपमंयुताम् ।
योनिलेपे पतिं दासं करोत्येव च दुर्भगा ॥२॥

अनार का पंचांग पीसकर सफेद सरसों में मिलाकर योनि पर लेप करे तो दुर्भंगा स्त्री भी अपने पति को अपना दास बना लेती है ॥२॥

गृहीत्वा मालतीपुष्पं कटुतेलेन पाचितम् ।
भगे श्लेपयेन्नारी रतौ मोहयते पतिम् ॥३॥

चमेली के फूल को कड़वे तेल में पकाकर जो नारी उस तेल को अपने काममन्दिर में लेपन करले तो सम्भोग काल में वह अपने पति को मोहित करले ॥३॥

चम्पाकस्य तु वन्दाकं करे बध्वा प्रयत्नतः ।
संगृह्य तु भरण्यर्के पुष्यार्के वा विधानतः ।
स्त्रीणां तत्क्षणादेव पुरुषा वशमानयेत् ॥४॥

भरणी अथवा पुष्य नक्षत्र में विधिपूर्वक चम्पा का बन्दाक लाकर जो हाथ में बांधता है, उसके देखते ही स्त्री अथवा पुरुष उसके वश में हो जाते हैं ॥४॥

मन्त्रस्तु ॥ ॐ नमो महायक्षिण्यै मम पतिं मे
वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ॥

ॐ नमो महायक्षिण्यै० इत्यादि मन्त्र को पहिले जप ले ॥

अथ राजवशीकरणम्

कुंकुमं चन्दनं चैव कर्पूरस्तुलसीदलम् ।
गवां क्षीरेण तिलकं राजवश्यकरपरम् ॥५॥

अब राजवशीकरण किखते हैं कि—कुंकुम, चन्दन, कपूर और तुलसीदल इन सबको गाय के दूध में पीसकर निलक बनाकर मस्तक पर लगाने से राजा वश में हो जाता है ॥५॥

हरितालं चाश्वगन्धा कर्पूरश्च मनश्शिला ।
अजाक्षीरेण तिलकं राजवश्यकरंपरम् ॥६॥

हरिताल, असगंध कपूर और मैनसिल इनको बकरी के दूध में पीसकर मस्तक पर तिलक लगाने से राजा वश में हो जाता है ॥६॥

तालीसकुष्ठतगरैर्लिप्तां क्षौमीं सुवर्तिकाम् ।
सिद्धर्थतैले निक्षिप्य कञ्जलं नर मस्तके ॥७॥
पातयेदं जनात्तस्मात्सर्वदा भुवनत्रये ।
दृष्टिगोचरमायातः सर्वो भवति दासवत् ॥८॥

तालीस, कूट और तगर इनसे लेप की हुई रेशमी वस्त्र की बत्ती बनाकर सरसों के तेल में मनुष्य के कपाल में काजल पारे ॥७॥ उस अंजन को लगाने से जो कोई भी उसकी दृष्टि के संमुख आवेगा वह सब प्रकार से दासवत् हो जायेगा ॥८॥

करे सौदर्शनं मूलं बध्वा राजप्रियो भवेत् ।
सिंहीमूलं हरेत्पुष्ये कटिं बध्वा नृपप्रियः ॥९॥

हाथ में सुदर्शन की जड़ बांधे अथवा कांकरासिंही की जड़ पुष्यनक्षत्र में लेकर कमर में बांधे तो राजा का प्रिय हो ॥९॥

हरेत्सौदर्शनं मूलं पुष्यभे रविवासरे ।
 कर्पूरं तुसीपत्रं पिष्ट्वा तु वस्त्रलेपने ॥१०॥
 विष्णुक्रान्ताबीजतेले तस्य प्रज्वाल्य दीपकम् ।
 कज्जलं पारयेद्रात्रौ शुचिपूर्वसमाहितः ॥११॥
 कज्जलं चांजयेन्नेत्रे राजवश्यकरंपरम् ।
 चक्रवर्ती भवेद्दरयो ह्यन्यलोषु का कथा ॥१२॥

सुदर्शन वृक्ष की जड़ को पुष्य नक्षत्र रविवार के दिन लाकर
 कपूर और तुलसी पत्र मिलाकर वस्त्र पर लेपन करे ॥१०॥
 फिर उस वस्त्र की बत्ती बनाकर विष्णुक्रान्ता के बीजों के तेल को
 दीपक में जलाकर पवित्रता से सावधानी पूर्वक काजल बारे
 ॥११॥ उस काजल के अंजन को नेत्रों में लगावे तो राजा वश
 में हो। इससे चक्रवर्ती तक वश में हो जाता है, फिर औरों का
 तो कहना ही क्या है ॥१२॥

भौमवारे दर्शादिने कृत्वा नित्यक्रियां शुचिः ।
 वने गत्वा ह्यपामार्गं वृक्षं पश्ययेदुदङ्मुखः ॥१३॥
 तत्र विप्रं समाह्वय पूजां कृत्वा यथाविधि ।
 कर्षमेकं सुवर्णस्य दद्यात्तस्मै द्विजन्मने ॥१४॥
 यस्य हस्तेन गृह्णीयादपामार्गस्य बीजकम् ।
 मौनेन स्वगृहं गच्छेत्कृत्वा बीजांस्तु निस्तुपान् ॥१५॥

रमेश हृदये ध्यात्वा राजानं खादयेच्च तान् ।
येन केनाप्युपायेन यावज्जीवे भवेद्दाशम् ॥१६॥

मङ्गलवार युक्त अमावस्या के दिन पवित्रता से स्नान पूजनादि नित्य कर्म करके वन में जाय और वहाँ उत्तर मुख होकर ओंगा का वृक्ष देखे ॥१३॥ फिर वहाँ ब्राह्मण को बुलाकर यथा विधि से उस वृक्ष का पूजनकरे और एक कर्ष (१६माशा) सुवर्ण उस ब्राह्मण को दान करे ॥१४॥ बाद में उस ब्राह्मण के हाथ से ओंगा के बीजों को निकलवा ले और उन (बीजों) की भूसी निकाल कर साफ करले ॥१५॥ और रमानाथ (भगवान) का ध्यान करके जिस किसी उपाय से राजा को खिला दे तो वह राजा जीवन पर्यन्त उसके वश में रहता है ॥१६॥

अपामार्गस्य बीजं तु गृहीत्वा पुष्यभास्करे ।
खाने पाने प्रदातव्यं राजवश्यकरं परम् ॥१७॥
मन्त्रस्तु ॥ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मकं
अमुकं प्रहीपतिं मे वश्यं कुरुकुरु स्वाहा ॥ लक्ष
जपात्सिद्धिर्भवति ।

पुष्य नक्षत्र युक्त रविवार को ओंगा के बीज लाकर जि राजा को खाने और पीने में दे तो वह राजा वश में हो ज ॥१७॥ पहिले ॐ नमो भास्कराय० इत्यादि मन्त्र को एक ल जप कर सिद्ध करले ।

पंचमः पटलः

तत्राकर्षणप्रयोगः ॥ ईश्वर उवाच—

आकर्षणविधिं वक्ष्ये शृणु सिद्धिप्रयत्नतः ।
राज्ञः प्रजायाः सर्वेषां सत्यमाकर्षणं भवेत् ॥१॥

अब दशवें पटल में आकर्षण प्रयोगों का वर्णन किया जाता है । शिवजी बोले ! अब आकर्षण प्रयोग विधि का वर्णन करता हूँ, हे दत्तत्रेयजी ! उसकी सिद्धि को तुम सावधान होकर सुनो, जिससे राजा-प्रजा आदि सबका ठीक २ आकर्षण होता है ॥१॥

कृष्णधत्तूरपत्राणां रसे रोचन संयुतम् ।
श्वेतचण्डातलेखन्या भूर्जपत्रे लिखेत्ततः ॥२॥
मन्त्रे नाम लिखेन्मध्ये तापयेत्स्वदिराग्निना ।
शतयोजनगोवापि शीघ्रमायाति नान्यथा ॥३॥

काले घतूरे के पत्तों के रस में गोररोचन मिलाकर भोजपत्र पर सफेद कनेर की कलम से मन्त्र को लिखे ॥२॥ जिसका आकर्षण करना हो उसके नाम को मध्य में लिखे और खैर की लकड़ी की आग से उसे तपावे तो, सौ योजन तक पहुँचा हुआ पुष्प भी क्षिप्र आ जाता है, इसमें सन्देह नहीं है ॥३॥

नृकपाले लिखेन्मन्त्रं गोररोचनसकुंकुमैः ।
तापयेत्स्वदिरांगारे त्रिसन्ध्यासु प्रयत्नतः ॥४॥

मनुष्य के कपाल में गोरोचन के सहित केशर से मन्त्र लिखे फिर उसे खैर की आग में तपावे परन्तु जिसके नाम से आकर्षण प्रयोग किया जा रहा है उसके नाम से तीनों काल सावधानी पूर्वक तपावे ॥६॥

मन्त्रं जपेत्सुसंसिद्धं कर्षयेदुर्वशीमपि ।
ब्रह्मदण्डीं समादाय पुष्यार्केण तु चूर्णयेत् ॥५॥
कामार्तां कामिनीं दृष्ट्वा उत्तमांगे विनिक्षिपेत् ।
पृष्ठतः सा समायाति नान्यथाममभाषितम् ॥६॥

अनन्तर मन्त्रजपे तो सिद्धि होवे और उर्वशी अप्सरा को भी खींच लेवे । पुष्य नक्षत्र युक्त रविवार के दिन ब्रह्मदण्डी को लाकर चूर्ण करे ॥५॥ काम पीड़ित कामिनी को देख कर उसके उत्तमांग (शिर) पर उस चूर्ण को छोड़ दे तो मृगनयनी पीछे २ चली आवेगी । यह हमारा कथन अन्यथा नहीं है ॥६॥

अनामिकाया रक्तेन लिखेन्मन्त्रं तु भूर्जके ।
यस्य नाम लिखेन्मध्ये मधुमध्ये च निक्षिपेत् ॥७॥
तदा आकर्षणं याति सिद्धयोगं उदाहृतः ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथाममभाषितम् ॥८॥

अनामिका अंगुली के रक्त से भोजपत्र पर मन्त्र सहित जिसका नाम लिख कर शहद के बीच रख दिया जाय ॥७॥ तो उसका आकर्षण होता है, यह सिद्ध योग जिस किसी अर्थात् प्रत्येक मनुष्य को नहीं देना चाहिये क्योंकि यह हमारा कहा प्रयोग असत्य नहीं है ॥८॥

**मन्त्रस्तुॐ नमो आदिरूपाय अमुकस्याकर्षणं
कुरु कुरु स्वाहा ॥ आयुतजपातिशिद्धिः ॥**

ॐ नमो आदि रूपाय० इत्यादि मन्त्र को पहिले दस हजार बार जपे। यह दत्तात्रेय मन्त्र में आकर्षण नाम का पाँचवा पटल समाप्त हुआ।

वशीकरण तिलकः

“ॐ ह्रीं अमुकीं में वशमानय स्वाहा।”

पूर्व सहस्रजप्तवानेन मन्त्रे सप्ताभिमन्त्रितं तिलकं कार्यम्।

विधि—उपर्युक्त मन्त्र का पहिले एक हजार जप करके इसको सिद्ध कर ले। पश्चात् सात बार मन्त्र से अभिमन्त्रित करके तिलक लगाना चाहिये।

अन्य वशीकरण मन्त्र

“ॐ नमः कामाक्षी देव्यै अमुकीं में वशं कुरु कुरु स्वाहा।”
एकलक्ष जपात् सिद्धिः। अष्टात्तर शत जपात् प्रयोग सिद्धिः।

यह मन्त्र एक लाख बार जप करने से सिद्ध हो जाता है। जब प्रयोग करना हो तो प्रयोग से पूर्व एक सौ अठार बार जप कर लेना चाहिये। प्रयोग करते समय ‘अमुकीं’ शब्द के स्थान पर जिस औरत पर प्रयोग करना हो उस औरत का नाम लेना चाहिये।

वशीकरण की कुछ अन्य विधियाँ

॥ विधि नं० १ ॥

यह मन्त्र एक महात्मा की वर्षों तक सेवा करके से प्राप्त हुआ था। पाठकों के लाभार्थ नीचे लिखा जाता है। यह बिल्कुल सत्य है। अनुचित कार्यों से दूर रहें, अन्यथा आपको जीते जी नरक कष्ट उठाना पड़ेगा।

सामग्री—नील वस्त्र सवा गज, चौमुखे दीपक ४० सिट्टी का लोटा एक, श्वेत वस्त्र का आसन, २३२ बत्तियाँ ५ दावे छोटी इलायची, एक छुहारा, एक नील वर्ण की हमाली, एक माचिस, ८ दाने लौंग, देशी तेल १० सेर, एक इत्र की शीशी, ५ फूल, गेरू की डली एक।

कृष्ण पक्ष में मङ्गलवार के दिन रात को १२ बजे स्वान करके नीले रङ्ग की हमाली पहनकर साफ सफेद कपड़े का चौरस आसन बिछाकर उस पर पूर्व की ओर मुख करके बैठे और अपने सामने दूर नीला कपड़ा बिछाये और उसके निकट चौमुखा दीपक जलाये और कपड़े के चारों कोनों पर लड्डू, लौंग और छुहारा बांधे।

जितनी संख्या ऊपर कही है और लोटे में जल डालकर उस पर सात बार निम्नलिखित मन्त्र पढ़ कर उसके चारों ओर रेखा खींचे।

यह मन्त्र है—

ओम आदेश, गुरु जी को आदेश,
बजर का कोठा समुन्दर की खाई ।

हनुमान की चौकी, श्री रामचन्द्रजी की दोहाई ॥

तत्पश्चात् माला उठाकर ११ माला निम्नलिखित
मन्त्र को फेरे ।

काला भैरों काला केश
कन्नों मुन्दरों भगवा भेष

हाथ डगोरी, मोण्डे मढ़ा

जहाँ सिमरूँ तहाँ हानर खड़ा

ग्यारह सरसों, बारह राई

चौरस्ते की मिट्टी, मकान की छाई

पढ़ कर मारूँ मंगलवार

कवहुँ न देखे घर का बार

हमारी भगति गुरु की शक्ति

नोट—पानी में जो ईश्वर का प्रतिबिम्ब पड़ता है उसमें जिसको वश में करना हो उसका छाया चित्र रखे अर्थात् जिसे वश में करना है उसका ध्यान करते हुये मन्त्र पढ़ने वाले को लोटे के जल में उसका प्रतिबिम्ब दिखाई देना चाहिये और मन्त्र करने के पश्चात् दीपक को बहते जल में छोड़ आये, आते जाते कोई व टोके अन्यथा सारा कार्य जाता रहेगा । यदि प्रेष शुद्ध व पवित्र होगा तो जिसको वश में करने के लिये ये प्रयोग किया गया है वह औरत अवश्य ही वश में हो जायेगी ।

नारी वशीकरण विधि नं० २

मन्त्र

‘खेती सरसों, बारा राई, चौरस्ते की मिट्टी मसान् को छार्द कम्बे खड़ी देवे कालका माई खड़ी देवे दोहाई होन नू बेख के जले मैं नू देख के हँस पड़े।’

चालीस दिन तक २१ माला प्रति दिन फेरनी चाहिये, ४० दिन के बाद प्रेयसी पीछेर फिरने लगेगी। यह प्रयोग मंगलवार के दिन से आरम्भ करना चाहिये। प्रयोग काल में सदा साफ और पवित्र रहना पूर्व कथित विधियों में बहुत आवश्यक है।

नोट—यदि कोई भयावना दृश्य दिखाई दे तो भयभीत नहीं होना चाहिये अन्यथा प्राणों का भय है। इसका उत्तरदायित्व कर्ता पर है। बिना गुरु के कार्य करना मूर्खता है। अच्छा या बुरा कार्य करने के उत्तरदायी आप स्वयं होंगे, जैसा करोगे वैसा भरोगे। ईश्वर को सदा सर्वव्यापक सर्वज्ञ और सर्व शक्तिमान ममभक्त कर करो। वह हमारे दुष्कर्मों तथा सत्कर्मों का निर्णय कर रहा है।

किसी के धन का हरण करना, किसी नारी को पाप की दृष्टि से देखना, जनता को धोखा देना आदि सभी सम्प्रदाय में पाप कहे गये हैं। जहाँ तक हो सके मनुष्य दुष्कर्मों से बचे और दूसरों की भलाई करने पर तत्पर रहे। किसी की आत्मा को न दुखाये।

नारी वशीकरण विधि नं० ३

तेन तेल महा तेल
 देखू मोहनी माई तेरा खेल
 राजा घर बकरी घर बलाय न की १ ककरी
 गये अपते के मारी शम को प्यार
 जे गुरु चढ़े ता चढ़े
 जे उतारें ता उतरें
 नहीँ मचावी दुन्वकार
 राम लछन मोहीँ सीला सोदानी
 मोहैँ तन्त बेठी रानी
 मोहे पीढ़े बैठी खतरानी
 जब तक हमारा काम न करें
 तुमको गुरु अपने की आन फिरे
 मन्त्र श्री महादेव का वाचा
 गुरु को शब्द साँचा

चालीस दिन तक प्रति दिन १४ माला फेरें, सिद्धि
 होगा। प्रेयसी का ध्यान अवश्य होना चाहिये। ब्रह्मचर्य
 का पालन करें। चालीस दिन तक किसी भी नारी की
 छाया अपने ऊपर न आने दें। यह मन्त्र बिल्कुल सच्चा
 और परीक्षित है।

विधि नं० ४

नीचे दिये गये यन्त्र को यदि रविवार के दिन हाथ
 पर लिख कर प्रणाम करे तो नारी तुरन्त ही वश में
 हो जाय और प्रेम करने लगे।

६१	१७	१६
७१	कु	१७
४॥	६	१००

यन्त्र लिखने की विधि

शुद्ध पवित्र ब्रह्मचारी रहे अपना वास अलग कमरे में रखे। सूर्यग्रहण अथवा दिवाली की रात को मन्त्र को लिखे, और पूर्व कथनानुसार सब कार्य करे अन्यथा कोई प्रभाव न होगा। यन्त्र लिखने से पहले यन्त्र को सिद्ध करना भी अति आवश्यक है। जिस यन्त्र को सिद्ध करना हो उस यन्त्र को १०८ बार भोज पत्र पर लिखकर हवच की आहुति देवे फिर अनार की कलम से इसे लिखे यह यन्त्र बिलकुल सच्चा है।

विधि नं० ५

यदि कोई आदमी उल्लू की टांग के निचले भाग की हड्डी तथा नखों को अपने कमर में बांध कर किसी नारी अथवा प्रेषिका के निकट जाय तो वह कितनी ही

पाषाण हृदय क्यों न हो उस पर आसक्त हो जायगी और सदा के लिये उसकी दासी बन जायेगी, किन्तु यह याद रहे कि उस नारी के निकट जाकर यह विम्नलिखित मन्त्र तीन बार अवश्य पढ़े । मन्त्र यह है—

का योनी हे चार युत श्रियातरीयते, नस्नोनि युक्त ॥

इस मन्त्र के बिना नारी अथवा प्रेमिका पर पूर्ण रूपेण प्रभाव नहीं पड़ सकता ।

विधि नं० ६

भ्रसरके पंख पुष्य नक्षत्र में लेकर काले घतूरे के रस में रगड़े और गोरोचन, सफेद आक, केसर, मछली इन सब चीजों को सम भाग में लेकर मिला दें, और रविवार को सूर्योदयसे पूर्व निम्नलिखित मन्त्र इन सब वस्तुओं पर पढ़े और तिलक लगा कर बारी के सामने जावे तो मोहित हो जावे, मन्त्र यह है—

ॐ भूर्भुवस्वः यज्याना मालिनी जातवेदामुक ते वक्ष्या स्वाहा ॥

विधि नं० ७

उल्लू के पंखों को लेकर जिस नारी को वश में करना हो और जिस मार्गसे वह गुजर रही हो वहाँ फेंक दें उल्लू के पर इस प्रकार से फेंकने चाहिये कि उसके पैरों के

धीचे अवश्य आये । जब वह उन परो को रौंदती हुई चली जाय तब उन्हीं उठा कर जमा दे और उसकी राख बनाये । फिर उस राख को जब भी वह उस मार्ग पर आये उसके सर पर डाल दे । कैसी ही पाषाण हृदय वारी क्यों न हो तुरन्त आपके वश में हो जायेगी ।

विधि नं० ८

छल्लू के कलेजे में शुद्ध गोरोवन मिलाकर निम्ब-लिखित मन्त्र का एक सहस्र जप करके काजल बवाकर आँखों में लगाये और जिस नारी से भी आँखे मिलाये वही नारी उस पर आसक्त हो जायेगी और उसको छोड़कर जाने का उस नारी का मन न चाहेगा ।

मन्त्र यह है—

“ॐ नमः कालरात्री त्रिशूलहस्त हस्तिणी हंस वाहिनी आगच्छ आगच्छ भगवती अमुकी मम वशम् कुस कुस स्वाहा ।”

विधि—एक लक्ष जपात् सिद्धिः अष्टोत्तर जपात् प्रयोग सिद्धिः ।

अर्थ—यह मन्त्र एक लाख जप करने से सिद्ध होता है । प्रयोग करने से पूर्व इसका एक सौ आठ बार जप करवा चाहिये । जिस पर प्रयोग करवा हो मन्त्र का जप करते समय ‘अमुकी’ के स्थान पर उस नारी अथवा प्रेमिका का नाम लेना चाहिये ।

विधि नं० ६

उल्लू की चर्बी को पिघला कर उसी मात्रा में चमेसी का तेल डाल दें और उस तेल को लेकर आप जिस भी चारी अथवा प्रेमिका के पास जायेंगे तो वह आप पर आसक्त हो जायेगी और आपके वश में होकर आपकी दासी बन जायेगी ।

श्री वशीकरण-मन्त्र नं० १०

जो व्यक्ति तगर, चन्दन, कूंगू, गौरोचन, उल्लू का पांस, कस्तूरी और केशर इन सबको सम मात्रा में पीस कर और निम्नलिखित मन्त्र से अभिमंत्रित करके जिसको भी खिलायेगा वह उसके वश में हो जायेगी । मन्त्र यह है—

“ॐ नमः भास्कराय तिलकात्मने अमुकीं मम वक्ष्य कुर्व कुर्व स्वाहा । एक लक्ष जपात् सिद्धिं अष्टोत्तर शत जपात् प्रयोग सिद्धिः ।”

विधि—यह मन्त्र एक लाख बार जप करने से सिद्ध होता है और प्रयोग करने के पूर्व इस मन्त्र का एक सौ आठ बार जप करना चाहिये । प्रयोग करते समय ‘अमुकीं’ के स्थाव पर जिस पर प्रयोग करना हो उसका नाम लेना चाहिये ।

श्री वशीकरण नं० ११

उल्लू की पसली की आस्थि को जलाकर उसकी राख बना ले और उसको अंजव के रूप आखों

सँ लगा कर जो भी पुरुष जिस स्त्री के सम्मुख जायेगा वह उस पर प्राप्त हो उसके वश में हो जायेगी और अपनी लज्जा को एक ओर रख कर उससे प्रेम स्त्री याचना करने लगेगी ।

स्त्री वशीकरण नं० १२

जो कोई यह चाहे कि अनुक स्त्री उससे प्रेम करे तो उसे चाहिये कि एक पापल का पत्रो ले और उस पत्रो के ऊपर निम्नलिखित यन्त्र खुदवाये । फिर उस पत्रो को एक चीनी के बर्तन में डालकर उसमें दो माशा उल्लू को बाट तथा आधा सेर माठा पानो डाल दे और फिर ऊपर से उस बर्तन का चानो के एक ओर बर्तन से ढाँक दे और इकठोस दिन तक उसे वैसा ही पड़ा रहने दें, इकठोस दिन बाद उस पत्रो को निकाल कर जिस स्त्री को अपने वश में करना हो उस स्त्री का नाम पत्रो की दूसरी ओर लिखकर उस पत्रो को कुएं में डाल दे जिस कुएं का पानो वह सुन्दरो पोतो हो । ठीक इकठोस दिन के बाद जिस किसी दिन वह सुन्दरो उड़ कुएं का जल पियेगी साधक स्त्री ओर आकर्षित होकर उसके वरगों पर गिरेगी ।

पत्रो पर यंत्र खुदवाने के साथ २ निम्नलिखित मंत्र भी प्रवचन खुदवा लेना चाहिये । मंत्र और तंत्र यह है—

मन्त्र

रास्ट्रबे मयावना रे मरत्यात

१००	७०	६	२११
२००	१००	३०	६१
१००	४	१००	१००
१००	६	६	१००

वशीकरण नं० १३

पुष्य नक्षत्र में गिद्ध तथा उल्लू की आंखों को निकाल कर सरसों के तेल में घिसाये और उसी दिवस मिट्टी के बर्तन में उसी तेल से दिया जला कर काजल तैयार करे। उस काजल को आंखों में लगा कर स्त्री के पास जाने से स्त्री तुरन्त आसक्त हो जाती है।

वशीकरण नं० १४

उल्लू की गर्दन सरोड़ कर उससे जो रक्त निकले उसे एक वीली शीशी में सुरक्षित रखे। उसके रक्त का अंजब आंखों में लगा कर साधक जिस भी स्त्री के पास

जाय वह उस पर तुरन्त आसक्त हो जायगी और वह उसे यदि छोड़ना चाहेगी तब भी वह उसे न छोड़ेगी ।

वशीकरण नं० १५

जो व्यक्ति कबूतर की पन्चाल, केशर, कस्तूरी कुंगी तथा गोरोचन को चन्दन में घिसकर उसका मस्तक पर तिलक लगा कर जिस स्त्री के पास जाता है । वह उस पर आसक्त हो जाती है और उससे प्रेम करने लगती है ।

वशीकरण नं० १६

रविवार की शाम को उल्लू की आँख का अंजन अपनी आँख में लगाने से कोई भी स्त्री अंजन लगावे वाले की ओर शीघ्र आकर्षित हो जाती है ।

वशीकरण नं० १७

रविवार के दिन नागकेशर, गाय. का भी, सफेद आक की जड़ और उल्लू की चोंच इन चारों वस्तुओं को पीसकर माथे पर इसका तिलक लगाकर जिस स्त्री के पास जाये वह उसके वश में हो जाये ।

वशीकरण नं० १८

उल्लू के हृदय को लेकर ४० दिन सुखाने के लिये चाँदनी में रखे जब वह सूख जाय तब इसका चूर्ण बबाले । अब इस चूर्ण को प्रतिदिव चावल भर पान में रख कर

खाये और इस पान को खाते हुये प्रेमिका या जिस और को अपने वश में करना हो उसके घर से गुजरे। इसी प्रकार ४० दिन तक पान खाते हुये उसके घर से गुजरता रहे ४१वें दिन वह औरत यानी प्रेमिका बेचैन होकर आपका मार्ग रोककर खड़ी हो जायेगी और कई प्रकार से अपने अंग प्रत्यंगों का प्रदर्शन कर आपको मोहित करने का यत्न करेगी। उस दिन साधक को चाहिये कि केवल मुस्कराता हुआ चला जाय। इसी प्रकार विरन्तर चार दिनों तक इस मार्ग से गुजरता रहे और प्रेमिका रोजाना उसकी राह ताकती रहेगी। जब साधक वहाँ से पाँचवें दिन निकलेगा तो वह औरत उससे बार २ बोलवे तथा उसके स्थान आदि का पता पूछवे का प्रयत्न करेगी। ऐसे समय में साधक को चाहिये कि उसको अपना पता ठीक २ बता दे और फिर उसके बाद वहाँ से निकलना बन्द कर दे, एक सप्ताह के बाद वह प्रेमिका उसके पास खुद पहुँच जायेगी।

बशीकरण नं० १६

बकरी के मांस में एक रत्ती उल्लू का मांस मिला कर और निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर जिस औरत को सिलाया जाय वह औरत वश में हो जाती है।

मन्त्रः

ॐ श्री काली महाकाली त्रिदा स्वाहा नमः ।

विधि—यह मन्त्र दीपावली की रात को व्रत रख कर जागरण काल में सवा लाख जप करने से सिद्ध होता है, सिद्धि के बाद प्रयोग से पूर्व इसका १०८ बार जप करना चाहिये ।

वशीकरण नं० २०

उल्लू के रक्त तथा अपनी दाहिनी अंगुली के रक्त को मिलाकर उसे पान में रखकर निम्नलिखित मन्त्र को इक्कीस बार पढ़े और उस पान को जिस औरत को खिलाये वह औरत उसके वश में हो जाय ।

मन्त्र

ॐ नमो आदेश गुर को मोहनी जग मोहिनी, मोहनी मेरा नाम ऊँचे टोले बसूँ बस कहुँ प्रजा गाम तक मोहूँ ठाकुर मोहू वाग मोहूँ कामनी पंसारी मोहूँ महल बैठी रानी वश कहुँ तब मोहनी कहाऊँ ।

वशीकरण नं० २१

उल्लू की तथा बन्दर की विष्ठा बराबर मिलाकर निम्नलिखित मन्त्र से एक सौ आठ बार पढ़कर जिस

औरत के सर पर डाला जाय वह फौरन ही वश में हो जाती है मन्त्र यह है—

ॐ नमोद्यानी भद्राय अश्राय अतल पलम्परा कर्माय विकला माय ॐ उर्ध्वज्ञाय क्रयकाय माये छाती दुष्ट दुर्जन छेदे २ कुरु २ स्वाहा ॥

विधि—दीपावली की रात को एक लाख बार जप करने से मन्त्र सिद्ध होता है ।

वशीकरण नं० २२

सफेद आक की जड़, हरताल, उल्लू का रक्त तथा अनामिका अंगुली का रक्त मिलाकर गोली बनाये । पुष्य नक्षत्र वाले रविवार के दिन इसका तिलक लगाकर औरत के पास जाने से औरत वश में हो जाती है ।

वशीकरण नं० २३

नौचन्दी रविवार के दिन नीम के अढ़ाई पत्ते लेकर उसमें उल्लू की जिह्वा तथा भेरे की जिह्वा मिलाकर पीस लें और भोजपत्र पर चौतीसियां यन्त्र सिद्ध करके लिख दें और फिर चूर्ण उसमें रखकर लपेटकर रुई का फलीत्ता बनाकर काजल तैयार करें इस काजल को लगा कर किसी भी नारी पर दृष्टिपात करने से वह औरत वश में हो जाती है ।

वशीकरण नं० २४

यदि किसी स्त्री को बश में करना हो तो एक रत्ती केशर, एक रत्ती कस्तूरी और एक रत्ती लौंग इन तीन वस्तुओं को अच्छी तरह पीस लें और इनमें छः माशा कपूर का अर्क मिलाकर खरल करें इसके बाद कोई एक रत्ती इसमें कियोसो आयल का फुल्ला मिला दें । यह एक प्रकार की स्याही तैयार हो जायेगी । इस स्याही से निम्नलिखित यन्त्र लिखे, लेकिन यह स्मरण रहे कि बनाकर निम्नलिखित यन्त्र को उल्लू की खाल पर लिखे और इसके साथ ही नीचे दिये गये मन्त्र को लिख देना चाहिये, अब गधी के दूध में दो बताशे डालकर इसको दो घण्टा के रख दें वह मन्त्र केवल उल्लू के पर की कलम से ही लिखना चाहिये अन्यथा इस यन्त्र का कोई लाभ न होगा । अब इस यन्त्र को लिखने के बाद भूमि में एक फुट गड्ढा खोदे, इस गड्ढे को गधे की लीद से से भर दे, फिर इसके ठीक बीच में इस यन्त्र को रख दे और ४० रोज तक इसी दशा में पड़ा रहने दे । चालिस रोज के बाद इसे निकाल कर एक शीशे के गिलास में दस तोले पानी डालकर इसमें इसको डाल दें । इसके बाद एक घण्टा पड़ा रहे, आप देखेंगे कि क्या आश्चर्य होता है ।

यन्त्र

४००	३००	१००	१००
१००	८	३७	१००
१००	८	८२	१००
१००	५००	२००	४००

वशीकरण नं० २५

केशर १ माशा, सीसम के फूलों का जल २ माशा ले। इनको काँच के बर्तन में डालकर खरल करके स्याही तैयार करें। फिर स्याही से उल्लू के पंख की कलम बनाकर निम्नलिखित यन्त्र को उल्लू की खाल पर लिखे और इसके साथ ही नीचे दिये गये यन्त्र को लिख देना चाहिये। अब गधी के दूध में दो बताशे डाल कर इसको दो घण्टे के बिये डाल दे, फिर इस दूध को सफेद कपड़े से छान कर जिस औरत को वश में करना हो उसको दे, वह और वश में हो जायगी।

यन्त्र

१०१	३५	५०	१०	३७	१००
१७	१००	१७	४१	१००	६७
४०	१०	१००	१००	१०	४४
२३	७	१०	१००	५३	२३
१०	१००	४७	५	१००	७
१	८	५०	८	१७	१००

मन्त्र—'नमस्ते आसीन विदला वन्दे सर्वास्तु'

वशीकरण मन्त्र नं० २६

उल्लू के मांस को छाया में सुखा कर निम्नलिखित मन्त्र से एक सौ आठ बार अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री के सिर पर डाला जाये, वह वश में हो जाती है।

मन्त्र

काला दलघा काली बुलाऊं, आधी रात उठ शैतान

सोती को जा लाग, आवे तान फूटे नहीं तो सिर कलेजा फूटे फुरो मन्त्र ईश्वर का वाचा ।

पहले इस मन्त्र को सूर्यग्रहण के दिन दस हजार जप करके सिद्ध करे, सिद्ध करने के बाद प्रयोग में लावे ।

नारी वशीकरण मन्त्र नं० २७

एक खद्वर का कपड़ा लेकर उसको लाल रङ्ग में रङ्ग दें । इसके पश्चात् उसको तीन दिन तक चाँदनी में रखे और उसके दोनों ओर से नीले रङ्ग का कागज लपेट दे । अब इस कागज पर नागौरी केशर का लेप करे । जब लेप सूख जाये तब इसको बेरी की लकड़ी के कोयले के ऊपर रखकर जला डाले । उसकी एक माशा राख और उल्लू के पर की एक रत्ती राख मिलाकर इसमें से दो रत्ती राख लेकर जिस स्त्री को खिलाये वह आपके वश में हो जायेगी और आप उसे जैसा भी कहेंगे वैसा ही करने को तैयार हो जायेगी ।

वशीकरण मन्त्र नं० २८

३ माशा ग्लिसरीन में उल्लू के नखों का चूण मिला कर रुई से बत्ती तैयार करें और उस बत्ती को जला कर उसका काजल तैयार करें । इस काजल को अपनी आँखों में लगाकर अपनी प्रेमिका अथवा किसी

स्त्री के सामने जाने से वह कंसी भी पाषाण हृदया क्यों न हो प्रेम पाश में फँस जाती है और स्वयं को न्योछावर कर देती है ।

वशीकरण मन्त्र नं० २६

सूर्य ग्रहण के दिन शिकरे का मांस तथा उल्लू की जिह्वा, भ्रमर की दोनों बाहें, कान का मैल, दाये हाथ की कनिष्ठिका अँगुली का रक्त इन सबको मिलकर निम्नलिखित मन्त्र पढ़कर एक-एक रत्ती की गोलियाँ बनाये । मन्त्र यह है—

‘सुन उल्लू शैतान, मेरा कहना मान, गनकर चकल मेरी अमुक छाती पर चढ़ बैठा ! आवे तो छूटे नहीं तो सिर कलेजा फूटे फट फट के होवे स्वाहा ।’

यह मन्त्र ५० हजार जप करन से सिद्ध हो जाता है और प्रयोग करने से पूर्व इसका एक सौ आठ बार जप करना चाहिये । जप करते समय ‘अमुक’ के स्थान पर बिस पर वशीकरण का प्रयोग करना हो उसका नाम लेना चाहिए ।

इस प्रकार से तैयार की हुई गोलों जब आप प्रेमिका को खिलायेंगे तो वह आपके वश में हो जायेगी और आयु पर्यन्त आपकी दासी बनकर रहेगी ।

वशीकरण मन्त्र नं० ३०

चील की आँखों तथा उल्लू की आँखों को मिला कर एक बत्ती बनायें और कपास को उल्लू के रक्त में तर करके उसकी बत्ती लपेट दें और उसे जलायें । उल्लू के सिर में उस काजल को एकत्रित करें । किन्तु यह काजल सूर्य ग्रहण के दिन ही तैयार करना चाहिए । इस काजल को आँखों में डालकर जिस स्त्री के पास भी जाये वह आपके वश में हो जायेगी ।

नारी वशीकरण मन्त्र नं० ३१

यदि कोई व्यक्ति सूर्य ग्रहण के दिन सूर्य निकले ग्रहण के समाप्त होने तक चौतीसिये का यन्त्र मन्त्र के साथ पढ़ता तथा सीखता रहे उसके पश्चात् अमावस्या के दिन जितनी घड़ी पल अमावस्या हो उसके ध्यान में उल्लू के रक्त का तेल बनाकर भोजपत्र पर लिखकर जलाये और उल्लू की खोपड़ी में उसका काजल उतारे । उस काजल को आँख में लगाकर जिस स्त्री की ओर वह देखे वह उसको ओर आकर्षित होकर चली आवे और सर्वस्व उसको अर्पण कर देवे । यह कार्य उसके लिए है जिसका प्रेम सच्चा हो, झूठा प्रेम करने वाला यह कार्य करने से हानि उठायेगा ।

नारी वशीकरण मन्त्र नं० ३२

एक खाली शीशी में पिसी हुई पोटास परमैंगनेट हाल दो और इसके पश्चात उसको ग्लैसरीन से भर कर ऊपर के कार्क लगा दो और शीशी को जोर २ से हिलाओ । शीशी में तुरन्त ही आग लग जायेगी और कार्क भक से उड़ जायेगी । इस आग को जलने दें । जब आग तनिक मद्धिम हो जाये तो उसमें थोड़ी सी ग्लैसरीन और डाल दें और किसी लकड़ी के तिनके से इसको हिनायें । इस क्रिया को उस समय तक जारी रखना चाहिये जब तक कि पोटास परमैंगनेट पूर्ण रूपा से भस्म नृ हो जाय, भस्म हो जाने पर इसको शीशों में बाहर निकाल लें जितनी भस्म हो उसी मात्रा में केशर शुद्ध काश्मीरा लेकर उसमें मिला दें । उसमें उल्लू का दो रन्ती सूखा हुआ रक्ततथा चार दाने टोपी वाले लौंग पीसकर उस राख में मिला दे । फिर बीहड़ के दो पत्ते लाकर उसको पीस कर इस भस्म में मिलायें और केलों के पत्तों का रस थोड़ा सा पानी मिलाकर थोड़ी सी स्याही बना लें । अब इस स्याही से आप जिस प्रेमिका का पत्र लिखेंगे वह आपके नगर की हो अथवा बाहर की रहने वाली हो, विवाहिता हो अथवा अविवाहिता, परिचित हो अथवा अपरिचित आपके पत्र को देखते ही

तुरन्त आपके वश में हो जायेगी और आपसे मिलने की इच्छा प्रगट करेगी ।

वशीकरण मन्त्र नं० ३३

कस्तूरी, केशर, गोरोचन, कुगू, कबूतर का पंचाल और उल्लू के शरीर का कोई भाग इन सब वस्तुओं को सम मात्रा में लेकर खरल करे । निम्नलिखित मन्त्र से अभिमन्त्रित करे फिर उसका तिलक लगाकर जिस स्त्री को भी देखे वह उसके वश में हो जाये, मन्त्र निम्नलिखित है—

ओं दु ह्रीं ह्रीं स्वाहा

इस मन्त्र को प्रयोग में लाने से पूर्व एक लाख बार जप करके सिद्ध कर लेना चाहिये । सिद्ध हो जाने के पश्चात् प्रयोग करने से पूर्व अभिमन्त्रित करते समय इसका १०८ बार जप कर लेना चाहिये ।

वशीकरण मन्त्र नं० ३४

बुधवार के दिन यदि कोई व्यक्ति उल्लू के मांस चावल और नौचंदे बुधवार के दिन बगुला के शरीर की भस्म चावल मिलाकर नौ—रविवार के दिन अपनी थूक में मिला कर जिस भी स्त्री को खिलावे वह कितनी ही पाषाण हृदया क्यों न हो उसकी ओर तत्काल आकर्षित हो जायेगी । जिस स्त्री के ऊपर साधक इसका प्रयोग

करेगा वह उसकी दासी हो जायेगी और उसे जैसा कहेगा वह वैसा करेगी ।

वशीकरण नं० ३५

उल्लू के कुछ नखों को छाती से बाँधकर तथा कुछ को अपने मुख में रख जिस स्त्री को अपने वश में करना हो उसके द्वार पर जाकर निम्नलिखित मन्त्र को नौ बार पढ़े तो वह स्त्री कौसी भी पाषाण हृदया क्यों न हो, उससे घृणा क्यों न करती हो तत्काल वश में हो जायेगी और उससे प्रेम करने लगेगी और आयु पर्यन्त उसकी दासी बनकर रहेगी और एक क्षण के लिए भी उसका विरह न सहन कर सकेगी ।

यह मन्त्र है—

‘अबोम्योकछ ईश्वराय भूतासिया सा अमुकं अहजां प्राप्नोत मया स न निष्ठतिस्या मयांदा सह मित्रता न भूण्ड ईश्वर यदि त्वं मां प्रतिज्ञा स्वीकारोति अहमपित्वं प्रतिज्ञां न स्वीकरोमि’

इसके पश्चात् यदि साधक उससे रुष्ट होकर भी बात करे तो भी वह बुरा न मानेगी और उसको छोड़कर अन्य किसी से भी प्रेम न करेगी ।

वशीकरण नं० ३६

उल्लू के नखों की भस्म को अपने होठों पर लगा कर जो व्यक्ति जिस स्त्री से भी बात करेगा वह उससे

आकर्षित होकर उसके साथ साथ चली जायेगी । लेकिन याद रहे कि उल्लू के नखों की भस्म को होठों पर लगाते समय निम्नलिखित मन्त्र को तीन बार पढ़ना चाहिए ।

‘शरबों शराबों त्वलज्यानःप्राणणे सीपतत्वं ।’

अन्न दास्तां करो सी यदि तं मित्रतां परं पूठं इच्छासि मया सह निवास कुरु पिता हं त्वयाय एकतानि महेन्द्रा तोपि मया सह का भव ॥

वशीकरण नं० ३७

शनिवार के दिन कमल के पत्ते पर गोरौचन से जिस स्त्री को वश में करना हो उसी का नाम लिख कर फिर उसी का तिलक लगाने से वह निश्चय ही वशीभूत हो जाती है ।

वशीकरण नं० ३८

रविवार के दिन काले धतूरे के फूल, शाख, लता, पत्ते और जड़ लेकर उसमें कपूर केशर और गोरौचन सबको सम भाग में मिलाकर पोस कर तिलक लगाने से कौसी भी पाषाण हृदया स्त्री क्यों न हो वश में हो जाती है ।

वशीकरण नं० ३९

उल्लू के अण्डकोषों को सुखाकर उनका चूर्ण तैयार करें और जिस स्त्री को वश में करना हो उसको खिला

दें लेकिन याद रहे कि उसे इसके खाने का कुछ पता न लगे जिस स्त्री को आप उल्लू के अण्डकोषों का चूर्ण तीन दिन खिलायेंगे वह आपके वश में हो जायेगी और अनेक प्रकार की प्रेम पूर्ण बातों से आपका जी बहलायेगी ।

वशीकरण नं० ४०

उल्लू के अण्डकोषों को लेकर उन्हें तीन बार कुएँ के जल से धोये और धोते समय निम्नलिखित मन्त्र पढ़ें ।

मन्त्र

‘खलं नारी आदपुरुष समरसम हनोहता ॥’

अब इस जल को जिस स्त्री को पिलाओगे वह आपके वश में हो जायेगी ।

वशीकरण नं० ४१

यह बल्ला बल्ली कर काम पिशाच अमुकीं ग्राह्य एवपने मम रूपेण नख विदारय-न द्रावण स्वेदेन बन्धन श्रीं फट ॥

उपरोक्त मन्त्र का हर रात को १००८ बार जप किया जाय, ४१ रोज में औरत वशीभूत हो जायेगी ।

वशीकरण नं० ४२

नौचन्दी रविवार, सोमवार, मंगलवार के दिन प्रातःकाल उठकर सगरी मिश्री लेकर अपनी प्रेमिका

अथवा जिस स्त्री को अपने वश में करना हो उसका ध्यान करता हुआ लघुशंका करता रहे, फिर चौथे दिन एक चावल लेकर उल्लू के मांस में मिलाकर प्रयोग कराये तो वह औरत तथा प्रेमिका निश्चय ही उसके प्रेम-पाश में बँध जायेगी, लेकिन साधक को यह पता होना चाहिये कि यह प्रयोग केवल पतित औरत के लिये ही है किसी कुलीना के लिये नहीं। साधक को प्रयोग करने से पूर्व इस बात को ध्यान में रख लेना चाहिये।

वशीकरण नं० ४३

ॐ नमो भैरवाय नमः । चल २ रे काली के पूत प्यारे जोगी जंगम अवधूत, सोती को जगाये जा, जागती को बैठार, जो न जगाये तोय कालिका माई की आन शय्या उठ आवे मनोकामना दिखावे शब्द साँचा पिंड काचा फुरो ईश्वर वाचा ।

रविवार के दिन रात को दो वजे गुड़ लेकर उपरोक्त मन्त्र से गुड़ को १२१ बार अभिमन्त्रित करे फिर बकुला के तेल से भैरव का पूजन करे। उस गुड़ की गोलियाँ बनाले और जिस स्त्री को एक गोली खिला दे वही वशीभूत हो जायगी।

वशीकरण नं० ४४

घतूरे के पत्ते और गोरोचन को परस्पर मिलाकर

उसमें उल्लू का रक्त मिलायें फिर केशर को लेखना च सिद्ध किया हुआ पन्द्रहे का यन्त्र भोज पत्रों पर लिखे फिर उन्हीं भोज पत्रों पर जिस औरत पर प्रयोग करना हो उसका नाम, उसकी माता का नाम तथा उसके पिता का नाम लिखें । अब एक यन्त्र को अग्नि में डाले दूसरे को वृक्ष के साथ, तीसरे को नदी में डाले तथा चौथे को भूमि में गाड़ दें । जिस औरत पर यह प्रयोग किया जायेगा वह खुद आपके सामने उपस्थित होगी ।

पन्द्रहिया यन्त्र

६	७	२
१	५	६
८	३	४

वशीकरण नं० ४५

ओंम नमो भैरवी तीरे आज्ञां कालेकमल मुखं राज मोहने वशीकरणे नारी पुरुष रंजन लोक वश्य मोहनी दासोऽहं प्रसादेन ।

आक के फूलों को कपड़े में बाँधकर भस्म बना ली जाये और उपरोक्त मन्त्र से १००८ बार जाप करके उसे पानी में मिलाकर शनि को तिलक करे तो नारी नर वश में हो जाते हैं ।

वशीकरण नं० ४६

एक माजूफल का फल लेवे उसे केले के पीधे के तने में खोलकर डाल दें। यह माजू फल उसमें इक्कीस दिन तक बराबर पड़ा रहे। इक्कीस दिन के पश्चात् उस माजू फल को वहाँ केले के तने से निकाल कर अनार में डाल दें, लेकिन इस बात का ध्यान रहे कि अनार अपने पीधे के साथ लटकता रहे। २१ दिन तक उसे अनार में पड़ा रहने दें। इसके पश्चात् उसे गन्धक के तेजाब में डाल दें। तीन रोज वह माजू फल तेजाब में पड़ा रहे। चौथे रोज उसे वहाँ से निकालें तो वह बिल्कुल गला हुआ होगा। बड़ी सावधानी से बाहर निकाल कर छाया में सुखा लें और इसके पश्चात् तीन रोज तक उसे नीले कपड़े में बाँधकर रखें। तीन रोज के बाद वह माजूफल भी नीले रङ्ग का हो जायेगा यानी कपड़े का रङ्ग श्वेत हो जावेगा। अब इस अनार व माजू फल को कपड़े से निकाल लें। अब जिस औरत अथवा प्रेमिका को अपने वश में करना हो तो उसके निवास स्थान के निकट जाकर इस अनार तथा फल में एक रत्ती उल्लू का नाखून मिला कर उस माजू फल को किसी ऐसी जगह आग में डाल दें कि उसका धुआं जिस औरत को अपने वश में करना हो उसके मकान में जाये। ज्यों ही

आपकी प्रेमिका अथवा जिस औरत पर आपने यह प्रयोग किया है वह औरत इस धुये के नाक में लगते ही आपकी तालाश में घर से बाहर निकल आयेगी। जब तक वह आपको ढूँढ़कर आपसे नहीं मिलेगी उसे चैन न आयेगा। उस पर प्रेम का भूत सवार हो जायेगा। सब प्रकार की लज्जा को त्याग आपको ढूँढ़ कर आपसे प्रेम करेगी।

वशीकरण नं० ४७

मन्त्र

ॐ चामुण्डा जव जय वश्य वश्य स्वाहा ॥

विधि—इस मन्त्र को ४१ रोज तक प्रतिदिन १०८ बार जप करके सिद्ध कर ले। फिर विशाखा नक्षत्र में रविवार को आधी रात के समय चमेली के फूलों को तोड़ कर उन्हें इसी मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित करके माला बना ले। जिस स्त्री को माला दी जावे वह औरत वश में हो जाये।

वशीकरण नं० ४८

मन्त्र

ॐ नमो राजस्य मुख विश्व राजस्य स्वाहा ॥

उपरोक्त मन्त्र को प्रतिदिन १०८ बार जप

करके ४१ दिन में सिद्ध करले फिर तेल को बायें हाथ में लेकर इसी मन्त्र से तीन बार अभिमन्त्रित करके सिर पर लगा ले फिर जिस स्त्री के पास जाये वह वश में हो ।

वशीकरण नं० ४६

मन्त्र

ॐ नमो गुड गुड रेतू गुड तमड़ा मसान ॥

विधि—इस मन्त्र को ४० दिन में प्रातः दिन १०८ बार जप करके सिद्ध करले फिर गुड़ लेकर उसे सात बार उपरोक्त मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिस स्त्री को खिलाये वह वश में हो ।

वशीकरण नं० ५०

नागकेशर, कमल, केसर, जटा मांसी तगर और चिरीजी सम भाग लेकर पीस ले । फिर ढाक अथवा पीपल की लकड़ी को अग्नि में उस धूप को डालते हुये निम्नलिखित मन्त्र को प्रति दिन १०० बार जप करे और अपने नगर में यदि प्लेग या हैजा आदि जो भी उत्पात फैल रहा हो उसका नाम भी लेता जाये तो तीन दिन में सभी उत्पात शांत हो जायेंगे और साथ ही उस धूप का धुआँ सूक्ष्म रूप में जिस औरत पर प्रयोग किया जायेगा उसके शरीर में प्रविष्ट होकर उस स्त्री के हृदय में साधक के प्रति प्रेम उत्पन्न कर देगा और साधक

जहाँ भी होगा वह स्त्री वहीं जाकर उसकी दासी बनेगी ।

मन्त्र

ॐ मुली मुली महा मुली सर्व संक्षोमव उपद्रवोम्य। स्वाहा ।

वशीकरण नं० ५१

कूट, तगर, वंशलोचन, मिश्री और पापल को पानी में पीस कर बत्ती बनावे और उस बत्ती को रविवार को २ मुर्दे की खोपड़ी में सरसों का तेल भर कर जलाकर काजल बनाये फिर निम्नलिखित मन्त्र से काजल को १०० बार सिद्ध कर ले । इसके बाद इस काजल को अपनी दोनों आँखों में लगाकर जिस स्त्री को देखे वही वश में हो जाय ।

मन्त्र

ओश्म् अ ओं फट श्रो कों फट स्वाहा २ ।

वशीकरण नं० ५२

ॐ नमो ऊर्वशी सुपारी कामिनी बोरो राजा परंजा, खारी प्यारी मन्त्र पद लगाऊँ, तोटा कलेजा लगाऊँ जीवता वश होय वश न होय तो यती हनुमान को आन शब्द साँचा पिंड काँचा फुरा मन्त्र ईश्वरो वाचा ।

विधि—प्रथम उपरोक्त मन्त्र को प्रतिदिन १०८ बार जप करके सिद्ध कर ले । इस जप को इक्कीस

दिन तक करते रहना चाहिये । फिर सूर्य ग्रहण के समय इसी मन्त्र से २१ बार सुपारियों को अभिमन्त्रित करके जिसको यह सुपारियाँ खिलाई जायेंगी वह स्त्री वशीभूत हो जायेगी ।

वशीकरण नं० ५३

ओ३म् नवोवर विकट धो रूपिणी स्वाहा ॥

विधि—उपरोक्त मन्त्र का प्रतिदिन १०८ बार जाप करके फिर चावलों की खीर बनाकर इस मन्त्र से ७ बार अभिमन्त्रित करके खावे तो अभीष्ट औरत वशीभूत हो जायेगी ।

वशीकरण नं० ५४

ॐ अ ओ फट श्री कीं फट स्वाहा ॥

प्रथम उपरोक्त मन्त्र को प्रतिदिन १०८ बार जप करके २१ दिन में सिद्ध कर ले, तत्पश्चात् केश, कूट, तगर, हरताल को पीसकर इसी मन्त्र से अभिमन्त्रित करके अनामिका अंगुली का रक्त मिलाकर तिलक करके जिस औरत के सामने जाये वही वश में हो जाये ।

वशीकरण नं० ५५

बुध के दिन सूखी जोक लाकर कुआँरी लड़की के हाथ के कते हुये सूत से लपेटे और तिल्ली के तेल से उसका काजल बनाये । उस काजल को लगा कर जिस औरत के पास जाये वह वश में हो जायेगी ।

वशीकरण नं० ५६

हाथी के कान का पसीना, लाल कनेर के फूल, सफेद सरसों तथा देह का मूल जिसको लगा दिया जावे वही स्त्री वश में हो जाती है।

वशीकरण नं० ५७

मन्त्र—ॐ क्लीं जिनके स्वाहा।

विधि—घी और गुग्गुलु से इस मन्त्र द्वारा एक लाख बार विधिपूर्वक आहुतियाँ देने से सिद्धि होती है सिद्धि हो जाने के बाद इस मन्त्र को पढ़कर जिस औरत को भी-स्पर्श किया जाये वही वश में हो जाती है।

वशीकरण नं० ५८

काले कौवे की जीभ और अपने बीसों नखों को जलाकर मरघट की राख और चौराहे की मिट्टी मिला कर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ते हुये जिस औरत के सिर पर डाल दिये जाय वह वश में हो जायेगी।

मन्त्र

ॐ नमो घोली सूरजी घाली सातों परमेश्वर जहाँ लगाऊँ नहीं लगे नहीं लगे तो राजा रामचन्द्र की आन।

वशीकरण नं० ५९

आकाश बेल को चौड़ी सौ रुई में लपेटकर चमेली के तेल में जलाना चाहिए। इस काजल को भी

आंखों में लगा कर स्त्री के पास जाने से वह वश में हो जाती है ।

वशीकरण नं० ६०

रविवार के दिन छिपकली पकड़ कर किसी नये बर्तन में एक सिंदूर के साथ वन्द करे और उसे गुग्गुलु को धूनी दे । फिर आधी रात को उस छिपकली की बत्ती बनाकर काजल कर ले । यह काजल जिस स्त्री को लगाया जाय वही स्त्री वश में हो ।

वशीकरण नं० ६१

एक रंग की बिल्ली का रक्त निकाल कर सुखा ले । फिर उसमें पानी मिला कर भस्तक पर लगाकर जिस स्त्री के पास जावे वही वश में हो जाये ।

वशीकरण नं० ६२

यदि उल्लू के जननेन्द्रिय का भस्म बना कर और उसमें मधु मिला कर जिस औरत को खिलाई जाये तो उस औरत को तब तक चैन न आयेगा जब तब कि वह अपने चाहने वाले को न पायेगी और ज्यों ही वह साधक से मिलेगी सदा उसकी चेरी बन कर रहना पसन्द करेगी ।

वशीकरण नं० ६३

ॐ नमो भगवते रुद्राय सिद्ध रूपिणे शिखि सर्वेषां शिवमस्तु हन रक्ष ४ भूतेभ्यश्च नमः ।

विधि—इस मन्त्र को २१ दिन पीपल के वृक्ष पर कर बैठ १०० बार जप करके सिद्ध कर ले । इसके बाद कनेर का फूल इस मन्त्र से सात बार अभिमन्त्रित कर के पैर के नीचे दबाये फिर इस फूल को जिस भी स्त्री को दे वही स्त्री वश में हो जाये ।

वशीकरण नं० ६४

ॐ श्वेत वर्ष सित पवन वासिनी अग्रहित मम कार्यं
कुरु कुरु ठः ठः ।

विधि—श्वेत चिरमिटी के बीज पक्ष की चतुर्दशी अथवा अष्टमी को शुद्ध भूमि में बोकर उपरोक्त मन्त्र से इक्कीस बार अभिमन्त्रित करके उनमें पानी दे । इसी प्रकार प्रति दिन करता रहे और बीज आने पर उन्हें अपने पास रख ले । उसी बीज को इसो मन्त्र से सात बार सिद्ध करके जिस किसी औरत पर डाले वही वश में हो जायेगा ।

वशीकरण नं० ६५

ॐ नमो श्वेत गात्र सब लोक वशी वशीकरी
दृष्टान विनाशय स्वाहा ।

विधि—उपरोक्त मन्त्र को इकतालीस दिन में प्रति दिन एक सौ आठ बार जप कर सिद्ध कर ले और फिर

सफेद चिरमिट्टी की जड़ और सरसों के बीज मिलाकर चूर्ण बनाले, फिर इस मन्त्र को सात बार जप करके जिस औरत के सर पर यह चूर्ण डाले वह औरत उसके वश में हो जायेगी ।

पति वशीकरण

पति वशीकरण की वही विधियाँ हैं जो कि वशीकरण विधान में कही गई हैं । यहाँ सारी वशीकरण की विधियों को न दे कर केवल वशीकरण मन्त्र को लिखा जाता है क्योंकि पति वशीकरण की विधियाँ वशीकरण विधान में आ चुकी हैं ।

पति वशीकरण के लिए स्त्री वशीकरण की विधियों को भी काम में लाया जा सकता है । स्त्री वशीकरण के लिये पुरुषों को विधियाँ तिलक लगाने की कही गयी हैं उसी प्रकार से तिलक तैयार करके उसकी विन्दी लगाने से पत्नी भी अपने पति को वश में कर सकती है ।

पति वशीकरण की सबसे उत्तम, बड़ी और सफल विधि नारी का पतिव्रत धर्म है । अपने पतिव्रत धर्म को खोकर कोई भी औरत अपने पति को वश में नहीं कर सकती । यह विधियाँ और पति वशीकरण मन्त्र इसलिए है कि यदि किसी पतिव्रता औरत का पति दुराचारी या,

वेश्यागामी हो, उसकी प्रत्येक वान की अवहेलना करता हो, उसकी सेवा सुश्रुषा का उस पर कोई भी प्रभाव न पड़ता हो, तब उस औरत को चाहिये कि अपने पतिव्रत धर्म के पालन के साथ २ इन विधियों और मन्त्र से उसका पति अवश्य की उसके वश में हो जायेगा ।

पति वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो महायक्षिण्यै मम पति मे वश्यं कुरु कुच स्वाहा, लक्ष जपात् सिद्धि, शत् जपात् प्रयोग सिद्धिः ।

अन्य मन्त्रों के समान एक लाख बार जाप करने से यह मन्त्र भी सिद्ध हो जाता है और सिद्ध हो जाने के पश्चात् प्रयोग से पूर्व एक सौ आठ बार जप करना चाहिये ।

—::०::—

राज वशीकरण

ईश्वरोवाच

कुमकुमं चंदनं चैव रोचनं शशि मिश्रितम् ।

गवां क्षीरेण तिलकं स्त्रीणां वश्य करं परम् ॥

कुमकुम, चन्दन, कपूर, सिद्धि को गाय के दूध में पीसकर लगाने से राजा वश में हो जाते हैं ।

करे सौदर्शनं मूलं बध्वा राज प्रियो भवेत् ।

जो हाथ में सुदर्शन की जड़ बाँधकर राजा के

समीप जाता है वह राजा का कृपा पात्र हो जाता है ।
अर्थात् राजा उसके वश में हो जाता है ।

कृष्णोत्पलंग मधुकरस्य च यक्षयुग्मं ।
मूलं तथा तरुजं सित काक जंगा ॥
यस्या, शिरोगतमिदं विहितं विचूर्णं ।
दासो भवेन्नटिति सा तरुणी विचित्रम् ॥

जिस रविवार को पुष्य नक्षत्र हो, उस दिन सुदर्शन की जड़ लाकर उसमें तुलसी की पत्ती और कपूर मिला कर उमको पीसे, पुनः वस्त्र के ऊपर लेपन करे अर्थात् कपड़े में लपेट कर उसकी बत्ती बना ले तत्पश्चात् पवित्र होकर और सावधानी से विष्णु कान्ता के ब्रीज तेल में रात्रि के समय उस बत्ती को जला कर काजल तैयार कर ले । इस काजल को नेत्रों में लगाने से राजा वश में हो जाता है ।

सिंही मूलं हरेत्पुष्ये कटी बद्धया नृपः प्रियः ।

जो व्यक्ति पुष्य नक्षत्र में सिंही की जड़ को लेकर अपनी कमर में बांधता है वह राजा का प्रिय पात्र बन जाता है अर्थात् राजा उसके वश में हो जाता है ।

भौमवारं दशदिने कृत्वा नित्याक्रियां शुचि ।
वने गत्वा ह्यपामार्गं वृक्षं पश्येदुडः मुखाः ॥
तत्र विप्रं समाहूय पूजां कृत्वा यथा विधि ।
कर्यमेकं सुवर्णं च दद्यात्तस्मै द्विजन्मने ॥

तस्य हस्तेक गृह्णीयादपामार्गस्य बीजकम् ।
 कृत्वा तिस्तुषाणि ज्ञानी मौनी गच्छेन्निजे गृहम् ॥
 रमेश हृदये ध्यात्वा राजानं खादयेच्च तान् ।
 येन केनाप्युपायेन यावज्जीवं भवद्वशे ॥

जिस मङ्गलवार के दिन अमावस्या हो उस दिन नित्यक्रिया करने के पश्चात् बन में चला जावे वहाँ जाकर उत्तर की ओर मुख करके खड़ा होकर अपामार्ग के वृक्ष को देखे और फिर उसी स्थान पर (ब्राह्मण को बुलाये और विधिपूर्वक पूजा करे, उसको १६ मासे सोना दान में दे और उसी ब्राह्मण से अपामार्ग के बीज को निकलवाकर ले ले । तत्पश्चात् उस बीज को लेकर अपने घर चला आये और मार्ग में किसी से भी कुछ न बोले । पुनः उन बीजों को साफ कर ले और अपने हृदय में भगवान लक्ष्मी नारायण का ध्यान करता हुआ जैसे हो सके उस उपाय से उस बीज को राजा को खिला दे । इस प्रकार के प्रयोग से राजा जन्म भर वशीकरण करने वाले के वश में रहता है ।

कुमारी मूलमादाय विजया बीज संयुतम् ।

मस्तके तिलकं कुर्यात् राज वश्यं करं परम् ॥

घीववार की जड़ और भांग के बीज मिलाकर इसका तिलक बनाकर अपने मस्तक पर लगाने से राजा वश में हो जाता है ।

तालीसकुष्ठतगरैलिप्तां आस्त्री मुवर्तिकाम् ।
 सिद्धघर्तैलेविनिक्षिप्य कज्जलं नरमस्तके ॥
 पानयेदंजनात्तस्य सर्वदा भुवनत्रये ।
 दृष्टिगोचर मायातः सर्वो भवति दासवत् ॥

तालीस, कूट तथा तंगर मिलाकर लेप बनाले फिर लेप को रेशम के कपड़े पर लगाकर उसकी बत्ती बना ले फिर मनुष्य की खोपड़ी में सरसों का तेल डाल कर उसमें बत्ती को प्रज्वलित करे और उसका काजल बना ले और यह काजल लगाकर जिस पर दृष्टिपात करे वह वह में हो जावे । यह अन्नजन त्रय लोक को वश में करने वाला है ।

अपामार्गस्य बीजानि छाया दुग्धेन पेषयेत् ।
 अनेन तिलको भाले सर्वं लोकं वशं करः ॥

जिस रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो उस रविवार को अपामार्ग अर्थात् द्विचिटा का बीज ले आये, फिर बोज को भोजन अथवा जल में मिलाकर जैसे भी सम्भव हो राजा को खिलादे । इससे राजा वश में हो जाता है ।

राजा वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुक महोपति
 मे वश्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

एक लक्ष जपात् सिद्धिः । अष्टोत्तरशत् जपात्
 प्रयोग सिद्धिः ।

यह मन्त्र एक लाख बार जाप करने से सिद्ध होता है, प्रयोग से पूर्व इस मन्त्र का एक सौ आठ बार जाप करके प्रयोग करना चाहिये । इस मन्त्र में जहाँ अमुक शब्द आया है वहाँ नाम लेना चाहिये ।

यक्षिणी साधन विधान

यक्षिणी सिद्धि हो जाने से कार्य बड़ी सरलतापूर्वक हो जाता है, बुद्धि तीव्र होती है और मनुष्य कठिन से कठिन समस्याओं को क्षण मात्र में हल कर सकता है । दूसरे के मन का गुप्त रहस्य जान जाता है, जो कुछ मुँह से कहता है वह सत्य होता है । अनेक प्रकार के चमत्कार यक्षिणी द्वारा दिखाकर मनुष्यों को अपने वश में कर लेता है । संसार में कोई उसका दृशगन नहीं रहता सब उसकी मान और प्रतिष्ठा करते हैं ।

यक्षिणियों के नाम

यक्षिणी चौदह प्रकार की हैं, यथा—

- (१) महा यक्षिणी, (२) सुन्दरी, (३) मनोहारी,
 (४) कनकयक्षिणी, (५) कामेश्वरी, (६) रतिप्रिया,
 (७) पद्मिनी, (८) नटो, (९) रागिनी, (१०) विशाला,
 (११) चन्द्रिका, (१२) लक्ष्मी, (१३) शोभना, (१४)

मदना ।

यक्षिणी साधन क्रिया

ईश्वर उवाच

ऋतु सिद्धि महायोगिन् यक्षिणी मन्त्रं साधनम् ।

यस्याः साधन मात्रेण पूर्णा सर्वे मनोरथाः ॥

श्री शंकर भगवान् बोले कि हे महायोगी दत्तात्रेय जी अब यक्षिणी के मन्त्र का साधन सुनो जिसके करने से मनुष्य के सब मनोरथ और सब मनोकामनायें सिद्ध होती हैं ।

आषाढी पूर्णिमायां तु कृत्वा क्षौरादिकाः क्रियाः ।

सितेज्य योर मौढ्ये तु साधयेद्यक्षिणः नरः ॥

आषाढी पूर्णिमा को गुह और शुक्र के उदय में क्षौर आदि क्रिया करके मनुष्य को यक्षिणी का साधन करना चाहिये ।

प्रतिपद्दिनमारभ्ये श्रावणेन्दुबलान्विते ।

मासमात्रं प्रयोगोयं निर्विघ्नेन समाचरेत् ॥

इस प्रयोग को श्रावण कृष्ण पक्ष की परीवा से शुरू करके श्रावण शुक्ल की पूर्णिमा तक एक मास में निर्विघ्नता से समाप्त करना चाहिये ।

शिवआराधना

निर्जने बिल्व वृक्षस्य मूले कूर्शाच्छिवाचनम् ।

षोडशरूपचारैस्तु रुद्र पाठ समन्वितम् ॥

राम्बिकेत्यस्य मन्त्रस्य जपं पंचसहस्र कम् ।
दिवसे दिवसे कृत्वा कुबेरस्य तु पूजनम् ॥

निर्जन स्थान में जहाँ कोई न हो वहाँ बेल के वृक्ष की जड़ के नीचे शिवलिंग की स्थापना कर अर्थात् शिव जी की मूर्ति बनाकर सोलह प्रकार से उनका पूजन तथा रुद्र पाठ करें और साथ ही प्रतिदिन निम्नलिखित 'त्रयम्बकं यजामहे' मन्त्र का पाँच हजार जाप करें । मन्त्र यह है—

त्रयम्बके यजामहे सुगन्धिपुष्टि बन्धनम् ।

उर्वारुक मिवबन्धान्मृत्योर्मुक्षावयामृताम् ॥

और साथ ही कुबेर की पूजा भी करनी चाहिये ।

कुबेर आराधना मन्त्र

यमराज नमस्तुभ्यं शंकर प्रिय बान्धव ।

एकां में वशगां नित्यं यक्षिणी कुरु ते नमः ।

हे यक्षराज ! तुमको मेरा नमस्कार है शंकर के प्रिय बांधव प्रति दिन एक यक्षिणी को मेरे वश में कीजिये । मैं तुमको नमस्कार करता हूँ ।

इति मन्त्र कुबेरस्य जपेदष्टोत्तरं शतम् ।

ब्रह्मचर्येण मौनेन हविष्याशी भवेद् दिवा ॥

उपरोक्त मन्त्र कुबेर का है, इसको एक सौ आठ बार प्रति दिन एक मास तक अर्थात् जब तक एक

अनुष्ठान समाप्त न हो, जपना तथा ब्रह्मचर्य से रहना चाहिये तथा दिन के समय केवल खीर का भोजन करना चाहिये ।

यक्षिणी सिद्ध करने का समय

महर्षि दत्तात्रेय का मत है कि आषाढ़ सुदी पूर्णमासी शुक्रवार के दिन अथवा गुरुवार के दिन उदय में क्षौर कर्म (हजामत) बनवाकर और पवित्र होकर यक्षिणी साधन क्रिया करे । अथवा श्रावण कृष्ण परीवा के दिन चन्द्र बलि होने पर साधन क्रिया आरम्भ करें । यह यक्षिणी रात्रि के तीसरे पहर में सिद्ध की जाती है रात्रि को नियमित समय पर श्मशान भूमि में जाने और सुष्मानानाड़ी के चलते समय बट वृक्ष के ऊपर से एकाग्र चित्त करके नीचे लिखे मन्त्र का पाँच हजार बार जाप नित्य प्रति करे ।

साधन नियम

सदैव हल्की खीर का भोजन करे, सत्यवादी और ब्रह्मचर्य से रहे दिन में कदापि न सोवे तथा एक बार भोजन करे मौन व्रत धारण करे रात्रि को कुछ भी न खाये, भूमि पर सोवे । रक्त चन्दन विशेष रूप से लगावे और श्वेत रङ्ग के पदार्थ का सेवन करता रहे ।

(१) महायक्षिणी साधन

सिद्ध करने का समय

यह यक्षिणी रात्रि के तीसरे पहर में सिद्ध की जाती है। रात्रि को नियमित समय पर श्मशान भूमि में जाने और सुष्मणानाड़ी के चलते समय बट वृक्ष के ऊपर चहुँ ओर से एकाग्र चित्त करके नीचे लिखे यन्त्र का पाँच हजार बार जाप नित्य प्रति करे।

साधन मन्त्र—

ॐ ह्रीं क्लीं महा यक्षिणी प्रदात्रौ नमः ।

महायक्षिणी का आगमन—

यह यक्षिणी अनेक रूप धारण कर साधक को भय दिखाती है। आते समय भैसे का रूप धारण कर लेती है। जिस समय वह आती है प्रयम अधकार और आँधी लाती है, हवा बड़े वेग से चलती है। बादल की घटा इतनी जोर की चारों ओर उठती हुई दिखाई देती है कि हाथों हाथ कुछ दिखाई नहीं देता। फिर एक दम उजाला हो जाता है, फिर काले रंग के बाल बिखरे हुए एक स्त्री नाचती हुई आती है जिसके दाँत आगे को निकलते हुए सिर पर लाल रंग का कपड़ा लिपटा हुआ, मस्तक पर सिन्दूर का टीका लगा हुआ, जिसकी सूरत

देखते ही यह अनुमान हो जाता है कि हूबहू काल की यही निशानी है ।

ऐसे अनेकों उपद्रव एक सप्ताह तक बराबर होते हैं । यदि साधक भयभीत न हुआ तो फिर महायक्षिणी अपना दर्शन देती है ।

महायक्षिणी का स्वरूप—

पीत वर्ण वाली, तीस वर्ष की आयु वाली श्वेत रंग की साड़ी पहिने हुए, जिस पर मोतियों की झालर लगी होती है मस्तक पर कस्तूरी और केशर की विन्दी लगी होती है । एक हाथ में कमल का पुष्प दूसरे में तीर कमान धारण किये हुए साधक के सामने दिखाई देती है ।

प्रभाव—भयभीत हो जाने पर पागल बना देती हैं । इससे भय न करना चाहिये । सिद्ध किया हुआ घन सुकर्म में लगाया जाय, कुकर्म में लगाने से सिद्धि निष्फल हो जाती है ।

(२) सुन्दरी यक्षिणी

सिद्ध करने का समय—

यह यक्षिणी रात्रि के दूसरे पहर में सिद्ध की जाती

है। इसको श्मशान भूमि में अस्थियों पर बैठकर सिद्ध करे और मुर्दे की चिता पर एके चावल इसके बलिदान में दे। जब यह प्रसन्न होती है तब अपने बलिदान को स्वयं उठा कर ले जाती और उसको भक्षण कर लेती है।

सिद्ध करने का मन्त्र—

ॐ ह्रीं क्लीं यक्षिणी सुन्दरियै नमः।

क्रिया—इस मन्त्र को पाँच हजार बार जाप करे और प्रत्येक मन्त्र के साथ घृत और कपूर की आहुति दे।

आहुति हवन कुण्ड बनाना—

विशाखा नक्षत्र में रविवार के दिन कपिला गाय के गोबर में सिद्धर मिलाकर त्रिभुजाकार चौका दे। उसके मध्य में त्रिभुजाकार एक बालिशत नीचा गड्ढा खोदे उसकी सतह पर सिद्धर के पाँच बिन्दु इस प्रकार लगावे कि चारों ओर चार बिन्दु रहें और मध्य में एक आवे उसके ऊपर क्वारें मुर्दे को हड्डियों को चुन कर अग्नि दीपक करे उसमें कपूर की आहुति उपरोक्त मन्त्र के साथ दे। इसके पश्चात् यक्षिणी प्रकट होगी।

सुन्दरी का आगमन—

जिस समय यह आती है चारों ओर धुयें का अंधकार हो जाता है साधक को कुछ दिखाई नहीं देता कभी

ऐसा भी होता है कि अग्निकुण्ड में से आग की लपटें उठकर साधक को ओर आती हैं। उस समय साधक को भयभीत नहीं होना चाहिये।

सुन्दरी यक्षिणी का स्वरूप—

गोरे बदन वाली षोडश वर्षीया बालिका के रूप में, बसंती साड़ी पहिने हुये गले में सफेद पुष्पों की माला धारण किये हुये भुजाओं में लाल रंग की चुस्त चोली पहिने, नाक में झलकदार नथ पहिने हुये साधक को दर्शन देती है।

(३) मनोहारी यक्षिणी

सिद्ध करने का समय—

ठोक रात्रि के बारह बजे स्वाती नक्षत्र में शनिवार के दिन से सिद्धि आरम्भ की जाती है। साधन प्रारम्भ करने के दिन प्रातःकाल क्षौर कर्म करा कर छोटे छोटे बच्चों को मिष्ठान्न दही का भोजन करावे और यथा शक्ति उनको दान देकर वरदान मांगे, जिससे साधन निर्विघ्न समाप्त होवे फिर निर्जन बन में जाकर बट वृक्ष की जड़ में काल भैरव की मूर्ति स्थापित कर उसको स्नान करावे तत्पश्चात् धूप दीप से पूजन कर नित्य प्रति एक हजार बार नीचे लिखे मन्त्र का जाप करे।

साधन मन्त्र—

ॐ ह्रीं हूं ह्रूं फट स्वाहाः ओ३म् फट स्वाहा ।

ॐ ह्रीं फट स्वाहाः मनोहारी यक्षे नमः ॥

मुद्दे की आंठों की डोरी और उसमें मुद्दे की अस्थियों के दाने डाल कर माला बनावे फिर एकाग्र चित्त होकर जाप करें । प्रत्येक सहस्र जप होने पर एक आंटे का पुतला रखता जाय और जैसे ही साधन समाप्त करे सबको इकट्ठा कर अपने मकान के पीछे गाड़ दे ।

मनोहारी का आगमन—

जिन समय यह यक्षिणी आती है फूलों की सुगन्धि साय लाती है । इसके आगे-आगे अनेक प्रकार के पशु शेर, चीते इत्यादि अपना-अपना स्वरूप बदलते हुए दिखाई देते हैं । किसी किसी पशु पर दंत्य सवार होता है । पीछे चन्द्रमुखी शंखनी हाथों में पुष्पों की माला लिए हुए आती है ।

मनोहारी का स्वरूप—

श्वेत वर्ण की अनुमानतः षोडश वर्षीया कन्या के अनुसार चार शस्त्रिनियों के कंधे पर सिंहासन में बैठी हुई दर्शन देती है । गले में फूलों का हार पड़ा होता है हाथों में कमल के फूल धारण किये हुये होती है, माथे

पर सिंदूर का टीका लगा होता है। सिर के बाल खुले हुये पीछे लटके रहते हैं। यदि यह प्रसन्न हो जाय तो अपना परिचय तीन प्रकार से देती है अर्थात् (१) धन (२) जन (३) मानस। विमुख हो जाने से सकुटुम्ब नाश कर देती है इससे प्राप्त किया हुआ धन शुभ कर्मों में लगाया जाय। पुण्य भी अधिक किया जाय। यदि ऐसा वन व्यभिचार मदिरा पान में खर्च करे तो पुत्रादि सहित नष्ट कर डालती है।

प्रभाव—चित्त शान्त करती है। किसी बात की इच्छा प्रगट नहीं होने देती है। जिस कार्य को आवश्यकता हो तत्क्षण कर लाती है। साधक को किसी प्रकार भय क्लेश नहीं होने देती। इसकी साधना में भय नहीं करना चाहिये।

(४) कनक यक्षिणी

साधन का समय—

यह रात्रि के एक बजे एकान्त व निर्जन वन में सिद्ध की जाती है।

साधन मन्त्र

ॐ ह्रीं कनक क्लीं यक्षिणी नमः।
 ॐ ह्रीं कुरु ठः ठः स्वाहा ॐ क्लफटे स्वाहा ॥

क्रिया—इस मन्त्र को सत्रा लक्ष नित्य प्रति जाप करे इस प्रकार साधन करने से तीस दिन बाद दर्शन देगी ।

कनक यक्षिणी का आगमन—

यह यक्षिणी आते ही चारों ओर से मल मूत्र की वर्षा करती आती है । हाड़-मास की मालायें धारण किये रहते है । एकान्तवास इसको पसन्द है । यदि अधिक इसको तंग किया जाय या इसकी इच्छा के विरुद्ध कोई कार्य किया जाय तो साधक को मति भ्रष्ट कर देती है ।

कनक यक्षिणी का स्वरूप—

स्वरूप इसका साठ वर्ष की बुढ़िया के समान है । शिर के समस्त बाल सफेद होते हैं, हाथ पैरों में केवल हड्डियों का ढाँचा दिखाई देता है, मुँह में एक दाँत नहीं दीखता है । समस्त बदन व कपोलों पर झुर्रियाँ पड़ी दीखती हैं बदन की लम्बाई अधिक होती है ।

प्रभाव—जब तक यह साधक के पास रहती है तब तक किसी प्रकार का कष्ट नहीं होने देती और जब जाती है, उसको अनेक प्रकार के दुखों में फँसा जाती है ।

यह यक्षिणी ज्योतिषियों के बड़े काम में आती है इसके सिद्ध हो जाने से ज्योतिषी प्रत्येक प्रश्न का उत्तर

सही देता है। इस यक्षिणी की सिद्धि को 'कर्ण पिशाचनी' सिद्धि कहते हैं। क्योंकि यह जो कुछ कहती है साधक के कानों में कहती है। साधक का कान सदैव ऊपर की ओर रहा आता है।

यह यक्षिणी संसार में अपने साधक का प्रभाव बढ़ा देती है, परन्तु भ्रष्ट अधिक रहती है। यहाँ तक कि कोई-कोई कर्ण पिशाचनी कान में बिष्टा तक लगाये रहती है और अन्त में मरने पर साधक के शरीर में दुर्गन्धि पैदा कर देती है, जिससे उठाने वाले भी घृणा करते हैं।

(५) कामेश्वरी यक्षिणी

साधन का समय—

यह यक्षिणी रात्रि के प्रारम्भ काल में सिद्ध की जाती है और जब तक रात्रि समाप्त नहीं होती बराबर जप करना पड़ता है। इसकी साधना गूलर के वृक्ष की छाया के नीचे की जाती है और घृत का चौमुखा दीपक जलाकर साधक अपने सामने रख लेता है उसका 'लौ' बिना पलक मूँदे एकटक बराबर तमाम रात देखता रहता है। जिस समय तक साधक में एक रात बिना पलक लगाये दीपक ज्योति देखने की शक्ति उत्पन्न हो

जायेगी उसी दिन मे यक्षिणी अनेक रूपों में दर्शन देने लगेगी ।

कामेश्वरी सिद्धि मन्त्र

ॐ कामेश्वरी काम सिद्धेश्वरी स्वाहा ।

ॐ फट् स्वाहा ॐ ह्रीं कुरु स्वाहा ॥

उपरोक्त मन्त्र को एकाग्र चित्त से रुद्राक्ष की माला लेकर सवालक्ष नित्य प्रति जाप करे । तीस दिन मात्र स्वप्न में यक्षिणी अनेक रूपों में दर्शन देगी ।

कामेश्वरी आगमन -

जिस समय पर यह यक्षिणी आती है उस समय चारों तरफ सफेद फूलों का मार्ग बन जाता है, चारों तरफ से शीतल मन्द सुगन्ध वायु बहने लगती है । एक हाथ में इत्रदान लिये होती है । रास्ते में फूलों की वर्षा होती आती है

कामेश्वरी का स्वरूप—

चन्द्रमा के समान उज्वल वर्ण वाली हंस की सवारी धीरे-धीरे आती है । गले में मोतियों की माला धारण किये होती हैं उसके पीछे चार स्त्रियाँ हवा डोरता आती हैं और दो आगे चँबर डोरती दिखाई देती हैं । साथ की सब स्त्रियाँ पीताम्बर साड़ी पहिने होती हैं और स्वयं यक्षिणी गुलाबी रङ्ग की पोशाक में होती है ।

प्रभाव—शीतलता लिये हये साधक के चित्त को

प्रसन्न करने वाली, किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाने वाली सबकी सहायक होती है।

(६) रतिप्रिया यक्षिणी

साधन का समय—

इस यक्षिणी की सिद्धि चाँदनी रात में दस बजे की जाती है। इसका जाप उत्तरा भाद्र पद नक्षत्र में शुक्रवार के दिन से आरम्भ होता है। इसके अग्र भाग में सुगन्धित पदार्थ तथा अनेक प्रकार के खिले हुये पुष्प रक्खे जाते हैं। जिस समय यह प्रसन्न होती है फूलों की मालाओं को अपने आप गले में धारण कर लेती है।

इसके जाप की माला तुलसी के दानों की रेखम में पिरोई जाती है और निम्नलिखित मन्त्र का जाप किया जाता है—

साधन मन्त्र—

ॐ रति वल्लभे रति प्रिये कामन्तु वल्लभोः ।

*महा देवा महा माया काया कंचनम् ॥

यह यक्षिणी पैंतालीस दिन में अपना प्रभाव स्वप्न में दिखाती है। सिद्धि हो जाने पर मन इच्छित फल की दाता है। अधिकतर इसका प्रभाव स्त्रियों पर अधिक पड़ता है, कारण कि इसका सम्बन्ध कामदेव से अधिक है।

रतिप्रिया का आगमन—

कामेश्वरी यक्षिणी की भाँति इसका भी आगमन होता है। गुलाबी रंग के पुष्प इसे अधिक प्रिय हैं। फूलों की सड़क मखमल के समान पृथ्वी पर बिछ जाती है, उसी पर अचक पचक पंर रखती हुई जाती है। दास दासियाँ विभिन्न प्रकार के सुगन्धि लिये सामने खड़े रखते हैं।

रति प्रिया का स्वरूप—

सुन्दर गौरांग नवल नवेली चन्द्रवदनी जिसके हाथों की नाजुक कलाई हवा के झोंके से हिलती हुई दीखती है। अपने उपासक को सदैव मुस्कराती हुई दर्शन देती है।

प्रभाव—इसके सिद्ध हो जाने से मनुष्य कड़ुवे से कड़ुवे मिजाज वाली स्त्री को वशीभूत कर लेता है।

(७) पद्मिनी यक्षिणी

साधन समय—

इसका साधन आषाढ पूर्णिमा गुरुवार के दिन स्वाती नक्षत्र में रात्रि के चौथे पहर से निजंन स्थान में प्रारम्भ होता है।

साधन मन्त्र

अनंग वल्लभो देवि, कामारिप्रिय सेविका ।

नमस्ते पद्मिनी माया, महा माया नमस्कृतं ॥

पोपल के वृक्ष के नीचे बटुकनाथ की मूर्ति स्थापित कर काँस के आसन पर बैठ कर दक्षिण को ओर मुँह करके सर्वा लक्ष बार उपरोक्त मन्त्र का जाप करे ।

पद्मिनी का आगमन—

जिस समय यह आती है आने के पहले एक बार अपनी झलक दिखाकर अन्तर्धान हो जाती है । फिर अनक प्रकार के बाजे बजने शुरू हो जाते हैं, परन्तु बाजे की ताल पर एक वड़ी बारात सी आती हुई दिखाई देती है इन्हीं को मनुष्य 'साहवाँ' आसेब की आमद कहते हैं । सबको पद्मिनी अपना रूप दिखाती है ।

पद्मिनी का स्वरूप—

गोरे अग पर सिर के बाल ऐड़ी तक लम्बे लटके हुए दिखायी देते हैं । बाँह चम्पे की ढाल के समान छोटी और मुलायम होती है । पैर कदम कंदली के सुडौल और सीधे होते हैं । हाथों में कमल के फूल और गले में फूलों के हार पड़े होते हैं । इस प्रकार के वेशसे साधक को दर्शन देती है ।

प्रभाव—जब यह सिद्ध हो जाती है तब साधक के यहाँ धन की कमी नहीं रहती ।

(द) नटी यक्षिणी

साधन का समय—

इसके साधन करने का समय प्रातःकाल सूर्योदय से सूर्यास्त तक का है ।

साधन मन्त्र

ॐ नमो ह्रीं फट् स्वाहा ॐ क्रीं फट् स्वाहा ।

ॐ नटी यक्षिणी स्वाहा ॐ कुह कुह फट् फट् स्वाहा ॥

सुनसान जङ्गल में जहाँ चौरस भूमि हो और सूर्य की किरण पूरी पड़ती हों, वहाँ पर सूर्य की ओर मुँह करके खड़ा होवे और प्रति घंटा एक सहस्र मन्त्र जाप करता जावे । जब तक सूर्यस्त न होवे तब तक बराबर जाप करता रहे । सूर्य अस्त होने के पश्चात् घर आकर केवल दूध पीकर सो रहे और रात्रि को कुछ भोजन न करे ।

नटी यक्षिणी का आगमन—

जिस समय यह आता है भैसे के समान हुँकार भरती हुई आती है, और साधक को अनेक विकराल रूप दिखला कर डराती है । यदि इस पर साधक डटा रहा तो तैंतालीस दिन में सिद्धि होवेगी ।

नटी का स्वरूप

सुन्दरी गौरांग स्त्री शिर पर सुखं रङ्ग की चुंदरी

ओढ़े गले में मुण्डा की माला धारण किये, नव पल्लव बदन पर लपेटे हुये, हँसती खेलती साधक के सामने खड़ी हो जाती है।

प्रभाव—इसके सिद्ध हो जाने पर साधक प्रत्येक कार्य अपनी इच्छानुसार कर सकता है।

(६) अनुरागिनी यक्षिणी

साधन का समय--

शाम के पाँच बजे निर्जन स्थान में जहाँ की भूमि समतल हो वहाँ पर साधन करे। सत्ताइसवें दिन जाकर यक्षिणी अपना प्रभाव दिखावेगी।

साधन मन्त्र—

ॐ नमः अनुरागि यक्षिणी नमः हानि हानि
पचि पचि फट स्वाहा।

ऊँट के बालों की माला बनाकर तीस हजार जाप नित्य प्रति करे सत्ताइस दिन पीछे यक्षिणी स्वप्न में दिखाई देगी।

अनुरागिनी का आगमन—

इन्द्र की अप्सरा के आने से पहले लाल रंग का फर्श बिछा हुआ दिखाई देता है। बँलों के झुण्ड के झुण्ड आते हुए दीखते हैं जिन पर अनेक रूप धारण किये बिकट खोपड़ी वाले भूत दिखाई देते हैं। सबके

पीछे अनुरागनी यक्षिणी की सवारी आती है। यह ऊँट पर बैठी हुई पीछे की ओर मुंह किये हुये आती है।

अनुरागिनी यक्षिणा का स्वरूप

लाल रङ्ग के वस्त्र धारण किये मुख में पान खाये नाक में नाथ झलकाती हुई लम्बी भुजायें, हाथों की अंगुली एक-एक बालिस्त लम्बे, नाखून चार इञ्च चौड़े, पैर नाटें, बिना पंजे वाली, एक हाथ में कृपाण और दूसरे में मुण्ड माल लिये होती है।

प्रभाव—यह आते ही साधक की और सीधी चढ़ी हुई चली आती है। यदि साधक भयभीत हो गया तो पागल बना देती है, वरना इच्छानुसार काम करती है।

(१०) विशाला यक्षिणी

साधन समय—

रात्रि के तीसरे पहर में काले घतूरे के वृक्ष की छाया में गधे के चर्म का आसन बिछा कर उस पर बैठे और आहुति देने के हेतु अष्ट घातु का हवन कुण्ड आदित्य देव की मूर्ति स्थापित करके उस पर तेल मर्दन करे। निम्नलिखित मन्त्र का एक सौ आठ बार प्रति दिन जाप करता रहे।

मन्त्र—

ॐ अनंग वल्लभो देवि, विशालस्य नमितः ।
स्वम प्रिया महा वश्यम कुरु फट फट स्वाहा ॥

आषाढ़ बदी १५ आदित्य वार के दिन विशाखा नक्षत्र में रात्रि के तीन बजे श्मशान भूमि में जावे और उपरोक्त मन्त्र का रात्रि में जाप करे । प्रत्येक मन्त्र के अन्तिम अक्षर पर तेल और चावलों की आहुति दे । अन्तिम आहुति मदिरा और मांस की देकर सीधा घर चला आवे और पोछे को न देखे ।

विशाला यक्षिणी का आगमन—

इसके आने से पूर्व अनेकों हिंसक जानवर शोर करते हुये दिखाई देते हैं । फिर वह अंतर्ध्यान हो जाते हैं केवल दक्षिण दिशा में मनुष्य के बात चीत करने का शब्द सुनाई देता रहता है । साधक को उस समय अपना ध्यान नहीं हटाना चाहिये । यदि उसका ध्यान उस ओर से हट गया अथवा भयभीत हो गया तो घर आते ही वीमार हो जायगा । अथवा जिधर जावेगा उधर ही उसको वह शब्द सुनाई देगा । इसलिये साधक को चाहिये कि हृदय को कड़ा करके इसकी साधना करे ।

विशाला यक्षिणी का स्वरूप

इसकी लम्बाई एक पीपल के पूरे और ऊँचे पेड़ के बराबर होती है। पैरों को पृथ्वी पर बड़े जोरों से मारती हुई और अनेक प्रकार के उपद्रव उठाती हुई आती है। सिर के बाल आगे की ओर लटके हुये होते हैं। लम्बाई के कारण इसकी उमर की तादाद नहीं हो सकती। जितनी यह लम्बी होती है उसी के अनुसार हाथ पैर लम्बे व चौड़े होते हैं। सिर इसका बड़ा और दांत आगे को निकले हुये और बड़े होते हैं।

प्रभाव—साधक इसको यदि प्रसन्न रखे तो माला-माल कर देती है और अप्रसन्न होने पर उसका सकुटुम्ब विनाश कर देती है।

(११) चन्द्रिका यक्षिणी

साधन का समय—

इसका साधन समय रात्रि के ११ बजे चांदनी रात्रि में होता है। साधक श्मशान भूमि में जाकर मुर्दों की चिता वाली भूमि अर्ध चन्द्राकार मुर्दों की हड्डियों का बनावे और आर्द्रा नक्षत्र में चन्द्रवार के दिन से मन्त्र की आराधना करें और तीस दिन तक बराबर जाप करता रहे।

जब स्वाति नक्षत्र में सुष्मुणा नाड़ी चलने लगे उस समय जाप की समाप्ति करना चाहिये ।

साधन मन्त्र—

ॐ ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे स्वाहाः ।

ॐ चंडिका यक्षिणै नमः स्वाहाः ॥

इस मन्त्र को पचास हजार दफा जाप करे और इसके जाप के लिये मुर्दे की हड्डियों के दाने की माला उनमें पिरोवे और प्रत्येक दाने पर ऊँची, ऊँक्षी ऊँक्षी बीच में अंकित करे और प्रति एक जाप पर घी गुड़ की आहुतियाँ देता जाय । भोग के लिए चावल व काले उर्द का बलिदान तैयार रखे । हवन की अन्तिम आहुति दही दूध घृत और शहद की देवे और घर जाकर ब्राह्मणों को खोर का भोजन कराये, यथा शक्ति उनकी पूजा करे और दान दे ।

यक्षिणी का आगमन—

पैंतालीस वर्ष की उम्र की स्त्री काले वर्ण की हाथों पर मेंहदी रची हुई मुँह में पान चबाये दाँतों को आगे निकाले हुए एक हाथ में लड्डू दूसरे से अग्नि जलती हुई साधक के पास सीधी चली जाती है और रखे हुए बलिदान को ले जाती है ।

प्रभाव—अगर साधक उस समय भयभीत नहीं हुआ तो भूत और भविष्य का ज्ञान हो जाता है मान और तिष्ठा अधिक बढ़ती है ।

(१२) लक्ष्मी यक्षिणी

साधन का समय—

इसकी साधना प्रातःकाल चार बजे की जाती है । इसकी साधना के लिये पवित्र भकान की आवश्यकता पड़ती है । जिस जगह पर इसकी आराधना की जावे उस भकान में कोई अपवित्र मनुष्य न जाने पावे और कोई स्त्री उस भकान का स्पर्श करे । साधना करने में प्रथम भकान की सफाई निपाई पुताई कराकर उसको पुष्प चन्दनादि की धूनी देकर पुष्पों की मालाएँ लटका दे और सुगन्धित इत्र की खुशबू उसमें बसाकर जाप आरम्भ करे ।

साधन मन्त्र—

लक्ष्मी कान्तम् कमल नयन सिद्धर शोभावरम् ।
मालेन्द्र तिलकं ललाट मुकुटम् वाणो वरम् वरदायकम् ॥

उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में लक्ष्मी की मूर्ति अष्टधातु की बनाकर स्थापित करे और प्रातःकाल उसको गङ्गा-जल से स्नान कराकर उसके मस्तक पर केशर और कस्तूरी का तिलक लगावे और स्वयं कुशासन पर बैठकर

पीताम्बर वस्त्र धारण करे । फिर स्नान किये हुए जल का भक्ति भाव से पान करे और हृदय में मूर्ति का चित्र धारण कर तुलसी की माला हाथ में लेकर एक सौ आठ बार जाप करें और भांग के लड्डू बनवा कर सामने रखे इस प्रकार इकत्तीस दिन तक जाप करता रहे इकत्तीसवें दिन यक्षिणी दर्शन देगी ।

लक्ष्मी का आगमन—

जिस समय यह आती है उससे पूर्व राजा महाराजाओं की भक्ति आगमन की तैयारियाँ देवगण कर जाते हैं चारों ओर शान्ति स्थापित हो जाता है । भय का कुछ काम नहीं रहता । इसको अपनी आंखा से साधक नहीं देख सकता । तीसवें दिन स्वप्न में आकर साधक को दर्शन देती है ।

लक्ष्मी का स्वरूप—

सुन्दर गोरे वर्ण की अठारह उन्नीस वर्ष के अनुमान वाली स्त्री चन्द्रवदनी मृगलोचनी बाँह चम्पे की डाल अनुसार नाक में स्वर्ण की नथ पड़ी हुई साक्षात् देवी अवतार दोनों हाथों में कर्भल का फूल धारण किए हुये आती है ।

प्रभाव—जब यह प्रसन्न होती है तब साधक को

मालामाल कर देती है और जब इसकी पूजा ठीक नहीं होती तो दरिद्री बनाकर चली जाती है।

(१३) शोभना यक्षिणी

साधन का समय—

इसके सिद्ध करने का समय रात्रि के एक बजे का है। आषाढ़ व्रती १५ गुरुवार के दिन स्वाति नक्षत्र में इसको सिद्ध करना प्रारम्भ करके और वलिदान के हेतु तेल और गुड़ में आटा गूँथकर लड्डू बनावे। प्रतिदिन जाप समाप्त कर काले कुत्ते को एक सौ आठ लड्डू नित्य प्रति खिला दिया करे इस प्रकार तीस दिन तक रोज तेल और गुड़ के १०८ लड्डू बनावे। अन्तिम दिन तेल और बेसन के १०८ लड्डू गुड़ में बनाकर कुत्तों को खिला दे।

साधन मन्त्र—

ॐ शोभनायः शोभनायः शोभनाय नमः।

निराकारो निराभासो वस्यं कुरु कुरु कुरु स्वाहा ॥

कैत वृक्ष की छाया में बैठकर तीस दिन तक जाप करता रहे। जाप करने की माला चिकनी मिट्टी के दानों की बनावे और उसमें क्वारी कन्या के हाथ का काता हुआ सूत डाले यह सूत विशाखा नक्षत्र से काता

जाता है। इसकी कपास प्राकृतिक रूप से पैदा होती है इसको कोई जोतता बोता नहीं स्वयं बरसात में अपने आप इसके पेड़ उग आते हैं और पंचक त्याग कर इसकी कपास लाई जाती है, फिर उसको क्वारी कन्या के हाथ से कतवाते हैं। इसके जाप की माला सदा लक्ष एकाग्र चित्त से जपी जाती है। समाप्ति होने पर कन्या लांगुराओं को भोजन हलुआ और चनों का कराया जाता है फिर उनको लाल रङ्ग के वस्त्र पहिन कर यथाशक्ति दान दिया जाता है।

शोभना यक्षिणी का आगमन—

जब यह आती है अनेक प्रकार के रूप बदलती हुई आती है। किसी-किसी समय तो भयंकर शब्द सुनाने लगती है। कभी २ इसके साथ में अनेकों स्त्रियाँ आती हुई दिखाई देती हैं कभी स्वयं अनेक प्रकार से नाचती हुई दोखती है। कभी रोती हुई आती है। इसका प्रचंड कोप बड़ा भयानक होता है। साधक को चाहिये कि सावधानी के साथ बैठा रहे और चित्त को विचलित न करे वरना पागल हो जावेगा।

शोभना यक्षिणी का स्वरूप—

कुरुपिणी एक आँख ऊपर को चढ़ी हुई माथा टेढ़ा

मस्तक पर चेचक और फोड़ा फुन्सियों के दाग महा मलीन देखते ही घृणा उत्पन्न होती है। मदिरा मांस में अधिक रुचि रखती है। गले में अनेक प्रकार की खोपड़ी लाल रंग से रंगी हुई पड़ी हुई होती है।

प्रभाव—यह आते ही साधक को पटक देती है। अनेक प्रकार के दुर्व्यवहार करती है। यदि इसको साधक सह गया तो मालामाल कर देती है।

(१४) मदना यक्षिणी

साधन का समय—

इसका साधन रात्रि के पिछले पहर किन्तु दिन के आरम्भ काल में किया जाता है। निर्जन बन में जहां किसी मनुष्य की आवाज सुनाई न दे वहां पर छोंकर की कोपल लावे और उसमें बरगद की टहनी लगाकर हवन सामिग्री तैयार करे, और पृथ्वी पर षट् चक्र काट कर कुण्ड बनावे प्रत्येक चक्र पर (ॐ ह्रीं) बीज अंकित करे बीच में मदना यक्षिणी का नाम लिख दे फिर उसके ऊपर बरगद और छोंकर की कोपल वाली सामिग्री रखकर अग्नि में प्रवेश करे और निम्नलिखित मन्त्र का जाप करे।

साधन मन्त्र—

ॐ श्रीं मदनाश्वरी यक्षिणी स्वाहा !

ॐ काल भैरवाय नमः षट् षट् स्वाहा ॥

इस प्रकार मंत्र का पाँच हजार जाप वृक्ष के नीचे बँठकर करे। जिस स्थान पर जाप करना प्रारम्भ करे उसी जगह पर हवन कुण्ड स्थापित करे। जाप की माला के दाने मोर पंख के बनावे प्रत्येक दाने के बीच में एक एक गाँठ काली ऊन की लगावे। जब माला तैयार कर चुके तब नियमित समय पर स्यार की खाल के आसन पर बैठकर दक्षिण की ओर मुँह करके जाप करना आरम्भ करे। इक्कीस दिन तक बराबर जाप करता रहे। इक्कीस-सबे दिन यक्षिणी स्वप्न में आकर दिखाई देगी।

मदना यक्षिणी का आगमन—

यह यक्षिणी सत्ताईसवें दिन से सिद्धि होने की सूचना देती है। साधक से स्वप्न में अनेक प्रकार की मनोहर बातें करती है। अपने हाव भाव कटाक्ष से साधक को मोहित करती है। इस प्रकार से उसकी सेवा करती है तथा सर्वदा उसकी सेवा करती रहती है। स्वप्नावस्था में जो कुछ साधक कहता है उस काम को तत्काल कर लाती है। जब जाती है तब हर प्रकार से साधक को प्रसन्न कर तसल्ली दे जाती है।

मदना यक्षिणी का स्वरूप—

रूपवती सुन्दर स्त्री मीठे वचन कहने वाली मन्द र

मुस्काने वाली कभी हँसती कभी नाचती गाती है। पोशाक सदैव काशनी रंग की पहिरे रहती है। जवानी के मद में चूर रहता है। नूर उसके चेहरे से टपकता रहता है काम कला में अति निपुण होती है। सदा साधक की इच्छा-नुसार काम करती है। कभी उससे अप्रसन्न नहीं होती।

प्रभाव—इसके सिद्ध हो जाने से साधक का मन एक जगह पर एकाग्र हो जाता है। फिर उसको किसी बात की आकांक्षा नहीं रहती।

* इति यक्षिणी साधन विधानम् *

अथ मारण प्रयोग

ईश्वरोवाच

अथाग्रे संप्रवक्ष्यामि प्रयोगं मारणाभिधम् ।

सद्यः सिद्धिः करदां शृणुष्व्वाहितो मने ॥

महादेव जो बोले कि हे मुने ! अब मारण प्रयोग की विधि कहना है, जिससे मनुष्य को फौरन ही सिद्धि प्राप्त होती है । हे मुने ! इसे ध्यान से सुनो ।

मारणं न बृथा कार्यं यस्य कस्य कदाचन ।

प्राणान्त संकटे जाते कर्तव्यं भूतिमिच्छता ॥

इस मारण का प्रयोग कभी भी जिस किसी पर व्यर्थ कार्यों में नहीं करना चाहिए । इसका प्रयोग केवल उस समय ही करना चाहिये जबकि प्राणों का संकट आ जाये । क्योंकि इसका प्रयोग केवल प्राणों की रक्षा के लिये ही उचित है !

मूर्खेण तु कृते तन्त्रे स्वस्मिन्नेव सयापयेत् ।

तस्माद्रक्षेत सदात्मानं न क्वचिच्चरेत् ॥

मूर्ख का किया हुआ प्रयोग उसी को नष्ट कर देता है । अतः तब जो सर्वदा अपनी आत्मा की रक्षा करना चाहे उसको कभी मारण प्रयोग नहीं करना चाहिये ।

ब्रह्मात्मानं तु विदितदृष्टवा विज्ञान चक्षुष ।

सर्वत्र मारणं कार्यमन्यथा नोषभाग्यवेत् ॥

जो ब्रह्म को जानने वाला अपने ज्ञान चक्षु से सर्वत्र ब्रह्म-मय देखता रहता है यदि वह किसी आवश्यक कार्यवश मारण प्रयोग करे तो अनुचित नहीं है। इसके विपरीत जो मारण प्रयोग करता है वह उस पाप का भागी होता है।

तस्माद्रक्षयः सचाऽऽमादि मारणं न क्वचिच्चरेत् ।

कर्त्तव्य मारणं चेत् स्यात् विधि कृत्यं समाचरेत् ॥

अतः अपनी आत्म रक्षा करने वाले को कभी भी मारण का प्रयोग करना ही पड़ जाये तो इस विधि के अनुसार करना चाहिये।

चिता भस्मसगायुक्तं धतूरचूर्णं संयुतम् ।

यस्यांगे निक्षिपेद्भौमे सद्योधाति यमालये ॥

चिता की भस्म तथा धतूरे के चूर्ण को परस्पर मिलाकर जिसके शरीर पर मंगलवार के दिन फेंके वह फौरन ही यमलोक को चला जायेगा तथा उसकी अवश्य ही उसी दिन मृत्यु हो जायेगी।

मल्लातकीतभव तैलं कृष्ण सर्पस्य दंतकम् ।

विष धतूरे संयुक्तं यस्यांगे निक्षिपेमृति ॥

लावे का तेल, काले साप का दाँत, विष और धतूरा चारों वस्तुओं को मिला कर जिस व्यक्ति के शरीर के ऊपर फेंका जाय उसकी मृत्यु अवश्य हो जाती है।

नरास्थिचूर्णेस्ताम्बूलं मुक्तं मृत्युकरं परम् ।

सर्वास्थिचूर्णं यस्यांगे निक्षिपेत् मृत्युआप्नुयात् ॥

मनुष्य की अस्थियों का चूर्ण पान में रखकर खाने से अवश्य
मृत्यु हो जाती है ।

चिताकाष्ठ गृहीत्वा तु भौमे च मरणीयुते ।

निखनेचूच गृहद्वारे मासान्मृत्युर्भविष्यति ॥

जिस दिन मङ्गलवार हो और भरणी नक्षत्र हो उसी दिन
चिता से लकड़ी ले आकर जिसके गृहद्वार पर गाड़ दे उसकी
मृत्यु एक मास के भीतर हो जाती है ।

कृष्णमर्षवसा ग्राह्या तद्वर्ति ज्वालयेन्निशि ।

धत्तूरबीजतलेन कज्जले नृकपाल क ॥

चिताभस्म समायुक्तं लवण पञ्चसंयुतम् ।

यस्यागे निक्षिपेच्चूर्णं सद्यो याति यमालये ॥

काले सप-की चर्बी और धतूरे के बीज का तेल एक में मिला
दें । फिर रात्रि में उस तेल को मनुष्य की खोखड़ी में जलाकर
उससे काजल प्राप्त करें जब प्राप्त हो जाय तब उसमें चिता की
राख और पांचों नमक मिलाकर ।जस पुरुष के शरीर पर फेंके
वह पुरुष तत्क्षण सीधा यमलोक को चला जावे तथा उस पुरुष
को फौरन मृत्यु हो जाये ।

गृहीत्वां वार्षिक मासमूलूक चूर्णसंयुतम् ।

यस्यागे निक्षिपेच्चूर्णं तस्य मृत्युर्भविष्यति ॥

बिच्छू तथा उत्लू पक्षा के मांस का चूर्ण लेकर उनको
पूरस्पर मिलाकर जिम मनुष्य के ऊपर फेंका जाय उसकी मौत
हो जाय ।

लिखेत पञ्चदशी यन्त्र चिताभस्म विलोयत ।

स्मशानाग्नी क्षिपेद्यन्त्र भीमे च म्रियते रिपु ॥

चिता की राख तथा विलोम पढ़ति से यदि मङ्गलवार के दिन पञ्चदशी यन्त्र लिखकर श्मशान की अग्नि में डाला जाय तो शत्रु की अवश्य ही मृत्यु हो जाती है ।

उल्लू विष्ठां गृहीत्वा तु विषचूर्णसमन्विताम् ।

यस्यांगे निक्षिपेच्चूर्णं सद्योयाति यमालयम् ॥

उल्लू पक्षी की बीट का चूर्ण तथा उसमें विष का चूर्ण मिला कर जिम व्यक्ति के शरीर पर डाला जाये वह व्यक्ति शीघ्र ही भ्रमलोक पहुँच जाता है अर्थात् उसकी शीघ्र ही मौत हो जाती है ।

खर विष्ठां तु संगृह्य त्रिपचू समन्विताम् ।

यस्यांगे निक्षिपेच्चूर्णं सद्योयाति यमालयम् ॥

गधे की विष्ठा लेकर उत्तम विष में मिला कर उसे जिस व्यक्ति के अग पर डाला जाये वह शीघ्र ही यमपुरी को जाता है तथा जल्दी ही मौत हो जाती है ।

त्रिपुपादतलात्पांशु गृहीत्वा पुत्तलीं कुरु ।

चिता भस्म समायुक्तं मध्यार्चचिरान्वितम् ॥

शत्रु के पाँवों के नीचे की मिट्टी को लेकर उसमें चिता का राख तथा मध्यमा अंगुली का रक्त मिलावे और फिर उसका पुतलो बनावे ।

कृष्ण वस्त्रेण संवेष्ट्य कृष्णे सूत्रेणबन्धयेत् ।

कुशासने सुप्तमूर्तिदीपं प्रज्ज्वालयेत् ॥

फिर उस पुतली को काले रङ्ग के कपड़ों में लपेटकर ऊपर से काला डोरा बाँध देवे। इसके बाद मूर्ति को कुशा के आसन पर मुलाकर दीपक जलावे।

अयुतं प्रजपेनमन्त्रं पश्चादष्टोत्तरं शतम् ।

मन्त्र राज प्रभावेण मासोश्चाष्टोत्तरं शतम् ॥

फिर निम्नलिखित मन्त्र का सहस्र जप करे इसके बाद १०८ उर्दी लेकर ०८ बार पुनः मन्त्र का जाप करे।

पुतली मुखमध्ये तु निपेक्षित सर्वमापकान् ।

अर्धरात्रिकृते योग शक्र तुल्योऽपि मारयेत् ॥

प्रातःकालेपुतलिकांश्मशाने च त्रिनिक्षिपेत् ।

मासात्मकप्रयोगेण रिपोऽमृत्युर्भविष्यति ॥

फिर उस अभिमन्त्रित सब उर्दी को उस मूर्ति के मुख में डाल देवे। इस प्रयोग को आधीरात के समय करने से इन्द्र के समान शत्रु भी मारा जा सकता है। रात्रि में इस प्रयोग को करके प्रातःकाल उसी पुतली को श्मशान में गाड़ देना चाहिये। इस प्रयोग को निरन्तर एक मास तक करना चाहिए। ऐसा करने से अवश्य ही शत्रु की मृत्यु होती है।

मन्त्र

ॐ कालसंहाराय अमुकं हन हन क्रीं क्रीं फट् भस्मी
नमः कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि—इस मन्त्र का जाप करते समय जहाँ 'अमुक' शब्द है वहाँ शत्रु का नाम लेना चाहिये ।

निम्बकाष्ट सामादाय चतुरङ्गलं मानतः ।
 शत्रु केशान् समालिप्य ततो नाम समालिखेत् ॥
 चितांगारे च तन्नाम्ना धूपं दद्यात् समाहितः ।
 त्रिरात्रं सप्त रात्रं वा यस्म नाम उदाहृत ॥
 कृष्णाष्टम्यां चतुर्दश्यां चाष्टोत्तरं शतं जपेत् ।
 प्रति गृह्णाति तच्छीघ्रं मन्त्रेणानेन मन्त्रवित् ॥

नीम की लकड़ी चार अंगुल लेकर उस पर शत्रु के बाल लपेट कर उसी से शत्रु का नाम लिखे फिर सावधानी के साथ उस नाम को चिता के अंगारे की धूप दे । इसी प्रकार लौ अथवा सात रात्रियों तक जिसके नाम पर यह प्रयोग किया जाय उसको निम्नलिखित मन्त्र के प्रभाव से प्रेत शीघ्र पकड़ लेता है । साधक को यह प्रयोग कृष्ण पक्ष की अष्टमी से आरंभ करके चतुर्दशी तक समाप्त करना चाहिये और साथ ही प्रतिदिन निम्नलिखित मन्त्र का एक सौ आठ बार जप भी करते रहना चाहिये ।

मन्त्र

ॐ नमो भगवते भूताधिपते विरूपाक्षाय घोर
 दंष्ट्रिणे विकरालिने ग्रहक्षभूतेनानेम शंकर अमुक हन हन
 दह दह पच पच गृहम गृहम हुं फट् ठः ठः ॥

विधि—उपरोक्त प्रयोग में इसी मन्त्र का एक सौ आठ बार

जाप करना चाहिये । प्रयोग करते समय उसमें जहाँ 'अमुक' शब्द है वहाँ जिसके ऊपर प्रयोग करे उसका नाम लेना चाहिये ।

मन्त्र

ॐ ह्रीं फट् स्वाहा ॥ आयुत जपात् सिद्धि ।
सर्पास्थ्यंगुल मात्रं तु चाश्लेषायां रिपौगृहे ॥
निखनेच्च तथा जप्तं मारयेत् रिपुसन्ततिम् ॥

तथा इसी प्रकार आश्लेषा नक्षत्र में एक अंगुल की साँप की अस्थि शत्रु के घर में खोदकर गाड़ दे और साथ ही नीचे लिखे मन्त्र का जाप करता रहे तो शत्रु की संतति का नाश हो जाता है ।

मन्त्र

अश्वास्थि कोल आश्वन्यां निखनेच्चतुरंगुलम् ।
शत्रोगृहे निहन्त्या कुट्टुम्बं वैरिणां कुलम् ॥

अश्विनी नक्षत्र में घोड़े की अस्थि चार अंगुल की कोल निम्नलिखित मन्त्र में अभिमन्त्रित करके शत्रु के घर में गाड़ देने से शत्रु के वंश का नाश हो जाता है ।

मन्त्र

ह्रूं ह्रूं फट् स्वाहा

सप्तदशाभिमन्त्रित कृत्वा निखनेत् ।

विधि—उपरोक्त कोल को इस मन्त्र से १७ बार अभिमन्त्रित करे और शत्रु के घर में गाड़ दे ।

आर्द्रायां निम्बबन्दाकं शत्रोः शयनमन्दिरे ।

निखनेन्मृत वच्छत्रुरुद्धृते च पुनः सुखी ॥

शत्रु जिस घर में सोता हो उसमें आर्द्रा नक्षत्र में नीम का बन्दाक खोदकर गाड़ देने से शत्रु मरणोन्मुख हो जाता है और फिर जब उक्त बन्दाक को निकाल दे तो वह पुनः पहले के समान सुखी हो जाता है ।

तथा शिरीषबन्दाकं पूर्वोक्तेनोडुनाहरेत् ।

शत्रोर्गोहे स्थापयित्वा रिपुर्नाशो भविष्यति ॥

इसी प्रकार उपरोक्त विधि के अनुसार शिरीष का बन्दाक शत्रु के घर में गाड़ देने से उसका नाश हो जाता है ।

मन्त्र

हुँ हुँ फट् स्वाहा ॥

विधि—उपरोक्त दोनों प्रयोगों में कील को इस मन्त्र से २१ बार अभिमन्त्रित करके शत्रु के घर में गाड़ना चाहिये ।

मन्त्र

ॐ डं डां डिं डीं डुं डूं डें डैं डों डौं डं डः अमुकं
गृहण गृहण हुं हुं ठः ठः ।

विधि—इस मन्त्र से मनुष्य की अस्थि की कील एक सहस्र बार अभिमन्त्रित करके जिसके नाम से चिन्ता में गाड़ देवे वह

ज्वर से पीड़ित होकर मर जाता है। इसी प्रकार पूर्व कथित मन्त्र से मनुष्य की अस्थि की कील को एक सहस्र बार अभिमन्त्रित करके, जिसके घर में अथवा जिसके नाम से आधी रात के समय श्मशान में गाड़ दे उसका नाश हो जाता है।

रिपुविष्ठां वृश्चिकञ्च खनित्वा तु विनिःक्षिपेत् ।
आच्छद्यावरणे नाथ तत्पृष्ठे मृत्तिकां क्षिपेत् ॥
त्रियते मल रोधेन उद्धृते च पुनः सुखी ॥

शत्रु को विष्ठा और बिच्छू को एक पात्र में रख कर दन्द कर दे फिर उस पात्र के पीछे मिट्टी लगा दे और जमीन खाद कर गाड़ दे तो मल के रुक जाने से शत्रु मरने लग जाता है और जब उसको जमीन से निकाल ले तब उसका कण्ट छूट जाता है और वह पहले के समान सुखी हो जाता है।

शत्रु पाद तलात्पांसुं गृह्ण्यादभौम वासरे ।
गोमूत्रेण तु सिञ्चित्वा प्रतिमां कारयेत् सुधी ॥
निर्जने च नदी तीरे स्थापयेत् स्थण्डिलोपरि ।
लोहशूलं च निखनतद्वक्षसि सुदारुणम् ॥
तद्वामे भैरवं कृष्णं विलिभिः प्रत्यहं यजेत् ॥

मंगलवार के दिन शत्रु के पैर के नोचे की मिट्टी लाकर गोमूत्र में उसको भिगो दें और शत्रु के नाम से उस मिट्टी को एक पुतली बनावे। तत्पश्चात् एकान्त स्थान में या किसी नदी के तट पर बेदी बनाकर उस मूर्ति को उस पर स्थापित करके

उसकी छाती में खूब तेज लोहे का त्रिशूल गाड़ दे । इसके पश्चात् उस मूर्ति के बायें भाग में भैरवी की मूर्ति स्थापित करके प्रतिदिन उनकी पूजा और बलिदान करे ।

एकादशघटुस्तत्र परमात्रेण भोजयेत् ।

अखण्डदीपं तस्याग्रे कटुतेलेन ज्वालयेत् ॥

व्याघ्रचर्मसिनं कृत्वा निवसेत्तस्य दक्षिणे ।

दक्षिणाभिमुखो रात्रौ जपेन्मन्त्रमलन्द्रितः ॥

जिस स्थान में इस प्रयोग को करे उस स्थान में ग्यारह ब्रह्मचारियों को उत्तम उत्तम भोजन करावे और उस भैरव मूर्ति के सम्मुख रात दिन कड़ुवे तेल का अखण्ड दीपक जलाया करे और उस मूर्ति के दाहिनी ओर व्याघ्र के चमड़े का आसन बनाकर दक्षिण की ओर मुख करके उस पर बंठे और जितेन्द्रिय होकर निम्नलिखित मन्त्र का जाप करे ।

मन्त्र-

ॐ नमो भगवते महाकाल भैरवाय कालाग्नि तेजसे
अमुकं शत्रुं मारय मारय पोशय पोथय हुं फट् स्वाहा ॥

अयुतः प्रजपेदेनं मन्त्रं निशि समाहितैः ।

एको न त्रिशद्विंशसैर्मारणं जायते ध्रुवम् ॥

विधि—रात्रि के समय सावधानी से इस मन्त्र का दस सहस्र जप करने से उनतीस दिनों में यह प्रयोग अवश्य सफल होता है । इस मन्त्र में जहाँ अमुक शब्द है वहाँ जिसके ऊपर प्रयोग करना हो जप करते समय उसका नाम लेना चाहिये ।

कृकलास वसातैलं यस्यांगे बिन्दुमात्रतः ।

निक्षिपेन्म्रयते शत्रुर्यदि शक्रोऽपि रक्षति ॥

गिरगिट की चरबी के तेल की एक बूंद भी यदि किसी के शरीर पर डाल दी जाय तो वह व्यक्ति कदापि जीवित नहीं रह सकता चाहे उसकी रक्षा करने वाला इन्द्र भी क्यों न आ जाय ।

लवणं विजया युक्तं गृहदीपे तु निक्षिपेत् ।

यस्य नाम्ना क्षयं याति मासं मध्ये न संशयः ॥

नमक और भांग मिलाकर घर के दीपक में जिसके नाम से डाली जाय वह व्यक्ति एक मास के भीतर ही मर जाता है इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं है ।

मन्त्र

ॐ नमः काल रूपाय अमुकं भस्मी कुरु कुरु स्वाहा
एकलक्ष जपात् सिद्धो भवति । अष्टोत्तर शत जपात्
कार्यं सिद्धिर्भवति ।

विधि—इस मन्त्र का एक लाख जाप करने से सिद्धि होती है और कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करने से पूर्व इसका एक सौ आठ बार जाप करना चाहिये ।

* अथ उच्चाटन प्रयोग *

ईश्वर उवाच

अथग्रे सम्प्रवक्ष्यामि उच्चाटनविधिं परम् ।

यस्य साधन मात्रेण भवेदुच्चाटनं नृणाम् ॥

महादेव जी बोले कि हे दत्तात्रेय जी ! अब मैं उच्चाटन की विधि वर्णन करता हूँ जिसके साधन मात्र से ही मनुष्य का उच्चाटन हो जाता है ।

येनाहृतं गृहं क्षेत्रं कलत्रं घनपुत्रकम् ।

उच्चाटनं वधं कुर्याद दुष्ट दण्डो विधीयते ॥

जिनके घर, खेत, स्त्री, घन तथा पुत्र आदि हर लिये गये हों उनके ऊपर उच्चाटन मारण आदि करके दुष्ट को नीति के अनुसार दण्ड देना चाहिये ।

ब्रह्मदण्डी चिता भस्म शिवलिङ्गे प्रलेपयेत् ।

सिद्धार्थेन च संयुक्तम् शनिवारे क्षिपेद् गृहे ॥

उच्चाटनं भवेत्तस्य स्त्री पुत्रैर्बान्धवैस्सह ।

उच्चाटनं परं चैतन्नान्यथा मम भाषितम् ॥

ब्रह्मदण्डो, चिताभस्म तथा सरसों को परस्पर मिलाकर शिवलिङ्ग पर लेप करे और फिर उस भस्म को अभिमन्त्रित करके शनिवार के दिन जिसके घर में उपरोक्त मिश्रण को डाल दे तो घर में स्त्री पुत्र तथा बान्धुओं में उच्चाटन हो जाय यह परमोत्तम उच्चाटन है । मेरा कथन मिथ्या नहीं है ।

सिद्धार्थानि शिवनिर्माल्यं यद्गृहे निखनेत्तरः ।

उच्चाटनं भवेत्तस्य उद्धृते तु पुनः सुखी ॥

सरसों और शिवनिर्माल्य को मिला करके जिसके घर में खोद कर गाड़ देवे तो उसके घर में उच्चाटन हो जाता है और जब उसको निकाल लेवे तो उसके घर मनुष्य पुनः सुखी हो जाते हैं ।

धूक पक्ष भौम वारे यद् गृहे निखनेन्नरः ।
उच्चाटनं भवेत्तस्य बिना मन्त्रेण सिद्धयति ॥

उल्लू पक्षी के पंख को मंगलवार के दिन जिसके घर में खोदकर गाड़ दे उसका उच्चाटन हो जाता है। यह प्रयोग बिना मन्त्र के सिद्ध होता है।

काक पक्षान रविवारं यद्गृहे निखनेन्नरः ।

उच्चाटनं भवेत्तस्यनान्यथा मम भाषितम् ॥

जिससे घर में रविवार के दिन कौबों का पंख गाड़ दे उसके घर में उच्चाटन हो जाता है। मेरे कथन में किसी प्रकार की असत्यता नहीं।

गृहीत्वौदुम्बरं कोलं मन्त्रेण चतुरांगुलम् ।

यस्यवै निखनेद् द्वारे अवश्योच्चाटनं भवेत् ॥

औदुम्बर लकड़ी के चार अंगुल की कोल बनाकर फिर उसको मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसके ऊपर उच्चाटन करना हो उसके द्वार पर खोद कर उसको गाड़ दे इससे अवश्य उच्चाटन हो जायेगा।

अन्य मन्त्र

ॐ भूते सुलोचने त्वु स्वाहा ॥

विधि—इस मन्त्र को ११ लाख जप ११ मास में समाप्त करना चाहिए और १ लाख मन्त्र से लकल दल का हवन करना चाहिए जब चन्द्र ग्रहण हो उस समय मालती के फूलों से हवन करे और बाहर जप करे और सूर्य ग्रहण हो तो भी इसी प्रकार

प्रयोग करने से यक्षिणी प्रसन्न होकर सहस्र व्यक्तियों को भोजन देती है ।

वाक्ष यक्षिणी मन्त्र

ॐ रीं चः चः स्वाहा ॥

विधि—इस मन्त्र को कुछ समय तक पवित्र व शुद्ध होकर एक सहस्र प्रति दिन जपने से यक्षिणी सिद्ध हो जाती है । जो बात वह कान में कह देगी और फिर आप उसे प्रकट कर दें, जो कहेंगे सच होगा !

वाक् सिद्धि मन्त्र

ॐ नमो लिङ्गोद्भवरुद्र देह में वाचनं सिद्धि हं विना परवत गतेन्द्रां द्री द्रु दा ।

विधि—बहते हुये जल में खड़ा होकर और अपना बाया हाथ सिर पर रख कर जप करने से वाक् सिद्धि होती है अर्थात् जो मुख से निकले वह सत्य हो जाय । यह एक जप तीन मास में समाप्त करना चाहिये ।

त्यागी यक्षिणी मन्त्र

ॐ अहो त्यागी ममत्यागार्थं देहि में वित्तं व्रीह वित्त स्वाहा ॥

विधि—प्रातःकाल ही स्नान करके गुगुलु का धूप दिखाकर इस मन्त्र का चार लाख जप एक साल में समाप्त करे । त्यागी प्रसन्न होती है और बहुत सी वस्तुएँ लाकर देती है ।

वट यक्षिणी मन्त्र

ॐ ह्रीं श्री वट वासिनी यक्ष कुल प्रसूते वट यक्षिणी
एहि एहि स्वाहा ।

विधि—यह प्रयोग सोमवार से आरम्भ करे और रात के समय त्रिमार्ग पर बँठकर उपरोक्त मन्त्र का तीन लाख जप करने से वट यक्षिणी प्रसन्न होती है और एक अंजन और कुछ वस्त्र देती है, उन कपड़ों में से यदि कोई कपड़ा मनुष्य संकट काल में पहन कर जाय तो वह संकट दूर हो जाता है और अंजन का यदि कोई गर्भवती नित्य प्रति दो मास तक लगाये तो उसे अवश्य ही पुत्र उत्पन्न होता है ।

बड़ यक्षिणी मन्त्र

ओं नमो भगवते रुद्रामचन्द्र योगिने स्वाहा ।

विधि—रात के समय बड़ के वृक्ष के ऊपर चढ़कर निरंतर छः घण्टों तक इस मन्त्र का जप करना चाहिये और इतना समय हर रोज करे और तब तक इस जप को करता रहे जब तक कि एक लाख पूरे न हों ।

नरास्थि कीलमादाय निखनेच्चातुरंगुलम् ।

मंत्रयुक्तं रिपोद्वारि शीघ्रमुच्चाटनं भवेत् ॥

मनुष्य की हड्डी की चार अंगुली की कील बनाकर फिर उसको मन्त्र से अभिमन्त्रित करके जिसके ऊपर उच्चाटन करना हो उसके द्वार पर खोदकर उक्त कील को गाड़ देने से अवश्य उच्चाटन हो जाता है ।

श्वेतलाङ्गलिकामूलं स्थापयेद्यस्य वेश्मनि ।

निखनेत्तु भवेत्तस्य सद्य उच्चाटनं ध्रुवम् ॥

जिसका उच्चाटन करना हो उसके घर में कलिहारी की जड़ खोदकर गाड़ दे तो उसका उच्चाटन शीघ्र हो जाय ।

छूक विष्ठां गृहीत्वा तु सिद्धर्थेन समन्विताम् ।

यस्यांगे निक्षिपेच्चूर्णं सद्य उच्चाटनं भवेत् ॥

उल्लू की बीट लेकर उसमें सरसों मिलाकर उसका चूर्ण बनावे, फिर उस चूर्ण को जिसके शरीर पर डाले उसका शीघ्र ही उच्चाटन हो जाय ।

काकोलूकस्य पक्षांश्च यद्गृहे निखनेद्रवौ ।

यन्नाम्ना मंत्रयोगेन समस्तोच्चाटनं भवेत् ।

कीवा और उल्लू का पंख जिसका उच्चाटन करना हो उसके नाम सहित उच्चाटन के मन्त्र से अभिमन्त्रित करके उसके घर में गाड़ देने से उसका सब उच्चाटन हो जाता है ।

उच्चाटन मन्त्र

ॐ नमो भगवते रुद्रया कराल दंष्ट्राय अमुकं पुत्र
बांघवः सह शीघ्रमुच्चाटय हुँ हुँ फट् स्वाहा ठः ठः ॥

अयुत जगत सिद्धिः । अष्टोत्तरशतं जपात् प्रयोग
सिद्धिः ।

यह मन्त्र दश सहस्र जपने से सिद्ध होता है । जब सिद्ध हो जाय तो प्रयोग करने के लिये जप करते समय 'अमुक' शब्द के

स्थान पर जिस पर प्रयोग करना हो उसका नाम लेना चाहिये ।

मध्यान्हे लुंठते भूमौ गर्दभो यत्र धूलिका ।

उदङ् मुखः प्रतीच्यां तु गृहीत्वा वाम पाणिना ॥

यद्गृहे क्षिप्यते धूलिस्तस्योच्चाटनम् भवेत् ।

एवं सप्तदिनं कुर्यात् गृहेशोच्चाटनं भवेत् ॥

जहाँ दोपहर के समय गधा लेटा हो वहा की धूल पश्चिम की ओर मुख करके खड़े होकर बायें हाथ से उठा लावे । फिर इस धूल को जिसके घर में फेंके दे उसका उच्चाटन हो जाये । इस प्रकार सात दिन तक करते रहने से घर के मालिक का उच्चाटन हो जाता है ।

मन्त्र

ॐ नमो मीमाम्नाय अमुक गृहे उच्चाटनं कुरु कुरु
स्वाहा । अयुत जपात्सिद्धिः ।

विधि—उपरोक्त प्रयोग को इस मन्त्र से अभिमन्त्रित करके प्रयोग करने से सिद्ध होता है । इस मन्त्र में जहाँ अमुक शब्द है यहाँ जिसका उच्चाटन करना हो उसका नाम लेना चाहिये । यह मन्त्र दस हजार जप करने से सिद्ध होता है ।

अथ आकर्षण अभिधान

ईश्वरोवाच

आकर्षणविधिं वक्ष्ये शृणु सिद्धिं प्रयत्नतः ।

राजः प्रजायाः सर्वेषां सत्यं आकर्षणं भवेत् ॥

श्री महादेव जी बोले कि हे दत्तात्रेय जी अब मैं आकर्षण की विधि कहता हूँ जिससे राजा तथा प्रजा आदि सबको आकर्षित किया जा सकता है, इसको तुम सावधानी से सुनो ।

कृष्णधतूरे पत्राणां रसं रोचन संयुतम् ।

श्वेतचण्डत लेखन्या भूर्ज पत्रे लिखेत्ततः ॥

यस्य नाम लिखेन्मध्ये तापयेत्खादिराग्निना ।

शतयोजनगो वापि शास्त्रमायाति नान्यथा ॥

भोजपत्र पर काले घतूरे के रस में गोरोचन मिला कर सफेद कर्नल की कलम से जिसके ऊपर आकर्षण करना हो उसका नाम लिखे और उस नाम के चारों ओर मन्त्र को लिख दें, इसके बाद खैर की लकड़ी जलाकर उस भोज पत्र को उसी लकड़ी की अग्नि पर तपा दें, तो जिसके ऊपर प्रयोग किया जाये चाहे वह सौ योजन अर्थात् ४०० कोस की दूरी पर भी चला गया तो भी अवश्य चला आवे ।

अनामिकाया रक्तेन लिखेन्मन्त्रं तु भूर्जके ।

यस्य नाम लिखेन्मध्ये मधुमध्ये च निक्षिपेत् ॥

तदा आकर्षणं याति सिद्धयोग उदाहृतः ।

यस्मिं कस्मिं न दातव्यं नान्यथा मम भाषितम् ॥

अनामिका अंगुली का रक्त निकाल कर सकेद कनेल की लकड़ी की लेखनी से भोजपत्र पर जिसका नाम लिखकर और उस नाम के चारों ओर आकर्षण मन्त्र को लिखकर शहद में डाल दे तो उसका आकर्षण अवश्य हो जाये। मेरा कहा हुआ यह सिद्धि योग मिथ्या नहीं है इसको प्रत्येक मनुष्य को न देना चाहिये ।

नृकपाले लिखेन्मन्त्रं गौरोचनसकुङ्कुमैः ।

तापयेत्खदिरगारे स्त्रिसन्ध्यासु प्रयत्नतः ॥

मन्त्रं जपेत्सुसिद्धं कर्षयेदुर्वशामपि ।

ऊपर लिखी हुई अन्य विधि के अनुसार केशर तथा गौरोचन से मनुष्य की खोपड़ी में मन्त्र लिखकर उस खोपड़ी को प्रातः मध्याह्न और सायंकाल में खैर की लकड़ी की आग पर तपावे तथा मन्त्र का जाप करे तो उर्वशी का भी आकर्षण हो जाये ।

गृहीत्वाजुनयन्दाकमश्लेषां समाहितः ।

अजामूत्रेण संपिष्ट्वा निक्षिपेच्छिरसागरि ॥

नारी व पुरुषो यस्य सुतो व पशुरेव च ।

आकृष्ट स्वयमायाति सत्यं २ वदाम्यहम् ॥

आश्लेषा नक्षत्र में सावधानी से अर्जुन के वृक्ष का बांदा लाकर बकरी के दूध में उसको पीस डाले फिर जिस स्त्री पुरुष तथा पुत्र और पशु आदि के सिर, उसको डाले, वह स्वयं आकर्षित होकर चला आवे । मैं सत्य कहता हूँ यह प्रयोग मिथ्या नहीं होगा ।

सूर्यावर्तस्त मूलं तु पञ्चम्यामानयेद बुधः ।

ताम्बूलेनसमदद्यात् स्वयमायाति भक्षणात् ॥

पंचमी के दिन सूर्यावर्त (हुं हुर) की जड़ लेकर उसको पान में रख कर जिसको दे वह स्वयं आकर्षित होकर चला आवे ।

ब्रह्मदण्डी समादाय पुष्यार्केण तु चूर्णयेत् ।

कामार्ता कामिनीं दृष्ट्वा उत्तमांगेविनिक्षिपेत् ॥

पृष्ठतः सा समायाति नान्यथा मम भाषितम् ॥

जिस रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो उस दिन ब्रह्मदण्डी लाकर उसका चूर्ण बना लेना चाहिए । उस चूर्ण को जिस काम पीड़ित स्त्री के उत्तम अङ्ग अथवा सिर पर छिड़क दे तो कामिनी प्रयोग करने वाले के पीछे २ अवश्य चली आती है । मेरा कथन मिथ्या नहीं है ।

मन्त्र

ॐ नमो आदिपुरुषाय अमुकस्याकर्षण कुरु कुरु
स्वाहा । एक लक्ष जपात् योग सिद्धि, अष्टोत्तर शत
जपात् प्रयोग सिद्धिः ।

इस मन्त्र को एक लाख जप करके सिद्ध कर लेना चाहिये और जब प्रयोग करना हो तो प्रयोग करने से पूर्व १०८ बार जप करके प्रयोग करे; और 'अमुक' के स्थान पर जिस पर प्रयोग करना हो उसका नाम लेना चाहिये ।

अथ इन्द्रजाल अभिधान

इश्वरोवाच

इन्द्रजालं विना रक्षा जायते न सुनिश्चितम् ।

रक्षामन्त्रो महामन्त्रः सर्व सिद्धि प्रदायकः ॥

महादेव जी बोले कि दत्तात्रेय जी अब मैं इन्द्रजाल की विधि का वर्णन करता हूँ। इसके विना शरीर की रक्षा नहीं हो सकती। इस मन्त्र से निश्चय ही रक्षा होती है और यह सब सिद्धियों का देने वाला है।

शरीर रक्षा मन्त्र

ॐ नमो परब्रह्म परमात्मने मम शरीर रक्षां कुरु
कुरु स्वाहा । लक्ष जपात् मन्त्र सिद्धि । अष्टोत्तर शत
जपात् प्रयोग सिद्धिः ॥

विधि—इस मन्त्र का एक लाख जप करने से मन्त्र सिद्धि होती है और प्रयोग सिद्धि के लिये प्रयोग करने से पूर्व इस मन्त्र को एक सौ आठ बार जप करना चाहिए। इसको सिद्ध करने के बाद इन्द्रजाल की क्रीड़ा करने में यदि कोई भूल भी हो जाय तो किसी प्रकार की कोई हानि नहीं होती।

इन्द्रजाल मन्त्र

ॐ नमो नारायणाय विश्वम्भराय इन्द्रजाल कौतु-
कानि दर्शय दर्शय सिद्धि कुरु कुरु स्वाहा ।

एक लक्ष जपात मन्त्र सिद्धो भवति ।

अष्टोत्तरशत जपात प्रयोग सिद्धो भवति ॥

विधि—यह मन्त्र एक लाख जप करने से सिद्ध होता है ।
और फिर जब क्रीड़ा करनी हो तो रक्षा महा मंत्र तथा इस मंत्र
को १०८ बार जप करके इन्द्रजाल की क्रीड़ा करनी चाहिये ।

कार्पास बीजं सर्पास्ये भौमवारे च रोपयेत् ।

उद्भुतं बीजं कार्पासं बाल एरण्ड तैलके ॥

तद्वर्ति ज्वालयेद्रात्रौ सर्पवत् दृश्यते ध्रुवम् ॥

कपास के बीज को मङ्गलवार के दिन मरे हुये साँप के मुख
में डाल कर फिर इसके मुख से निकाल कर बो दे । जब उस
कपास में रुई निकाल आवे तब उस रुई की बत्ती बनाकर रात
के समय रेंडो के तेल में जलाने से वहाँ की सब वस्तुयें साँप के
समान दिखाई देंगी और दिया ब्रह्म जाय तो वे सब अदृश्य हो
जायेंगी ।

वृश्चिकस्य मुखे बीज क्षिपेन्कार्पासक तथा ।

तद्वर्ति ज्वालयेद्रात्रौ वृश्चिक भवति ध्रुवम् ॥

वर्ति शान्तिः प्रकर्त्तव्या महा कौतुक शामिका ॥

बिच्छू के मुख में कपास का बीज डाल दे फिर उसको
निकालकर बो दे, उसमें से जो रुई निकले उसको बत्ती
बनाकर रात्रि को रेंडो के तेल में जलाने से बिच्छू ही बिच्छू
दिखाई देंगे ।

भौमे कार्पास बीजानि नकुलस्य मुखे क्षिपेत् ।

सन्ध्यायां ज्वालयेन्दति दृश्यते नकुला ध्रुवम् ॥

मङ्गलवार के दिन कपास के बीज नेवले के मुख में डाल कर बोये, उससे जो कपास उत्पन्न हो उसकी बत्ती बनाकर रेंडी के तेल में रात्रि के समय जलाने से नेवले ही नेवले दिखाई देगे ।

एरण्ड तेलजं दीपं शनि पुष्पाहि कंचुकम् ।

मण्डूक वसाया दीपे सर्वं पश्यति सर्पवत् ॥

अरण्डी का तेल और मेंढक की चर्बी मिलाकर दीपक जलाये और उस दीपक में साँप के केंचुल में शमी का पुष्प लपेट कर उसकी बत्ती जलाने से सब वस्तुयें सर्पवत् अथवा साँप के समान दिखाई देने लगेगी ।

उलूकस्य कपाले तु घृत दीपेन कज्जलम् ।

पार्तायत्वांजयेन्नेत्रे रात्रौ पठति पुस्तकम् ॥

उल्लू की खोपड़ी में घी डालकर दिया जलाये और फिर इस दीपक से काजल को प्राप्त करे उस काजल को आँखों में लगाने से बिना किसी दीपक के रात्रि के घोर अन्धकार में भी पुस्तक को पढ़ सकता है ।

चन्द्रे कार्पास बीजानि मार्जारस्य मुखे क्षिपेत् ।

तद्वर्ति ज्वालयेद्रात्रौ मार्जारो दृश्यते ध्रुवम् ॥

बिल्ली के मुख में कपास का बीज डालकर फिर उसके मुख से निकाल ले और उसको बो दे, उससे जो रुई निकले उसकी बत्ती बना कर रात में जलाने से अवश्य ही बिल्लियाँ दिखाई देंगी ।

एवं यस्य मुखे क्षिप्तं तदुभ्वातिकम् ।

दीपं प्रज्वालयेद्रात्री दृश्यते हि स निश्चितम् ॥

इसी प्रकार जिसके भी मुख में कपास का बीज डालकर और उसे फिर बोकर उससे पैदा हुई रूई की बत्ती बनाकर रेंडी के तेल में डाल कर रात्रि के समय दीपक जलाने से अवश्य ही वही जन्तु दिखाई देगा ।

अंकोल बीजे निक्षिप्ते मत्तगजमुखे गुरौ ।

मत्रेण सिचयेन्नित्यं यावदबीज फलं भवेत् ॥

त्रिलोह वेष्टितं कृत्वा एक बीज मुखेस्थितम् ।

मत्तमांग वीर्यस्तु वायु तुल्य पराक्रमम् ॥

गुरुवार के दिन मरे हुये हाथी के मुख में अंकोला का बीज डाल दे और फिर उसको निकाल कर बो दे और जब तक उसका फल उत्पन्न न हो तब तक इन्द्रजाल का मन्त्र पढ़कर उसको साँचता रहे और जब पेड़ में फल पैदा हो जाय तो उसमें से एक बीज निकाल कर उसको त्रिलोह में लपेट कर अपने मुख में रखने से मतवाले हाथी के समान बल तथा वायु के तुल्य पराक्रम आ जाता है ।

तुरंगास्ते तु तदबीजं रविवारे विनिक्षिपेत् ।

जायन्ते सफला वृक्षस्तत बीजं ग्राह्यं पुनः ॥

त्रिलोहवेष्टितं कृत्वा मुखमध्ये च धारितम् ।

महा बलो महा तेजो जायते च तुरंगम् ॥

इस बीज को अर्थात् अंकोल के बीज को रविवार के दिन मरे हुए घोड़े के मुख में डाले उससे जो पेड़ पैदा हो उसका कुछ

बीज लेकर उसे त्रिलोह में लपेट कर अपने मुख में डालें तो घोड़े के समान बहुत बलवान और वीर्यवान हो जावे ।

दशहम द्विपच ताम्र षोडश रोप्य भाग्यकम् ।

रात्र सरुषा त्रिलोहस्य उताव्या सर्व कर्मणि ॥

सोना दस भाग, तांबा बारह भाग, चांदी साँवाँ भाग इन धातुओं को परस्पर मिला कर अग्नि में डाल दे । इनसे जो नई-नई धातुएँ तैयार होती हैं उसे त्रिलोह कहते हैं इस धातु का यन्त्र बनवा कर उसमें अंकोल के बीज को रखकर मुख में रखना चाहिये ।

वृषमुखे तु तद् बीजं निक्षिप्तेभुवि निक्षितम् ।

तद्बीजं मुख मध्यस्था त्रिलोह वेष्टितं कुरु ॥

महा बली महा नेजो जायते वृषभश्च स ॥

इसी प्रकार अंकोल के बीज को मरे बलके मुखमें डाले उससे जो अंकोल का पेड़ पैदा हो उसका बीज लेकर त्रिलोह में लपेट कर मुख में रखने से निश्चय ही बल के समान बल आ जाना है ।

कुरंगास्ये तु तद् बीजं निक्षिपेद् भूतले ध्रुवम् ।

त्रिलोहवेष्टितं बीजं मृगराज समा भवेत् ॥

इस अंकोल के बीज को मृग के मुख में डाल कर बोनै से जो अंकोल का वृक्ष पैदा होता है उससे अंकोल का बीज लेकर त्रिलोह में लपेट कर मुख में रखने से मनुष्य में मृगराज के समान स्फूर्ति आती है ।

स्त्रानोवक्त्रे तु तद्वीजं निक्षिपेद्भूतले ध्रुवम् ।

त्रिलोहवेष्ठितं, कृत्वा मुखे क्षिप्त्वा चकुक्कुरः ॥

इसी प्रकार कुत्ते के मुख में डाला हुआ अंकोल का बीज भूमि में बोवे और जब उसमें फल आ जाये तो उस फल को तोड़ कर त्रिलोह में लपेट कर मुख में रखने वाला कुत्ते के समान हो जाता है अर्थात् सबको कुत्ते के समान दिखाई देने लगना है ।

मयूरमुख मध्ये तु तद्वीजं तु विनिक्षिपेत् ।

त्रिलोहवेष्ठितं कृत्वा मयूरो दृश्यते जनं ॥

इस प्रकार मार के मुख में अंकोल के बीज को डाल कर पुनः उसको भूमि में बोये और उससे जो पेड़ पैदा होवे उसका एक फल तोड़ कर त्रिलोह में लपेट कर मुख में रखने से सबको मार के समान दिखाई दे ।

ये केचन जोवाश्व वतन्ते जगतो तले ।

क्षिप्त्वा मुखे अंकोलवीजं निक्षि तेपृथिवी तले ॥

तद्वीजं मुख मध्यस्य त्रिलोहे वेष्ठितं कुरु ।

तद्रूपी च भवेत्सद्यो नान्यथा मम् भाषितम् ॥

पृथ्वी पर जितने जोव हैं उनमें जिनके मुख में अंकोल का बीज डाले और फिर उस बीज को पृथ्वी में बोकर उसके फल को त्रिलोह में लपेट कर मुँह में रख ले तो वह उसी का स्वरूप हो जाता है जो जिस जन्तु के मुख के बीज का फल त्रिलोह में लपेट कर मुख में रखे वह उसी जन्तु के रूप में दिखाई देगा मेरा कथन मिथ्या नहीं है ।

अंकोलस्य तु बीजानि निक्षिप्त्वा तैल मध्यतः ।
 धूपं दत्त्वा तु तत्तैलं स सर्वसिद्धि प्रदायकम् ॥
 तडागे निक्षिपेत् पद्म बीजं तत्तैल सयुतम् ।
 तत्क्षणाज्जायते योगिन् तडागात्कमलोद्भवाः ॥
 तत्तैलमात्रबीजे तु निक्षिपेत् बिन्दु मात्रतः ।
 आम्रवृक्षस्तदुत्पन्नः क्षणमात्रात्फलान्वितः ॥

अंकोल के बीजों को तेल के बीच में डालकर धूप देने से वह तेल में सर्व प्रकार की सिद्धियों को देने वाला हो जाता है । यदि उस तेल में कमल का बीज मिलाकर उस तेल को तालाब में फेंक दिया जाये तो हे दत्तात्रेय जी ! उस तालाब में उसी क्षण ही कमल वृक्ष उत्पन्न हो जाते हैं उस तेल में आमों के बीजों को मिलाकर उस तेल को एक बूंद मात्र भी भूमि में फेंकी जाये तो उसी क्षण उसमें आम के फल भी लग जाते हैं ।

खंजरीटं सजीवं तु गृहीत्वा फाल्गुने क्षिपेत् ।
 पिञ्जरे रक्षयेत्तावद्यावद्दण्डप्रदो भवेत् ॥
 अदृश्यो जायते सत्यं नेत्रणापि न दृष्यते ।
 करेण तु शिखा ग्राह्यां रीप्ययन्त्रे च निक्षिपेत् ।
 गुटिका मुखमध्यस्था अदृश्यो भवति ध्रुवम् ॥

खंजरीट अर्थात् खंजन पक्षी को फाल्गुन मास में जीवित पकड़ कर पिञ्जरे में डाल दें और भादों मास में वह पिञ्जरे में ही अदृश्य हो जायेगा अर्थात् वह आँखों से दिखाई न देगा क्योंकि उस समय उसकी चोटी निकल आती है उसकी चोटी

को हाथ से पकड़ कर उखाड़ ले और चाँदी के यन्त्र में बन्द कर दे। उस यन्त्र में जिसमें खंजन पक्षी की चोटी हो मनुष्य मुख में रखने से निश्चय ही अदृश्य हो जाता है अर्थात् किसी को दिखाई नहीं देता।

उल्लू विष्ठां गृहीत्वा त्वरण्डतैलेन पेषयेत् ।

यास्यांगे निक्षिपेद्विन्दुमदृश्यो जायते नरः ॥

उल्लू की विष्ठा को अरण्डी के तेल में पीस कर मिला कर जिसके शरीर पर डाली जाय वह व्यक्ति अदृश्य हो जाता है अर्थात् किसी को दिखाई नहीं देता।

म तुलुंगस्य वीजानां तैलं ग्राह्यं प्रयत्नतः ।

लेपयेत्ताम्रपात्रे तन्मध्याह्ने च विलोकयेत् ॥

रथेन सह चाकरो दृश्यते भास्करो ध्रुवम् ।

बिना मंत्रेण सिद्धिः स्यात् सिद्धि योग उदाहृतः ॥

मातुलुङ्ग के बीजों का तेल निकाल कर तांबे के पात्र में उसका लेप करे फिर दोपहर के समय उसमें सूर्य भगवान को देखे तो निश्चय उसको सूर्य भगवान अपने रथ में बंठे दिखाई देगे। यह प्रयोग जो मैंने कहा है बिना किसी मन्त्र के सिद्ध हो जाता है।

वाराहि क्रान्तिकमलं सिद्धार्थस्नेह लेपितम् ।

मुखे प्रक्षिप्य लोकानां दृष्टिबन्धं करोत्यलम् ॥

बाराही और क्रान्तिका की जड़ में सरसों के तेल का लेप करके उसको मुख में रखने से दूसरे मनुष्य की दृष्टि बन्द हो

जाती है अर्थात् जो इसको मुख में रख ले वह दूसरों की दृष्टि बन्द करके उनको जो चाहे सो दिखावे ।

भौमवारे गृहीत्वा तु मृत्तिकां रिपुमूत्रतः ।

कृकलास मुखे क्षिप्त्वा कंक वृक्षं च बन्धयेत् ॥

मूत्र बन्धो भवेत्तस्य उद्धृते च पुनः सुखी ।

विना मन्त्रेण सिद्धिः स्यात्सिद्धियोग उदाहृतः ॥

मङ्गलवार के दिन जहाँ शत्रु ने लघुशंका की हो वहाँ की मिट्टी लेकर उसको गिरगिट के मुख में डालकर उसको धतूरे के वृक्ष के साथ बांध दे । जब तक वह मिट्टी धतूरे के वृक्ष के साथ बांधी रहे तब तक शत्रु की लघुशंका बन्द रहे और उस मिट्टी को धतूरे के वृक्ष से हटा लिया जाय तो शत्रु पुनः सुखी हो जाय । यह प्रयोग जो मैंने कहा है बिना किसी मन्त्र के सिद्ध हो जाता है ।

सिन्दूरं गन्धक तालं समं पिष्ट्वा मनःशिलाम् ।

धृते तल्लिप्तवस्त्रे तु ध्रुवमग्निश्च दृश्यते ॥

सिन्दूर, गन्धक, हरताल तथा मैनसिल इन सबको समभाग में लेकर पीस डाले फिर इसको वस्त्र पर लगाकर जो व्यक्ति उस वस्त्र को ओढ़ेगा वह अवश्य ही अग्नि के समान हो जायगा अर्थात् वह सबको अग्नि के सदृश दिखाई देगा ।

रविवारे सकृद्धन्यादीर्घं तुण्डी तदा निशि ।

ततः सोमे गृहीत्वा तु मृत्तिकां रिपुमूत्रतः ॥

तच्चर्मणि क्षिपेच्छत्रु मूत्रबन्धन कारिका ।

उद्धृते तु सुखी चैव सिद्ध योग उदाहृतः ॥

रविवार की रात्रि में छद्मदर को इस प्रकार से मारे कि वह एक ही बार में मर जाय फिर सोमवार के दिन जहाँ शत्रु ने लघुशंका की हो वहाँ की मिट्टी ले आवे और उस मिट्टी को छद्मदर की खाल में भर दे तो शत्रु की लघुशंका बन्द हो जाती है और उस खाल को खोल देने से शत्रु पुनः सुखी हो जाता है यह सिद्ध योग का प्रयोग है।

प्रवेताञ्जनं रागादायागस्त्य पुष्प रसेन च ।

पिष्ट्वा सप्त दिनं पावदष्टमेह्लियथा विधि ॥

अञ्जनं चांजयन्नेत्रे दृष्ट्वन्ते चाह्नि तारकाः ॥

सफेद चन्दन को लेकर उसको सात दिन पोसे फिर आठवें दिन उसमें अगस्त्य के पुष्प का रस मिलाकर विधिपूर्वक अर्थात् मन्त्र से अभिमन्त्रित करके आँखों में अंजन लगावे तो दिन में तारे दिखाई दें।

कुक्कुटस्याण्डमादाय तच्छिद्रे पारदक्षिपेत् ।

सम्मुखे भास्करं कृत्वा आकाशं गच्छति ध्रुवम् ॥

बिना मन्त्रेण सिद्धिः स्यात् सिद्धि योग उदाहृतः ॥

मूर्गी के अण्डे को लेकर उसे छेदकर उसमें पारा भर दे और फिर यदि उसको सूर्य के सामने करे तो वह आकाश की ओर जायेगा। यह प्रयोग बिना मन्त्र के सिद्ध होता है।

अर्कक्षीरं वटक्षीरं क्षीरमौदुम्बरं तथा ।

गृहीत्वा पात्रके क्षिप्तं जलपूर्णं करोति च ।

दुग्धे संजायते तत्र महाकौतुक कौतुकम् ॥

मदार का दूध, बट का दूध तथा गूलर का दूध इन सबको मिलाकर एक पात्र में भर कर रख दे फिर उसमें जल डाले तो वो सारा का सारा दूध ही के समान दिखे यह कौतुक महा कौतुक है।

पुष्याकं तु समानीय मूलश्वेतार्कं सम्भवम् ।
 अंगुष्ठप्रतिमां तस्य प्रतिमा तु प्रपूजयेत् ॥
 गणनाथ स्वरूपं तु भक्त्या रक्ताश्व मारजै ।
 कुसुमेषुचापि गंधाद्यैर्हविस्स्याशी जितेन्द्रिय ॥
 पूजयेन्नाममन्त्रैश्च तद बीजानि नमोस्तकैः ।
 यान्यान्प्रार्थयते कामानेकमासेन ताल्लभेत् ॥
 प्रत्येक काम्य सिद्धयर्थं मासमेकं प्रपूजयेत् ॥

जिस रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो उस दिन अर्क अर्थात् मन्दार की जड़ लेकर उसमें अंगूठे के बराबर गणेश जी की मूर्ति बनाकर गणेश जी के नाम से भक्ति-पूर्वक उस मूर्ति की पूजा करे। इसके पश्चात् जितेन्द्रिय होकर गणेश जी का बीज मन्त्र से रक्त, चन्दन, लाल कनेर के पुष्प और गन्धक आदि से हवन करे। इस प्रकार से हवन पूजा करता हुआ साधक जिन कामनाओं की प्रार्थना करेगा उन कामनाओं की प्राप्ति हो जायेगी। प्रत्येक कामना सिद्धि के लेख इसी प्रकार एक मास पूजन करना चाहिये।

गणेश जी का मन्त्र

ॐ अन्तरिक्ष स्वाहा । अनेन मंत्रेण पूजयेत् ।

इस मंत्र से 'ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा' पूजा करनी चाहिये ।

ॐ ह्रीं पूर्वदयां । ॐ ह्रीं फट् स्वाहा । अनेन
मन्त्रेण रक्ताश्वमार पुष्पाणि घृत औद्रयुतानि जुहुयात् ।
वाञ्छितं ददाति ।

इस मन्त्र से लाल चन्दन, लाल कनेर का पुष्प, घी तथा
शहद मिलाकर हवन करना चाहिये । इस मन्त्र द्वारा हवन करने
से देवता मनोवाञ्छित फल देते हैं ।

ॐ ह्रीं श्रीं मानस सिद्धि करीं ह्रीं नमः । अनन
मन्त्रेण रक्त कुसुममेकं जप्त्वानित्यं क्षिपेत् । ततो भगवती
वरदा अष्टगुणा नामेकं गुणं ददाति ।

इस मन्त्र का जाप करते हुये एक मास तक वरदायिनी
भगवती आठ गुणों में से एक गुण देती हैं ।

कृत्तिकायां स्नुहीवृक्षबन्दाकं धारयेत्करे ।

वाक्य सिद्धिर्भवेत्तस्य महाश्चर्यमिदं स्मृतम् ॥

कृत्तिका नक्षत्र में शूहर के वृक्ष का बन्दाक-हाथ में बांधने से
वाक्य सिद्धि प्राप्त होती है यह अत्यन्त आश्चर्य में डालने वाला
प्रयोग है ।

अनेन ग्राहयेत् स्वाती नक्षत्रे बदरीभवम् ।

बृन्दाकं तत्करे धृत्वा यद्वस्तु प्रार्थ्यते जनैः ॥

तत्क्षणात् प्राप्यते सर्वं मंत्रमात्रस्तु कथ्यते ।

ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा अनेन ग्राहयेत् ॥

इसी प्रकार इस 'अन्तरिक्षाय स्वाहा' मन्त्र से स्वाती नक्षत्र
में बेर का बन्दाक लेकर उसको हाथ में बांधे तो उसके प्रभाव

से जिस समय जो इच्छा हो करे वह क्षण भर में पूर्ण हो जाता है ।

गन्धकं हरितालं च गोमूत्रं च विषं तथा ।
 सूक्ष्मं चूर्णमयं कृत्वा किञ्चिन्मार्गं विनिक्षिपेत् ॥
 विघ्नाः सर्वे पलायन्ति यथा युद्धेषु कातराः ।
 बिना मन्त्रेण सिद्धिः स्यात् सिद्धि योगे उदाहृतः ॥
 यस्मै कस्मै न दातव्यं नान्यथा मम भाषितम् ।
 इन्द्रजाल महाविद्या वक्ता विद्यामु चोत्तमा ॥

गन्धक, हरिताल और विष को पीसकर चूर्ण के समान बना ले और उस चूर्ण को गोमूत्र में मिलाकर उसको थोड़ा सा मार्ग में छिड़क दे तो सब विघ्न इस प्रकार भाग जाते हैं जिस प्रकार युद्ध में कायर भाग जाते हैं । यह सिद्धियोग है । यह प्रयोग बिना मन्त्र के सिद्ध होता है । मैं सत्य कहता हूँ कि इन्द्रजाल विद्या सब विद्याओं में श्रेष्ठ कहा जाता है । यह विद्या सबको न सिखानी चाहिये ।

अथ रसायनिक प्रयोगविधानम्

ईश्वरोवाच

अथाग्ने कथयिष्यामि रसायन विधि परम् ।

कुबेर तुल्यो भवति यस्य सिद्धौ नरो भुवि ॥

श्री महादेव जी बोले कि हे दत्तात्रेय जी ! अब मैं तुम्हें उस रसायन की उत्तम विधि को कहता हूँ जिसको सिद्ध करने से मनुष्य कुबेर के समान धनवान हो जाता है ।

गोमूत्रं हरतालं च गन्धकं च मनः शिलाम् ।

समं समं गृहीत्वा तु यावच्छुष्कं तु पेपयेत् ॥

गोमूत्र, हरताल, गन्धक और मैनशिल इन चारों वस्तुओं को सममात्रा में लेकर खरल करे और जब तक सूख न जाय तब तक उनको खरल करता रहे ।

गोमूत्रं रक्तवर्णाया गन्धकं रक्तवर्णकम् ।

एकादशदिनं यावद्रव्यं यत्नेन वै शुचिः ॥

इस प्रयोग के लिये गो मूत्र लाल गाय का तथा गन्धक लाल रवा की होनी चाहिये और इनको ग्यारह दिन तक मन्त्र पाठ करते हुये खरल में घोंटे ।

गोल कृत्वा द्वादशेह्नि रक्त वैस्त्रेण वेष्टयेत् ।

चंगुलमानेन मृदम् लिप्त्वा विशेषयेत् ॥

उन सब वस्तुओं को बारहवें दिन गोला बनाकर लाल कपड़े में लपेट दे और फिर उसके ऊपर चार अँगुल मोटी मिट्टी चढ़ाकर सुखा ले ।

पंच हस्त प्रमाणेन भूमौ गतं तु कारयेत् ।

पलाश काष्ठ लोष्ठेस्तु पूरयेत् द्रव्य मध्यगम् ॥

अब पाँच हाथ गहरी भूमि खोदे और उसमें पलाश की लकड़ी डालकर उसमें इस गोले को रख दे ।

अग्नि दद्यात् प्रयत्नेन स्वांगशीतम् समुद्धरेत् ।

ताम्र पात्रेषु सन्तप्ते तद्भस्मं तु प्रदापयेत् ॥

और उसमें यत्नपूर्वक अग्नि लगा दे अर्थात् उसमें इस प्रकार से अग्नि लगावे कि जिसमें वह पूर्णरूपेण भस्म हो जाय । जब वह भस्म हो कर शीतल हो जाय तब उनको निकाल ले और तपे हुये तांबे के पात्र पर उस भस्म को डाल दे ।

गुंजेकं तत्क्षणत्स्वर्णं जायते ताम्र पात्रकम् ।

अरण्ये निर्जने देशे शिवालय समीपतः ॥

क्योंकि ज्योंही वह भस्म तांबे के पात्र पर डाली जायेगी त्यों ही वह तांबे का पात्र घुंघची के आकार का सोना ही जायेगा । यह प्रयोग किसी निर्जन बन अथवा शिवालय के समीप ही करना चाहिये ।

शुक्ल पक्षे सुचन्द्रेऽह्नि प्रयोगं साधयेत् सुधीः ।

त्र्यम्बकेति च मन्त्रस्य जपं दश सहस्रकम् ॥

बुद्धिमान को चाहिये कि इस प्रयोग को शुक्ल पक्ष में उस दिन करे जिस दिन चन्द्रमा बलवान हो और इस प्रयोग के करने से पूर्व साधक को चाहिये कि श्र्यम्बकम् इस मन्त्र का दश सहस्र जप करे ।

प्रत्यहं कारयेद् विप्रान भोजयेद्बुदसम्मितान् ।

यावत् सिद्धिर्न जायेत तावदेतत् समाचरेत् ॥

प्रति दिन ११ ब्राह्मणों को भोजन करावे, और जब तक सिद्धि प्राप्त न हो तब तक प्रतिदिन इसी मन्त्र का दश सहस्र जप करते हुये द्रव्य खरल करने से रसायन सिद्ध होता है ।

॥ द्रव्यमर्दन मन्त्रः ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वर्णादिनामीशाय रसायनस्य
सिद्धि कुरु कुरु फट् स्वाहा ।

उपरोक्त वस्तुओं को खरल करते समय प्रति दिन इसी मन्त्र का दश सहस्र जप करते हुये द्रव्य खरल करने से रसायन सिद्ध होता है । पहले दस हजार बार जप करके मन्त्र को सिद्ध कर लेना आवश्यक है ।

॥ इति रसायन प्रयोगं सम्पूर्णम् ॥

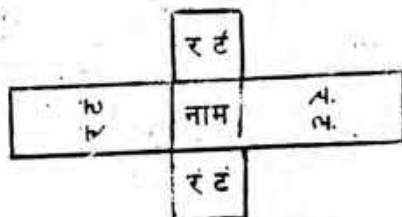
अथ तन्त्र प्रकरणम्

उच्चाटन-तंत्र

ब्रह्म दण्डी चिताभस्मं शिवलिङ्गे प्रक्षेपयेत् ।
 सिद्धयर्थेन च संयुक्तं शनिवारे क्षिपेद्गृहे ॥
 उच्चाटनं भवेत्तस्य जीवते मरणान्तिश्वम् ।
 बिना मन्त्रेण सिद्धिश्च सिद्धियोगोरुदाहृतः ॥

एक शिवलिङ्ग बनाकर उस पर ब्रह्मदण्डी और चिता की भस्म लेवन करे। सफेद सरसों मिलाकर उसे जिसके घर में फेंका जायगा जोघ्न हो उसका उच्चाटन हो जायगा। यह सिद्ध योग बिना मन्त्र के सिद्ध प्रदायक है।

उच्चाटन यन्त्र



यह यन्त्र घतूरे के रस से घतूरे के पत्ते पर शत्रु-नाम सहित लिख कर हिलाने से शत्रु का शीघ्र उच्चाटन होता है।

उच्चाटन-मन्त्र

ॐ तुङ्ग स्फूलिङ्ग बक्रिय चाचिक विद्धद्वहन मांघ
 वनं स्फो स्फो ॐ ठः ठः ।

इतवार तथा मंगलवार को पढ़ने वाली अमावस्या को आधी रात को ऊँट के चर्म पर बैठकर श्वेत गुंजा की माला शत्रु के नाम से सौ बार जपने से उच्चाटन अवश्य होता है ।

३-विद्वेषण-यन्त्र

एक हाथ में कौआ तथा दूसरे में उल्लू पक्षी का पंख लेकर "ॐ नमो नारायणाय अमुकस्यामुकेन सह, विद्वेषणम् कुरु स्वाहा" मन्त्र पढ़कर दोनों का अन्नभाग मिलाकर काले सूत्र में लपेटे । फिर पंख दोनों हाथ से पकड़कर जल में खड़ा होकर तर्पण करना चाहिये । इस प्रकार सात दिन करने तथा एक सौ आठ बार मन्त्र जपने से अवश्य विद्वेषण हो जाता है ।

नोट—अमुकस्यामुकेन के स्थानपर उन दो व्यक्तियों का नाम लेना चाहिये जिनसे विद्वेषण कराना हो ।

विद्वेषण—यन्त्र

०	२	५	९
६	३	२	३
४	४	५	१
४	५	२	३

इस यन्त्र को शीशे की कलम से पीपल के नीचे लिखने से मनचाहा फल मिलता है ।

विद्वेषण—मन्त्र

ॐ नमो नारायणाय अमुकस्यामुकेन सह विद्वेषणां कुरु कुरु स्वाहा । इस मन्त्र को एक लाख बार जपने से सिद्धि होती है । एक सौ आठ बार जपने से प्रयोग सिद्ध होता है ।

अन्योक्ति

सर्प की दाढ़ और नकुले का बाल तथा स्मशान की भस्म की गोली बनाकर किसी ऐसे स्थान पर गाड़े जहाँ उसे दो मित्र लांघ सकें। लंघन होने के बाद उनमें वैमस्य हो जायगा।

दूसरी विधि—रविवार को दोपहर के समय ऐसी जगह की घूल जहाँ गधा या भैंसा लेटा हो किसी के घर में डाल देने से उसमें सर्वदा क्लेश तथा कलह रहता है।

४-मोहन-तन्त्र

हरिताल चाश्वगन्धा पेषयेत्कदली रसे ।

गोरोचनेन संयुक्तं तिलकं लोक मोहनम् ॥

अर्थात्—हरिताल और अश्वगंध को केले के रस में पीसकर गोरोचन मिलाकर तिलक लगाने से लोग मुग्ध हो जाते हैं।

मोहन-मन्त्र

ॐ नमो भगवते कामदेवाय यस्य यस्य दृश्य भवामि
यश्च यश्च मम मुखं पश्यति तम् मोहयतु स्वाहा ॥

दिन में पवित्र होकर एक हजार बार इस मन्त्र का जप करने से सिद्धि होती है।

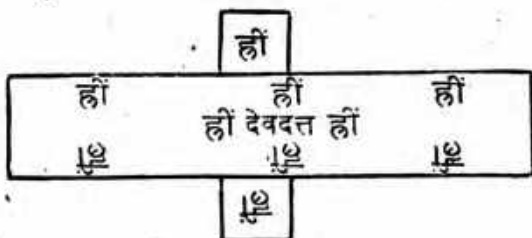
मोहन-यन्त्र

२१	२६	३५
२१	२४	२७
३०	२२	१०

इस यन्त्र को लिखकर अपने पास रखे तो जिससे बातचीत करे वह मोहित हो जावे।

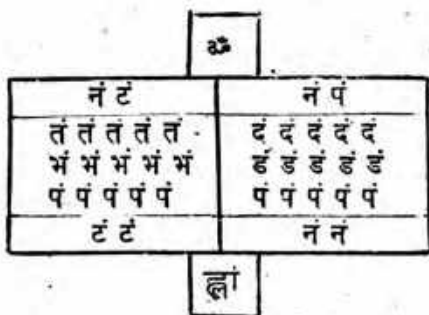
५-दिव्य स्तम्भन यन्त्र

इस यन्त्र को गोरोचन, कुमकुम से भोजपत्र पर लिखे और



शराब के सम्पुट में रख कर धूप दीप नैवेद्यादि से पूजन करे ।
दूसरे दिन स्नानादि नित्य कर्म से निश्चिन्त होकर शराब
के सम्पुट से यन्त्र को निकाल कर शिखा में बांधे और चुपचाप
अभीष्ट फल की प्रतीक्षा करे ।

सर्वजन वशीकरण यन्त्र



इस यन्त्र को अष्टगन्ध से भोजपत्र पर लिखकर विधिवत् पूजन करे और मंगलवार के दिन ताबीज में रख कर भुजा में बांधे तो उसे जो कोई देखेगा वश में हो जायगा ।

राजा वशीकरण यन्त्र

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
ह्रीं रामदत्त ह्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

इस यन्त्र को भोजपत्र पर गोरौचन, केसर चन्दन से अनामिका अंगुली के रक्त को मिलाकर लिखे और अनेक प्रकार से पुष्प, धूप, दीप नवेद्य और मांस से विधिवत् पूजन करे । फिर यथाशक्ति कन्या और ब्राह्मण को भोजन करावे । धीगिनयो को ढण्डवत करे । फिर राज दरबार में जाय

तो इस यन्त्र को अपनी मूट्टी में लेता जाय । उसे देखते ही राजा का क्रोध शान्त हो जायगा और वह वश में हो जायगा ।

राजा वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो भगवते कामदेवाय । यस्य यस्य दृश्या भवन्ति यश्च मम मुख पश्यति तस्मत् मोहयतु स्वाहा ।
१००० जपात् सिद्धो भवति ।

राजा वशीकरण तिलक

तगर, कूट, हारिताल और केशर सबको बराबर लेकर अनामिका अंगुली के रक्त से पीस कर भस्तक पर तिलक लगा कर राज दरबार में जावे तो राजा देखते ही वश में हो जायेगा ।

डाकिनी शाकिनी उतारने का यन्त्र

हीं	हीं	हीं	हीं
हीं	हीं	हीं	हीं
हीं	हीं	हीं	हीं
हीं	हीं	हीं	हीं

जब कभी किसी मनुष्य, स्त्री या पुरुष अथवा बालक किसी को भी आँचट में पाकरे डाकिनी, ब्रह्मराक्षस, चुड़ैल, मसानीप्रेत, भूत डरावे तो उस समय इस यन्त्र को काम में लावे। इस यन्त्र को एक नवीन वस्त्र पर

खड़िया से लिखे और फल, फूल, मिष्ठानादि से पूजन कर धूल से ढाँक दे। फिर धूल सहित खैर के कोयले की आग में रख कर फूँक दे तो कठिन से कठिन भूत डाकिन्यादि चिल्लाते हुये भाग जाते हैं और रोगी को शीघ्र आराम हो जाता है।

सास-स्वसुर को वश करने का यन्त्र

क्रीं	स्वा	१	१६
हीं			
		१	१६
स्वा	क्रीं		

इस यन्त्र को रविवार के दिन गेहूँ की 1 रोटी पर लिख कर काली कुतिया को खिलाने से सास वश में हो जाती है और मंगलवार को काले कुत्ते को खिलाने से स्वसुर वश में हो जाता है।

झाड़-फूंक सीखा-ओझा-विद्या

भूत बाधा तन्त्र

काली मिर्च, पिप्पल, सेंधा नमक और गोरोचन को महीन पीस कर मधु के सम्पर्क से अंजन लगावे तो भूत की बाधा दूर हो।

भूत-बाधा दूर करने का मन्त्र

(उडुीश तन्त्र, सावरि तन्त्र मतानुसार)

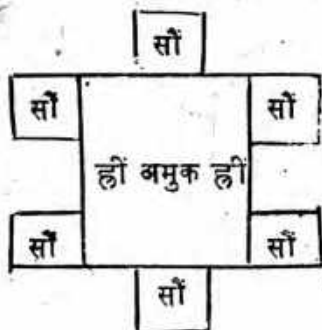
अखण्ड मन्त्र

ॐ नमो भगवते नारसिंहाय । घोररौद्र महिषासुर
 रूपाय त्रैलोक्यं डंवरज रौद्रक्षेत्रपालाय ह्रीं-ह्रीं क्रीं-क्रीं
 कीमिति ताडाय-ताडाय मोहय-मोहय द्रंभि द्रंभि, क्षोभय
 क्षोभय, अभि अभि, साधय-साधय ह्रीं हृदये आं शक्तये
 प्रीतीं ललाटे वंशय ह्रीं-ह्रीं हृदये स्तंभय किलि-किलि
 ईं ह्रीं डाकिनीं प्रच्छादय-प्रच्छादय शाकिनीं प्रच्छादय
 प्रच्छादय भूतं प्रच्छादय प्रच्छादय अप्रभूति अदूरि स्वाहा,
 राक्षसं प्रच्छादय-प्रच्छादय ब्रह्मराक्षसं प्रच्छादय-प्रच्छादय,
 आकाशं प्रच्छादय-प्रच्छादय सिंहनीपुत्रं प्रच्छादय-प्रच्छादय
 एते डाकिनी ग्रह साधय-साधय शाकिनी ग्रह साधय-
 साधय अनेन मन्त्रेण डाकिनी शाकिनी, भूत-प्रेत-पिशाचादि
 ऐकाहिक, द्वाहाहिक, त्र्यहिक, चातुर्हिक, पंचक वातिक,
 पैत्तिक, श्लैष्मिक सान्निपात, केशरा डाकिनी ग्रहादि,

मुंच-मुंच स्वाहा । गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति, फुरो मन्त्र,
“ईश्वरो वाच” इति मन्त्रः ।

इस मन्त्र को उच्चारण करके मयूर पुच्छ या लोहे की कोई वस्तु छप्पर की घास ले २१ बार झार दे तो भूतादि के समस्त उन्माद दूर हो जावेंगे ।

भूतादिक आकर्षण यन्त्र



इस यन्त्र को गोरोचन से भोजपत्र पर लिखकर धूप दीप से पूजन करके घी में रख दे । पश्चात् नित्य प्रति पूजन करके त्रिपुरा की प्रार्थना इस मन्त्र से करे ।

“आकर्षय महादेवी देवदत्तं मम प्रिये

ऐ त्रिपुरे देवेशि तुभ्यं दास्यामि वाचितम्”

इस प्रकार करने से २-४ दिन में ही रोगी सब बातें बकने लगेगा । यदि इस पर भी न बोले तो तुरन्त लिखित मन्त्र से काम ले ।

डाकिनी-शाकिनी भूत-प्रेत को भाषण कराने का मंत्र

ॐ नमो आदेश गुरु को, ॐ नमो जय-जय नृसिंह
तीनलोक चौदह भुवन में, हाथ चाबि और ओठ चाबि,

नेत्र लाल-लाल, सर्व बैरि पछाड़ मार भक्तन का प्राण
राखि आदेश-आदेश पुरुष को इति मन्त्र ।

रोगी को सम्मुख बैठाकर इस मन्त्र को पढ़े और इसी से
अभिमन्त्रित कर उसे पिलावे तो डाकिनी शाकिनी भूतादिक
तत्क्षण बोलने लगेंगे ।

दूसरा प्रयोग

ॐ नमो चढ़ो-चढ़ो बीर धरती चढ़, पाताशूल चढ़,
पग पाताली चढ़ कौन-कौन बीर चढ़, हनुमान बीर
चढ़ । धरती चढ़, पग पानी चढ़, एड़ी चढ़-चढ़, मुके
चढ़-चढ़, पिंडी चढ़-चढ़, गोड़े चढ़-चढ़, जाँघे चढ़-चढ़,
कटि चढ़ २ पेट चढ़, पेट से धरन चढ़, धरन से पस-
लियों चढ़, पसलियों से हिये चढ़, हिये से छाती चढ़,
छाती से काँधे चढ़, काँधे से कंठ चढ़, कंठ से मुख चढ़,
मुख से जिह्वा चढ़, जिह्वा से कर्ण चढ़, कर्ण से आँखों
चढ़, आँखों से ललाट चढ़, ललाट से शीश चढ़, शीश से
कपाल चढ़, कपाल से चोटी चढ़ हनुमान नृसिंह करवा
तरक्तया, चलाबीर समद बीर, अगिया बीर, ये बीर
चढ़े" इति मन्त्रः ।

इस मन्त्र से जो चाहे बोलवा (बकरवा) ले ।

भूत-प्रेत, डाकिनी आदि को चोट लगे ।

मन्त्र

ॐ नमो महाकाय योगिनी-योगिनी परशाकिनी

कल्प वृक्षाय दृष्टि योगिनी, सिद्धिरुद्राय, कालदंभेन
साधय-साधय मारय-मारय चूरय-चूरय, अपहार शाकिनी
सपरिवाराय नमः ॐ ठंछ, ॐ छः हों, हों फट स्वाहा”
इति मन्त्रः ॥

इस मन्त्र से सात बार गूगल को अभिमन्त्रित करके ओखली
में डाल मूशल से कूटे तो वह चोट ड़ाकिनी को लगे फिर यदि
चाहे तो इसी मन्त्र से अस्तुरा लेकर अपना घुटना मूड़े तो ड़ाकिनी
का सर मुड़ा जावेगा ।

फिर इसी मन्त्र से उर्द मन्त्रित करके फेंके तो ड़ाकिनी आकर
नाचने कूदने लगे और इसी मन्त्र से जल मन्त्रित करके नेत्र में
लगा ले तो ड़ाकिनी बोलने लगेगी ।

भूत-बाधा दूर करते की धूनी

नीम का पत्ता, वच, होंग, सर्प की कांचली और सरसों
इनकी धूनी दें तो भूत ड़ाकिनी आदि दूर हो ।

तन्त्र—१

पिपली, कालीमिर्च, सेंधा नमक और गोरोचन इनको मधु म
पीसकर अंजन लगावे तो भूत बाधा दूर हो ।

तन्त्र—२

गोरख बड़ी (गोरखा) को गोमूत्र में पीसकर नास दे तो
ऋहाराक्षस भी दूर भागेगा ।

तन्त्र—३

शङ्खाहली की जड़ को चावलों के पानी में पीस कर तथा

घृत के साथ रगड़ कर नाक में सूँघाओ तो भूतादि बाधा दूर ह जावेगी ।

विधि

परन्तु यह सब कुछ तभी पूरा होता है जब उपरोक्त "यन्त्र-मन्त्र में, १-डाकिनी दोष दूर होने के मन्त्र" को जो ऊपर पहले लिखा है, उसे ग्रहण में (ग्रास से मोक्ष पर्यन्त) जप कर ले । तब वे मन्त्र उपरोक्त लिखित यथार्थ सिद्धि दाता होकर तत्कार्य पर उपयोगी होते हैं ।

पन्द्रहवें का एक आवश्यकीय यन्त्र

२	६	४
७	५	३
६	१	८

इस यन्त्र को बहुत दिन तक जगावे फिर जिस कार्य की सिद्धि के लिये लिखकर भुजा पर बांधे वही कार्य सिद्ध होगा । अष्टगन्ध से भोजपत्र पर अनार या चाँदी की कलम से निकाल कर पूजन करे ।

नजर झाड़ने का यन्त्र

७	८१	३३	४२
८	८२	६	१७
२६	७	४६	५०
४५	५७	६	१

इस यन्त्र की ताँवे के पत्र पर लिख कर बालक के गले में मंगलवार के दिन बाँधे तो नजर न लगे और लगी हो तो छूट जावे ।

बाल-रक्षा-यन्त्र

२५५	२६५	२५६
२६२	२५	२५६
२५७	२५६	२६३

इस यन्त्र को भोजपत्र पर लिखकर बालक की गर्दन में डाल दे तो बालक के हर एक रोग और प्रत्येक बाधा से रक्षा होगी ।

बाल रक्षा मन्त्र

ॐ नमो भगवते गरुणाय त्र्यम्बकाय स्वस्त्यस्तुस्वाहा ।

इस मन्त्र को १०१ बार पानी पर पढ़ कर बालक के भाल पर तिलक लगावे तो बालक सर्व व्याधाओं से रक्षित रहे ।

वशीकरण यन्त्र

८	९	३	४
६	४	७	५
५	७	१०	८
९	६	२	७

इस यन्त्र को ऐसी स्याही से जिसमें पानी के स्थान में तुम्हारे आँसू पड़े हों, एक भोजपत्र पर लिख कर अपने प्रेमी के मकान की चौखट के नीचे स्वयं दाब आवे । भगवात्कृपा से वह शीघ्र वश में हो जायगा ।

वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो मोहिन्यै सर्व लोकान् मे वशीकुरु २ ह्रँ
फट् स्वाहा ।

इस मन्त्र द्वारा जल को इक्कीस बार पढ़ कर मुख को धोवे । फिर वह जिस किसान से बात करेगा वह उसके वश में रहेगा ।

सर्वजन वशीकरण तिलक

सौ तन्त्रन को तन्त्र यह, वशीकरण मन राख ।
तन मन सो वश कीजिये, बोलिके मीठी भाख ॥
पशु पक्षी आवत चले, सुनिके मीठे बोल ६

देखत टेढ़ो दृष्टि ही, भगै बोल अनमोल ॥
जो सब गुण में आगरी, है यह नर की देह ।
केवल यह वश होत है, सुनिके वचन सनेह ॥

सर्वजन वशीकरण मन्त्र

ॐ नमो नारायणाय । सर्व लोकानां मम वशान्
कुरु-कुरु स्वाहा । एक लाख १००००० जपात सिद्धो
भवति ।

सर्व वशीकरण तन्त्र

मेढासींगी, बच, राल, खस, चन्दन और छोटी इलायची
यह सब बराबर लेकर कूट-छान कर रख ले । आवश्यकता होने
पर पहिरने का वस्त्र लेकर धूनी देवे तो नर-नारी सब वश में
हों, और क्रय-विक्रय में लाभ हो ।

खाकी

उन्द्रहे का यंत्र

वादी

८ । १ । ६
३ । ५ । ७
५ । ६ । २
वृष । कर्क । तुला

६ । ७ । २
१ । ५ । ६
८ । ३ । ४
म० । मी० । कु०

आवि

अतिशी

२ । ७ । ६
६ । ५ । १
५ । ३ । ८
कर्क । सि० । वृ०

४ । ६ । २
३ । ५ । ७
८ । १ । ६
मे० । मि० । घ०

पन्द्रहे का मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं श्रीकाली चामुण्डा देवी स्वाहा ।

यन्त्र और मन्त्र का उपाय

इस यन्त्र से इतनी बातें सिद्ध होती हैं । भयंकर शत्रु वशी-भूत होकर प्रीति करता है । शारीरिक व्यथा दूर होती है । धर्मपत्नी का कष्ट दूर होता है । चोरी गई हुई या खोई हुई वस्तु मिलती हैं । अपना स्नेही यदि विदेश चला गया हो तो शीघ्र ही लौट आता है । वन्दी हो तो छूट जाय ।

पन्द्रहे के यन्त्र से शत्रु नाश होने का उपाय

मदार के पत्ते पर पन्द्रह दिन तक दक्षिण दिशा की ओर मुख करके पन्द्रह २ यन्त्र रोजाना लिखकर पत्ते के नीचे शत्रु का नाम लिखे और अग्नि में जला दे तो शत्रु नाश हो ।

इस यन्त्र को शुभ कार्य के लिये शुक्ल पक्ष में उत्तम दिन से लिखना शुरू करे । चमेली की कलम से उत्तर मुख बैठकर लिखे । यदि अशुभ कार्य के लिये लिखना हो तो अशुभ-दिन कृष्णपक्ष में लोहे की कलम से लिखना चाहिये । जितने दिन यन्त्र लिखे उतने दिन इहाचर्य से रहकर मूंग की दाल और चावल खाना चाहिये ।

लक्ष्मी प्राप्त के लिये २००० यन्त्र लिखे; रोग दूर करने के लिये ६००, वशीकरण के लिये ३००० ईश्वर को प्रसन्न करने के लिये ७०००, व्यापार करने के लिये ४०००, देवता प्रसन्न करने के लिये ५००० परदेश गये हुये को बुलाने के लिये २०००, स्त्री से पुत्र उत्पन्न करने के लिये ५०००, खेती अच्छी होने के लिये २०००, प्रेत ब्रीधा दूर करने के लिये २०००, मन्त्र की सिद्धि के

लिये २०००, मित्र से मिलने के लिये २०००, अभीष्ट कार्य की सिद्धि के लिये १५००० शत्रु वश करने के लिये २०००, खोई हुई चीज मिलने के लिये ५०००, सरस्वती प्रसन्न करने के लिये १०००, विषताश करने के लिये २४०००, तिजरिया दूर करने के लिये ६०००, राजा को प्रसन्न करने के लिये ४०००, अनहोनी बात करने के लिये १००००० यन्त्र लिखे। गेहूँ के आटे से यन्त्र को मिलाकर मछलियों को खिला देने में सम्पूर्ण कार्यों की अवश्य सिद्धि हो जायगी। इसमें किसी प्रकार का संशय नहीं है।

इतना कहकर श्री सदा शिव जी बोले—हे संसार के हित करने वाले लंकाधिपति! कलि में समस्त यन्त्र हुये हैं, परन्तु उपरोक्त पन्त्रहे का यन्त्र कलिकाल में मन इच्छित फल को देने वाला है पन्त्रहे का यन्त्र स्वर्ग में देवताओं को भी दुर्लभ है इसका उद्धार इस प्रकार से है। ॐ हरिः श्री हरस्तया ॥

यन्त्र-मन्त्र

यन्त्र मन्त्र और तन्त्र विद्यायें ऋषियों वृत्त बहत प्राचीन हैं। भारतवासी यहाँ तक उन्नतावस्था को पहुँच गये थे कि केवल हाथ फेर कर फूँक मारकर ही रोगियों को स्वस्थ कर देते थे। उनके शब्दों का प्रभाव रामबाण होता था। अब तक गुरु मन्त्र के पढ़े हुये पत्नी के छोटे अपना प्रभाव दिखा जाते हैं। हम इस विषय को अधिक न लिख कर थोड़े ही में इसे समाप्त करेंगे क्योंकि इन विद्याओं की इस नये जमाने में कद्र नहीं है। यहाँ पर यन्त्र का थोड़ा सा वर्णन करेंगे।

बाल रक्षा हेतु भूत बाधा निवारण

१—डाकिनी दोष दूर होने का मंत्र।

ॐ नमो आदेश गुरु का डाकिनी निहारी किन्ने

मारी यती हनुमान ने मारी कहाँ जाय पटकी किन्होंने
देखी यती हनुमान ने देखी सातवें पाताल गई सातवें
पाताल से कौन पकड़ लाया यती हनुमान ने पकड़
लाया । एक ताल दे एक कोठा तोड़ा दो ताल दे दो
कोठा तोड़ा तीन ताल दे तीन कोठा तोड़ा चार ताल दे
चार कोठा तोड़ा, पाँच ताल दे पाँच कोठा, खोला छः
ताल दे छ कोठा खोला, सातवें कोठा खोला देखे तो
कौन कौन खड़े हैं; डाकिनी, निहारी भूत प्रेत चले यती
हनुमंत मेरे झारे से चल, ॐ नमो आदेश गुरु की शक्ती;
मेरी भक्ती फुरो, मन्त्र ईश्वरा वाच, इति मन्त्र ।

इस मन्त्र को मुख से उच्चारण कर मयूर के पक्ष तथा लोहे
की चाकू से आदि में झार दे तो डाकिनी का दोष दूर हो ।

डाकिनी दूर करने का यंत्र

यंत्र प्रथम १

११	६६	१	५
७	६	७	६
६	=	%	%
८	१	५	४०

यंत्र द्वितीय २

७	७	५	८
५	६	६	५
४	॥	५	११
७०	६	११	%

प्रथम-यन्त्र को भोजपत्रादि पर लिख कर बालक के गले में

बांधे और द्वितीय यन्त्र को लिखकर शुद्ध जल में घोलकर पिलाये । डाकिनी दूर होकर बालक दोष से निवृत्त हो जायगा ।

प्रयोग विधि

रेवौ रवाऽर्कं दुग्धेन स्मशानेभस्मना लिखेत् ।

यस्य वर्णस्य नामानि, चिनामध्ये स्निनक्षयेत् ॥

विक्षिप्तो जायते मर्त्ये, अष्टोत्तर शतं जपेत् ।

रविवार के दिन श्मशान को भस्म मन्दाई के दूध में मिला कर कागज पर इस यन्त्र को लिखे और यन्त्र के नाचे शत्रु का नाम लिख कर अग्नि में जला देवे और 'बृहृरि श्री हरस्तया' मन्त्र को १०८ बार जपे तो शत्रु विक्षिप्त हो जाय ।

चन्द्रवारं गृहीत्वा तु श्वेत दूर्वा च केशरः ।

श्वेत गुजा समायुक्त कपिला पत्र मध्यतः ॥

पञ्चदर्शी विलोमेतु सन्ध्या काले विशेषतः ।

यत्रण लिख्यते सम्यक् वाह्या कच धारयेत् ॥

राजानां वशमायाति अन्य लोकेषु का कथा ।

चन्द्रवार (सोमवार) के दिन सफेद दूब केशर, सफेद चिर-मिठी और कपिला गौ का दूध लावे उपरोक्त वस्तुओं को पीस कर कपिला गौ के दूध में मिला दे, सायंकाल के समय इस पन्द्रह यन्त्र को विलोम रीति से लिखे पश्चात् भुजा या कंठ में बांध ले तो राजा वशीभूत हो जाता है और लोगों का तो कहना ही क्या है ।

भांमवारे गृहीत्वा तु काक रक्त च पक्षिकं ।

यन्त्रण यस्य नामानि मृतवस्त्रे समालिखेत ॥

तस्य द्वारे खनेद् भूमौ भवेदुच्चाटनं ध्रुवम् ।

मङ्गलवार के दिन काक की पंख की कलम से और उसी के रक्त को स्याही से मुर्दे के वस्त्र पर यन्त्र और शत्रु का नाम लिखकर शत्रु के द्वार की भूमि खोदकर गाड़ दे तो अवश्य शत्रु उच्चाटन होय ।

बुधवारे गृहीत्वा तु, नाग केशर रोचनम् ।

यत्र लिखित्वा तेनैव, तस्यवर्ती समाचरेत् ॥

सर्पप तैलेन प्रज्वाल्य, मंत्र अष्टोत्तरं जपेत् ।

नृकगलै कज्जलं कृत्वा, वाञ्छयेत् मोहनजगत् ॥

बुधवार के दिन नागकेशर गोरौचन से यन्त्र लिखकर बत्ती बनावे और सरसो के तेल में उस जलाकर मनुष्य की खोपड़ा पर काजल पारे और पूर्वोक्त मन्त्र को १००० बार जप करके अपनी आँख में काजल लगावे तो वशीकरण हो जाता है ।

गुरुवारे हरिद्राहि रोचनं घृत मिश्रितम् ।

यत्र राज सभा लिख्य यस्यनाम समध्यकं ॥

आरुने निर बनेच्चैव सर्वा कर्षणो भवेत् ।

गुरुवार के दिन हल्दी, गोरौचन, घी यह तीनों चीज को मिलाकर यन्त्र लिखे । यन्त्र के बीच में जिसको वश में करना ही उसका नाम लिख देवे और अपने आसन के नीचे दाब लेवे तो वशीभूत हो जाता है ।

भृगुवारै स कर्पूरं बचा कुष्ट मधूनि च ।

यत्र राजंतु संलिख्य भूर्जपत्र सुशोभनम् ॥

दृष्ट्वातु तस्य आयाति प्राणैरपि धनैरपि ।

शुक्रवार के दिन कर्पूर व बचकूट और मधु मिलाकर इस यन्त्र को लिखे तो इस यंत्र को देखकर धन और प्राण दोनों को लेकर स्त्री चली आती है ।

शनिवारे चिता काष्ठ पंचदर्शी विलौमकं ।

लिखेत यस्य नामानि स्मशाने निर्वने यदि ॥

कुक्कुटस्याति रक्तेन म्रियते नात्र संशयः ।

मृगों के रुधिर से विलोम अर्थात् उलटी रीति से मन्त्र को लिखकर श्मशान भूमि में गाड़ दे, उस यन्त्र पर जिसका नाम लिखा रहे वह अवश्य मर जायगा ।

वशीकरण वुरकी

चिता पर की भस्म, कूट, बच तगर और कुंकुम को मिलाकर पीसकर उसका चूर्ण बना लवे । उस चूर्ण को जिस स्त्री के सिर पर या जिस पुष्प के पाँव तले डाले वह आजन्म वश में रहेगा ।

वशीकरण अञ्जन

तगरकूट तालीस मिलावै; तब वातीसो पीस मिलावै । सरसों तेल दिया में मेलै, आदतवार पुष्प में खेलै ॥ आधी रात अमावस नयन निहारिये ।

मनुष्य खोपड़ी ऊपर काजल पारिए ॥

रश्चक अञ्जन आँज नयन जब देखिये ।

जन जो भावै यार सोई वश कीजिये ॥

पति वशीकरण यन्त्र

गं गं गं गं गं गं गं गं गं

ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
क्रीं ह्रीं क्लीं गं अमुकः गं
क्लीं ह्रीं क्रीं ह्रीं क्लीं क्रीं
ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं

एक लम्बा चीड़ा ऐसा भोजपत्र लावे जो फटा न हो फिर अनामिका अंगुली का रक्त और हाथी का मद जावक और गोरोचन ये चारों चीजें मिलाकर चमेली की लकड़ी के कलम से इस यन्त्र को लिखे फिर एक सुन्दर शुद्ध खेत से काली मिट्टी लेकर गणेश जी की मूर्ति बनावे। उस मूर्ति के पेट में इस यन्त्र को रख देवे। धूप दीप फूल माला आदि से पूजन कर नैवेद लगाकर इस मन्त्र पर उच्चारण करे ॥ अथ मन्त्रः ॥

देव देव गणाध्यक्ष सुरामुर नमस्कृते ।

देव दत्ते महा पश्य यावज्जीवं कुरु प्रभो ॥

इस मन्त्र को बार २ कहकर एक हाथ गहरा गड्ढा खोदकर उसमें इस मूर्ति को रख दे और मिट्टी डाल कर गड्ढा बन्द कर दे तो पति स्त्री के वशीभूत होकर रहेगा ।

पुनः पति वशीकरण मंत्र

ॐ ह्रीं ध्रीं क्रीं थीं ठः ठः ॥

विधि—परिवा के दिन परेवा पक्षी को मार लावे फिर ऊपर जो मन्त्र लिखा है उसको बारम्बार पढ़कर उसका मांस पान में डालकर खिन्ना देना चाहिये ।

स्त्री वशीकरण मन्त्र

ॐ नमः भवाये नमः शर्वाण्ये अमुकी (अमुकी के स्थान पर स्त्री का नाम लेना) वश्य मान स्वाहा ।

विधि

इस मन्त्र को १०००० जपे फिर जिह्वा मँल, दाँत मँल, नाक मँल, गुदा मँल, लिंग मँल इन सबको मद में मिलाकर जिस पुरुष को पान करावे वह पुरुष वशीभूत हो जाता है ।

वेश्या वशीकरण मन्त्र

ॐ द्राविणी स्वाहा, ॐ हामिले स्वाहा ।

विधि

दस हजार जपकर मन्त्र सिद्धि कर लेवे । उसके पीछे आँगा का गूदा १६ अंगुल लम्बा निकाल लेवे और इस मन्त्र को सात बार उस पर पढ़कर वेश्या के घर में गाड़ देवे तो वेश्या वशीभूत हो जाती है ।

संसार वशीकरण यंत्र

ॐ वं जं ह्रीं इं
उं ह्रीं ऊं इं
वं इं जगन वं इं ह्रीं

इस यन्त्र को कपूर, कस्तूरी गोरोचन चन्दनादि की स्याही और चमेली की कलम से भोजपत्र पर लिखे । तीन दिन तक इस यन्त्र का मुगन्धित पुष्प और द्रव्य से पूजन करके ताबीज में भरवाकर बाँह में

बांध लेवे, फिर जिसके पास जाय वही वश में हो जाता है ।

सर्व वशीकरण तंत्र

गोरोचन, वंशालोचन, मछली का पित्त, केशर, चन्दन और काक जंघा का जड़ इन सबको बराबर भाग में लेवे और बावली या जलाशय के जल से कुमारी कन्या द्वारा गोली बनवा कर छाया में गुखा लेवे फिर उसका मस्तक पर तिलक करे तो जो उसका देखे वह वश में हो जाता है और राजा के दरबार में न्याय (दीवानी अदालत) या युद्ध में सर्वत्र विजय पाता है ।

सर्व वशीकरण मंत्र

मोहन—मंत्र

मोहनी मोहनी मोहनी मोहनी कीजे मोहनी मेरा नाम,
चामकी बाँटी बाँधों सारो रात ॥

राजा मोहों परजा मोहों मोहों महाजन जो कोई करे
मेरे सिर घाव । उसको आप आप सिर पर घाव दोहाई
ईश्वर महादेव गौरा पारवती को ।

विधि

लवङ्ग, गुगुल, मधु, घृत इन चारों को सम भाग में लेकर जिनके नाम से चाहे, जिस मङ्गलवार को अमावस्या पड़े १०८ बार जप कर १०८ धूनी देवे फिर श्री महावीर जी के सामने छाँटे बच्चे को मोहन भोग की प्रसादी खिलावे । फिर उस विभूति को पीले चमेली के फूल पर मन्त्र पढ़ कर जिस पर डाले या सूँघने को दे वह शीघ्र वश में हो ।

वशीकरण सुमारी

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय त्रिलोचनाय, त्रिपुरवाहनाय ।

नाम लेकर जिसको वश करना चाहे अमुक अच्छा महर्त देखकर उपरोक्त मन्त्र को १०८ बार जप कर सुपारी जिसको खिलावे वह वश में हो जाय ।

राजा वशीकरण मन्त्र

“ॐ क्लीं सः अमुक वश कुरु कुरु स्वाहा”

इस प्रकार १ लाख मन्त्र जपे, सिद्ध हो जायगा । फिर १००० बार जप कर केशर, चन्दन गोरोचन और कपूर दूध में मिला घिसकर तिलक लगाकर राजा के सामने जाय तो वह वश में हो ।

वशीकरण मंत्र

३४ का यन्त्र

१०	६	१	१४
११	४	१२	७
८	११	६	६
५	१०	१५	४

इस यन्त्र को लिखकर बत्ती बनावे और घृत के दीपक में डाल कर जलावे और मन चाही कामिनी के घर की ओर मुंह करके रख दे तो उसके हृदय में प्रीति उत्पन्न हो ।

प्रेत-बाधा निवारण यंत्र

	नाम	
२	२	३
	२२ २०	
४	१८	२
	१	

यदि इस प्रकार के यन्त्र को कोरे कपड़े पर लिख कर प्रेत बाधा वाले को दिखाकर जलादे तो उसका प्रेत छूट जाय ।

शत्रु मोहन तंत्र

शत्रु को विष्ठा और बीन्नी को लाकर एकत्र करे फिर उसको एक ढके पात्र में रखकर पृथ्वी में एक गड्ढा खोदकर उसमें रख दे, ऊपर मिट्टी डाल दे इस प्रकार करने से शत्रु शीघ्र ही शरणागत होगा, मरने लगेगा । जब पांव पर आकर गिरे तब उसे उखाड़ ले तब उसे आराम हो जायगा ।

शत्रु मोहन यंत्र

७६	८४	२	८
८४	७४	६	१
६	३	६	१
४	६	५	६३

इस मन्त्र को तिकनी टिकरी पर लिख कर कंठ में बांधे तो उसे शत्रु का भय न रहगा । अभ्यासी को देखते ही शत्रु मोहित हो जायगा ।

शत्रु वशीकरण की एक और विधि
भोजपत्र पर शत्रु का नाम लिखकर शहद में डुबा दे तो शत्रु
वश में हो जाय ।

पति-वशीकरण

गोरोचन, योनि का रक्त और केले का रस एकत्र करके
इसका तिलक लगाने से पति वश में हो जाता है ।

अपरंच

सफेद सरसों और अनार का फल, फूल, शाखा, पत्र तथा
जड़ को एकत्रित कर पीस कर योनि के ऊपर इसका लेप करने
से यदि स्त्री दुर्भंगा अर्थात् कुरूपा हो तो भी अपने पति को दास
के समान अपने वश में कर लेगी ।

सर्वसाधारण वशीकरण मंत्र

ॐ नमो कट कट विकट घोर रूपिणी अमुकं मे
वशमानय स्वाहा ।

विधि

इस मन्त्र को ग्रहण में १००० बार जपे फिर रविवार को
इससे अभिमन्त्रित करके अन्न भोजन करे और भोजन करते
समय उसका नाम लेता जावे जिसे वश में करना हो तो वह
शीघ्र ही वश में हो जायगा ।

सर्व-जन वशीकरण मंत्र

ॐ नमो आदेश गुप्त को , राजा मोहें, परजा मोहें
मोहें, ब्राह्मण बणिया । हनुयंत रूप में जगत मोहें, जो

रामचन्द्र परमाणिया । गुरु की शक्ति, मेरी भक्ति फुरो
मन्त्र ईश्वरोवाच ।

विधि—इस मन्त्र को पहले २१ दिन तक एक हजार प्रति-
दिन और चन्दन, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य नित्य प्रति करता रहे
तो भी रामचन्द्रजी का ध्यान करके चौराहे की धूलि उठा कर
२१ बार मन्त्र को जपकर माथे में बिन्दी लगाले । जो देखे बश
में हो जायगा ।

भ्राता वशीकरण मंत्र

ॐ मोंडो ।' इम मन्त्र को बिना भोजन किये ही पाँच सौ
जप करे तो भाई की कौन कहे राजा, पुत्र आदि सब वश हो में
जाय । यह सब मन्त्रों में श्रेष्ठ मन्त्र है ।

शत्रु वशीकरण मंत्र

“ॐ ह्रीं व्रीं ऐं ल्लो भोग प्रदा भैरवी मातङ्गी
त्रैलोक्यं वशमानय स्वाहा ।

विधि—मैनसिल और गोरोचन पर इस यन्त्र को एक सहस्र
लिखकर जप करे । तिलक लगाते समय सात बार मन्त्र जपे तो
देखते ही शत्रु वश में हो जाय ।

त्रिभुवन वशीकरण

ॐ नमो भूतनाथाय समस्त-भुवन भूतानि साधय हुँ ।

इस मन्त्र को एक लाख जप करने से आकाश, पाताल और
पृथ्वी के चराचर प्राणी वशीभूत हो जाते हैं ।

वशीकरण लौंग

ॐ नमो आदेश गुरु को, कामरु देश कौमाध्रादेवी
जहाँ बसे इम्माइल योगी दीन्हीं एक लौंग राती प्राती,
दूजी लौंग दिख वेराती । तीजी लौंग रहे थहराय ।
चौथी लौंग मिलावें आय नहि छावें तौ कुवां बावड़ी
धार फिरं डंडी कुआँ, बावड़ी छिटक मरै । ओं नमो
आदेश गुरु को मेरी भक्ति गुरु, की शक्ति फुरो तंत्र
ईश्वरोवाच ।

विधि—ग्रहण की रात को चार लौंग लाकर चार दिशाओं
में रखे और बीच में चौमुख दीपक ज्वावे, फिर धूप सुगन्ध
माला, नैवेद्य चढ़ाय एक हजार मन्त्र जपे, सिद्ध होने पर सात
मन्त्र पढ़ के लौंग दे । इस लौंग को जो खाय, वह वश में हो
जाय ।

सभा मोहन तंत्र

अथेली ता हनुमंत बसे, भंरूँ बसे कपार ।

नारसिंह की मोहनी, मोहै सब संसार ॥

मोहन रे मोहन तू बीर सब बीर में तेरा सिर
सबकी दृष्टि, बांध दे मोहि तेल सिंदूर चढ़ाऊँ तोहि तेल
सिंदूर कहाँ से आया । कैलाश पर्वत से आया अजनी
का हनुमंत, गौरी का गणेश । काला गोरा तातला तीनों
बसे पताल । बिन्दा तेल सिंदूर का दुश्मन गया पताल
दुहाई शाकिया सिंदूर की । हमें देखत शीतल हो जाय ।

हमारी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मंत्र ईश्वरोवाच ।
सत्यनाम आदेश गुरु का ।

विधि—सात शनिवार को दीपक में तिल करके लोहवान देवे, मिठाई का भोग घरे १०८ बार जपै । फूल पान करके पूजा करे । सिद्धि हो जाय तो पीछे जहां जाय, सिन्दूर पर सात बार मन्त्र पढ़े माथे पर लगा कर जाय । राजा गुस्से में हो जाय, और दण्ड देने को बुलावे तो देखते ही शीतल हो जाय । जिस सभा में जाय वहाँ के सब मनुष्य बड़ा आदर भाव करें और प्रीति में सम्मान करें ।

प्रेत वशीकरण मंत्र

ॐ श्री व वं भु भूतेश्वरी मम वष्यं कुरु कुरु स्वाहा ।

विधि—मूल नक्षत्र में बबूल के नीचे तीन दिन इस मन्त्र को प्रतिदिन १०८ बार जपै तो प्रेत प्रकट होकर 'मांग मांग' कहेगा । जब उससे वचन लेकर जो मन चाहे मांग ले ।

भूत वशीकरण-मन्त्र

ॐ साल सलीता सोसल बाई काग पढ़ता धाई
ओं लं लं लं ठः ।

शनिश्चर के दिन अर्द्धरात्रि में नग्न हो बबूल के वृक्ष के नीचे प्राक की लकड़ी जलाकर मन्त्र पढ़ पढ़ कर बबूल तिल और उर्द की आहुति दे । भूत सम्मुख आकर बातें करेंगे । इस समय दृढ़ हो अपना हाथ काटकर सात बूंद रक्त को पृथ्वी पर टपकावे, प्रेत सदा वश में रहेगा । जब बुलाओगे, आवेगा । रात्रि में शीघ्र से

आकर आत्रदस्त के घोड़े से बचे हुये पानी को बबूल पर चढ़ा दिया करे।

अन्य वशाकरण मन्त्र

“ओं यं यं यं ओं रं रं रं लं लं ठः ठः ओं क्लीं”

सोमवार को खटकुली पक्षी को मार कर उसकी चांच में सुपारी डाल कर नदी के किनारे गाड़ आवे मङ्गलवार को मंत्रे उखाड़ लावे, सुपारी निकाल ले, फिर वह सुपारी पान में डालकर मन्त्र पढ़ जिसे खिलादे तत्काल वशीभूत हा जाय।

भूतवाधा निवारण मन्त्र

श्लोक—गुग्गुलं लशुनं सर्पि कंचुकः कनि रोम च
शिखि कुक्कुटयोविष्ठा मलः पारावतस्यच ।
एतद्घूपाद्ग्रहाः क्रूराः पिशाचा भूत पूतनः
डाकिन्यौज्वरा रौद्रा नश्यन्स्पर्शं मादतः ।

गुग्गुल; लहसुन; घी; सांप की केचुली; बानर के रोम, मोर और मुर्गा पक्षी की विष्ठा तथा कबूतर की विष्ठा इन सब को घूप करे; क्रूर ग्रह (पिशाच) भूत; पूतना डाकिनी; ज्वर आदि रोग स्पर्श मात्र से ही नष्ट-हो जाते हैं।

जादू निवारण मन्त्र

ॐ आहूता मन्दरश्यम चजाज्वलं जल जम जम जम ॐ जाहि जाहि जाहि । काले घतूरे का बीज मन्त्र पढ़ अग्नि में डाले तो जादू दूर हो ।

बाई दूर होने का मन्त्र

ॐ मूलनमः घृक्षतमः जाहि जाहि जाहि घ्वांक्षतम् प्रकीर्ण

बङ्गप्रस्तार मुंच मुंच । एतवार मङ्गलवार को तिलोई पक्षी के आंख से क्षारे तो बाई दूर हो ।

सर्वे ग्रह बाधा दूर होने का मंत्र

ॐ ऐं हूं क्लीं दह दह—

प्रदोष के दिन से सात दिन बराबर मालपुआ और कस्तूरी की १०८ बार आहुति देने से ग्रह-बाधा दूर हो ।

देव-बाधा निवारण मन्त्र

ओ३म् सर्वेश्वरायहूम

सोमवार से नौ दिन लगातार गरी और काले तिल के मन्त्र पढ़ तीन माला की अहुति दे देवे तो देव बाधा दूर हो जाये :

सर्प कीलने का मंत्र

बैठी समुन्दर करो गोहार; जहर बुझाया अचल लोहार, धुक धुक बरे पत्यल कील शब्द सांचा फुरो वाचा । सात बार मन्त्र पढ़ निगेह की जड़ से फुंक तो सर्प निर्विष हो जाय ।

सर्प खोलने का मन्त्र

आता का जाता का लागल गाता का चलता फिरता खोल २ अलाव पति शब्द सांचा फुरो बांचा । मंत्र पढ़ तुनी की लकड़ी सुँघा दे तो सर्प खुल जाय ।

पीनस रोग निवारण मन्त्र

कसे तोंवरी छप्पर चढ़ी बीस बिलाई बावन गढ़ी रोंक सिद्ध पत्ती शब्द सांचा फुरो वाचा ।

यह मन्त्र पढ़ कर सात बार शारे पोंछे; श्वेत पत्थर चटा पीसकर नाक के ऊपर बाँधे तो सब कीड़े गिर पड़ें ।

धुमरी निवारण मन्त्र

ॐ अम्बुजहाँ जालन्धरी जो सुन्दरीं जुमोह जुमोह सात बार मन्त्र पढ़ कर चंचिका पक्षी के पंख शिखा में बाँध देवें । धुमरी न आवेंगी ।

आकर्षण मन्त्र

कृष्ण घतूर पत्राणां रसं गोरोचनं समम् ।

लिखेत्करवीर लेखिन्या यन्त्र पञ्चदशा द्रव्यम् ॥

भूर्जात्रेच तन्नाप धूपयत् खदिर वह्निना ।

रुद्रोपि स्वयमायाति नान्यथा मम भाषितम् ॥

काले घतूरे के पत्तों का अर्क गोरोचन के साथ ले । कनेर की कलम से भोजपत्र पर पन्द्रहे के यन्त्र तथा उसके नाम को लिखो और फिर उस यन्त्र को कत्था की लकड़ी की अग्नि से तपाओ तो रूठा हुआ मनुष्य आकर्षित हो जावे ।

पन्द्रहे के यन्त्र का स्वरूप

६	१	८
७	५	३
२	९	४

गर्भपतन निवारण

कुलाल हस्ती-दूध मृत्तिकाया,
छागी पयः छौद्र रसस्य-पानात् ।
गर्भच्युत शून मयां निकायं,
कार्योति गर्भं प्रकृति हठेन ॥

कुम्हार के हाथ में लगी हुई मिट्टी, बकरी का दूध और शहद इनको मिला कर पीने से गर्भ की पीड़ा तथा गर्भपात होना निश्चय रुक जायगा ।

मृतक गर्भ पातनम्

फिटकरी, बाँस की छाल, इन दोनों को आठ कर आठ टंक की मात्रा में तीन बार अथवा तीन दिन पीये तो अवश्य ही गर्भ पात हो जाता है ।

सुख से प्रसव होने का उपाय

इक्कीस के तन्त्र को सोलह काठी में भरे । इस यन्त्र के दिखाने और गंगाजल में धोकर गिलाने से तथा छुआने से स्त्री को सुख पूर्वक सन्तान उत्पन्न होती है । इसमें सन्देह नहीं है यह चमत्कारी यन्त्र है ।

इक्कीस
का यन्त्र

४	५	५	७
८	४	८	१
६	३	६	६
		२	७

परदेश गया मनुष्य लौट आवे

सः सः सः सः सः
 सः सः क्रीं ह्रीं क्रीं
 साध्य नाम
 ह्रीं क्रीं ह्रीं क्रीं
 ह्रीं क्रीं ह्रीं दर

इस यन्त्र को गोरोचन केशर चन्दन से भोजपत्र पर लिखकर धूप दीप फूल माला, नैवेद्यादिसे विधिवत पूजन करे। ऊपर से पीला सूत लपेट देवे। मनुष्य के शरीर में उबटन मलने से जो मूल छूटता है उसको एक मूर्ति बनावे। उसके हृदय में इस यन्त्र को रख देवे

और उसी मूल से ही ढक कर तीन दिन तक सायंकाल के समय खैर की आग से मूर्ति को तपावे। तापते समय इस मन्त्र को पढ़ता जाय।

* मन्त्र *

ॐ देवकत वेगन आकर्णय, पाणियद्र स्वाहा ॥

इस रीति के करने पर देशान्तर में गया हुआ मनुष्य चाहे जितनी दूर हों शीघ्र खिंचा हुआ चला आयेगा।

दुःस्वप्न निवारण मन्त्र

ओवाराणस्यां दक्षिणे कोणे कुक्कुटो नाम ब्राह्मणः ।

तस्य स्मरण मात्रेण दुःस्वप्नो सुस्वप्नो भवेत् ॥

मन्त्र को प्रातः उठते ही १०८ बार जपकर हाथों पर फूँक मारे और अपने मुख पर हाथ फेरे। इससे दुःस्वप्न का दोष मिट जाता है।

मुकदमा जीतने का मन्त्र

ॐ क्रां क्रां श्रां धूम्र वारि बदक्ष बिजयति जयति

ॐ ह्रीं ॥ -

नदी किनारे त्रयोदशी पुनर्वसु नक्षत्र में सुरही गाय के चर्म पर बैठ कर प्रवाल की माला से जपे। मुकदमे में अवश्य ही जीत होगी।

व्यापार वृद्धक मन्त्र

“ॐ श्रीं श्रीं परमां सिद्धि श्रीं श्रीं श्रीं ॐ”

प्रदोष का व्रत करके संध्या समय नागौरी के फूल अष्ट-गन्ध मिश्रित कर तीन माला मन्त्र जपे तत्पश्चात् १०८ आहुति दे और फिर सात प्रदोष तक लगातार प्रतिदिन करने से व्यापार की वृद्धि होगी।

देवबाधा निवारण यन्त्र

रा० ओ३म् दू० न० फ

कस्तूरी व सुवर्ण को लेखनी से चांदी के पत्र पर लिख कर प्रतिदिन नियम से पूजन करे तो सब प्रकार की देव बाधा दूर हो।

व्यापार वृद्धक यन्त्र

वह्य	ऐं	बह्य
ऐं	अन्नपू०	ऐं
वह्य	ऐं	बह्य

यह यन्त्र को ताम्रपत्र पर गोरो-चन और हंस के पंख को लेखनी से प्रतिदिन प्रातःकाल लिख कर धूप दीपादि से पूजा करे तो अवश्य व्यापार वृद्धि होगी।

नजर झाड़ने का यन्त्र

६	६	६	६	६
६	६	६	६	६

अनार को लेखनी लेकर संखाहुली के रस से कमल पत्र पर लिख कर बालक के कंठ में बाँध दे तो नजर लगने का भय दूर हो ।

टोना निवारण मन्त्र

“ॐ काँ कलककपाट बज्र-प्रहार लङ्का अलक कलक फलाङ्ग यतीकी वाचा सत्य हूँ ।

कपड़े का पलीता बनाकर अलसी के तेल में भिगोकर जलावे और कांसे की थाली में जल भर कर पलीता में से तेल टपकावे, २१ बार मन्त्र पढ़कर बालक को फूँक मारे । इस विधि से टोना उतर जायगा ।

सर्व कामना पूर्ण होने का मंत्र

“ॐ विद्युनिह्व चञ्चलकाये गन्ध गन्ध प्रसारिणी देहि देहि ॐ हां ह्रीं हूँ हः ।

अर्द्ध रात्रि के समय नदी में खड़ा हो स्फटिक की माला से १०८ (माला) उक्त मन्त्र को जपे । फिर एक माला से जल तन्दुल की खीर बनाकर अग्नि में आहुति करे । सब प्रकार की अभीष्ट कामना पूर्ण होगी ।

* इति श्री वशीकरण मन्त्र सम्पूर्ण *



वशीकरण मन्त्र

इस पुस्तक की मदद से चाहे जिस स्त्री पुठक को अपने वशीभूत कर मन चाहा काम से सकते हैं। आकर्षण सुरमा बनाने की क्रिया, राम दरबार में विनय पाना, सड़ाई में दुश्मन को नीचा दिखाना, अपने इष्ट मित्रों को यन्त्र द्वारा अपने देश में बुलाना, बातचीत करना आदि बातों का वर्णन किया गया है। मूल्य केवल २५ रुपये मात्र, डाक व्यय अलग है।

रामायण भाषा टीका बड़ी

(आठों कांड मूल संगीवनी टीका सहित)

यह बाजार में बिकने वाली सभी रामायणों में सबसे अच्छी तस्ती और सुन्दर है। इसकी टीका बहुत सरल सुन्दर तथा रोचक है। मूल्य रु० २५९ रामायण प्रेमियों के सुविचार्य इसका मूल्य केवल रु० २०९ मात्र, डाक व्यय अलग है।

श्री दुर्गा पुस्तक भण्डार (प्रा०) लि०

५२७ ए/२, कठकड़ नगर, इलाहाबाद-३

ब्रांच-जानसेनगंज, इलाहाबाद-३